भूमिका

संसार की सभी भाषाओं के साहित्य में कहानियों की पुस्तकें बहुत हैं। उपन्यास, काव्य या नाटक की कोई पुस्तक उठाकर पढ़ डालिए, सबमें किसी कल्पित या वास्तविक अतीत घटना का वर्णन होता है। इसका वास्तविक रहस्य यह है कि मनुष्य के हृदय पर दृष्टान्तों का प्रभाव अत्यन्त शीघ्र पड़ता है तथा चिरस्थायी होता है। चोर को चोरी न करने का उपदेश देने की अपेक्षा, उसे किसी चोर की दुर्दशा दिखलाने से उसके हृदय में स्वभावतः चोरी के प्रति वास्तविक घृणा तथा भय का संचार होने लगता है। जब कभी उसे चोरी करने की प्रवृत्ति होती है तब उसे अमुक चोर के हृदयग्राही दण्ड तथा असीम कष्टों का स्मरण हो आता है, और वह चोरी करने से भयभीत होता रहता है। स्त्रियों को पातिव्रत्य धर्म की शुष्क महिमा सुनाने की अपेक्षा सती-साध्वी स्त्रियों के सुख, ऐश्वर्य तथा प्रतिष्ठा का वृत्तान्त बताने से वे दृष्टान्त-वर्णित देवियों के समान पद प्राप्त करने की अभिलाषा करती हुई अनायास ही सन्मार्ग पर चलने का यत्न करती हैं।

दूसरी ओर यदि दृष्टान्त दूषित होते हैं तो वे शीघ्र ही कुत्सित वासनाओं को जागरित करके पुरुष को कुमार्ग पर घसीट ले जाते हैं। इसलिए प्रत्येक साहित्य में अच्छे-अच्छे शिक्षाप्रद रोचक दृष्टान्तों की पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता होती है। बच्चों की शिक्षा का सबसे प्रथम अंग उत्तम-उत्तम कथाओं का पढ़ना, पढ़ाना तथा सुनना, सुनाना होता है। छोटी आयु में दूषित वर्जनीय क़िस्से कहानियों के संसर्ग का परिणाम अत्यन्त शोचनीय, विषादपूर्ण तथा भयंकर होता है। बच्चे के कोमल मानस-पटल पर जो भाव अंकित कर दिये जाते हैं, वे सर्वदा के लिए, वहां अपना घर बना लेते हैं।

दृष्टान्तप्रदीपिनी शिक्षा की दृष्टि से हिन्दी-साहित्य का अमोल रत्न है। प्रस्तुत चतुर्थभाग के पूर्वार्द्ध में अत्यन्त मनोरंजक ग्यारा कथाओं का वर्णन है। इसमें संदेह नहीं कि स्थान-स्थान पर वर्णित कथाएँ मानुषिक दृष्टि से असम्भव प्रतीत होती हैं। दुराचारिणी स्त्री का घोड़ी हो जाना, मनुष्य का कुत्ता हो जाना या पत्थर बन जाना, सोने के पानी का झरना, गानेवाले वृक्ष तथा भूत, भविष्य का हाल बतानेवाली चिड़िया आदि का वृत्तान्त पढ़ने से, यह सब पृथिवी-तल पर प्राकृतिक नियमों के प्रतिकूल जान पड़ता है, पर इन अलौकिक बातों से दृष्टान्त की रोचकता तथा शिक्षा और भी बढ़ जाती है। अच्छे आदमियों के दुःखों का परियों, अलौकिक वृक्षों और चिड़ियों द्वारा निवारण तथा दुष्ट पुरुषों को अमानुषिक शक्तियों द्वारा दण्ड प्राप्त होने से यह उपदेश मिलता है कि दूसरों की भलाई करने से, उत्तम कार्यों में मन लगाने से ईश्वरीय शक्तियाँ मनुष्य की सहायता कर उसे अवश्यमेव समृद्धिशाली, ऐश्वर्यवान् तथा सुखी बना देती हैं, तथा जो कपट से दूसरों का धन अपहरण कर सुखी होता है या किसी अन्य प्रकार से दूसरों को दुख देता है, उसे किसी न किसी चक्र में पड़कर शीघ्र ही दुःख उठाना तथा पश्चात्ताप करना पड़ता है।

प्रस्तुत पुस्तक का एक-एक दृष्टान्त अद्भुत, अत्यन्त आश्चर्यजनक तथा स्थान-स्थान पर रोमांचकारी घटनाओं से भरा है। प्रत्येक दृष्टान्त के पढ़ने से "जैसी करनी वैसी भरनी" यह प्रत्यक्ष हो जाता है। यह पुस्तक बालकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। माता-पिताओं को चाहिए कि इसकी कथाओं को आद्योपान्त पढ़ जावें तथा अवसर पड़ने पर इन्हीं शिक्षाप्रद कहानियों को अपने बालकों के मनोरंजनार्थ सुनाया करें।

भद्रदेव शुक्ल

विषय-सूची

दृष्टांतप्रदीपिनी सटीक

चतुर्थ भाग

पूर्वार्द्ध

भगवत्तदीयम्मङ्गलाचरणमिदमार्य्ययाह

द्विरदाननसुषमालय प्रत्यूहौघापहार विश्वेश ।
गौरीसुतमोदकभुङ्मङ्गलकर्तृगणाधीशम् ॥ १ ॥
ध्यात्वा तव पदपद्मौ शुक्लोदेवीसहायशम्र्माज्ञः ॥
कुरुते चतुर्थभागं सदृष्टान्तप्रदीपिन्याः ॥ २ ॥

प्रथम प्रदीप

निष्कग्राही यश्चपेटेन सार्कं
वृद्धश्चाथोमुञ्जकर्त्ताद्वितीयः ।
अश्वारूढश्चापिहारूरसीद-
स्याग्रेगाथावर्णयांचक्रुरेवम् ॥

अर्थ—एक वृद्ध, जो धौल खाकर भीख लेता था दूसरा मूँज

बटनेवाला, जो अकस्मात् ही महाधनी हो गया था, और तीसरा सवार, जो अपनी घोड़ी को बार बार मारता था, इन तीनों ने अपनी अपनी कहानी बादशाह हारूँरसीद के आगे इस प्रकार वर्णन की।

एक दिन खलीफ़ा हारूँरसीद कुछ चिंतित होकर अपने महल में बैठा था। बादशाह का भेदिया वज़ीर जाफ़र खलीफ़ा को चिंतित देखकर चुपचाप हाथ बाँधे खड़ा रहा। थोड़ी देर पीछे खलीफ़ा ने आँखें खोल उसकी ओर देखा और फिर उसी तरह चिंता में निमग्न हो गया। मंत्री ने अपने स्वामी की ऐसी दशा देख विनय की हे बादशाह! क्या यह दासानुदास आपकी इस चिंता का हाल जान सकता है?

खलीफ़ा हारूँरसीद ने कहा, "मुझे कभी कभी चिंता हो जाती है। मैं चाहता हूँ कि तू कोई ऐसी बात विचार जिससे चिंता दूर हो।"

मंत्री—मुझे मालूम है कि आपका सदा से यह नियम है कि आप बहुधा वेष बदल अन्यायियों और दुष्टों के हाल मालूम करने को नगर की सीमाओं और गलियों में घूमा करते हैं और आज का दिन आपने इसी कार्य के लिये नियत भी किया है। अच्छा हो, अपने नियमानुसार वही कार्य कीजिए, जिससे आपके मन का सब शोच जाता रहे और प्रजा के हाल मालूम होने से चित्त आपका संतुष्ट हो।

खलीफ़ा—ठीक है। मैं इस बात को भूल गया था। तू भी अपना वेष बदलकर शीघ्र आ। मैं भी वेष बदलता हूँ।

फिर वे दोनों वेष बदलकर बाग़ के चोर दरवाज़े से निकल-

कर नगर के चहुँओर घूमे। तदनंतर नाव पर सवार हो, नदी के पार जाकर वहाँ की बस्ती देखने लगे। उस पार से फिरती समय पुल की ओर आये। वहाँ एक अंधे भिक्षुक ने खलीफ़ा से भिक्षा माँगी। खलीफ़ा ने एक अशरफ़ी जेब से निकाल उसके हाथ में रख दी। उस अंधे ने खलीफ़ा का हाथ पकड़ लिया और आशीर्वाद देकर कहने लगा, "हे सत्पुरुष! तूने मुझे अशरफ़ी दी, तू मुझे एक धौल भी मार, क्योंकि मैं इसी दंड के योग्य हूँ।"

यह कहके उसने खलीफ़ा का हाथ छोड़ दिया और कपड़ा पकड़ा कि कहीं ऐसा न हो कि बिना धौल मारे वह चला जाय। खलीफ़ा उसकी इस इच्छा से आश्चर्य में हुआ और बोला, "हे भलेमानस! मुझसे इस बात की आशा मत रख। मैं क्योंकर अपने पुण्य का फल नष्ट करूँ।" यह कहके खलीफ़ा ने चाहा कि अंधे से वस्त्र छुड़ाकर चला जाऊँ। पर अंधे ने दामन को ज़ोर से पकड़ा और कहने लगा कि मेरी इस ढिठाई को क्षमा कर और जो मैं कहता हूँ सो कर अर्थात् एक धौल मेरे सिर पर मार। नहीं, तो अपनी अशरफ़ी फेर ले। मुझे धौल खाये बिना तेरी अशरफ़ी लेना स्वीकार नहीं, क्योंकि मैंने ईश्वर से जो प्रतिज्ञा की है उसे उल्लंघन नहीं कर सका। जो तू इसका कारण सुनेगा तो जानेगा कि मेरा अपराध बहुत बड़ा है। खलीफ़ा ने लाचार हो, धीरे से एक धौल उसके सिर पर मारी। वह भिक्षुक वस्त्र छोड़कर शुभ आशीर्वाद देने लगा।

खलीफ़ा और वज़ीर दोनों आगे बढ़े। थोड़ी दूर जाकर खलीफ़ा ने वज़ीर से कहा कि मैं इस भिक्षुक से इसकी प्रतिज्ञा का कारण जानना चाहता हूँ। तू जा और उससे कह कि वह

मनुष्य जिसने तुझे अशरफ़ी दी थी, खलीफ़ा है। कल सुबह तुझे खलीफ़ा की सभा में जाना होगा। वह तुझसे कुछ पूछेगा।

मंत्री ने अंधे भिक्षुक के पास जाकर उसे एक अशरफ़ी दी। उसने उससे भी धौल मारने को कहा। वज़ीर ने धीरे से उसे धौल लगा खलीफ़ा की आज्ञा को सुनाया और खलीफ़ा के पास लौट आया।

फिर दोनों नगर में गये तो क्या देखा कि मैदान में एक तरुण मनुष्य दिव्यवस्त्र पहिने एक घोड़ी पर सवार है और निर्दयता से घोड़ी को चाबुक और एँड़ें मार दुःख देता है। दौड़ते दौड़ते उस घोड़ी के मुख में रुधिर और झाग भर गया है। खलीफ़ा, उसके कठोर चित्त और निर्दयता को देख, आश्चर्य में हुआ और उसका कारण मालूम करने को वहाँ खड़ा हो गया। और तमाशाई जो वहाँ खड़े होके देख रहे थे उनसे घोड़ी को इतना मारने और दौड़ाने का कारण पूछा, तो उन्होंने कहा कि हम रोज़ इसको इसी मैदान में इसी समय देखते हैं। यह अपनी घोड़ी को इसी विधि मार मार कर सैंकड़ों चक्कर देता है। परंतु हमें कुछ मालूम नहीं कि यह मनुष्य कौन है और इस घोड़ी के मारने और दौड़ाने से उसका क्या प्रयोजन है। खलीफ़ा ने जाफ़र से कहा कि मैं आगे जाता हूँ। तू इस सवार को जाके आज्ञा दे कि कल उसी समय, जो भिक्षुक के लिये नियत किया है, मेरी सभा में आवे। उसने वही किया।

फिर वज़ीर और खलीफ़ा एक गली में गये, जिसमें कई वार पहिले भी गये थे। वहाँ बड़ा भारी अतिस्वच्छ महल बना हुआ देख खलीफ़ा ने समझा कि यह महल मेरे किसी सेवक का

बनाया हुआ होगा। तब वज़ीर से पूछा कि यह घर किसका है? उसने विनय की कि मुझे मालूम नहीं। जो आज्ञा हो, तो मैं यहाँ के वासियों से पूछूँ। वज़ीर ने वहाँ के रहनेवालों से पूछा कि यह नवीन और सुंदर महल किसका है? उन्होंने कहा कि यह महल ख़्वाजहहसन हव्वाल का है। हव्वाल रस्सी बटनेवाले को कहते हैं। यह मनुष्य सदैव रस्सी बटा करता था और रस्सी बेंचकर कठिनता से अपना निर्वाह करता था। परंतु यह नहीं जानते कि उसे इतना द्रव्य कहाँ से प्राप्त हुआ, जिससे उसने इतना विशाल महल बनवाया है। और बड़े आनंद से कालक्षेप करता है।

ख़लीफ़ा ने वज़ीर से कहा कि मैं ख़्वाजहहसन हव्वाल को देखना चाहता हूँ। तू जाके उससे कह कि कल उसी समय, जो उन दोनों के लिये नियत है, मेरी सभा में आवें। उसने तुरंत अपने स्वामी की आज्ञा प्रतिपालन की।

दूसरे दिन सवेरे जब ख़लीफ़ा भोर की निमाज़ पढ़ तख़्त पर सुशोभित हुआ, तब वज़ीर तीनों मनुष्यों को उसके सम्मुख ले गया। उन्होंने तख़्त के पाये को चूमा। ख़लीफ़ा ने पहिले उस अंधे भिक्षुक से पूछा, "तेरा क्या नाम है?" उसने उत्तर दिया "मेरा नाम बाबा अब्दुल्ला है।"

ख़लीफ़ा—मैंने कल तुझे एक अशरफ़ी दी थी तूने उसे लेकर क्यों कहा कि मुझे एक धौल मारो या अपनी अशरफ़ी लौटा लो और तूने यह प्रतिज्ञा क्यों की है, यह मैं जानना चाहता हूँ? अब्दुल्ला ने अपना सिर ख़लीफ़ा के तख़्त के सामने पृथ्वी से लगाया और उठकर कहने लगा, "अय शाहनशाह,

प्रथम मेरी यह विनय है कि वह ढिठाई जो कल मैंने आपसे की थी क्षमा हो; क्योंकि मैंने आपको पहिचाना नहीं था। अब मैं इस प्रतिज्ञा का वृत्तांत विस्तारपूर्वक आपके सम्मुख वर्णन करता हूँ; उससे आपको अवश्य विदित होगा कि मैं निस्संदेह ऐसे दंड के योग्य हूँ।

द्वितीय प्रदीप

दत्ते समस्तद्रव्येऽपि योगिनातिदयालुना।
अन्धीभूतः पुनर्लोभाच्चपेटग्राह्यहं यतः॥

अत्यंत दयालु योगी के सब द्रव्य देने पर भी मैंने लोभ से उससे फिर मलहम की पुड़िया माँग के अपनी दोनों आँखें खोईं, इससे मैं चपेटग्राही अर्थात् थाप खाकर भीख लेता हूँ।

अंधे बाबा अब्दुल्ला का वृत्तांत

बाबा अब्दुल्ला ने खलीफ़ा के सम्मुख अपना वृत्तांत इस विधि वर्णन किया। मेरा उत्पत्तिस्थल बग़दादनगर है। जब मेरे मातापिता मरे तो उनका द्रव्य मेरे हाथ लगा। यद्यपि उतना द्रव्य मेरे जन्म भर को बहुत था। परंतु मैंने उसकी कुछ भी क़दर न की। थोड़े ही काल में उसे लंपटता में खर्च कर डाला। जब थोड़ा सा बचा तो उस धन के बढ़ने के लिए रात दिन परिश्रम करता रहा। यहाँ तक कि धीरे धीरे मैंने अस्सी ऊँट इकट्ठे किये। उन्हें सौदागरों को दिया करता। उन ऊँटों के किराये से जो लाभ होता, उससे और ऊँटों को खरीदता और उन्हें राज्य में लिये फिरता और आप उन ऊँटों के साथ रहता। थोड़े दिनों के लाभ से मैंने समझा कि थोड़े ही काल में

मैं महाधनवान् हो जाऊँगा। एक बार मैं बासरानगर से, जहाँ व्यापारियों ने अपनी वस्तु को हिंदुस्तान ले जाने के इरादे से लादा था, असबाब पहुँचाके खाली ऊँट लिये हुए बुग़दाद को लौटा आता था कि मार्ग में मैंने अपने ऊँटों को एक वन में, जो बस्ती से दूर था, चरने के लिये छोड़ दिया और सुंदर हरी घास देख उनके पाँव रस्सी से बाँध दिये। इतने में एक योगी जो पैदल बासरानगर को जाता था, वहाँ आया और मेरे पास बैठा। मैंने उससे पूछा, "तुम किधर से आते हो और कहाँ जाओगे?" उस योगी ने भी मुझसे यही प्रश्न किया। हमने परस्पर अपने आवागमन का हाल वर्णन किया और भोजन निकाल-कर खाने लगे। भोजन के बाद उससे मेरी बहुत बातें हुईं। योगी ने मुझसे कहा कि यहाँ से पास ही एक स्थान पर असंख्य द्रव्य का कोष है। जो तुम अपने अस्सी ऊँटों को केवल अशरफ़ी और रत्नों से ही भर लोगे तो भी उसमें कुछ कम न होगा। वह बेप्रमाण कोष वैसा ही भरा हुआ दीखेगा। यह सुनते ही मैं बड़ा प्रसन्न हुआ और उस योगी का वेष देखकर, उस पर विश्वास हो गया, और उठके उसके गले मिला और कहा, "हे महात्मा, तुमको संसारी धन की कुछ परवाह नहीं और जगत् के सब कार्य से तुम कुछ काम नहीं रखते। आश्चर्य नहीं, आपको उस द्रव्य का हाल मालूम हो। मुझे वह स्थान बताओ, तो मैं अस्सी ऊँटों को वहाँ से भरकर, आपको श्रमफल में एक ऊँट दूँ। मैं जानता हूँ कि आपको उसकी कुछ इच्छा नहीं। कहने को यह बात कही, परंतु मनमें इस बात का बड़ा खेद हुआ। अशरफ़ी और रत्नों का भरा हुआ एक ऊँट देना उचित नहीं। फिर

सोचा कि उन्नासी ऊँट मेरे वास्ते बहुत हैं। कभी मैं पश्चात्ताप करता और कभी अपने मन को समझाता। उस योगी ने मुझे कमहिम्मत और लोभी विचारके कहा, "मैं एक ऊँट के वास्ते द्रव्य नहीं बताता। तुम सब ऊँटों को ले चलो और हम तुम उस द्रव्य को उन पर लादें, उसके आधे मुझको दो और आधे तुम लो। चालीस ऊँटों से तुम हज़ारों ऊँट पैदा कर सकते हो!" मैंने कहा, "बहुत अच्छा। मैं आपकी प्रसन्नता से बाहर नहीं। जो आप आज्ञा दें, मुझे स्वीकार है। मैंने सोचा कि यदि चालीस ऊँट द्रव्य मुझे मिला, तो वह कई पीढ़ियों को काफ़ी होगा, जो अंगीकार नहीं करता, तो जन्मभर पछताता रहूँगा।"

उस योगी की बात मान, उसके साथ हुआ और थोड़ी दूर जाकर, दोनों एक पहाड़ के दर्रे में पहुँचे, जिसका मार्ग अति सूक्ष्म था। ऊँटों की पंक्ति बाँध उसमें ले गये। थोड़ी देर के पीछे मार्ग कुछ चौड़ा मिला। वहाँ से सब आनंदपूर्वक निकल गये। इसके अनंतर दो पहाड़ दृष्टि पड़े, जिनका वह दर्रा था। उस मार्ग में ऊँचान निचान बहुत था। कोई मनुष्य वहाँ न था, जो हमको देखता। इसलिये निशंक होकर वहाँ पहुँचे। योगी ने कहा अब यहाँ पर ऊँटों को बैठाकर मेरे साथ आओ। मैं ऊँटों को बैठाकर वहाँ गया। थोड़ी दूर जाके योगी ने पथरी और लोहा अपने पास से निकाल, कुछ थोड़ासा काष्ठ एकत्र कर उसको जलाया। अग्नि प्रबल कर उस पर कोई सुगंधित वस्तु डाली और कोई मंत्र पढ़ा, जिसको मैं न समझता था। उसके पढ़ते ही एक बड़ा धुंधाकार धुआँ उठा और ऊपर जाके फट गया। उस धुएँ में, दोनों पहाड़ों के मध्य में एक टीला दृष्टि पड़ा और हमारी जगह से

वहाँ तक एक रस्ता बनगया और द्वार खुला हुआ दृष्टि पड़ा। उसके भीतर एक बड़ी कन्दरा दिखाई दी, जिसमें एक विशाल महल जिन्नोंका बनाया हुआ दिखाई दिया। मनुष्य ऐसा भवन नहीं बना सक्के। जब उस महलमें जाकर देखा, तो उसमें असंख्य द्रव्य भरा हुआ था। मैं अशरफ़ियों के ढेर को देख ऐसा झपटा जैसे गृध्र अपने शिकार पर झपटता है और जितना चाहा मैंने ऊँटों की खुरजियोंमें भरलिया। वह योगी भी इसी काममें लगा, परन्तु वह केवल रत्नों को उठाकर भरता और मुझसे भी रत्न भरने को कहता सो मैं भी अशरफ़ियों को छोड़ बहुमूल्य रत्न भरने लगा। निदान जब हम बहुतसा धन खुरजियों में भर, ऊँटों पर लादचुके और बाहर निकलने की इच्छा की, तो वह योगी फिर द्वार खोलकर, उसी कोष के भीतर, जहाँ हज़ारों वस्तु अतिसुन्दर सुवर्ण की नवीन प्रकारकी रक्खीहुई थीं, गया और वहांसे एक लकड़ी की डिबिया, जिसमें मल्हम था एक संदूक़चे में से निकालकर लेली और मुझको दिखाकर उसने अपनी जेबमें रखली। फिर वह अग्निमें सुगन्धित वस्तु डालकर मंत्र पढ़ने लगा, जिससे वह द्वार मुँदगया और वह टीला जैसा कि पहिले दीखता था, वैसाही दिखलाई देनेलगा।

फिर हमने परस्पर उन ऊँटोंको आधे २ बांट लिये और उसी सूक्ष्ममार्ग में से एक एक ऊँट करके निकाले। जब उस पहाड़के दर्रेसे बाहर निकले और खुला वन पाके विदा हुये, तब वह योगी बासरा को सिधारा और मैं बुगदाद को चला। बिदा होते समय मैंने उस योगी का बहुतसा गुणानुवाद किया, क्योंकि उसने करोड़ों का द्रव्य दिलाया था।

बिदा होकर मैं, ऊँट लेकर, कुछ क़दम आगे गया था कि

शैतान ने मेरे मन में यह बात डाली और लोभ से यह विचार किया कि यह योगी अकेला है अर्थात् इसके कुटुंब आदि नहीं है और संसार के कामों से भी कुछ प्रयोजन नहीं रखताहै। इतने धन के भरे हुये ऊँट यह क्या करेगा? रखवारी करने से उसको ईश्वर की वन्दना में विघ्न पड़ेगा। उत्तम है कि कुछ ऊँट इससे और ले लिया जाय। इस बात को मन में ठान अपने ऊँटों को बैठाया और उनके पाँव बाँध, वहाँ से उसी योगी को पुकारता हुआ चला। वह मेरा शब्द सुन ठहर गया। जब मैं निकट पहुँचा, तो उससे कहा कि मैंने आपको विदा करके शोचा कि तुम योगी हो और जगत् से विरक्त हो। इस द्रव्य के ले जाने से तुम्हारे भजन स्मरण में विघ्न पड़ेगा। इसकी रक्षा करनी पड़ेगी। इस-से उत्तम है, कि ये ऊँट मुझको दे डालो। उसने कहा, "तू सत्य कहता है। इतने ऊँटों के रखने से अवश्य विघ्न होगा। जितने तू चाहे इनमें से ले ले, मैंने प्रथम से यह बात न विचारी थी। वह ईश्वर परमात्मा तुझे आनंद रक्खे। तूने मुझे बहुत अच्छी बात बताई।" मैं दश ऊँट उस योगी के बाग में से लेकर आगे को चलना चाहता था, अकस्मात् फिर मेरे मन में यह आई कि योगी को दश ऊँट के देने से कुछ खेद न हुआ। दश ऊँट और इससे लेने चाहिये। फिर उस योगी के समीप जाकर मैंने कहा "तीस ऊँटों की रखवारी और सेवा तुम से बन न पड़ेगी। उत्तम है कि दश ऊँट मुझे और दो।" योगी ने कहा, "अच्छा बाबा, जो तेरी यही इच्छा है, तो दश इनमें से और ले, बीस ऊँट मेरे वास्ते बहुत हैं।" मैं दश ऊंट और योगी के भाग में से ले गया।

जब उन बीसों को मैंने अपनी पंक्ति में मिलाया तो मुझे

लोभ अधिक हुआ और चाहा कि दश ऊँट और उससे लूँ। निदान फिर उसके पास गया और कह सुन के दश ऊँट और, और शेष दश ऊँट भी उससे ले दमदिलासा देके चला आया। योगी ने सबके सब ऊँट हँसी खुशी से मुझको दे दिये और वस्त्र झाड़कर उठ खड़ा हुआ और चलने की इच्छा की, परन्तु तृष्णा ने मुझे न छोड़ा। वह मल्हम की डिबिया भी योगी से लेनी चाहिये, निदान फिर मैंने ठहरकर उस योगी से कहा तुम इस डिबिया को जिसमें मल्हम है, अपने पास रखकर क्या करोगे ? उसे भी कृपा करके मुझे देदो। उसने उसको देने से इन्कार किया। इससे मुझे अधिक अभिलाषा हुई और मैंने अपने मन में ठाना कि यदि वह योगी प्रसन्नता से डिबिया देवे, तो भला नहीं, तो जोरसे उससे ले लूँगा। योगीने डिबिया अपनी जेबसे निकाली और कहने लगा, "भाई जो तुम्हारी प्रसन्नता इसी के लेनेमें है, तो ले लो; परंतु तुझे उचित है कि इस मल्हम का गुण मुझसे पूछले।" मैंने उस डिबिया में मल्हम भरा देख: उस योगी से कहा "जहाँ तुमने मुझ पर इतनी कृपा और उपकार किए हैं, तो इसका गुण भी मुझे बता दीजिये।" उसने कहा, "इसके गुण अद्भुत और विचित्र हैं। जो तुम इस मल्हम में से थोड़ा सा अपने बायें नेत्रमें लगाओ, तो तुम्हें संसार भर के कोप दिखाई देंगे। और जो इसी मल्हम को अपनी दाहिनी आँखमें लगाओ, तो तुम दोनों आँखों से अंधे हो जाओगे।" मैंने परीक्षा के लिये उस डिबिया को योगी के हाथमें देकर कहा, "तुम इसके गुण को भली भाँति जानते हो, अपने हाथ से मल्हम मेरे बायें नेत्र में लगा दो।" उस योगीने मेरी आँख बंद करके थोड़ा सा मल्हम

उस डिबिया से ले मेरे पलकपर लगादिया। मल्हमके लगाते ही मैंने नेत्र खोल चहूँ ओर देखा कि हजारों गड़े हुये कोष, जैसा कि उस योगी ने कहा था, दृष्टि पड़ने लगे। तब मैंने दाहिनी आँख को मूँदकर कहा कि अब तुम मेरे इस नेत्र में भी मल्हम लगा दो। उसने कहा, "मैंने तुझे पहिले ही बता दिया था कि इसे नेत्रमें लगाने से तुम अंधे होजाओगे।" यद्यपि वह योगी सत्य कहता था, परंतु तृष्णा से मैंने उसके वाक्य को झूठ समझा और विचार किया कि दाहिने नेत्र में लगाने से कुछ अधिक लाभ होगा। यह योगी मुझे बहँका कर, चाहता है कि मुझे वह लाभ उठाने न दे। मैंने मुस्करा के उससे कहा, "तुम मुझे धोखा देते हो।" उसने कहा, "मुझे ईश्वर की सौगंद है, इस मल्हम में यही गुण है। हे प्यारे भाई! मेरे वचन को सच जान। मैंने तुझ से झूठ नहीं कहा।" मैंने उसकी बात को न माना और यही जाना कि छल से वह मुझे उसके अपूर्व गुण से अपरिचित रखता है; यह समझ मैंने फिर उससे मल्हम लगाने को कहा। उसने न माना और कहने लगा कि मैंने तेरे साथ भलाई की है। अब बुराई क्यों करूँ। निश्चय जान कि इस बात से जन्म भर तू दुःख और कष्ट भोगेगा, इस वास्ते इस विचार को छोड़ दे और मेरे कहने को मान। जैसे-जैसे वह योगी यह बातें कहता था, उतनी ही मेरी लालसा अधिक होती थी। निदान मैंने उसे परमेश्वर की सौगंद दिला कर कहा, "हे प्यारे योगी! ज़िस वस्तु को मैंने तुझसे माँगा, वह सब पाया। यह मेरी अंत की प्रार्थना है। दयाकर इस इच्छा को भी पूर्ण कर और जो कुछ मुझ पर दुःख होगा उससे तुम अलग रहो। तुम्हें दोष न लगाऊंगा।

उसने कुछ न माना; परंतु मेरे पीछे पड़ने से लाचार होकर थोड़ा सा वह मरहम मेरी दाहिनी आँख की पलक पर लगादिया। जब मैंने आँखे खोलीं, तो दोनों आँखों से अपने को अंधा पाया। अँधियारे के सिवाय कुछ भी प्रतीत न हुआ। तब से अबतक मैं अंधा हूँ। फिर उस योगी से मैं बोला, "हे योगी! जो तू कहता था, सोई हुआ। उसे बहुतसी गालियाँ देकर कहा कि जो तू मुझे यह द्रव्य न दिलाता तो उत्तम था। अब यह सब द्रव्य और रत्नादिक मेरे किस काम के हैं। तू चालिस ऊँट अपने भागके लेजा और मुझे अच्छा कर।" योगी ने उत्तर दिया कि मेरा इसमें क्या अपराध है। मैंने तेरे साथ ऐसी भलाई की थी कि कभी किसी ने किसी के साथ न की हो; परंतु तू ने मेरा उपदेश न माना। तेरा मलिन मन इतने द्रव्य के पाने से भी न भरा और तेरी इच्छा न गई और मेरे वचन न माने। छल समझा। अब इसका क्या उपायहै? अब तू सुजाखा नहीं हो सक्ता। फिर मैंने अत्यंत विनय करके कहा, "हे योगी! इन अस्सी ऊँटों को जो अशरफ़ी और रत्नों से लदे हैं ले जा। मैंने प्रसन्नता से तुझे दिये। जो तुझसे होसके तो ईश्वर के वास्ते मेरे नेत्रों में ज्योति दे।"

उस योगी ने फिर मेरी बात का उत्तर न दिया और मुझे उसी दुर्दशा और कष्ट में छोड़कर और अस्सी ऊँट लेकर बासरा देश की ओर चल दिया। मैं कितनाही चिल्लाया कि मुझे भी इस वन से अपने साथ ले चल। मार्ग में किसी दूसरे व्यापारी के साथ हो लूँगा; परंतु उसने कुछ भी मेरी बात न सुनी। निदान मैं उस योगी के चले जाने के पीछे अपने नेत्रों की ज्योति और धन खोकर, क्षुधा और तृषा से मरने लगा। संयोगवश दूसरे दिन

बासरा देश के व्यापारियों का समूह जो बुग़दाद को जाता था, उधर निकला। मुझको आपत्ति में देख, दया से, बुग़दाद ले आये। मुझे इस नगर में सिवाय भीख माँगकर अपना कालक्षेप करके और कुछ न बन पड़ा। निदान भीख माँगनी आरंभ करके यह प्रतिज्ञा की कि इस तृष्णा का यह दंड है कि जो कोई मुझ पर दया कर कुछ दे, तो उचित है कि एक धौल भी मेरे शिर पर मारे। यही कारण था कि मैंने आपसे कल इस बात में तकरार की थी।

जब उस वृद्ध अब्दुल्ला ने अपना वृत्तांत समाप्त किया, तो खलीफ़ा ने उससे कहा, "हे भिक्षुक! तेरा अपराध बड़ा है, ईश्वर उसको क्षमा करे। अब तुमको उचित है कि अपनी जाति के फ़कीरों से अपने अपराध को कहो कि तुमको आशीर्वाद दें। अब तुम अपने निर्वाह की कुछ चिंता मत करो। तुम्हारे वास्ते मैं पाँच रुपये रोज़ अपने कोष से नियत किये देता हूं। वह जन्म भर तुमको पहुँचते जायँगे। अब तुम नगर में भिक्षा के लिये मत जाया करो।

यह सुन उसने खलीफ़ा को प्रणाम किया और कहने लगा जो कुछ आपने आज्ञा की मुझे स्वीकार है।

जब खलीफ़ा भिक्षुक की कहानी सुन चुका तो उस मनुष्य से जो हर दिन अपनी घोड़ी पर सवार हो के उसे दौड़ाता और मारता था, उससे उसका नाम पूछा। उसने विनय की मेरा नाम सीदीनैमान है। खलीफ़ा ने कहा, "हमने बहुत से सवारों को देखा कि वह घोड़ों की सवारी सीखने के लिये बहुत श्रम करते हैं। मैंने भी घोड़ों पर सवारहो घोड़ों को फेरा है। परंतु मैंने किसी

को तुम्हारी तरह अपनी घोड़ी को दौड़ाते नहीं देखा। कल मैंने तुमको देखा कि तुम अपनी घोड़ी को चाबुक और एड़ें अत्यन्त निर्दयता से मारते थे। सब मनुष्यों को यह दशा देख अत्यन्त आश्चर्य्य होता था और उन सबसे अधिक मैं आश्चर्य्यित था। यहाँतक कि मैंने उस समूह में खड़े होकर, इसका कारण, वहाँ के मनुष्यों से पूछा; पर कोई न बता सका। इतना ही मालूम हुआ कि प्रति दिन इसी भाँति तुम अपनी घोड़ी को कष्ट देते हो। अब मैं तुमसे इसका कारण पूछता हूँ। उचित है कि तुम सत्य सत्य कहो।

सीदीनैमान ने जाना कि ख़लीफ़ा इस हालके सुनने के लिये बहुत हठ करता है और कहे विना किसी भाँति मेरा छुटकारा नहीं हो सक्ता। इस प्रश्न के सुनते ही उसके मुख का वर्ण बदल गया और ख़लीफ़ा के भयसे चुपचाप चित्रवत् खड़ा रह गया। ख़लीफ़ा ने कहा, "सीदीनैमान डरो मत। उसका कारण वर्णन कर। मुझे अपने मित्रों के समान समझ जिस तरह उनसे बातचीत और अपना हाल कहता है, मुझसे भी कह दे। उस भेदके वर्णन में तुझको किसी बातका भय हो, तो मैंने उसे क्षमा किया। सीदीनैमान को ख़लीफ़ा के धैर्य देने से कुछ बोलने का साहस हुआ। हाथ बाँध के उसने विनय किया कि मैंने इस विषय में अपनी जाति धर्म के विपरीत कोई काम नहीं किया है। इसलिये मैं आपकी आज्ञानुसार इस वृत्तांत को वर्णन करता हूं। अगर कोई अपराध मुझसे हुआ हो तो निःसंदेह मैं दण्ड के योग्य हूँ। मैं अपनी घोड़ी, जैसा कि आपने देखा, हर दिन घुमाया करता हूँ। आपको इस घोड़ी पर बड़ी दया आई और मेरा

इस भाँति से चक्कर देना आपको बुरा मालूम हुआ। यदि आप इसका कारण सुनेंगे तो यह दंड इसके लिये आप थोड़ा समझेंगे।

तृतीयप्रदीप

प्रत्यक्षमोदनं नात्ति परोक्षे प्रेतभक्षिणी।
पतिश्चक्रे स्वकं श्वानं डाकिनी वडवा ह्यभूत् ३॥

अर्थ—जो स्त्री पति के साथ में तो चावल भी गिन २ के खाती और एकांत में जाय मुरदे खाती थी और जिसने पति को श्वान बनाया। इससे वह घोड़ी हुई और उसको ताड़ना दीगई।

सीदीनैमान और उसकी घोड़ी की कहानी।

हे बादशाह! मेरे माता पिता अपने मरने के पीछे इतना धन छोड़ गये थे कि वह मेरे जन्म भर को कुछ कम न था। मैं आनंदपूर्वक अपना निर्वाह करता था। किसी भाँति की चिंता न रखता था। एक दिन तरुणावस्था के वेग में यह विचार उपजा कि एक सुंदर स्त्री से विवाह करूं, परंतु ईश्वर ने न चाहा कि कोई अच्छी स्त्री मुझको मिले, जो दुःख सुख की साथी हो। संयोगवश मैंने एक स्त्री के साथ, जो अति रूपवान् छविधाम थी, विवाह किया। दूसरे ही दिन से उसकी दुष्टता का हाल मुझ पर खुलने लगा। हे स्वामी! आपको भली भाँति मालूम है कि मेरी जाति में विवाह के पहिले स्त्री के देखने की रीति नहीं है और विवाह के पहिले पति स्त्री के रूप और अंतःकरण की अशुद्धता को किसी तरह नहीं जान सका। हर तरह उसी स्त्री के साथ प्रसन्नतापूर्वक रहना चाहिये। चाहे वह सुशील हो या उद्दंड। निदान पहिले उसके अनूप रूप को देख अत्यंत प्रसन्न हुआ और

ईश्वर का धन्यवाद किया और प्रसन्नता से रात्रि भर उसके साथ सोया।

विवाह के दूसरे दिन जब उसके और मेरे लिये भोजन लाया गया, तो मैंने अपनी स्त्री को भी बुलवा भेजा। बहुत देर बाद वह भोजन के पास आ बैठी। संयोग से उस समय हम पुलाव भोजन करने लगे और मैं अपने देशकी रीति के अनुसार चमचे से खाने लगा। वह अपने जेब से कान कुरेदनी निकाल उससे चावल का एक-एक दाना उठा २ कर खाने लगी। यह देख मैं आश्चर्य में हुआ और उसका नाम लेकर कहा, "हे सुंदरी! क्या तुमने अपने संबंधियों से भोजन की यही रीति सीखी है? या तुम अन्न के दाने गिनती हो? क्या फिर और भोजन करोगी? मैं जानता हूँ कि तुमने इतने समय में चावल के दश-बीस दानों से अधिक न खाये होंगे, जो तुम सरफ़े की राह से नहीं खाती हो, तो ईश्वर ने मुझे बहुत कुछ दिया है, तुम उसका कुछ विचार मत करो। हे सुंदरी! जो भोजन करने की रीति है और जिस तरह से मैं खाता हूँ, भोजन करो।" परंतु उसने उत्तर न दिया और उसी प्रकार पात्र में से एक-एक दाना उठा २ कर खाने लगी। किंतु मेरे खिजाने के लिये वह एक २ दाना भी देर में उठाने लगी। जब शीरमाल और वाक़रखानी खाने लगे, तो उसने थोड़ा सा रोटी का छिलका तोड़कर बड़े नखरे से अपने मुख में डाला। निदान इतना खाया कि उतने भोजन से चिड़िया भी तृप्त न होती। मैं उसकी चाल से अति आश्चर्य में हुआ और बिचारा कि शायद इसे पुरुष के साथ भोजन करते लज्जा आती हो, आगे मेरे साथ खाया करेगी। यह भी

सोचा कि कदाचित् वह भोजन कर चुकी हो। इसलिये इस समय उसे रुचि नहीं है, अथवा यह समझा कि उसको अकेले खाने का अभ्यास है। इन सब बातों को विचारकर मैंने उससे कुछ न कहा और भोजन करके मैदान में घूमने गया। उसके न खाने का सोच कुछ मेरे मन में न रहा। दूसरे समय जब भोजन करने का समय आया तो उसने उसी तरह खाया जैसा पहिले भोजन किया था, किंतु हर दिन उसी भाँति भोजन करती थी।

मुझे उसकी यह दशा देख अधिक अचंभा हुआ कि यह स्त्री भोजन विना कैसे जीती है।

एक रात्रि को वह मुझे सोया हुआ जान, चुपके से उठी; पर उस समय मैं जागता था। मैंने क्या देखा कि वह बड़ी सावधानी से उठी जिसमें मुझे उसका उठना जान न पड़े। मैं आश्चर्य में हुआ कि यह इस समय क्यों अपना आराम छोड़ मेरे पास से उठी। मैंने चाहा कि इसके हाल को मालूम करूँ। वह बाहर चली। मैं भी शीघ्र अपनी शय्या से उठ, वस्त्रों को काँधे पर डाल, उसके पीछे चला। घरकी खिड़की से देखने लगा कि वह किधर को जाती है। वह आगे बढ़के गली की ओर दरवाजा खोल बाहर गई। मैं भी उसी द्वार से, जो उसने बंद न किया था, बाहर निकला और भली भाँति चंद्रमा की चाँदनी में उसे देखता हुआ, उसके पीछे हो लिया। चलते २ वह श्मशान में पहुँची, जो हमारे घर से निकट था। मैं भी वहाँ दीवार से लगके इसी भाँति खड़ा हो गया कि उसे भली प्रकार देखसकूँ और वह मुझे न देख सके। वहाँ क्या देखता हूँ कि वह एक प्रेत के साथ जा बैठी है। हे प्रजापालक! आप जानते हैं कि प्रेत या तो शैतान की सृष्टि

हैं वा एक प्रकार के भूत हैं, जो अके दुके यात्री पाते हैं, तो उन को डसकर मार खाते हैं और जो वह किसी दिन विदेशी नहीं पाते तो रात्रि को कबरों में से मुर्दे निकालकर खाते हैं। मैं अपनी स्त्री को प्रेत के साथ बैठे देख भयभीत हुआ और आश्चर्य में हुआ। फिर उन्होंने मिलकर एक लोथ, जो उसी दिन गाड़ी गई थी, कबर से खोदकर निकाली और उसका मांस काट-काटकर खाने और अति प्रसन्नता से परस्पर वार्त्ता करने लगे। मैं दूर खड़ा था, इस कारण उनकी बातें भली भाँति सुन न पड़ती थीं। पर उनकी दशा देख काँपने लगा। जब वे सब मांस खा चुके, तो उस मृतक की हड्डियाँ उसी कबर में डाल, उसे मिट्टी से तोप दिया। उन दोनों को वहीं छोड़कर मैं तुरंत अपने घर चला आया। द्वार को उसी प्रकार खुला छोड़ अपनी शय्या पर आ सो रहा। थोड़ी देर के पीछे उस स्त्री ने भी आकर अपने वस्त्र उतारे और मेरे साथ सो रही। उसका हाल मुझे मालूम नहीं हुआ; पर ऐसी मुर्दों के खानेवाली स्त्री के साथ सोना बहुत बुरा मालूम हुआ। उस समय तो मैं ग्लानिपूर्वक उस दुष्टा के साथ सो रहा।

मैं इतने में भोर की बाँग सुन जाग पड़ा। दिशा और स्नानादि से निश्चिंत हो, निमाज़ पढ़ और नियमित कृत्य कर बाग़ में गया। टहलते समय यह विचार आया कि किसी भाँति अपनी स्त्री को इस दुष्ट संगति से हटाऊँ और मुर्दों के खाने की प्रकृति छुड़ाऊँ। इसी विचार में मैं अपने घर भोजन के समय पहुँचा। मेरी स्त्री ने मुझे देखते ही मेरे सेवकों से भोजन मँगा रक्खा। जब हम खाने लगे, तो वह उसी भाँति एक २ दाना उठाकर खाने लगी। मैंने

उससे कहा, "हे सुंदरी ! जो तुम्हें किसी भोजन की रुचि न हो, तो देखो ईश्वर की कृपा से नाना भाँति के भोजन तैयार हैं और प्रतिदिन नए भोजन तैयार किये जाते हैं, जिसकी तुम्हें रुचि हो, उसे खाओ। जो तुमको यह खाने पसंद न हों, तो अपनी इच्छा के अनुसार भोजन पकवा लिया करो। इन बातों के सिवाय मैं तुमसे पूछता हूँ कि क्या संसार में कोई भोजन मुर्दों के मांस से उत्तम नहीं, जिसे तुम रुचिपूर्वक भक्षण करती हो।"

अभी मैंने यह सारी बात पूरी भी न की थी कि वह समझ गई कि रात्रि को मैंने उसका हाल देख लिया है। क्रोप के मारे उस का मुख लाल होगया और आँखें ऊपर चढ़गईं, और मुख में झाग भर आया। उसकी यह दशा देख मैं भयभीत हुआ। मेरी सुधि-बुधि बिसर गई। उसने उस क्रोध में एक जल-भरा गिलास, जो उसके पास रक्खा था, उठा लिया और जल में उँगलियाँ डुबो, कुछ शब्द पढ़ने लगी। फिर उन उँगलियों से मुझपर जल छिड़का और कहा, "हे दुष्ट ! तू ने मेरा भेद खोला है, इस अपराध का दंड तू भुगत और कुत्ता बनजा।"

उसके इतना कहते ही मैं कुत्ता बन गया। वह लकड़ी उठा मुझे मारने लगी। इतना मारा कि मैं मर जाता; परंतु मैं अपने बचाव के लिये घर में भी फिरा किया और वह लकड़ी लिये हुए मुझे खदेड़ती और मारती जाती थी। जब वह मुझे मारते २ थक गई तो उसने दरवाज़ा खोल दिया। मैं पीड़ा के मारे चिल्लाता हुआ बाहर भागा। यद्यपि बाहर निकलने से मार खाने से बचा; परंतु उस टोले के कुत्ते मुझे दुःख देने लगे, भूकने और काटने लगे। वहाँ से मैं पूँछ दबाके बाज़ार की ओर भागा और एक दूकान-

दार की दूकान में, जो बकरी के सिर, पाँव और जीभ बेचता था, घुसगया और एक कोने में छिपके बैठ रहा। उस दूकानदार को मुझपर दया उपजी और उन कुत्तों से मुझे बचाया और उनको अपनी दूकान के आगे से मारकर दूर भगा दिया। मैं उन आपदाओं से छूटकर रात्रि भर उसकी दूकान में बैठा रहा। जब प्रभात हुआ, तो वह दूकानदार बहुत सबेरे सिर, पाँव लेने गया और इसी प्रकार बहुत सौदा मोल ले आया और दूकान पर उसे क्रम से सजाया। मैंने दूर से देखा कि बहुत कुत्ते मांसकी गंध पाके उसकी दूकान के सामने जमा हो गए हैं। मैं भी उसके आगे जा खड़ा होगया। वह मुझे देख, समझा कि इसने कल से कुछ भी नहीं खाया है, केवल मेरी दूकान में भूखा छिपा रहा सो उसने मांस का बड़ा लोथड़ा मेरे सम्मुख डाल दिया। मैं उस मांस की ओर न देखकर उसके निकट जाकर अपनी पूँछ हिलाने लगा। उसने यह जाना कि मेरी इच्छा उसी दूकान में पड़े रहने की है। उसने मुझे तृप्त जान, लकड़ी से डराया और अपनी दूकान से मुझे निकाल दिया।

मैंने भी उसकी दूकान छोड़ दी और फिरते २ एक नानबाई की दूकान पर जा खड़ा हुआ। संयोगवश वह उस समय भोजन करता था। यद्यपि मैंने उससे कुछ माँगने की सैन न की थी; परंतु उसने एक टुकड़ा रोटी का मेरे आगे फेंक दिया। मैं कुत्तों की भाँति झपटा और पूँछ हिलाई। वह मेरे स्वरूप को देख प्रसन्न हुआ और मुस्कराया। यद्यपि मुझे क्षुधा न थी, परंतु थोड़ासा टुकड़ा तोड़कर खा लिया। उसको मेरा स्वरूप पसंद आया और उसने चाहा कि मैं उसकी दूकान पर रहा करूँ। उसकी इच्छा पाके

मैं उसकी दूकान की ओर मुख करके बैठ गया। संध्या को वह मुझे अपने घर ले गया। वह सदा मुझको घर लेजाता; परंतु उसकी आज्ञा विना मैं उसके घर में अपना पाँव न रखता था। उसने मेरी एक जगह नियत की, जहाँ मैं रात्रि में रहता। भोजन करते समय वह मुझे भली भाँति खिलाता। वह मुझपर अत्यंत कृपा रखता और मैं भी हर समय उसकी ओर देखा करता। उसके सैन करते ही उठता-बैठता। जब वह नानबाई अपने घर से दूकान को अथवा और किसी जगह को जाता; तो मैं उसके पीछे हो लेता। जब वह मेरे सोने के समय बाहर निकलता और मुझे अपने साथ न देखता, तो गली में खड़े होके मुझे मेरे नाम से पुकारता। बहुत काल पर्यंत मैं उसके घर में अति आनंद से रहा।

एक दिन एक स्त्री रोटियाँ लेनेको दूकान पर आई और एक खोटी मुद्रा अपनी मुद्राओं में मिलाकर उस नानबाई को दी। नानबाई ने उनको परखा, खोटी मुद्रा उसे लौटा दी। पर उस स्त्री ने उस खोटी मुद्रा के फेर लेने में तकरार की और कहने लगी कि यह मुद्रा नवीन व प्रचलित है। नानबाई ने कहा कि यह खोटी है। अभी इसका हाल तुझे मालूम होजायगा। यद्यपि मेरा कुत्ता पशु है; परंतु वह इस मुद्रा को परख लेगा। यह कह उसने मेरा नाम लेके पुकारा। मैं उसका शब्द सुनते ही कूदकर उसके सम्मुख गया। नानबाई ने उन सब मुद्राओं को मेरे आगे फेंक दी और कहने लगा "इसमें जो खोटी हो देखकर तू अलग कर दे। मैंने उन सबको एक २ करके देखा और जो खोटी थी उसपर अपना पैर रख दिया और अच्छों को एक ओर धर, उस नानबाई का मुख देखने लगा। वह मेरी बुद्धिपर अत्यंत प्रसन्न हुआ। वह स्त्री भी

यह दशा देख आश्चर्य में हुई और खोटी मुद्रा को बदल दिया।

जब वह स्त्री अपने घर चली गई, तो मेरे स्वामी ने अपने पड़ोसियों को बुलाकर यह संपूर्ण वृत्तांत वर्णन किया। उन्होंने मेरी परीक्षा के लिये अच्छे रुपयों में खोटे रुपये मिलाकर, मेरे आगे डाल दिये कि वह भी अपने नेत्रों से मेरी बुद्धि को देखें। मैं शीघ्र अच्छों में से खोटों को अलग करके उन पर पैर रखता गया। उन्होंने यह दशा देख, अचंभा मानकर, बहुत मनुष्यों से, जो मार्ग में चलते थे, यह हाल कहा। थोड़ेही काल में यह समाचार नगर भर में प्रसिद्ध हुआ और मैं उस दिन संध्या पर्यंत मुद्राओं को परखता रहा। उस दिन से वह नानबाई मुझपर अधिक दया करने लगा। उसके पड़ोसी और इष्ट मित्र उसे कहते थे कि तूने यह कुत्ता एक सर्राफ़ रक्खा है। वे सब मेरे नानबाई के पास रहने से ईर्ष्या करने लगे और चाहतेथे कि मुझे वहाँ से निकाल दें। इसलिये नानबाई क्षणभर भी मुझे अपने से अलग न करते थे।

कई दिन के पीछे एक स्त्री उस दूकान पर रोटी लेने आई और छःमुद्रा, जिसमें एक खोटा था,नानबाई को दिया। उसने परखने को मुझे दिखाया। मैंने तुरंत उनमें से खोटा मुद्रा अलग करके पैर के नीचे दबा लिया और उसकी ओर देखने लगा। वह मान गई कि तू सच कहता है। यही खोटी मुद्रा थी जो तूने परखा और नानबाई से छुपा के मुझे सैन करके बुलाया और अपने घर लेजाने की इच्छा की। मैं ईश्वर से सदैव यह प्रार्थना करता था कि किसी भाँति फिर अपनी योनि को प्राप्त होऊँ और

फिर मनुष्य बनूँ। निदान उस स्त्री के बेर २ देखने से मुझे निश्चय हुआ कि शायद वह मेरे हाल को कुछ जान गई हो। मैं उसी की ओर देखा किया; यहाँ तक कि वह कई पग जाके फिर लौट आई और मुझे सैनकी। मैं उसका अभिप्राय समझ गया और अपने स्वामी की दृष्टि बचाकर उस स्त्री के साथ होलिया।

वह मुझे अपने साथ देख अत्यन्त प्रसन्न हुई और अपने घर ले गई। जब मैं घर के भीतर गया, तो उसने द्वार को मूँद लिया और मुझको एक मकान में लेगई, जिसमें एक सुंदरी कारचोबी वस्त्र पहिने बैठी हुई थी। मैंने बुद्धि से विचारा कि वह इस स्त्री की पुत्री है। वह स्त्री जादू की विद्या में अति प्रवीण थी। फिर उस स्त्री ने, जो मुझे बाज़ार से लाई थी, उस सुंदरी से कहा, "यही कुत्ता" खोटे मुद्राओं को अच्छों में से परखता है। पहिले मैं यह खबर सुनकर समझती थी कि यह कुत्ता मनुष्य है, किसी अभागे निर्दयी ने इसे जादू से कुत्ता बनाया है। आज मेरे मन में आया कि जाकर उस नानबाई की दूकान से रोटी मोल लूँ और इस बात की परीक्षा लूँ। मैंने इसे परीक्षा में परिपूर्ण पाया। हे पुत्री! तुम इसे भली भाँति देखो कि यह कौन है; वास्तव में पशु है वा जादू से पशु बनगया है।

वह सुंदरी मेरी ओर भली भाँति देख, बोली, "हे माता! तुम सत्य कहती हो। मैं इसका वृत्तान्त अभी तुमसे कहूँगी।" यह कहके वह सुंदरी अपने स्थान से उठी और एक ज़लका पात्र लेकर उसमें अपना हाथ डुबोया और मेरे ऊपर उस जल को छिड़क के कहा, "जो वास्तव में कुत्ता है तो तू कुत्ताही बनारहे,

यदि तू मनुष्य है, तो इस जल के प्रभाव से अभी पुरुष तन को प्राप्त हो जा।" उसके कहते ही मैं तुरंत पशु का शरीर छोड़ निज योनि में आया और उस सुंदरी चंद्रमुखी के चरणों पर गिर पड़ा और उसके वस्त्रों को चूमा और कहने लगा कि तुमने मुझपर इतनी कृपा की है जिसका गुणानुवाद मैं नहीं करसक्ता। आजसे मैं तुम्हारी सेवकाई किया करूँगा। फिर मैंने अपनी स्त्रीका संपूर्ण वृत्तांत कहकर उस स्त्री का, जो मुझे अपने घर लाई थी, गुणानुवाद किया।

उस सुंदरी ने कहा, "हे सीदीनैमान! इससे अधिक हमारा गुण वर्णन मतकर। हम आपही तुम ऐसे अच्छे मनुष्य के साथ उपकार करके प्रसन्न हुई हैं मैं तेरी स्त्री का हाल विवाह होने के पहिले ही से जानती थी। मुझे उसके जादूके सीखने और इस विद्याके ज्ञानका हाल मालूम है; किंतु हम दोनों एकही गुरुआइनि की चेली हैं। आगे बहुधा हम्माम में उससे भेंट हुआ करती थी; परंतु उसकी दुष्ट प्रकृति और दुस्स्वभाव से मैंने उससे मिलना छोड़ दिया। मैंने तुम्हारा रूप भी बदल दिया है, मैं तुम्हारे अपकार के बदले उसे कोई दंड तुमसे दिलाऊंगी। तुम भी घर में जाकर उसका शरीर बदल दो। "अब तुम यहाँ ठहरो, मैं अभी आती हूँ"। यह कह वह सुंदरी कोठरी में गई और मैं उसकी माता के निकट बैठकर उसी सुंदरी का यश वर्णन करने लगा। उसकी माता भी मुझसे विचित्र जादू की बातें कहने लगी। इतने में उसकी पुत्री भीतर से एक बोतल लिये हुये आई और कहने लगी, "हे सीदीनैमान! मैंने अपनी पुस्तक में देखा कि इस समय तेरी स्त्री घरमें नहीं है; परंतु एक क्षणमें आवेगी। उसने तुम्हारे

सेवकों से, जो तुम्हारे न होने के कारण अत्यंत विकल थे। कहा है कि मेरा पति भोजन करते उठकर किसी आवश्यक कार्य्य के लिये गया, और दरवाजा खुला पाके एक कुत्ता दालान के भीतर चला आया। मैंने उसे मारकर निकाल दिया।"

फिर उस सुंदरी ने एक जल का पात्र देके कहा, "हे सीदीनैमान! अब तुम अपने घर जाओ और यह बोतल अपने से अलग न करना और उसके आगमन की बाट देखना। वह दुष्टा शीघ्र ही बाहर से आवेगी और तुम्हें देख अत्यन्त व्याकुल होगी और चाहेगी कि तुम्हारे आगे से भाग कर चली जावें। तुम थोड़ासा जल इस पात्र में से लेकर उस पर छिड़क देना और यह शब्द पढ़ना। इससे अधिक पढ़ने की कुछ आवश्यकता नहीं; क्योंकि तुम इस मंत्र का प्रभाव अपनी आँखों से देख लोगे। मैं उस चंद्रवदनी के सिखाये हुये शब्द याद कर उससे बिदा हुआ और अपने घर में आया।

उस सुंदरी ने मुझ से जो बातें कही थीं सब देखने में आईं। क्षणमात्र भी न बीता था कि मेरी स्त्री वहाँ आई और चाहती थी कि मेरे आगे से भाग जावे। मैंने शीघ्र ही उसपर वह अभिमन्त्रित जल छिड़क दिया और वही शब्द पढ़े, जिसके प्रताप से वह घोड़ी बनगई। यह वही घोड़ी है, जिसको आपने कल देखा था। जब मैंने उसको उस योनि में देखा, तो आश्चर्य में हुआ और उसके अयाल पकड़ अश्वशाला में ले गया। बागडोर से उसको बाँधा और चाबुक से उसको मैंने इतना मारा कि थक गया।

सीदीनैमान ने यहाँ तक अपने वृत्तान्त को खलीफ़ा से बयान

किया और कहा कि हे बादशाह! मुझे विश्वास है कि आप मुझ-से प्रसन्न न होंगे; किंतु आप ऐसी कर्कसा स्त्री के लिये अधिक दंड विचारेंगे। इतना कह वह चुप होरहा। खलीफ़ा ने जब देखा कि सीदीनैमान अपना वृत्तान्त पूरा कर चुका, तो उससे कहा कि वास्तव में तुम्हारा वृत्तांत अत्यंत अद्भुत है। तुम्हारी स्त्री का अपराध बड़ा है और तुम्हारा उसे दंड देना मेरे विचार में बहुत ठीक है; परंतु मैं तुमसे पूछता हूँ कि कबतक उसको तुम यह दंड दिया करोगे और पशु बनाके रक्खोगे। अच्छा हो, अब तुम जाके उसी सुंदरी से, जिसके मंत्र के प्रभाव से तुमने उसे घोड़ी बना दिया, कहो कि उसको फिर पूर्ववत् स्त्री बनावे; परंतु मुझे यह भय है और शोच है कि यह दुष्टा, अपनी योनि को प्राप्त होकर, ईश्वर जाने तुम्हारा क्या अपकार करे, जिसका कोई उपाय न हो। इसलिये खलीफ़ा ने फिर कुछ इस बात में तक़रार नहीं की।

तीसरे मनुष्य की ओर देखकर बादशाह कहने लगा, कल मैं अमुक गली में गया तो तुम्हारा विशाल और विचित्र महल देख मुझे अत्यंत आश्चर्य हुआ। उस गली के मनुष्यों से पूछा कि यह बड़ा महल किसका है, तो उन्होंने तुम्हारा नाम लिया और कहा, यद्यपि ख़्वाजेहसन जो पहिले बड़ी कठिनता से अपना निर्वाह करता था, अब परमेश्वर ने उसे इतनी सामर्थ्य दी है कि उसने ऐसा विशाल और सुंदर महल बनवाया है; परंतु वह अपनी उस दशा को नहीं भूला और द्रव्य को व्यर्थ खर्च नहीं करता। तुम्हारे पड़ोसी तुमको अच्छा और भला कहते हैं। कोई तुमसे अप्रसन्न नहीं है। अब मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुमको इतना धन कहां से प्राप्त हुआ? इसीलिये मैंने तुमको बुलाया है,

कुछ भय मत करो। मुझे केवल तुम्हारे वृत्तांत सुनने के सिवाय और कुछ प्रयोजन नहीं है। तुम अपने ईश्वर के दिये हुये धन को भोगो और ईश्वर तुम्हारे ऊपर सदैव कृपा करे। खलीफ़ा ने इस भाँति के वचन कह, उसे धैर्य्य दिया।

ख़्वाजेहसन ने तख़्त के पाये को चूमा और कालीन जो तख़्त के नीचे बिछा था, चूमकर विनती की कि हे बादशाह! मैं सत्य सत्य अपना वृत्तांत आपके सम्मुख कहता हूँ। ईश्वर साक्षी है कि मैंने कोई बात अपनी जाति-धर्म्म की प्रतिपाल नहीं की। केवल ईश्वर के अनुग्रह से इस पदवी को पहुँचा हूँ। फिर वह इस भाँति अपना वृत्तांत कहने लगा।

चतुर्थ प्रदीप

धनाद्धनं न वर्द्धेत हीश्वरानुग्रहं विना।
आनुग्रहेतुस्यादेव यथा ख्वाजेहसन्नभूत् ॥ ४ ॥

अर्थ—ईश्वर के अनुग्रह विना धन से धन नहीं बढ़ता है। जब उसकी इच्छा हो तभी बढ़ जाता है; जैसे ख़्वाजेहसन रस्सी बेंचनेवाला अचानक धनवान् हो गया।

रस्सी बेंचनेवाले ख़्वाजेहसन की कहानी

हे बादशाह! आपकी आज्ञानुसार मैं कहताहूँ कि मुझे इतना द्रव्य कैसे मिला; पहले आप मेरे मित्रोंका हाल, जो बुग़दाद के निवासी हैं, सुनिये। वे अबतक जीते हैं और जो कुछ मैं कहता हूँ उसके साक्षी हैं। एकका नाम शाद और दूसरे का नाम शादी है। शादी को यह निश्चय था कि संसार में कोई मनुष्य विना द्रव्य के आनंद नहीं उठाता और धन उद्योग किये विना प्राप्त नहीं होता

शाद का मत इसके विरुद्ध था। वह यह कहता था कि जबतक भाग्य उदय नहीं होता, तबतक धन नहीं मिलता। शाद शादी से ग़रीब था। उन दोनों में अत्यंत स्नेह था। उनमें कदापि परस्पर किसी बात में तक़रार न होती; सिवाय इस विवाद के कि शादी उद्यम को श्रेष्ठ मानता और शाद भाग्य को।

एक दिन उन दोनों में इसी बात पर बहुत बातें हुईं। शादी ने कहा, "या तो मनुष्य दरिद्रता में उत्पन्न होके सदैव दरिद्री रहता है या धनी होके तरुणावस्था में अपने द्रव्य को व्यर्थ व्यय कर आपत्ति उठाता है। फिर उसको इतनी सामर्थ्य नहीं होती कि आनंद से रहा करे या किसी गुण वा उद्यम से द्रव्य कमावे। शाद का कहना था कि उद्यम, पुरुषार्थ और गुण कुछ काम नहीं आते, मनुष्य अपने भाग्य से ही धनवान् होता है। अमीरी और दरिद्रता संयोगिक हैं, उद्यम और उपाय कुछ काम नहीं आते, माल और उपायके अलावा भी अमीरी की बहुत सामग्री हैं, जो भाग्य से संबंध रखते हैं। शादी ने कहा; "तुम झूठ कहते हो। आवो, हम तुम दोनों इस बात की परीक्षा लें।" किसी पेशेवाले को जो श्रम से कालक्षेप करता हो, कुछ धन दें, वह निःसंदेह अपनी वस्तु को बढ़ावेगा, तो वह अवश्य ही धनी होगा और आनंद उठावेगा। उस समय तुम्हें मेरे वाक्य का विश्वास हो जायगा। वे दोनों मित्र सैर करते २ मेरे घर पर आये, जहाँ मैं रस्सी बटता था।

यह रस्सी बटने का काम मेरी कई पीढ़ियों से था। मेरे पिता और दादा यही काम करते थे। मेरा घर और वस्त्रों को देख उन्हें ग़रीबी का हाल मालूम हुआ। शाद ने शादी से मेरी ओर सैनकर

कहा, जो तुम्हें परीक्षा की इच्छा हो, तो कुछ अशरफ़ियाँ इसे देकर इसकी परीक्षा करो। यह मनुष्य बहुत काल से यहाँ रहता है, मैं भली भाँति जानता हूं कि यह रस्सी बटके अपने कुटुंब समेत बड़ी कठिनता से अपना निर्वाह करता है। शादीने उत्तर दिया कि बहुत अच्छा; परंतु हम इन मनुष्या को भली भाँति देखलेवें। फिर दोनों टहलते हुये मेरी ओर आये। मैंने अपना काम छोड़ उनको प्रणाम किया। शादी ने मेरा नाम पूछा, मैंने कहा, "मेरा नाम हसनहै; परंतु मैं रस्सी बटता हूँ, इस निमित्त मुझे हसनहुब्बाल कहते हैं"। फिर शादी ने मुझ से कहा, "पेशे-वाले को पेशा बहुत होता है। मुझे निश्चय था कि तुम इस पेशे से सुख में होगे और बहुतसी रस्सी बटने के वास्ते तुम्हारे पास इकट्ठी होंगी, क्योंकि तुम्हारे बाप दादा भी सदा से यही काम करते थे। तुम्हारे लिये बहुत कुछ सामग्री छोड़ गये होंगे और तुमने उनको यथाशक्ति बढ़ाया होगा।"

मैंने उत्तर दिया, "मेरे पास कुछ भी नहीं है, जिसमें मुझे सुख हो और पेटभर रोटियाँ मिलें। मेरा हाल यह है कि भोर से संध्या पर्य्यंत मैं रस्सी बटना हूँ। एक क्षण भी श्वास नहीं लेता; फिर भी कठिनता से सूखी रोटियाँ मेरे कुटुंब को प्राप्त होती हैं। मेरी एक स्त्री और पाँच छोटे बालक हैं, उन लड़कों में से कोई इस योग्य नहीं कि मेरी सहायता करे। मैं यथाशक्ति उनके भोजन आदि की खबर लेना हूँ। जो रस्सी बनाता हूँ, उसे बेंचकर कुछ तो खाने में खर्च करता हूँ और जो कुछ बचता है, दूसरे दिन रस्सी मोल लाकर यही काम करता हूँ। इस दशा पर फिर भी ईश्वर का धन्यवाद है कि उसने मुझे दूसरे के आधीन नहीं किया है।"

जब मैं अपना पूरा वृत्तांत शादी से कह चुका तो उसने मुझ से कहा, "मुझे तेरा वृत्तांत विस्तारपूर्वक विदित हुआ। यह बात तो मेरी समझ के प्रतिकूल दिखाई दी जो तुझे दोसौ अशरफ़ियों की थैली दूँ, तो तू आनंदपूर्वक अपना निर्वाह कर सक्ता है और इतने द्रव्य की प्राप्ति से धनवान् हो जायगा या नहीं?"

मैंने शादी को उत्तर दिया, "इतनी अशरफ़ियों से मैं एक ही बेर द्रव्यवान् नहीं होसक्ता; परंतु उपाय से निःसंदेह पेशेवाले के बराबर द्रव्य संचय कर लूंगा।"

शादी ने मुझे विश्वासित और सत्यवादी देख अपनी जेब से दोसौ अशरफ़ियों की थैली निकालकर दी और कहा, "मैं तुमको यह थैली दान देताहूँ। तुम इसे लो और अपना व्यवहार करो। ईश्वर तुम्हें इसमें बरकत दे। इसे बहुत समझ बूझकर खर्च करना। यह वृथा नष्ट न होने पावे। तुम्हारे आनंद से मेरा परमस्नेही शाद बड़ा प्रसन्न होगा। तुम्हें आनंद में देखेंगे, तो हमें अति हर्ष होगा"। मैंने वह अशरफ़ियों की थैली ले और महाहर्ष से फूला न समाया। शादी का बहुत गुणानुवाद कर उसके वस्त्रों को चूमा। फिर वे दोनों मित्र मुझसे बिदा होके चले गये।

हे स्वामी! उनके जाने के उपरांत मैं फिर अपना कार्य्य करने लगा और मनमें शोचने लगा कि इन अशरफ़ियों की थैली कहाँ धरूं, घर में कोई स्थान नहीं और न कोई संदूक़चा है, जिसमें उसे रक्खूँ। फिर शोचा कि इस थैली को अपनी पगड़ी में बाँधकर रक्खूँ। सो उसे घर ले गया और अपनी स्त्री व पुत्रों से छिपाकर दश अशरफ़ियाँ तो खर्च के लिये निकाल लीं और बाक़ी अशरफ़ियों को थैली में डोरे से दृढ़ बाँधा और पगड़ी में

युक्ति से थैली को रख लिया। वह पगड़ी शिर पर बाँधी। सब काम छोड़के पहिले बाज़ार में जाकर सन मोल ली। लौटती समय, थोड़ा सा माँस, जो बहुत दिनों से नहीं खाया था, मोल लिया। उसे हाथ में लिये हुये घर आता था कि अकस्मात् एक चील ने झपट्टा मार चाहा कि मेरे हाथ से माँस छीने। मैंने उसे बचाया और दूसरे हाथ से उस चील को हटाया। उसने दूसरी ओर आके फिर झपट्टा मारा, फिर भी मैंने बचाया। उस उछल कूद में मेरी अभाग्यता से शिर पर की पगड़ी गिर पड़ी और वह चील तुरंत अपने पंजों में पगड़ी को पकड़के ले उड़ी। मैं बहुतही कूदा और चिल्लाया, जिसके सुनने से मुहल्ले के स्त्री और बालक इकट्ठे हुये और उस चील को उड़ाने लगे; परंतु उसने वह पगड़ी न छोड़ी और ऐसी दूर लेके उड़ी कि हमारी दृष्टि से गुप्त होगई। निदान मैं द्रव्य के जाने से महाचिंतित होके, अपने घर आया और उन दश अशर्फ़ियों का, जो आगे थैली से निकाली थीं, सन मोल लिया और कुछ अपने भोजनादि गृहस्थी के कार्य्य में खर्च कीं। इस लज्जा और शोक से मरना उत्तम था। शोचा जब शादी मेरा उपकारी आवेगा और इस हाल को सुनेगा तो उसे कदाचित् चील के ले जाने का निश्चय न होगा। उसे मेरे मकर करने पर संदेह होगा। फिर जबतक वह थोड़ी अशरफ़ियाँ मेरे पास रहीं, तबतक मैं चैनसे रहा और थोड़े दिन पेटभर अपने स्त्री पुत्रों-सहित भोजन किया। फिर मैं वैसा ही दरिद्री होगया। फिर भी संतोष रख ईश्वर का धन्यवाद कर, यह विचारता कि उसी ईश्वर ने मुझे ये अशरफ़ियाँ दी थीं और फिर उसने ले लीं। जो कुछ वह परमात्मा सच्चिदानंद मनुष्य के लिये रचताहै, सो उत्तमहै।

इसी चिंतामें था कि मेरी स्त्री ने जिससे मैंने अशरफ़ियों के पाने का हाल न कहा था, मुझे इस दशा में देखा और कई पड़ोसी भी मेरी दशा देख इकट्ठे हुये और चिंता का हाल पूछने लगे; परंतु मैंने उनसे कुछ न कहा।

दो० अपनो द्रव्य गँवाय के, कहिये नाहीं रोय।
हँसै पड़ोसी बहुरि तब, यामें अचरज जोय॥

परंतु जब उन्होंने बहुत पूछा तो मैंने सब हाल कह दिया। वे सब मुझे झूठा समझ, बहुत हँसे। यहाँ तक कि बालक भी मेरी बात पर ठट्ठा मार कहने लगे कि जिसने जन्म भर अशरफ़ी न देखी, उसने इतनी अशरफ़ियाँ कहाँसे पाईं कि चील पगड़ी समेत ले उड़ी; परंतु मेरी स्त्री सत्य जान बहुत रोई।

जब इस वार्त्ता को छः महीने बीते तो वे दोनों मित्र अर्थात् शाद और शादी मेरी गली की ओर आये। शाद ने शादी से कहा कि दो सौ अशरफ़ियों से उसने कितना व्यापार बढ़ाया? निश्चय है कि वह पहले से अब धनवान् होगा। शादी ने कहा, "देखा जाय, बहुत काल से उसे मैंने देखा नहीं है। मैं भी चाहता हूँ कि उसे अच्छे हाल में देख प्रसन्न होऊँ।" यह कह वह दोनों स्नेही मेरे घर की ओर आये। पहिले शादने शादी से कहा, "मैं तो उसे उसी दरिद्र अवस्था में देखता हूँ कि वह फटे पुराने वस्त्र पहिने है, पर उसकी पगड़ी कुछ उजली दिखाई देती है, और कुछ अंतर नहीं है। तुम भी भली भाँति देखो कि जो मैं कहता हूँ, सत्य है या झूठ।

शादी ने आगे बढ़के जो मुझे देखा, तो उसी दशा में पाया। फिर वे दोनों मेरे पास आये। पहिले शाद ने पूछा, हे हसन!

तुम्हारी क्या दशा हो गई ? क्या तुम्हारा व्यापार उन दो सौ अशरफ़ियों से नहीं बढ़ा ?

मैंने कहा, "मैं अपनी दुर्भाग्यता का वृत्तांत आपसे क्या वर्णन करूँ। न तो लज्जाके मारे कह सक्ता हूँ और न छिपाकर रखने की सामर्थ्य है। आप उसे सुनकर विस्मित होंगे। मैं लाचार होकर वर्णन करता हूँ।" फिर मैंने सब बातें उनसे कह सुनायी। शादी को विश्वास न हुआ और कहा कि हे हसन ! तू हमसे हँसी करताहै और चाहताहै कि हमको छले, जो तूने कहा, वह निश्चय माननें के योग्य नहीं। चीलहों का काम पगड़ी ले जाना नहीं है, वह वही लेते हैं, जो उनका भक्षण होता है। तुमने भी वही काम किया, जो बहुधा तुम्हारे से मनुष्य करते हैं। जब वह बहुतसा द्रव्य पाते हैं, तो वह अपने काम को छोड़, लंपटता में उस द्रव्यको खर्च करते हैं, फिर वे निर्धन होजाते हैं, फिर अपने कामको करते हैं। तुमने भी ऐसा ही किया होगा; क्योंकि तुमने इसी थोड़े दिनों में सब द्रव्यको व्यर्थ खर्च किया और जैसे थे वैसे ही बने रहे।" मैंने कहा, "जितना आप मुझे बुरा भला कहिये, सो सब यथार्थ है। मैं इसी योग्य हूं; परंतु इस अद्भुत कहानी को जो मैंने आपसे वर्णनकी। क्या कोई मनुष्य यहाँ नहीं था, जो न जानता हो ? मैं आपसे झूठ नहीं कहता। मुझे भी आश्चर्य है कि चीलह पगड़ी नहीं लेती; परंतु यह बात जो मुझ पर बीती है, अपूर्व है। सादने मेरा पक्ष लेकर सादी से कहा कि बहुधा देखा सुना है कि चीलह अपने भक्ष्य के अलावा भी बहुतसी वस्तु लेजाती है, इसमें कुछ आश्चर्य्य नहीं।"

सादने यह सुनकर अपनी जेब से अशरफ़ियों की एक थैली

निकाली और उसमें से दो सौ अशरफ़ियाँ मुझे दीं और कहने लगा, हे हसन ! दो सौ अशरफ़ियाँ फिर तुमको देता हूँ। इन्हें बड़ी सावधानी से रखना। पहिले की भाँति खोना मत। तुम इससे अच्छा व्यापार करो, जिससे तुम्हें बहुत लाभ हो। व्यापार को बढ़ाओ; जैसा कि सब लोग करते हैं। मैंने सादी का अधिक गुणानुवाद किया और आशीर्वाद दिया।

जब वे दोनों मित्र चले गये तो मैं अपने कारखाने में आया और वहाँ से घर गया। संयोगवश उस समय मेरी स्त्री और पुत्र घर में न थे। मैंने एक ओर होके दश अशरफ़ियाँ निकालीं। बाकी एक सौ नब्बे अशरफ़ियाँ एक वस्त्र में बाँधलीं और चाहा कि इनको ऐसे स्थान पर रक्खूँ, जहाँ मेरी स्त्री और पुत्रों की पहुँच न हो। इतने में एक कोने में मिट्टी की मठोर खड़ी हुई देखी, जिसमें गेहूँ की भूसी भरी हुई थी। मैंने उन अशरफ़ियों को गेहूँ की भूसी में रख दिया और समझा कि यहाँ किसी का हाथ न पहुँचेगा। इतने में मेरी स्त्री घर में आई। मैंने उससे कुछ न कहा और रस्सी मोल लेने को बाज़ार चला गया। मेरे जाने के बाद, एक मनुष्य शिर धोने की मिट्टी बेंचता हुआ वहाँ आया। मेरी स्त्री ने मिट्टी मोल लेनी चाही, परंतु घर में एक कौड़ी भी न थी, सो उसने विचारा कि मठोर घर में रक्खी है, उसको देके मिट्टी मोल लेनी चाहिए। मिट्टीवाला भी इस बात पर राज़ी हुआ और मिट्टी उस भूसी से बदल दी और मठोर समेत भूसी उठा ले गया।

इतने में मैं भी सन मोल लिये हुये आया। सन का एक बोझ अपने शिर पर रक्खे था और पाँच मज़दूरों के। उन बोझों को

उठवाके एक ओर रखदिये और मजदूरों को मजदूरी देकर बिदा किया। विश्राम करने के लिये एक जगह जाकर लेट रहा और जहाँ वह भूसी की मठोर रक्खी थी, देखा तो उसे वहाँ न पाया। इससे अत्यंत व्याकुल हुआ कि जिसका वर्णन नहीं हो सक्ता। उठकर अपनी स्त्री से पूछा कि वह मठोर क्या हुई? उसने मिट्टी से बदलने की सब बातें कह सुनाई। यह सुन, मैं चिल्लाकर, बोला, "हे दुष्टा, अभागी! यह तूने क्या किया? तूने मुझे और मेरे बच्चों को मार डाला और मिट्टी बेंचनेवाले को धनवान् बना दिया।" फिर मैंने मठोर में एक सौ नव्वे अशरफ़ी रखने का संपूर्ण वृत्तांत उससे कह सुनाया। मेरी स्त्री यह बात सुनते ही शिर और छाती पीटकर रोने लगी और कहने लगी कि अब उस मिट्टी बेचनेवाले को कहाँ पाऊँगी। वह अभागा आज ही इस टोले में आया था। मैंने उसे और कभी नहीं देखा। फिर मुझसे कहने लगी, "आपने बड़ी भूल की कि इस बात को मुझसे नहीं कही। जो मेरा विश्वास मान मुझसे कहते, तो कदाचित् ऐसा न होता।" निदान उसने बहुत रोया पीटा। मैंने उसकी यह दशा देख, उससे कहा कि इतना मत चिल्ला कि पड़ोसी हमारी इस दुर्दशा को सुन, अपनी निर्बुद्धि पर हँसें। अब उचित है कि ईश्वर की इच्छा पर अपने को छोड़ और उन दश अशरफ़ियों से, जो मैंने निकाली थीं, थोड़े दिन बिताएं। अपनी दूसरी बेर की हानि से मुझे जो चिंता हुई थी, उसका आपके सम्मुख कहाँ तक वर्णन करूँ। फिर सोचने लगा कि सादी से भेंट होने पर क्या कहूंगा। वह तो पहिली ही बार विश्वास नहीं करता था। अबकी बार निश्चय करके वह मुझे छली और लंपट समझेगा।

एक दिन साद और सादी कुछ मेरे ही विषय में तकरार करते हुये मेरे घर की तरफ़ आये। मैंने उनको दूर से देखकर, अपना काम छोड़ दिया और चाहा कि कहीं जाकर छिप रहूँ और उनके सम्मुख न होऊं, क्योंकि मेरी आँखें लज्जा से उठती न थीं। अभी मैं बाहर भी नहीं निकला था कि दोनों आ पहुँचे और प्रणाम कर, मेरी कुशल पूँछी। मैंने बड़ी लज्जा से आँखें नीचे कर, प्रणाम का उत्तर दिया। मुझ को वैसाही, टूटे हालों में और दरिद्रता में पाकर, उन्होंने कहा कि तुम्हारी हालत सुधरी नहीं? उन अशरफ़ियों से तुमने अपना व्यापार नहीं बढ़ाया? मैंने उनसे सब हाल कहा और यह भी कहा कि यदि तुम कहो कि तुमने अपनी स्त्री से अशरफ़ियों के मठोर में रखने का हाल क्यों नहीं कहा, तो उसका उत्तर यह है कि आपने मुझसे कहा था कि अबकी बार उनको सावधानी से रखना? मैंने अपने विचार से वह अच्छी जगह जानी थी और रक्षा के लिये अपनी स्त्री से भी न कहा कि कहीं ऐसा न हो कि विना पूछे उनमें से वह खर्च कर डाले। तुम्हारी दीन पालकता और उपकार में संदेह नहीं; परंतु मेरे भाग्य में तो दरिद्रता लिखी है, मुझे धन क्योंकर प्राप्त हो? अब मैं तुम्हारे उपकार का जन्म भर गुण मानता रहूँगा और तुम्हारा यश गाऊँगा। सादी ने इस वृत्तांत को सुनकर कहा, "मुझे तुम्हारी इस बात का परिपूर्ण निश्चय हुआ।" मैंने तुमको मित्रवत् चार सौ अशरफ़ियाँ दी थीं। प्रयोजन यह था कि तुम भी धनवान् बन जाओ, यह नहीं कि तुम उसका उपकार मान, मेरा गुण वर्णन करो। निदान वे दोनों परम स्नेही मेरे दुर्भाग्य पर अत्यंत खेद करने लगे।

साद सत्पुरुष था और मेरी उसकी पुरानी जान पहिंचान थी। उसने जेब से सीसे का पैसा निकाल सादी को दिखाया और मुझसे कहा कि देखो, इस सीसे के टुकड़े में ईश्वर तुझे कैसी बरकतें देता है। सादी उसे देखकर हँसा और ठट्ठा मारने लगा और हँसी में कहा कि यह सीसे का टुकड़ा हसनको बड़ा लाभ दे सक्ता है। साद ने उस पैसे को देके मुझ से कहा कि तुम सादी की बातों का कुछ विचार मत करो और इसे अपने पास रक्खो। सादी को हँसने दो। एकही दिन में तुमको इसका हाल मालूम हो जायगा और ईश्वर चाहेगा, तो इसके कारण तुम धनी हो जावोगे। मैंने वह पैसा लेकर अपनी जेब में रख लिया। वे दोनों मित्र मुझ से बिदा हुये और मैं अपनी रस्सी बटने लगा। रात को जब मैंने अपने वस्त्र उतारे, तो वह पैसा जेब से गिर पड़ा। मैंने उसे उठाके एक ताख़ पर रख दिया। अकस्मात् उसी रात को एक धीमर आया, जो मेरे पड़ोस में रहता था। अपने जाल के बनाने के लिये उसे एक पैसे की आवश्यकता हुई कि सूत लाकर जाल को बनाके, प्रभात को मछलियाँ पकड़े और उन्हें बेचकर अपने कुटुंब के लिये जीविका प्राप्त करे। उसका यह नियम था कि सूर्य्योदय के एक मुहूर्त्त पहिले नदी पर मछलियाँ पकड़ने को चला जाता। उसने अपनी स्त्री से कहा कि तू जाकर अपने पड़ोसी से एक पैसा ला दे। वह स्त्री सबके घर गई, परंतु उसको कहीं से पैसा न मिला। निरास होकर घर लौट आई। धीमर ने अपनी स्त्री से कहा; "जान पड़ता है, तू हसन रस्सी बटनेवाले के घर नहीं गई"। उसने कहा, "सत्य है; मैं उसके घर नहीं गई; क्योंकि उसका घर दूर है। यदि मैं वहाँ जाती, तो वहाँ से कुछ न

कुछ ले आती।" धीमर ने कहा, "तू बड़ी आलसी है। शीघ्र उस के घर जा। वहाँ से अवश्य कुछ मिलेगा।" उसकी स्त्री बरबराती हुई मेरे घर आई और द्वार खुलवाकर कहा, "हे हसन! मेरे पति को इस समय एक पैसे की आवश्यकता है कि वह अपने जाल को बनावे। मुझे स्मरण था, एक पैसा जो साद ने मुझे दिया था, ताख पर रक्खा है। मैंने उससे कहा कि जरा ठहर जा। मेरी स्त्री पैसा लिये आती है। मेरी स्त्री उसके शब्द से जाग उठी। मेरे बताने पर उसने पैसा लाकर उसको दिया। वह पैसा पाके बड़ी प्रसन्न हुई और मेरी स्त्री से कहा, तूने और तेरे पति ने मेरे पतिपर बड़ा उपकार किया। मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि जाल डालके पहिली बेर जो मछलियाँ वह पकड़ेंगे, वे सब तुझे दूँगी।" निश्चय है कि वह भी इस प्रतिज्ञा को स्वीकार करेंगे। जब उस स्त्री ने वह पैसा अपने पति को दिया और अपनी प्रतिज्ञा कह सुनाई, उसने प्रसन्न होकर प्रतिज्ञा को मंजूर कर लिया और अपनी स्त्री से कहा, तूने अच्छा किया जो यह प्रतिज्ञा उनसे कर आई। वह अपना जाल बनाके दो मुहूर्त तड़के मछली पकड़ने नदी पर गया। जब उसने पहिला जाल डालकर खींचा तो एकही मछली एक बालिश्त से कुछ बड़ी उसके जाल में आई उसने उस मछली को अलग रखकर फिर कई बेर जाल डाला और बहुत से मत्स्य पकड़े, परंतु पहिले-वाली सबसे छोटी थी। जब वह धीमर अपने घर आया तो सब कार्यों को छोड़, वह पहिली पकड़ी हुई मछली हाथ में लेकर मेरे पास आया और कहने लगा, हे मित्र! रात्रि को मेरी स्त्री ने तुम से प्रतिज्ञा की थी कि जितनी मछलियाँ पहिली बेर आवेंगी, वे सब तुमको दूँगी; सो पहिले पहिल एक ही मछली आई, सो

वह यह है। तुम इसे ले लो; क्योंकि मेरी स्त्री ने तुमसे प्रतिज्ञा की थी। मैंने उसको पूरा किया। यदि पहिली बेर जाल भर के आतीं तो उन सबको मैं तुम्हें ला देता; परंतु तुम्हारे भाग्य में यही एक थी। मैंने उस मछली के लेने में बहुत कुछ तकरार की; परंतु उसने मेरे हाथ में रख दी। मैंने अपनी स्त्री को वह मछली दी और कहा कि रात्रि को धीमर की स्त्री को जो एक पैसा दिया था,उसके बदले यह मछली पाई; परंतु सादने तो हमसे प्रतिज्ञा की थी कि इस पैसे के द्वारा तुम धनवान् हो जाओगे।

फिर मैंने अपनी स्त्री से उन दोनों मित्रों के आने का और पैसा देने का हाल वर्णन किया। मेरी स्त्री भी उस मछली को देखकर आश्चर्य्य में हुई और कहने लगी, मैं इसको क्या करूँ। फिर शोच विचारके मन में कहने लगी कि इसे बालकों के लिये भून लूँ; क्योंकि मसाला तो है नहीं कि इसका शोरवा पकाऊँ। उसने उस मछली को साफ़ करती समय उसके पेट से हीरे का एक बड़ा टुकड़ा पाया। उसने जाना कि यह टुकड़ा सीसे का है; क्योंकि उसने हीरे का नाम ही सुनाथा, आँखों से देखा न था। सो उसने उसे छोटे लड़कों को खेलने को दे दिया। वे उसे खेल रहे थे। इतने में उसके और भाइयों ने उसे देख ले लिया। उसकी सुंदरता और चमक देखकर सब उसे लेने की इच्छा करने लगे। हरएक उसे पारी पारी से अपने पास रखता। जब रात्रि हुई और दीपक जलाया गया, तो दीपक के प्रकाश में उसे देखकर सब प्रसन्न होते और चिल्लाते। इतने में मेरी स्त्री ने भोजन तय्यार कर लिया और हम सब भोजन करने लगे। बड़े पुत्र ने उस हीरे को एक ओर थाली में रखदिया और चुपचाप भोजन

करने लगा। भोजन से निश्चिंत होने के बाद वे बालक फिर पूर्ववत् हीरे के लिये झगड़ने लगे। उनके शोर करने पर हमने कुछ ध्यान न दिया। निदान जब बहुत शोर हुआ, तो मैंने बड़े लड़के को बुलाकर पूछा, "आज तुम लोग किसलिये झगड़ते हो?" उसने कहा, "हे पिता! एक सीसे के लिये वह अत्यंत प्रकाशमान है। मैंने उसे मँगवाके देखा, तो उसकी चमक-दमक देख बड़ा आश्चर्यित हुआ। अपनी स्त्री से पूछा कि यह सीसे का टुकड़ा तुमने कहाँसे पाया? उसने कहा, "उस मछली के साफ़ करते समय उसके पेट में से निकला।" मैंने समझा कि यह खाली सीसेका टुकड़ा है। फिर मैंने अपनी स्त्रीसे कहा, "दीपक को बुखारी के भीतर ओटमें रख दो। जब दीपक हमारे आगेसे उठ गया, तो उस हीरे का प्रकाश इतना हुआ कि हम सब कार्य दीपक विना कर सके थे। फिर मैंने उस हीरे को बुखारी में रख दिया जिससे उजियाला हो। उस समय मैं विचारने लगा कि साद के पैसे के कारण इतना लाभ-तो हुआ कि दीपक का खर्च बचा। जब हमारे बचों ने देखा कि हमने दीपक को बुझाके प्रकाश के लिये उस सीसे के टुकड़े को रक्खा है, तो वह और भी उछलने-कूदने लगे और शोर मचाने लगे। वे इतना चिल्लाए कि पड़ोसियों ने सुन लिया। निदान घुड़कने से चुप होके, वे सोरहे। मैं भी अपनी शय्या पर सोरहा। भोर को उठकर मैं अपना काम करने लगा और उस सीसे के टुकड़े का विचार मेरे मनसे जाता रहा।

मेरे पड़ोस में एक बड़ा जौहरी यहूदी रहता था। उस रात्रि को जब वे स्त्री पुरुष दोनों सोने की इच्छा करते, तो बालकों के शब्द से बेचैन हो जाते और बहुकालपर्यंत चिल्लाहट से

उनको निद्रा न आती। सबेरे उसकी स्त्री अपने पति की ओरसे, शोर का कारण पूछने मेरे पास आई। मेरी स्त्री ने उसे देखते ही उसके अंतःकरण की बात समझ गई और उसका नाम लेकर कहा, "आपको मेरे बच्चों के शोर के कारण रात्रि को निद्रा में विघ्न हुआ होगा, सो उनका अपराध क्षमा करो। आप जानती हैं कि बालक थोड़े में हँस देते हैं और थोड़ेही में रो देते हैं। भीतर आइए, मैं बालकों के झगड़ने का कारण बताऊं। जब वह भीतर गई तो मेरी स्त्री ने वह सीसे का टुकड़ा उसे दिखाया और कहा इसी कारण बालक आपस में झगड़ते थे।

वह रत्नों को पहिचानती थी। उसे देख आश्चर्य में हुई। मेरी स्त्री ने मछली के पेटमें से निकलने का संपूर्ण वृत्तांत उससे कह दिया। उसने सब बातें सुनके कहा, यह सीसे का टुकड़ा और प्रकारके सीसोंसे बहुत अच्छा है। मेरे पास भी एक ऐसाही सीसे का टुकड़ा है, जिसे मैं कभी-कभी पहनती हूँ, जो तू इसे बेचे तो मैं मोल ले लूँ। मेरे पुत्र बेचने का नाम सुन अपनी माता से रोकर कहने लगे कि तू इसे मत बेच। हम शोर न करेंगे। उन बालकों की यह दशा देख, वे दोनों स्त्रियाँ चुप हो रहीं। यहूदी की स्त्री बिदा होकर, अपने घर चली और धीरे से मेरी स्त्री से कहा किखबरदार, कोई दूसरा मनुष्य इसको देखने न पावे। हमसे कहे विना इसको दूसरे के हाथ मत बेचना। वह यहूदी चौक में अपनी दूकान पर था। उसकी स्त्री ने वहीं जाकर उस सीसे के टुकड़े का हाल उससे कहा। यहूदी ने यह सुनकर कहा, "अभी तू जाके उस सीसे के टुकड़े को खरीद ले।" पहिले उसका थोड़ा मोल कहना। जब वह न मानें, तो बढ़ा देना। जितने को हो

ले लेना। वह अपने पति की आज्ञानुसार मेरी स्त्री के पास आई और कहने लगी कि बीस अशरफ़ी उस सीसे के टुकड़े की देती हूँ। मेरी स्त्री बीस अशरफ़ियों का नाम सुनकर शोची कि यह इसका अधिक मोल देती है; परंतु उसने कुछ उत्तर न दिया। इतने में मैं भोजन करने के लिये घर में आया। उन दोनों को द्वार में से ही बातें करते देखा। मेरी स्त्री ने मुझे ठहराके कहा कि सीसे के टुकड़ेकी बीस अशरफ़ियाँ यह पड़ोसिन देती हैं। मैंने अब तक उसका कुछ उत्तर नहीं दिया है। तुम्हारी क्या इच्छा है? मैंने साद के वाक्य को स्मरण किया कि उसने कहा था कि वह सीसे का पैसा तुमको बहुत कुछ दिलवावेगा। मेरे चुप रहने से पड़ोसिन ने जाना कि इस मोल पर यह राज़ी नहीं है। उसने कहा, "हे हसन! जो तू इतने पर राज़ी नहीं है, तो मैं पचास अशरफ़ियाँ देती हूँ।" मैंने देखा कि यहूदिन इतनी शीघ्र बीस अशरफ़ी से पचास अशरफ़ी तक आई है, इसका बड़ा मोल होगा। मैं चुप होरहा और उसका कुछ भी उत्तर न दिया। उसने मुझे चुप देखके कहा, "एक सौ अशरफ़ी लो, यह बहुत है। मैं नहीं जानती कि मेरा पति इस मोल के देने पर राज़ी होगा या नहीं।" मैंने कहा, "तुम क्या कहती हो,मैं इस टुकड़ेको लाख अशरफ़ी से कम में नहीं बेचूँगा। इस मोल परही आपको दूँगा, क्योंकि आप पड़ोसी हैं।" यहूदिन बढ़ते २ पचास हज़ार अशरफ़ी तक आई और मुझसे कहा कि इसे सन्ध्या तक तुम मत बेचना। मेरा पति इसको एक दृष्टि देखेगा। मैंने कहा, "बहुत अच्छा।" रात को उसका पति भी मेरे घर में आया और मैंने उस हीरे को उसे दिखाया। अभी दीपक नहीं जलाया गया था। पर वह हीरा दीपक

के सदृश मेरे हाथ में चमक रहा था। यहूदी को उस समय, जो कुछ उसकी स्त्री ने कहा था, विश्वास हुआ। वह हीरे को अपने हाथ में लेकर, बहुत देर तक देखता रहा। फिर अत्यंत आश्चर्य में हो कहने लगा कि मेरी स्त्री पचास हज़ार अशर्फ़ियाँ देती है। मैं बीस हजार अशरफ़ी उससे अधिक देता हूँ। मैंने कहा, "तुमको तुम्हारी स्त्री से इसके दाम मालूम हुए होंगे। मैं इसे एक लाख अशरफ़ी से कम में नहीं बेचूँगा।" उसनें कितना ही चाहा कि मैं लाख रुपये से कम में ले लूँ; पर मैंने कहा, "जो तुम न लोगे, तो मैं दूसरे जौहरी के हाथ बेचूँगा।" निदान वह यहूदी इतने पर राज़ी हुआ और दो हज़ार अशरफ़ियाँ बयाने के तौर पर देके मुझसे कहा, "कल मैं सब बाक़ी की अशरफ़ियाँ ला दूँगा और इस हीरे को ले जाऊंगा मैं।" भी इस बात पर राज़ी हुआ। निदान दूसरे दिन उस यहूदी नें अपने इष्ट मित्रों से क़रज़ लेकर एक लाख अशरफ़ियाँ मुझे गिन दीं। तब मैंने वह हीरे का टुकड़ा उसे दे दिया। उसी से मैं धनवान् हो गया।

ईश्वर का धन्यवाद है कि उसी ईश्वर के दिये हुए द्रव्य से अपना गृहस्थी का असबाब धनवानों के सदृश बनाया। मेरी स्त्री ने भी बालकों के वस्त्र बनाये। मैंने एक बड़ा घर मोल लिया। उसकी छत, परदे आदि खूब सजाया। मैंने अपनी स्त्री से कहा, "हमें यह उचित है कि अपने पुराने काम को न छोड़ें। कुछ द्रव्य उठा रक्खें और थोड़े द्रव्य से काम काज किया करें।"

मैंने नगर के सब कारीगर नौकर रक्खे और उनको कई सौ रुपये देकर रस्सी के कई कारख़ाने जमाये। कई मनुष्यों को, विश्वासित जान, एक-एक कारख़ाना उनको सौंप दिया। अब

बुग़दाद नगर में ऐसी कोई गली नहीं, जिसमें मेरा गुमाश्ता अथवा रस्सी का कारबारी न हो। इसी भाँति हरएक नगर और ज़िले में एक २ कारख़ाना नियत कर, एक-एक मुहर्रिर वहाँ नियत किया है। अब मुझे इस प्रबंध से बहुत सा धन प्राप्त होता है। अपने कारख़ाने के लिये मैंने एक विशाल मंदिर मोल लिया है, जिसमें ज़मीन बहुत थी। परंतु वह घर छिन्न-भिन्न था। अब उसे तुड़वाकर नये सिरे से विशाल स्वच्छ भवन बनवाया है, जिसको आपने कल देखा था। उसमें केवल मेरे कारिंदे रहते हैं और दफ़्तर का हिसाब-किताब भी वहीं है। अपना और अपने कुटुंब का असबाब भी वहीं रखता हूँ। फिर मैंने अपने प्राचीन घर को, जिसमें साद और सादी आते थे, छोड़ कर नये घर में, जो रहने के लिये बनवाया था, आ रहा। कुछ दिन बाद साद और सादी को मेरा स्मरण हो आया। उन्होंने फिर मुझे आकर देखना। चाहा वे दोनों उसी पुराने घर में आये। मुझे और मेरे कुटुंब को वहाँ न पाकर आश्चर्य में पड़े। वहाँ के वासियों से पूछा कि अमन रस्सीवाला कहाँ है? जीता है वा मर गया? उन्होंने कहा, "अब तो वह बड़ा व्यापारी बन गया है। अब उसका नाम कोई नहीं लेता। केवल हसन उसे कोई नहीं कहता। सब उसे ख़्वाजेहसन हब्बाल कहते हैं। वह, अमुक स्थान पर एक विशाल महल बनवाकर, उसमें रहता है। वे दोनों स्नेही मुझे पूछते हुए वहाँ आये; परंतु सादी को तनिक विश्वास न था कि यह द्रव्य और ऐश्वर्य मुझे उस पैसे के कारण प्राप्त भया। इसलिये उसने साद से कहा, "यदि हसन मुझसे दो बेर झूठ बोला, यहाँ तक कि उसने झूठ बोलकर मुझसे चार सौ अशरफ़ियाँ लीं और

उन्हीं अशरफ़ियों से इतना धन बढ़ाया; परंतु मैं उसे इस दशा में देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। वह सीसे का पैसा जो तुमने उसे दिया है, उससे किस भाँति इतना द्रव्य पा सका? साद ने कहा, "तुम जो कुछ कहते हो झूठ है। हसन झूठा और धूर्त्त नहीं है। उसने तुमसे जो कहा, वह सब सत्य है। मुझे पूरा विश्वास है कि उसी पैसे के कारण उसे यह ऐश्वर्य प्राप्त हुआ है। अभी तुमको हसन के वर्णन से मालूम हो जायगा।

इसी भाँति वार्त्ता करते हुए वे दोनों मित्र उसी गली में, जिसमें मेरा घर था, आये और मेरे सुंदर भवन की सजावट और बनावट देख पहिचान गये कि यह भवन अवश्य ख़्वाजेहसन का होगा। उन्होंने द्वार पर पहुँचकर हाँक दी। द्वारपाल ने दरवाज़ा खोल दिया। सादी बहुत से सेवकों को देख भयभीत हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि यह भवन किसी अमीर का हो। निदान साहस कर उस द्वारपाल से पूछा, "क्या ख़्वाजेहसन हब्बाल का ही यह महल है?" द्वारपाल ने उत्तर दिया कि यह घर उन्हीं का है। भीतर जाइए-हसन अपने दीवानखाने में बैठे हैं। वहाँ उनके बहुत से नौकर भी होंगे। कोई जाकर आपके आने का समाचार कह देगा। फिर वे दोनों मित्र वहाँ आये, जहाँ मैं बैठा था।

मैंने देखते ही पहिचान लिया और तुरंत अपने स्थान से उठ मैं दौड़ा और उनके वस्त्र चूमे। वे बहुतेरा चाहते थे कि मैं गले मिलूं; पर मैं न मिलता। निदान उनको भीतर ले जाकर, एक दालान में बहुत अच्छे स्थान पर बैठाना चाहा; परंतु उस स्थान पर, वे चाहते थे कि मैं बैठूं। मैंने कहा कि हे सज्जनो! मैं

अपने को नहीं भूला हूँ। मैं वही हसन रस्सी बटनेवाला हूं। मैं सदा आपको आशीर्वाद देता हूं। निदान वे एक स्थान पर बैठ गये। मैं भी उनके सम्मुख बैठ गया। सादी ने कहा, "म तुम्हें इस दशा में देखकर बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। जैसा कि हमारा मन चाहता था, ईश्वर ने तुम्हें उसी पदवी को पहुँचाया। मुझे निश्चय है कि उन्हीं चार सौ अशरफ़ियों से, जो मैंने तुमको दी थीं, यह सब धन और ऐश्वर्य प्राप्त हुआ है। सत्य कहो कि तुम पूर्व में दो बेर मुझसे झूठ क्यों बोले थे? साद सादी की यह बात चुपके-चुपके सुना किया। जब सादी कह चुका, तो वह बोला कि इसका उत्तर मैं देता हूँ। हसन ने अशरफ़ियों के खो जाने का जो हाल कहा था, वह सब सच है। उसमें कुछ अंतर नहीं। फिर उनमें परस्पर इसी बात पर तकरार होने लगी। मैंने कहा भाइयो, उस बात को जाने दो। मेरे वास्ते परस्पर क्यों खेद करते हो। आगे मेरे ऊपर जो कुछ बीता था, वह कह सुनाया। उसको सच जानों या झूठ। अब भी जो कुछ हुआ है, तुमसे कहता हूँ, सो सुनो। उसने धीमर को पैसा देने और मछली के पेट से हीरे के निकलने की-सब बातें कहीं, जैसा कि हे खलीफ़ा! मैंने आपके सम्मुख अभी वर्णन किया है। सादी ने वह सब सुनके कहा, "हे हसन! इतने बड़े हीरे का मछली के पेट में से निकलना वैसा ही है, जैसा कि चील्हका तुम्हारे शिरपर से पगड़ी का उड़ा ले जाना और मठोर भूसी देके शिर धोने की मिट्टी लेना। शायद सच हो; परंतु मुझे विश्वास नहीं आता। यह द्रव्य तुम्हें उन्हीं अशरफ़ियों से प्राप्त हुआ है।

फिर मैंने उनसे कहा, "भाइयो! आपने मुझ पर बड़ा अनु-

ग्रह किया कि इतना श्रम उठाकर मेरे महल में आये और इस घर को पवित्र किया। मेरी यह इच्छा है कि रात्रि को आप यहीं भोजन और निवास कीजिए।" मैं सुबह आपको नदी और भवन की सैर के लिये ले चलूँगा, जो मैंने इसी शहर में हवा खाने के लिये लिया है। पर वे राज़ी नहीं होते थे। जब मैंने बहुत कहा, तो उन्होंने मान लिया। मैंने उनके लिये नाना प्रकार के व्यंजन पकवाये और उनको अपने भवन के सब असबाब दिखाये। फिर परस्पर हास्य और विनोद की वार्ता करते रहे। इतने में दासी ने कहा कि भोजन तय्यार है। तब मैं दोनों मित्रों को अपने भोजन करने के कमरे में ले गया, जिसमें अनेक भाँति के स्वच्छ पाक थे और अति सुंदर और उज्ज्वल दीपक उचित २ स्थानों पर प्रज्वलित थे। मधुर स्वर से गाना भी हो रहा था और एक तरफ़ स्त्री-पुरुष नृत्य भी करते थे। इसके अलावा भी बहुत से तमाशे उनको दिखाये। भोजन से निश्चित होकर, हम सो रहे।

सुबह उठकर हम एक किश्ती पर सवार हुये। केवट उसको बहाव में खेते हुये ले चले। थोड़ी देर में हम अपने घर, जो गाँव में था, जा पहुँचे। फिर किश्ती से उतर, सैर करते हुये, एक घर के भीतर आये। मैंने अपने रहने की जगह और कारख़ाने उनको दिखाये। वे घर और उसकी तय्यारी देखकर बड़े हर्षित हुये। फिर सब कोई बाग़ में गये, जिसमें अनेक भाँति के सघन वृक्ष लगे हुये थे और नदी से पकी नहरों के द्वारा सब जगह निर्मल जल पहुँचता था। पके हुये फल सुंदर वृक्षों में लगे हुये थे। सुंदर पुष्प-वाटिका में अनेक भाँति के सुगंधित फूल लगे थे, जिनकी सुगंधि

सारे बाग़ों में चहुँओर फैल रही थी। स्थान-स्थान पर पानी की चादरें और फ़व्वारे छूट रहे थे। अनेक भाँति के पक्षी उन्हीं सघन वृक्षों पर अपनी ललित वाणी बोलते थे। वहाँ और भी बहुतसी वस्तु उपस्थित थीं, जिनके देखने से मन को अति आनंद होता था। वे दोनों मित्र उन्हें देखकर अत्यंत प्रसन्न हुये। कभी मेरा गुण मानकर कहते कि तुमने हमको बहुत सुंदर स्थान की सैर कराई और कभी यह आशीर्वाद देते कि ईश्वर करे यह विचित्र भवन और बाग़ फलीभूत हो। फिर मैं उनको एक सघन वृक्ष के नीचे जो बाग़ के किनारे लगा हुआ था, ले गया और उसको दिखाकर उनको एक छोटे से मकान में भोजन के लिये ले गया। दालान में, जहाँ मसनद तकिया लगा हुआ था, उनको बिठलाया।

इस बीच में मेरे दो पुत्र, जिनको मैंने दो तीन दिन पहिले से उनके अध्यापक समेत उस बाग़ में जल वायु बदलने के लिये भेजा था, पक्षियों का घोंसला ढूँढ़ते हुये एक वृक्ष के नीचे गये। वहाँ उनको एक घोंसला मिला। उन्होंने चाहा कि घोंसला उतारने के लिये उस वृक्ष पर चढ़ जायँ; पर अभ्यास न होने से और कमज़ोरी से ऊपर चढ़ने की शक्ति अपने में न पाई। निदान अपने नौकर को जो उनकी सेवा किया करता था; उस पर चढ़ने को कहा। वह सेवक उस पर चढ़ गया और घोंसले को देखके आश्चर्य्य में हुआ क्योंकि वह पगड़ी से बना हुआ था। घोंसले को वह उसी तरह वृक्ष से उतार लाया। और मेरे पुत्रों को वह पगड़ी दिखाई। बड़ा बालक उसे मुझे दिखाने को ले आया। उसको मेरे सम्मुख रखके बोला, "हे पिता! देखो यह घोंसला वस्त्र का बना हुआ है।" साद और सादी, उसे देख, मुझ से भी अधिक,

आश्चर्य्य में हुये। जब मैंने अच्छी तरह उस घोंसले को देखा, तो अपनी पगड़ी को पहिचाना कि यह वही पगड़ी है, जिसको पहिले चील्ह मेरे शिर पर से झपट्टा मार के ले उड़ी थी। मैंने उन दोनों मित्रों से कहा "तुम भी ध्यान करके देखो कि यह वही पगड़ी है, जो उस दिन मेरे शिर पर थी, जब आप पहिले पहिल मेरे कारखाने में आये थे।" साद ने कहा, "मैं तो पहिंचान नहीं सक्ता।" सादी बोला यदि एक सौ नव्बे अशरफ़ियाँ इसमें हों, तो जानिये कि यह वही पगड़ी है। मैंने कहा, "निस्संदेह यह वही पगड़ी है।" जब मैंने उसे हाथ में लेकर देखा, तो उसे बहुत भारी पाया। उसे खोला, तो उसमें कोई भारी सी वस्तु मालूम हुई। जब गिरह खोली, तो उसमें से वही अशरफ़ियों की थैली निकली मैंने उस थैली को दिखा कर सादी से कहा, "पहिचानों यह तुम्हारी वही थैली है।" उसने पहिचानकर कहा, "वास्तव में यह अशरफ़ियों की वही थैली है, जो मैंने तुमको पहिली बार दी थी।" फिर मैंने उस थैली का मुख खोल, सादी के सम्मुख अशरफ़ियों का ढेर कर दिया और कहा, "इनको गिनो।" उसने गिनी। पूरी एक सौ नव्बे अशरफ़ियाँ थीं। सादी देखतेही अति लज्जित हुआ और कहने लगा कि अब मुझ को तुम्हारे वचन का विश्वास हुआ। पर वे अशरफ़ियाँ, जो मैंने तुमको दूसरी बार दी हैं, उनसे तुमको आधा धन प्राप्त हुआ है और आधा उस पैसे से। मैं यह सुन चुप हो रहा। पर साद और सादी में झगड़ा होने लगा। भोजन करने के बाद हम तीनों बाग़ में हवादार मकान में सो रहे। संध्या को जब सूर्य्य अस्त हुआ, तो जगे और घोड़ों पर सवार होकर बुग़दाद

को चले। मार्ग में सब सेवक हम से अलग होके पीछे रह गये। घोड़ों ने दाना नहीं खाया था और नगर की सब दूकानें बंद होगई थीं। दो-तीन नौकर जो हमारे संग चले आये थे दाना ढूँढ़ने गये। एक सेवक ने भूसी की मठोर भरी हुई एक बनियें की दूकान पर देखी। वह उसे बनियें से मोल लेके मटुकी सहित मेरे पास उठा लाया। इस बात पर कि कल मठोर दूकान पर भिजवा देंगे। फिर नौकर हरएक घोड़े के आगे मठोर में से भूसी निकाल कर डालने लगा। अँधियारे में उसके हाथ एक वस्त्र लगा। वह उसे बहुत भारी मालूम हुआ। वह उसे उसी भाँति मेरे पास ले आया और मुझे देखकर कहा कि देखिये, यह वही वस्त्र तो नहीं है, जिसका हाल कई बार आपने मुझसे कहा था मैंने उसे हाथ में लेकर पहिचाना कि यह वही कपड़ा है, जिस में एक सौ नब्बे अशरफ़ियाँ बाँध के भूसी की मठोर में रक्खी थीं। इससे अति प्रसन्न होके, मैंने अपने मित्रों से कहा, "भाइयो ईश्वर ने मुझे सच्चा साबित किया।" सादी से कहा, "यह दूसरी एक सौ नब्बे अशरफ़ियाँ हैं, जो मैंने आपसे पाई थीं। मैं इस पुराने चिथड़े को जिसमें उनको मँगवाया था, भली भाँति पहिचानता हूँ। फिर मैंने उस मठोर को अपने सामने उठवा मँगवाया और उसे अपनी स्त्री के निकट भेजा। उसने कहला भेजा, यह वही मठोर है, जिसमें भूसी रक्खी जाती थी। सादी ने यह दशा देख कहा कि मेरा विचार ग़लत था। फिर उसने साद से कहा, "अब मैंने तुम्हारी बात को सच्चा जाना और उसको विश्वास हुआ कि धन धन से नहीं बढ़ता; किंतु ईश्वर के अनुग्रह से ही दरिद्री धनाढ्य होता है।" इतना कह, हम सब सो रहे। दूसरे

दिन प्रभात को बिदा होकर वे दोनों मित्र अपने घर को गए। जब बादशाह ने यह सब कथा हसन से सुनी, तो कहने लगा कि मुझे प्रथम से तुम्हारे पड़ोसियों के द्वारा मालूम हुआ है कि तुम व्यर्थ ख़र्च नहीं करते। वह हीरा जिसने तुमको धनवान् कर दिया है, मेरे कोष में है। तू सादी को यहाँ बुला ला कि उस हीरे को अपने नेत्रों से आके देखे और उसे निश्चय हो कि रुपये पैसे से सब निर्धन धनवान् नहीं हो जाते और तू इस कहानी को मेरे कोषाधिप से भी कह कि वह इस चरित्र को लिखकर हीरे के साथ मेरे कोष में रक्खे। फिर बादशाह ने सैन से हसन को बिदाकर दिया। तत्पश्चात् सीदीनैमान और बाबा अब्दुल्ला भी तख़्त को चूम विदा हुये। मलका शहरज़ाद ने चाहा कि दूसरी कहानी आरंभ करें; पर हिंदुस्तान के बादशाह ने प्रातः-काल हो जाने से कहा, "उस कहानी को मैं कल सुनूंगा।"

अलीबाबा और चालीस ठगों की कहानी

सत्यशीलस्य रक्षाहि जायते चौरतो यथा।
अलीबाबा हन्यमानः स्त्रीद्वारापरिरक्षितः॥

अर्थ—जो जन सत्य स्वभाववाला होता है, उसकी चोर तथा शत्रु आदि से भी रक्षा हो जाती है। जैसे बहुत प्रकार से मारे जाने पर भी अलीबाबा की स्त्री द्वारा रक्षा हुई।

दूसरी रात को मलका इस भाँति कहानी को वर्णन करने लगी कि पारस देश में दो भाई थे। एक का नाम क़ासिम और दूसरे का अलीबाबा था। उन्होंने अपने पिताकी मृत्युके बाद थोड़े द्रव्य को आपस में बाँट लिया। थोड़े ही समय में दोनों

भाइयों ने उसे खर्च कर डाला। क़ासिम ने एक स्त्री के साथ जिसका पिता बड़ा धनवान् था, विवाह किया। अपने ससुर के मरने पर, उसको ससुर की एक दूकान मिली, जिसमें व्यापार की बहुमूल्य वस्तुएँ भरी थीं और बहुतसा द्रव्य, जो पृथ्वी में गड़ा था, पाया। इससे वह उस नगर में बड़ा व्यापारी विख्यात हुआ। अलीबाबा ने जिस लड़की के साथ विवाह किया था। उसका पिता निर्धन और दरिद्री था। वे दोनों छोटे से घर में रहते थे। अलीबाबा प्रतिदिन सूखी लकड़ी कंधों पर लादके, नगर में लाता और उसको बेच अपना निर्वाह करता था। एक दिन अलीबाबा ने निज आवश्यकता के अनुसार काष्ठ काटा और चाहता था कि उसे गधों पर लादे कि अकस्मात् उसने दाहिनी ओर से धूल उड़ती और अपनी ओर आते देखी। जब उसने भली भाँति देखा तो, उसे बहुत से सवार देख पड़े, जो पाँव उठाये, उसी की ओर चले आते थे। वह उनको देखकर भयभीत हुआ कि कहीं लुटेरे न हों, मेरे गधों को छीन न ले जायँ और मुझे मार न डालें। इससे भयभीत होकर भागने लगा। परंतु सवार पासही पहुँच चुके थे। इससे वह वन से निकल कर न जा सका। इसलिये उसने गधोंको एक ओर हाँक दिया और आप अपने को छिपाने के लिये एक सघन वृक्ष पर चढ़ गया। वह ऐसे स्थान पर बैठा कि उसको वहाँ से सब कुछ दीखे और वह किसी को न देख पड़े। वह वृक्ष एक पहाड़ से लगा हुआ था। वह पर्वत बहुत ऊँचा था।

वे सवार, जो अत्यंत बलवान् और चोर थे, उस पर्वत के नीचे पहुँच कर अपने २ घोड़े से उतरे। अलीबाबा ने उन्हें देख भली

भाँति जान लिया कि निस्संदेह ये लुटेरे ही हैं। किसी विदेशियों के समूह को अभी लूट कर आये हैं। उनकी वस्तु किसी अच्छे स्थान पर रक्खेंगे सो वैसाही हुआ कि उन चालीस ठगों ने उसी वृक्ष के समीप पहुँच कर घोड़ों की लगाम उतार डाली और उनको बागडोर से बाँध खुरजियाँ, जिन में सोना चाँदी था, उतारीं। फिर अलीबाबा ने क्या देखा कि सबके आगे उनका सरदार अपने बोझ को कंधे पर धरे हुये उसी वृक्षके नीचे आया और काँटे झाड़ियों से होता हुआ एक स्थान पर खड़ा हो यह कहने लगा, "खुल अय समसम।" इस वचन के कहते ही वहाँ एक किवाँड़ खुल गया। सब उसके भीतर घुस गए। अलीबाबा लाचारी से उसी वृक्ष पर इस भयसे छिपा बैठा रहा कि वे ठग कहीं निकल न आवें और मुझे मार न डालें। कभी वह यह विचारता कि चुपके से नीचे उतर, उनके एक घोड़े पर सवार हो और एक पर सब लगामों को लाद, अपने आगे गधों को कर, नगर में चला जाऊँ। इतने में वह दरवाज़ा खुला और वे चालीसों ठग उसमें से निकले। पहिले उनका सरदार आप निकला और दरवाज़े के पास खड़ा हो देखा किया। फिर उसके साथी निकले। अलीबाबा ने फिर सुना कि वह सरदार कहता है, "बंद हो समसम।" यह कहते ही किवाड़ बंद हो गए। सब अपने अपने घोड़ों को लगाम दे, सवार हुये। जब सरदार ने देखा कि सब चलने को तय्यार हैं, तब वह सबके आगे हो लिया और जिस ओरसे वे आये थे, उसी ओर चले गये। अलीबाबा उनके जाने के उपरांत भी थोड़ी देर तक उस वृक्ष पर से न उतरा और यह शोचा कि कहीं ऐसा न हो कि वे फिर आवें और मुझे देख लें जब वे दूर निकल

गये और दृष्टि से लोप हो गये, तब उसने वृक्षसे उतर परीक्षा की इच्छा की कि मैं भी वही शब्द पढ़कर देखूँ कि किवाड़ खुलता है या नहीं। सो उसने उस द्वार के पास पहुँच कहा, "खुल अय समसम।" इस वचन के कहते ही वह खुल गया। उसमें जाकर उसने क्या देखा कि वह बड़ी विशाल और स्वच्छ कंदरा है। इससे वह अत्यंत आश्चर्य में हुआ कि ऐसा मंदिर पहाड़ को खोदकर क्यों बनाया गया ? परंतु उसकी छत एक मनुष्य की उँचाई के बराबर थी। पर्वत के शिखरों से रोशनदानों के द्वारा उस कंदरा में प्रकाश पहुँचता था। उसने उजियाले में देखा कि बहुतसी वस्तु धरी हैं और हरएक भाँति की माल की गठरियाँ रक्खी हैं। नीचे ऊपर भारी भारी कमखाब, चिकन आदि के थान के ढेर पड़े हैं। इसके अलावा असंख्य द्रव्य है। कुछके तो ढेर लगे हैं और कुछ चमड़े की बड़ी बड़ी थैलियों में सीकर रक्खा है। इतनी वस्तुएँ और द्रव्य देख उसने शोचा कि यह कंदरा थोड़े वर्षों से नहीं भरी है सैकड़ों वर्षों से ठगों ने इन वस्तुओं को लूटकर, यहाँ इकट्ठा किया है। उसके भीतर जाते ही दरवाजा आप ही आप बंद हो गया। अली-बाबा उसके बंद होने से डरा नहीं; क्योंकि उसे उसके खोलने का भी मंत्र याद था। फिर वह इतनी अशरफ़ियां उस कंदरा से बाहर निकाल लाया जितनी कि उसके गधे उठा सकें। गधों को एक ओर कर उनपर अशरफ़ियों की थैलियां लाददीं और ऊपर से थोड़ीसी लकड़ी रख, उसे चारों ओर से छिपा लिया, जिससे लकड़ियों का गट्ठा जान पड़े। जब वह लाद चुका, तो कहने लगा, "बंद हो अय समसम।" यह कहते ही वह दरवाज़ा बंद होगया। उस दरवाज़े का यह प्रभाव था कि जब कोई उसके

भीतर जाता, तो वह आपसे बंद होजाता और जब तक कोई "खुल अय समसम" न कहता वह कभी भी न खुलता।

अलीबाबा गधोंको आगे कर, नगर को चला। जब वह घर पहुँचा तो उन गधों को अपने घर के भीतर ले गया। बाहरका किवाड़ मूँदा और ऊपर की लकड़ियाँ उतार, अशरफ़ियों की थैलियाँ अपनी स्त्री के सम्मुख ले गया। उसकी स्त्री ने टटोल के देखा कि उनमें अशरफ़ियाँ भरी हैं। वह समझी कि उसका पति कहीं से चुरा कर लाया है, तो वह अपने भर्त्ता को दुर्वचन कहने लगी, "तुझे यह कर्म उचित न था। उसने कहा मैंने चोरी नहीं की है?" मैं इस वृत्तांत को अभी तुझसे कहता हूँ। मेरे भाग्य के उदय होने का हाल सुनकर तू हर्षित होगी। फिर उसने थैलियों में से अशरफ़ियाँ निकाल उसके आगे ढेर करदीं। जिसके देखने से उसकी स्त्री के नेत्र चौंधियाने लगे और वह उस हाल को सुन अत्यंत प्रसन्न हुई। और उनको गिनने लगी। अली-बाबा ने कहा, "तुम बड़ी बे समझ हो। कहाँतक गिनोगी। मैं इसको गढ़ा खोद गाड़े देता हूँ।" उसकी स्त्रीने कहा, "ठीक पर मैं इनका अनुमान करना चाहती हूँ कि यह सब कितनी हैं।" अलीबाबाने कहा, "बहुत अच्छा, परंतु खूब ख्याल रखना कि यह भेद खुलने न पावे।"

उसकी स्त्री तराज़ू लेने को क़ासिम के घर में गई। परंतु क़ासिम को घरमें न पा, उसने उस की स्त्री से कहा "अपनी तराज़ू एक क्षणके लिये मुझे दे।" उसने पूछा, "बड़ी चाहिये या छोटी।" उसने कहा, "मुझे छोटी सी तराज़ू चाहिये।" उसकी जिठानी ने कहा, "ज़रा ठहर जा, मैं ढूँढ़कर लाती हूँ।" इस

बहाने वह दृष्टि की ओट होकर तराज़ूके पलड़ों में मोम और चरबी लपेट कर लाई जिसमें मालूम हो कि अलीबाबा की स्त्री क्या तोलेगी। चिकनाई से उसमें निस्संदेह कुछ न कुछ लगा रहेगा। अलीबाबा की स्त्री ने उस तराज़ू को अपने घर लेजाके अशरफ़ियों को तौला। अलीबाबा गढ़ा खोदने लगा। दोनों स्त्री-पुरुषों ने मिलके उन अशरफ़ियों को गढ़े में गाड़ दिया। अलीबाबा की स्त्री क़ासिम की स्त्री को तराज़ू देने आई। जल्दी में उसे कुछ ध्यान न रहा कि एक अशरफ़ी चरबी की लस से उस तराज़ू में लगी थी। क़ासिम की स्त्री ने अशरफ़ी लगी हुई देख डाह की अग्नि से जलने लगी और समझी कि इस तराज़ू में अशरफ़ियाँ तुली हैं। वह अति आश्चर्य्य में हुई और सोचने लगी कि अलीबाबा ने जो अत्यंत निर्धन और दरिद्री था इतनी अशरफ़ियाँ कहाँ से पाईं, जिनको उसने तराज़ू पर तौला। क़ासिम, अलीबाबा का भाई, सायंकाल को जब अपने घर में आया तो उसकी स्त्री ने कहा, "तू अपने को बड़ा भाग्यवान् और धनवान् समझता है; परंतु तुझसे बढ़कर तेरा भाई बड़ा धनी है। उसकी स्त्री ने अशरफ़ियों को तौल कर रक्खा है। तू तो गिनकर रक्खा करता है।" क़ासिम ने पूछा, "तुम्हें कैसे मालूम?" उसने संपूर्ण वृत्तांत वर्णन किया और वह अशरफ़ी जिसपर किसी प्राचीन बादशाह का सिक्का था, उसे दिखाई। क़ासिम को रात्रि भर ईर्षा से निद्रा न आई। भोरको उठ कर अपने भाई के पास गया और उससे कहा, "भाई प्रकट में तुम बड़े ग़रीब जान पड़ते हो, परंतु तुम्हारे पास बहुतसा धन है और इतनी अशरफ़ियाँ हैं कि तुम उनको तराज़ू में तौलते हो।" अलीबाबा ने कहा, "मैं

तुम्हारे अभिप्राय को नहीं समझता। उसे विस्तारपूर्व्वक वर्णन करो। क़ासिम ने कहा, "अब तुम मुझे मत भुलाओ।" फिर उसने वह अशरफ़ी, जो उसकी स्त्री ने दी थी अलीबाबा को दिखाई और कहने लगा कि इस प्रकार की लाखों अशरफ़िया तुम्हारे पास हैं। मेरी स्त्री ने इसे तराजू में पाया था। अलीबाबा ने यह वृत्तांत सुन, जाना कि यह दोनों स्त्री पुरुष मेरे भेद को जानगये। अब इनसे छिपाने में वैर होगा। लाचारी से उनसे ठगों का वृत्तात कह सुनाया। उसने यह सुन अलीबाबा से कहा यदि तुम वह स्थान न बताओगे तो मैं अभी तुम्हारी अशरफ़ियों का हाल कोतवाल से जाकर कह दूँगा। व्यर्थ में तुम्हारी अशरफ़ियाँ जप्त हो जावेंगी और तुम क़ैद होजाओगे। अलीबाबा ने भयभीत होकर सब हाल उससे कह दिया और वह मंत्र भी उसे बता दिया। क़ासिमने सब बातोंको सीखकर दूसरेदिन प्रभातको दश खच्चर अपने साथ लिये और उसी ओर को जिधर अलीबाबा ने बताया था गया। जब उस पर्व्वत और वृक्षके पास, जिसपर अलीबाबा छिपा था, पहुँचा, तो उसे दरवाज़ा नज़र आया। उसने कहा "खुल अय समसम" उसके कहने से वह दरवाज़ा खुल गया और क़ासिम उसके भीतर गया। वहाँ उसने बहुतसी वस्तुएँ देखीं कि चारों ओर पटी पड़ी हैं। वह दरवाज़ा उसके भीतर जाने के बाद बंद होगया। वह उस कंदरा में चहुँ-ओर फिरा किया और भाँति २ की वस्तु और खज़ाने देखता रहा। निदान दश खच्चरों के बराबर अशरफ़ियों की थैलियाँ भरके द्वार के पास लाया और चाहा कि दरवाज़े को खोल अशरफ़ियों को खच्चरों पर लादे, परंतु (समसम) अर्थात् तिलिस्म

का शब्द भूलकर कहने लगा कि "ओपिन बारले" तात्पर्य्य खोल हे जौ जब वह दरवाज़ा न खुला, तो वह अत्यन्त आश्चर्य्य में हुआ और बारी २ से हर अनाज का नाम, सिवाय समसम के, पुकारा; परंतु वह किवाड़ न खुला। समसम का शब्द उसे ऐसा भूला मानो उसने कभी इस शब्द को सुनाही न था। निदान वह उन अशरफ़ियों को ढेर करके अचंभे में उस कंदरा में कभी आगे बढ़ता और कभी पीछे हटता था। उस असंख्य द्रव्य के देखने से पहिले उसे खुशी हुई थी; अब वही दुःख की हेतु हुई। अब वह अपने प्राण से निराश हुआ।

अकस्मात् मध्याह्न के समय वे ठग वहाँ आये और दूर से खच्चरों को देख अचंभे में हुये कि इनको यहाँ कौन लाया। जब पास पहुँचे, तो खच्चरों के पीछे दौड़े कि मालूम करें कि उन को यहाँ कौन लाया है। फिर सरदार, अपने साथियों समेत घोड़े से उतर द्वार की ओर चला। वहाँ पहुँच उसने मंत्र पढ़ा और किवाड़ खुल गया। क़ासिम घोड़ों की टापें सुनते ही धरती पर गिर पड़ा। उसको निश्चय हो गया कि ये वेही ठग हैं। अब मैं निस्संदेह मारा जाऊँगा। तौ भी वह सँभल के बैठा कि दर-वाज़ा के खुलतेही निकल भागे। उसके दौड़ने से ठगोंका सरदार जो आगे था, सदमें से गिर पड़ा। एक सवार ने क़ासिम को देखते ही उसके खड्ग ऐसा मारा कि वह दो टूक हो गया। फिर वे सब भीतर गये और वे अशरफ़ियाँ, जो क़ासिम ने लेजाने के लिये द्वार के पास रक्खी थीं, भीतर लेजाकर कोष में रखदीं। घबराहट में उन थैलियों के न होने पर जो अलीबाबा ले गया था, कुछ ध्यान न किया। सबके सब इसी चिंता में पड़े कि यह मनुष्य

किधर से आया। रोशनदानों से तो कोई नहीं आ सक्ता; क्योंकि इतने ऊँचे पहाड़ पर कैसे कोई चढ़ सक्ता है। यदि द्वारसे आता तो उसे खोलने और बंद करने का मंत्र मालूम होता। फिर उन्हों ने क़ासिम की लोथ के चार टुकड़े किये और कंदरा के बाहर बाँई ओर दो टुकड़े और दो दाहिनी ओर रक्खे कि औरों को वह लाश देखकर उपदेश हो और गुफा में जाने की वे इच्छा न करें। फिर वे कंदरा का द्वार मूँद, घोड़ों पर सवार हो चले गये। जब क़ासिम की स्त्री ने देखा कि रात्रि हो गई है और क़ासिम लौट कर घर में नहीं आया है, तो घबड़ाकर अलीबाबा के पास दौड़ी गई और रोकर कहने लगी, "भाई अबतक क़ासिम घरमें नहीं आया। तुमको अवश्य मालूम होगा कि वह किस वन में गया है। ऐसा न हो जो उस पर कुछ दुःख पड़ा हो। अलीबाबा समझा कि कुछ न कुछ विघ्न अवश्य हुआ है, जो क़ासिम नहीं लौटा। उसकी स्त्री को धैर्य्य देकर कहा कि क़ासिम अति चतुर है। वह नगर से होकर नहीं आवेगा। नगर के बाहर से आवेगा। इसीलिये उसे विलंब हुआ। इस बात के सुनते ही उसकी स्त्री को कुछ धैर्य्य हुआ और वह अपने घर आई। जब आधीरात बीती, तो अपने पति के लिये अधिक व्याकुल हुई; परंतु भय से चिल्ला नहीं सक्ती थी कि कहीं उसके पड़ोसी उस भेद को जान न लें। अपने मनही मनमें रोती और धिकारती थी कि क्यों मैंने इस भेद को कहा और अलीबाबा से ईर्षा ठानी। निदान वह रात्रि उसे रोते कटी। जब प्रभात हुआ तो अलीबाबा के पास दौड़ी गई। अलीबाबा अपनी भाभी को धैर्य्य दे, तुरंत अपने गधों समेत, उसी वन को सिधारा। जब उस पर्वत के नीचे

पहुँचा, तो वहाँ रुधिर बहा देख आश्चर्य में हुआ। न तो उसने अपने भाई को देखा और न खच्चरों को। इससे अति आश्चर्य में हो शोचने लगा कि शकुन कुछ बुरा मालूम होता है।

फिर उसने उसी मंत्रका उच्चारण किया दरवाज़ा तुरंत खुल गया। वहाँ दरवाज़े के दाहिने और बायें अपने भाई की लोथ के टुकड़े देख, बड़ा भयभीत हुआ। उसने अपने भाई की लोथ को चादर में बाँध एक गधे पर लादा और उसको चारों ओर से लकड़ी से छिपा लिया और दो गधों पर असरफ़ियों की थैलियाँ लाद, उन पर भी लकड़िया रक्खीं। फिर उसने द्वारको उसी मंत्र से मूँद दिया और नगर को सिधारा और बड़ी रक्षा से अपने घर में पहुँचा और वह अशरफ़ियों से लदे हुये गधे घर में लेजाकर अपनी स्त्री से कहा कि यह असरफ़ियाँ उतारले। परंतु क़ासिम के मारे जाने का हाल न कहा और उसी गधे के सहित जिस पर क़ासिम की लोथ थी, क़ासिम के घरमें आया और दरवाज़े पर हाँक दी। मरजीना नामक एक लौंड़ी ने, जो बड़ी चतुर और समझदार थी, आकर किवाड़ खोला। अलीबाबा उस गधे को भीतर ले गया और क़ासिम की लोथ को उतार मरजीना से कहा, "हे मरजीना! तू इस लोथ के गाड़ने का उपाय कर।" मैं अभी अपनी भावज को एकबात कह के, तेरा साथ देता हूँ। क़ासिम की स्त्री ने अलीबाबा को दूर से देख पूछा, "हे अलीबाबा! मेरे पति का क्या समाचार लाये; पर खेद है कि मैं तेरे मुख पर दुःख के चिह्न देखती हूँ। अलीबाबा ने उससे उसके पतिका ठगों के हाथ से मारे जाने और उसकी लोथ के लाने की सब बातें कहीं। और कहा, "हे सुंदरि! अब जो कुछ होना था वह हुआ, परंतु

यह भेद छिपा रखना उचित है, जिससे हमारे प्राण बचें। इतना फिर अलीबाबा ने अपनी भावज से कहा कि ईश्वर की इच्छा में किसी का उपाय नहीं चलता। अब संतोष रक्खो। तुमको उचित है कि शोकके दिन पूरे होने पर मुझसे विवाह करलो। अति आनंद में रहोगी। मेरी स्त्री अति सुशील है। तुमसे वह वैर न करेगी। क़ासिम की स्त्री ने रोकर कहा, "मैं तुम्हारी इच्छा से बाहर नहीं।" फिर उसने पति के लिये बड़ा विलाप किया और शिरके बाल नोचे। अलीबाबा ने उसे वहीं छोड़, मरजीना से आकर अपने भाई के कफ़न के लिये बातचीत की। जो कुछ समय के अनुकूल था, बाँदी से कह कर, गधों समेत अपने घर आया। अलीबाबा के जाने के बाद मरजीना अत्तार की दूकान पर गई और उस भेद के छिपाने के लिये ऐसी औषध माँगी, जिसे मरणप्राय के समय बीमार को देते हैं। अत्तार ने औषध देकर उससे पूछा, "तेरे घरमें कौन बीमार है।" उसने रोकर कहा, "मेरा स्वामी क़ासिम बहुत बीमार हो गया है। न तो कुछ खाता है और न कुछ बातही करता है, इसलिये सब उसके जीने से निराश हैं।" दूसरे दिन मरजीना फिर उसी दूकान पर गई और उससे वही औषध और सुगंध माँगी, जब अत्तार ने उसे वह औषध दी, तो मरजीना उसे लेकर रोई और हाहा खाके कहने लगी, "मैं नहीं जानती कि औषध खाने का भी अवसर मिलेगा अथवा मेरे जाते ही जाते समाप्त हो जायगा।" इधर अलीबाबा बाट देखता था कि जिस समय क़ासिम के घरसे रोने पीटने का शब्द सुने, तो शीघ्र जा के शोक करे।

दूसरे दिन प्रभात को मरजीना मुँह अँधेरे एक बूढ़े दर्ज़ी के

पास गई जिसका नाम मुस्तफ़ा था। वह दर्ज़ी बहुधा क़फन सिया करता था उसी समय उसने दूकान खोली थी। मरजीना ने एक असरफ़ी उसको दी और कहा, "अपने नेत्रों में पट्टी बाँध कर, मेरे घर तक चलो।" मुस्तफ़ा ने कहा, "मैं इस तरह नहीं चलूँगा।" मरजीना ने उसके हाथ में एक अशरफ़ी और रखके बहुत बिनती की। वह दर्ज़ी अशरफ़ियों के लोभ से चलने को राज़ी होगया। मरजीना उसके नेत्रों पर रूमाल बाँध और उसका हाथ पकड़, उसी मकान में, जहाँ उसके स्वामी की लाश पड़ी थी लेगई। क़ासिम की लोथ को क्रम से रख और उस पर चादर डाल, अँधेरी कोठरी में मुस्तफ़ा की आँखें खोल दीं और कहा, "तुम इस लोथके बराबर कफ़न सीकर तय्यार कर दो। तुमको एक अशरफ़ी और दूँगी।" जब मुस्तफ़ा ने कफ़न सीकर तय्यार कर दिया, तब मरजीना ने तीसरी अशरफ़ी भी उसे दे डाली। फिर उसकी आँखों में पट्टी बाँध कर उस कोठे से हाथ पकड़ ले आई, जहाँ पहिले उसने उसकी आँखों पर रूमाल बाँधा था और उसको बिदा कर अपने घरमें लौट आई। फिर जल गरम कर उसने और अलीबाबा ने मिलकर क़ासिम की लोथ को स्नान कराया और उसको कफ़नाकर स्वच्छ स्थान पर रक्खा। मरजीना एक मस्जिद के इमाम के पास गई और उससे कहा, "एक अरथी तय्यार है। चलके उस पर निमाज़ पढ़ो और उसको फलाने क़बरिस्तान पर लेजाकर गाड़ दो। उस मस्जिद के इमाम और वहाँ के रहनेवाले, जिनका यही काम था, उसके साथ आये और चार मनुष्य उसके जनाज़े को अपने काँधे पर उठा, निमाज़ पढ़ने के स्थान पर ले गये। निमाज़ पढ़ने के बाद चार

मनुष्य अरथी को क़बरिस्तान ले चले। मरजीना, जनाज़े के आगे नंगे शिर रोती-पीटती और विलाप करती चली। अली-बाबा पड़ोसियों के साथ जनाज़ा लेकर क़बरिस्तान में आया और उसको गाड़, अपने भ्राता के शोक में चालीस दिन तक बैठा रहा। नगर की रीति के अनुसार मुहल्लेकी स्त्रियाँ एकत्र हो क़ासिम की स्त्री के साथ रोईं और उसको धैर्य्य देकर चली गईं।

अलीबाबा उसकी स्त्री और क़ासिम की स्त्री के सिवाय नगर का कोई मनुष्य, इस भेद को नहीं जानता था। चालीस दिनके बाद अलीबाबा ने क़ासिम की स्त्री के साथ विवाह किया।

अलीबाबा का एक पुत्र था। वह किसी बड़े व्यापारी के साथ रहा करता था और व्यापारी के कार्य्य को भलीभाँति जा-नता था। उसके पिताने क़ासिम की दूकान उसे सौंपी। वह दूकान पर बैठने लगा।

चालीस ठगों का वृत्तांत

एक दिन वे ठग अपनी कंदरा में आये और वहाँ क़ासिम की लोथ का कुछ भी चिह्न न पाकर बड़े आश्चर्य्य में पड़े। और देखा कि उस खज़ाने से बहुत सी अशरफ़ियाँ भी निकल गई हैं। उनके सरदार ने कहा, "यदि इस बात का खोज नहीं करते तो आगे हमें अधिक दुःख होगा और धीरे २ यह संपूर्ण द्रव्य, जो हमने और हमारे पुरुषों ने बड़े श्रम से बहु काल में संचय किया है, नष्ट होजायगा।" सबोंने सोचा कि इसमें कुछ संदेह नहीं कि वह मनुष्य जिसे हमने वध किया था, दरवाज़ा खो-लने और बंद करने के मंत्र को जानता था। और कोई मनुष्य भी इस भेद को जानता है, जो दरवाज़ा खोलके बहुतसा धन

और मुर्दे को उठा लेगया। हममें से एक अति चतुर और प्रवीण मनुष्य नगर में परदेशी के वेष में जाके, गली-गली महल्ले-महल्ले फिर के मालूम करे कि इन दिनों नगर में कौन मनुष्य मरा है और वह कहाँ रहता है। जब इतना मालूम हो जायगा, तो आगे और कोई यत्न किया जावेगा। उनमें से एक ठग ने कहा, "मैं इस कार्य्य के निमित्त नगर में जाता हूँ या तो उस मनुष्य का ठिकाना मालूम कर आप से कहूँगा या अपने प्राण दे डालूँगा।"

वह ठग राति को नगर में आया और सबेरे ही चौक में गया, तो मुस्तफ़ा की दूकान के सिवाय सब दूकानें बंद पाईं। वह दरज़ी अपनी दूकान में अपना काम हाथ में लिये हुये, मोढ़े पर बैठा हुआ था। इसने जाके उसे प्रणाम किया और कहा, "अभी अँधियारा है तुम इस समय अपना कार्य्य कैसे कर सके हो?" मुस्तफ़ा ने कहा, "जान पड़ता है कि तुम परदेशी हो। इस बुढ़ापे में भी मेरी दृष्टि ऐसी तीव्र है कि अभी कल ही अँधियारे घर में एक लोथ का कफ़न सिया था।" यह बात सुनकर ठगने अपने मन में समझा कि इस वृद्ध का उत्तर मेरी अभिलाषा के अनुकूल है। फिर यह भेद अधिक जानने के लिये उसने कहा कि मालूम होता है तुम कफ़न सिया करते हो? मुस्तफ़ा ने कहा, "जो कुछ समझो। मुझसे कुछ अधिक मत पूछो।" ठग ने एक अशरफ़ी उसी दरज़ी के हाथ में रख के कहा, "मैं तुमसे कोई भेद नहीं पूछता। केवल यही चाहता हूँ कि तुम पते से या अपने साथ ले जाकर मुझे उस घर को बता दो, जिसमें तुम कफ़न सीने को गये थे।" मुस्तफ़ा ने लालच के वश होकर

कहा, "उस घर को तो मैंने अपनी आँखों से नहीं देखा। मुझे एक स्त्री एक महल में ले गई थी। उसे मैं निस्संदेह जानता हूँ। वह मेरे नेत्रों में पट्टी बाँध एक घर में ले गई थी और एक अँधियारे मकान में मेरी आँखें खोलकर, मुझे वह लोथ दिखाई और उसका कफ़न सिलवाया। फिर मेरे नेत्रों में पट्टी बाँध उसी स्थान में, जहाँ से ले गई थी लाके छोड़ गई और पट्टी खोल दी। भला मैं कैसे तुझे वह मकान दिखा सकता हूँ।" ठगने कहा, "मुझे वहाँ ले चल जहाँ से तेरी आँखें बंद की थीं। मैं तेरी आँखों को रूमाल से बाँधूँ और तेरे साथ रहूँ और तू उसी विचार से चल, जैसे कि पहिले पट्टी बाँध के चला था। शायद इस उपाय से मुझे वह घर मालूम हो जा। यदि तू मुझ पर इतनी दया करेगा तो मैं एक अशरफ़ी और तुझे दूँगा।" इतना कह, उसने एक अशरफ़ी और मुस्तफ़ा के हाथ में धर दी। मुस्तफ़ा ने उन दोनों अशरफ़ियों को जेब में रख, ठगसे उसी प्रकार से जाने की प्रतिज्ञा की। फिर उसने अपनी दूकान उसी भाँति खुली छोड़ी और उसको उस जगह पर लाकर कहा, "यह वही स्थान है, जहाँ से वह मुझे आँखें बंद करके ले गई थी।" ठगने उसकी आँखों में रूमाल बाँधा और उसके साथ चला। मुस्तफ़ा उसी भाँति उसी ओर को चला, जिधर पहिले मरजीना के साथ गया था। और उतनी ही दूर जाकर खड़ा हो गया और बोला, "यहीं तक पहिले भी आया था।" उस ठगने शीघ्र खड़िया का एक चिह्न उस पर कर दिया और मुस्तफ़ा की आँखें खोल पूछा, "यह किसका घर है?" उसने कहा, "मैं नहीं जानता। मैं इस महल्ले के लोगों को नहीं जानता।" ठगने जाना कि इससे अधिक हाल मुस्तफ़ा से मालूम नहीं हो

सक्ता, तो मुस्तफ़ा का अति गुण मान कर कहा, "तुमने मेरे लिये बड़ा परिश्रम किया है।"

फिर वह ठग उससे बिदा हो, वनको गया और मुस्तफ़ा अपनी दूकान पर आया। उसी समय मरजीना अपने घर से बाहर किसी काम के लिये गई थी। जब वह अपने घर पहुँची तो दरवाज़े पर चिह्न देख आश्चर्य में खड़ी होके सोचने लगी कि मेरे स्वामी को किसी वैरी ने पहिचानने के लिये यह निशान लगाया, न जाने क्या उपाधि मचे। सो उसने महल्ले भर के पड़ोसियों के दरवाज़ों पर खड़िया से वैसाही निशान बना दिया और यह भेद किसी से नहीं कहा।

वह ठग अपने समूह में गया और संपूर्ण वृत्तांत सरदार से कहा। वे सब लोग अलग २ होकर, सरदार समेत उस नगर में आये और जब वह मनुष्य, जो अलीबाबा के घर पर निशान बना गया था, अपने सरदार को पहिचनवाने के वास्ते लाया, तो सारदार ने पहिले एक दरवाज़े पर खड़िया का निशान देखा; इससे वह समझा कि यह घर उसी मनुष्य का है, जिसको हम ढूँढ़ते हैं। फिर जब उसकी दृष्टि दूसरे और तीसरे, यों महल्ले भर के दरवाज़ों पर पड़ी, तो ठीक वैसाही चिह्न सब द्वारों पर देख आश्चर्य में हुआ कि उस घर का कैसे पता लगे। वह पहला ठग इस हाल से बड़ा लज्जित हुआ और उसको उत्तर देते न बना। उसने सौगंद खाके अपने सरदार से कहा कि मैंने उसी एक दरवाज़े पर निशान बनाया था; परंतु मैं नहीं जानता कि सब दरवाज़ों पर वैसा चिह्न कैसे बना हुआ है। इससे उस दरवाज़े को भली भाँति नहीं पहिचान सके। फिर वह सरदार चौक में

आया और अपने साथियों से, जो वहाँ मिले, कहने लगा, "हमारा सब परिश्रम व्यर्थ गया। मकान का पता नहीं लगा। इस बात को अपने साथियों से कह देना। अब मैं वन में जाता हूँ।" अपने सरदार के साथ सब ठग उसी कंदरा को लौट गये। वहाँ सरदारने उक्त ठग को, जो निशान कर आया था और उसकी बात झूठ हुई थी, सबके सामने दंड दिया और सबसे कहा, "जो कोई नगर में जाकर मेरे चोर का ठीक पता लगा लावेगा उसका मैं बड़ा उपकार करूँगा। यह सुन उनमें से एक मनुष्य ने कहा, "मैं नगर को जाता हूँ। उसके घर का पता लगाके आप से कहूँगा।" सरदार ने उसे पारितोषिकादि देकर बिदा किया। वह भी पहले मुस्तफ़ा दरज़ी के पास आया और पहले ठग की तरह दरज़ी को अशरफ़ियाँ दे उसे राज़ी किया और नेत्रों में पट्टी बाँध अलीबाबा के घर तक लेगया और उसके द्वार पर लाल चिह्न किया; क्योंकि श्वेत चिह्नों में लाल चिह्नवाला घर पहिचाना जासक्ता है। उसके चले जाने के बाद मरजीना लाल चिह्न देख सशंकित हुई और उसने वैसा ही चिह्न और दरवाज़ों पर भी कर दिया। उस ठग ने अपने समूह में जाकर अपने सरदार से कहा, "मैं द्वार पर चिह्न कर आया हूँ। अब वह दरवाज़ा औरों से स्पष्ट प्रतीत होना है।"

सरदार कई ठगों सहित वहाँ आया, तो उसने पूर्ववत् सब द्वारों पर एकसे चिह्न पाये। इससे खिसियाकर अपने घर लौटकर उसने दूसरे ठगको भी यथोचित दण्ड दिया। फिर सोचने लगा कि दो मनुष्यों से चूक भई और दंड पाया। निश्चय है कि अब कोई मनुष्य इस काम में हाथ न डालेगा। इससे उत्तम है

कि मैं स्वयं नगर में जाके वैरी का घर ढूँढूँ। फिर आपही अकेला नगर में आके उसी दरज़ी के बताने से जिसको बहुत कुछ दिया था अलीबाबा के घर तक पहुँचा। उसपर कोई चिह्न नहीं किया; किंतु दो बेर भीतर बाहर से उस द्वार को देख और उसके निशानों को भली भाँति ध्यान में रख वन में गया और अपने समूह से कहा, "मैं उनको भली प्रकार देख आया हूँ। उसके पहिंचानने में अब धोखा नहीं पड़ेगा; परंतु तुम लोग एक काम करो कि उन्नीस खच्चर मोल लेआओ। एक कुप्पा तेल का और सैंतीस कुप्पे खाली इकट्ठे करो। हर एक कुप्पे में तुममें से एक मनुष्य शस्त्र सहित बैठें दो कुप्पे एक खच्चरपर लादे जावें। उन्नीसवें खचर पर एक मनुष्य और दूसरी ओर उसके कुप्पा तेलका रक्खाजाय। मैं भठियारों के वेष में नगर के भीतर खच्चरों समेत जाऊँगा और उसी दरवाज़े पर पहुँच, उसके धनी से रात्रि में वहीं रहने के लिये कहूँगा" फिर वहाँ रह कर रात्रि को सब मनुष्य कुप्पे में से निकल कर उसे मारडालेंगे और जितना कि द्रव्य वह यहाँसे उठा लेगया है, उन खचरों पर लाद लेआऊँगा। यह मत सबने माना और गाँव में जाकर खचर और कुप्पे मोल लाये। जिस भाँति उसने कहा था, एक-एक ठग उस कुप्पे में बैठा और कुप्पों के ऊपर तेल मल दिया कि सब कुप्पे तेल ही के दिखलाई दें। सरदार ने अपना वेप तेल बेंचनेवालों का बनाया और उन्नीस खच्चरों पर सैंतीस कुप्पे जिनमें एक-एक ठग को बैठाया था और तेल का एक कुप्पा लाद के नगर में ऐसे समय लाया कि अलीबाबा के घर संध्या को पहुँचा। संयोगवश उस समय अलीबाबा भोजन कर अपने दरवाज़े पर टहलता था।

ठगों के सरदार ने उसे दंडवत् करके कहा, "मैं अमुक गाँव का रहनेवाला हूँ और तेलका व्यापार करता हूँ; आज संध्या हो गई है इसलिये सोचता हूँ कि रात कहाँ बिताऊँ, सो आप कृपा कर मुझे खच्चरों सहित अपने घर में जगह दें, तो मैं कुप्पे उतारूँ और घोड़ों का दाना घास करूँ।" अलीबाबा, उस दुष्ट का शब्द पहिंचानकर भी, क्योंकि वह उसने वृक्ष परसे कंदरा के भीतर सुनाथा, उसे भठियारे के स्वरूप में देख, पहिचान न सका। सुशीलता से उसकी बातको स्वीकार कर कहा, "बहुत अच्छा आज की रात यहीं रहो। एक विशाल कोठा खाली करके उसे बतला दिया कि इसके भीतर तुम उतरो और अपने खच्चरों को बाँधो। एक सेवक को भी दाना घास के लिये नियत कर दिया। और मरजीना से कहा, "एक मेहमान मेरे घरमें आया है, उसके लिये जल्दी भोजन बना और स्वच्छ शय्या बिछाकर तय्यार रख। जब ठगों का सरदार कुप्पे उतार चुका, तो अलीबाबा ने उसका बड़ा सन्मान किया और उसके सम्मुख मरजीना को बुला के आज्ञादी कि मेरे मेहमान की बड़ी सेवा करना, जिसमें उसे किसी प्रकार का परिश्रम न पड़े। भोर को मैं हम्माम करूँगा। गर्म जल तय्यार रखना। एक जोड़ा वस्त्र का निकाल अब्दुल्ला नौकर को दे। उसे मैं स्नान के उपरांत पहनूँगा। सवेरे पीने के लिये शोरुवा रात ही को तय्यार करना। मरजीना ने कहा, "बहुत अच्छा, जिस २ कामकी आपने आज्ञा दी है, उसे मैं समय पर करूँगी।" अलीबाबा यह आज्ञा मरजीना को दे अपने सोने की जगह में जा सो रहा और ठगों का सरदार भोजन करने के उपरांत अश्वशाला में गया और खच्चरों और

साथियों को भोजन खिलाया; फिर हर एक कुप्पे के पास गया और अपने साथियों को धीरे से समझा बुझाकर कहा, "आधी रातको जब मैं तुमको बुलाऊँ, तो तुम तुरंत कुप्पे को मुँह से पेंदी तक छुरी से काट कर निकल आना।" फिर वह सरदार आज्ञा देकर रसोई के दरवाज़े से सोने की जगह आया। मरजीना दीपक लिये उसके साथ थी। उसने उस सरदार से पूछा, "कोई वस्तु आपको और आवश्यक हो, तो मुझसे कहो।" उसने कहा, "मुझे और कुछ नहीं चाहिये।" यह कह उस दीपक को बुझा दिया और शय्या पर जा लेटा। और अपने मन में कहा कि एक नींद सोके उठूँगा और अपने साथियों को अपने कार्य्य के लिये बुलाऊँगा।

मरजीना ने स्वामी की आज्ञानुसार एक जोड़ा सफ़ेद कपड़ा निकाल, अब्दुल्ला नौकर को, जो तब तक जागता था, दिया। फिर उसने शोरुवा पकाने के लिये चूल्हे पर बर्तन रक्खा और आँच करदी। थोड़ी देर बाद उसको शोरुवा देखने के लिये दीपक की आवश्यकता पड़ी। सब दीपक बुझ गये थे और घर में तेल न था। मोमकी कोई बत्ती भी उसे न मिली। वह दासी दीपक जलाने के लिये बड़े सोचमें थी कि अब्दुल्ला सेवक ने उसे चिंतित देख के पूछा, "तू इस समय किस शोच में है? उस मकान में तेल के बहुत से कुप्पे रक्खे हैं। जितना तेल तुझे चाहिये ले आ।" सेवक तो इस बात को विचार कर सो रहा कि प्रभात को अपने स्वामी के साथ मुझे भी हम्माम जाना होगा।

मरजीना अकेली तेल का लोटा उठा, उस मकान में, जहाँ तेलके कुप्पे बराबर रक्खे थे गई। जब वह एक कुप्पे के पास पहुँची, तो उसमें से ठग, जो अपने सरदार के आगमन की बाट

देखता था, आहट पा के, धीरे से पूछने लगा, "क्या हमारे निकलने का समय आगया ?" मरजीना उसका शब्द सुन यद्यपि उसने बहुत धीरे से पूछा था, भयभीत हुई और उनकी धूर्त्तता को समझ गई और उसके प्रश्न का उत्तर सरदार की भाँति दिया कि अभी नहीं। फिर वह दूसरे कुप्पे के पास गई। वहाँ से भी यही शब्द सुना और उसने वही उत्तर दिया। इस भाँति सब कुप्पों के पास गई और मनमें कहने लगी, "हे ईश्वर! इस ठग को मेरे स्वामी ने तेल बेंचनेवाला समझ कर उतारा है। ये सब चोर हैं। उसे लूटने और उसका वध करने के लिये, तेल बेचनेवाले का वेष धर के आये हैं।" मरजीना ने तेलवाले कुप्पे में से एक कुल्हड़ तेल का भर लिया और रसोई में जाकर दीपक में तेल डाला। उसे जलाया और एक बड़ी डेग निकाल, उसे कुप्पे के तेल से भर खूब गर्म किया। जब तेल गर्म हो गया, तब मरजीना, उसमें से एक डेगची भर एक सिरे से कुप्पों में डालने लगी। वे सब ठग उन्हीं कुप्पों में जल भुनके रह गये और उस चतुर और बुद्धिवंती बाँदी के उपाय से बिना झगड़े और शोर के सब मर गये। फिर मरजीना उस डेग समेत रसोई में दरवाज़ा मूँदके बैठ रही और अलीबाबा के लिये शोरुवा पकाने लगी। एक घड़ी भी न बीती थी कि ठगों का सरदार जागा और दरवाज़े को खोल क्या देखा कि चहुँओर अँधियारा है। उसने हाँक दी, परंतु वहाँ से आवाज़ न आई। क्षण भर के बाद उन सबको फिर पुकारा, तथापि कोई उत्तर न आया। तीसरी बार फिर बड़े ज़ोरसे आवाज़ दी। फिर भी कुछ न सुना, तब व्याकुल हो उसी मकान में गया जहाँ वे सब कुप्पे रक्खे हुये थे। उसने बिचारा

कि यह सब अचेत सो गये हैं । वहाँ जा सबको जगाऊँ । जब एक कुप्पे के पास गया, तो उसमें से जले हुये मनुष्य की दुर्गंधि आई और उसे बहुत गर्म पाया । इसी भाँति सब कुप्पों के निकट गया और यही दशा देखी, तब आप भी भय से दीवार पर चढ़ बाग़ की ओर कूद पड़ा और वहाँ से भागा । जब बहुत देर हुई और वह सरदार वहाँ से न लौटा, तो मरजीना ने जाना कि वह दुष्ट पिछवाड़े से कूद भागा; क्योंकि बाहर के दरवाज़े पर दो कुफुल लगे हुये थे । मरजीना उन ठगों से सुचित्त हो सोरही । तड़केही अलीबाबा हम्माम में गया । अबतक उसे रात्रि का समाचार मालूम न हुआ था । जब अलीबाबा ने सूर्योदय के प्रथम हम्माम किया, तब उन कुप्पों को अपने घर में रक्खा देख आश्चर्य में हुआ कि क्या अबतक व्यापारी अपने खच्चरों पर कुप्पे लादकर बाज़ार नहीं ले गया । उसने मरजीना से इसका हेतु पूछा । उसने उत्तर दिया कि ईश्वर आपकी १२० वर्ष की आयु करे । मैं इस व्यापारी का वृत्तांत आपसे एकांत में कहूँगी । अलीबाबा उसके साथ एकांत में गया ।

मरजीना दरवाज़े को मूँद उसे एक कुप्पे के निकट ले गई और कहने लगी कि देखिये इसमें तेल है । जब उसने कुप्पे में देखा तो उसे मनुष्य दृष्टि पड़ा । वह चिल्लाया और भय खाके भागा । उसने कहा, "तुम इस मनुष्य से डरो मत । यह तुमको कष्ट नहीं दे सक्ता । यह मरा पड़ा है । अलीबाबा ने पूछा कि यह मनुष्य कैसे मारा गया । उसने कहा इसका हाल भी कहूँगी । अब चुपकेहो रहिये, कहीं तुम्हारे पड़ोसी इस भेदको जान न लें । अब तुम एक सिरे से दूसरे सिरे तक देखते जाओ । उसने

एक सिरे से दूसरे सिरे तक देखा सबको मरा हुआ पाया। बड़े आश्चर्य से कभी मरजीना को देखता और कभी कुप्पों की ओर दृष्टि करता। फिर मरजीना से पूछा, "उस व्यापारी का क्या हुआ?" उसने कहा, "वह व्यापारी नहीं था। उसका हाल भी तुम से कहूँगी कि वह कौन था और उसका क्या हुआ?" अभी तुम हम्माम से आये हो। ईश्वर ने कुशल की। शोरुवा तय्यार है, उसको पीजिये। उसने कहा, "इस हालको मुझसे कहो, जिससे मुझे धैर्य्य हो।" उस के सुनने के लिये अत्यंत व्याकुल हो रहा हूं। मरजीना ने सब हाल सिलसिलेवार कह सुनाया। उसने यह भी कहा कि तीन दिन पहिले मुझे इस बात के चिह्न भी मालूम हो गये थे; परंतु मैंने आपसे नहीं कहा। अब वह भी कहती हूँ। एक दिन सबेरे जब मैं घर से बाहर निकली, तो दरवाज़े पर एक सफ़ेद निशान देखा और दूसरे दिन लाल चिह्न देखा। दोनों बार मैंने अपने सब पड़ोसियों के द्वारपर भी वैसे ही चिह्न कर दिये, जिसमें हमारा दरवाज़ा पहिचाना न जा सके। तुम निश्चय समझो कि यह दुष्टता उसी वन के ठगों की थी। पहिचान के लिये तुम्हारे द्वार पर निशान कर गये थे; परंतु उन चालीसों में से दो को न जाने क्या हुआ? अब उन दो ठगों और सरदार से जो बच कर गये हैं, निश्चिंत न रहना। वे अवश्य तुम्हारे पीछे लगे रहेंगे। अवसर पाकर निस्संदेह तुम पर वार करेंगे। मैंने तो जो कुछ तुम्हारी प्राण रक्षा के लिये बन पड़ा, वह किया और आगे भी यथोचित प्रबंध करूँगी।

अलीबाबा यह वृत्तांत सुनकर हर्षित हो कहने लगा कि मैं तुझ से बहुत प्रसन्न हुआ। तू अपने लिये जो कुछ कहे, मैं जीते

जी कर दूँ। मरजीना ने कहा, "पहिले इन लोथों को अपने बाग़ में शीघ्र गाड़ दो, जिसमें लोगों को यह हाल मालूम न हो।" अलीबाबा अपने नौकरों को साथ ले बाग़ में जो बाड़ा था, वहाँ गया और वृक्षों के नीचे बहुत गहरा गढ़ा खोद सब मुर्दों को गाड़ दिया। ऊपर से कूट पीट के पृथ्वी को बराबर कर दी। जिससे कोई चिह्न न जान पड़े। सब कुप्पे और हथियार छिपाकर एक २ दो २ खच्चर अपने सेवक के हाथ बाज़ार में भिजवाके बिकवा दिये। अलीबाबा बड़ी होशियारी से रहता कि कहीं उसके घर में धन होने की बात किसी को मालूम न हो जाय।

ठगों का वह सरदार भागकर उसी वनमें अत्यंत विकलता से गया और विचारने लगा कि अब कोई ऐसा यत्न करूँ कि अलीबाबा का वध हो, नहीं तो वह इस कोष का सब धन निकाल ले जायगा। किसी दूसरे का साथ न करूँ और अपने आपही जैसे हो सके उसको मारूँ। फिर अपने मतलब के मित्र रख वही कार्य्य, जो पीढ़ियोंसे चला आताहै, किया करूँ। यह मनमें ठान रात्रिको वहीं सोरहा। सबेरे अपना भेषबदल एक सरायमें उतरा। वहाँ उसने सोचा कि इतने मनुष्यों के मरने का हाल बादशाह के पास जरूर पहुँचा होगा और अलीबाबा पकड़ा गया होगा। उसका घर और माल सब छिन गयाहोगा। यह सब वृत्तांत नगरमें अवश्य फैलगया होगा। यह उसने लोगों से पूछा कि कोई भारी वारदात तो यहाँ नहीं हुई है? पर कोई नई बात न मालूम हुई। तब वह समझा कि निस्संदेह अलीबाबा बड़ा बुद्धिमान् है, जो कि इतना द्रव्य ले जाने पर तथा मनुष्यों के मारने पर भी अपनी होशियारी से अबतक बचा है। ऐसा न हो, जो तू भी इसके हाथसे मारा जाय

इतना होने पर भी उसने अलीबाबा को धोखा देने के लिये व्यापार की उत्तम २ वस्तुएँ अपने स्थान से लाकर एकत्र की और एक दूकान खोलदी। संयोग से वह दूकान अलीबाबा के पुत्र के दूकान के सम्मुख थी। उस दुष्टने अपना नाम ख्वाजे-हसन मशहूर किया। दूकानदारों और व्यापारियों से उसने मित्रता की और हर एक से मिलनसारी से रहने लगा। अलीबाबा के पुत्र के साथ जो तरुण और सुंदर था और अच्छे वस्त्र पहिरता था, बड़ी मित्रता की। बहुधा वह उसी के पास बैठा करता था। तीन चार दिन पीछे अलीबाबा को देख-कर, जो बहुधा अपने पुत्र को देखने दूकान पर आया जाया करता था, पूछा कि यह तुम्हारा कौनहै? उसने कहा, "मेरा पिता है।" इस बात को सुनते ही वह महाधूर्त्त, क़ासिम को बहुत प्यार करने लगा और उसे बहुत सी सौगात देता। बहुधा उत्तम-उत्तम भोजन बनाकर उसे अपने साथ खिलाता। अलीबाबा के पुत्र ने भी चाहा कि एक दिन उसको न्योता दें, परंतु उसका घर बहुत छोटा था; इसलिये यह बात उसने अपने पिता से कही। उसके पिता ने कहा, "बहुत अच्छा है, तुम भी अपने मित्र की दावत करो। जिस भाँति उसने तुम्हारा आदर किया था वैसाही करना। कल शुक्रवार है। बड़े व्यापारियों की तरह अपनी दूकान बढ़ाकर दोपहर के उपरांत टहलते हुये उसे घर ले आओ। मैं मरजीना को आज्ञा दे रखता हूँ कि वह भोजन तय्यार रक्खेगी।

दूसरे दिन शुक्रवार को अलीबाबा का पुत्र ठग को घर ले आया। जब वे द्वार पर पहुँचे, तो उसने ठग को ठहराकर द्वार खुलवाया और ठग से कहा, "यह द्वार मेरे पिता का है। जब से

उसने मेरे साथ तुम्हारे अधिक स्नेह का हाल सुना है, तबसे वह तुम्हारे साथ भेंट किया चाहते हैं। यदि भीतर चलकर उनसे भेंट कीजिये, तो मुझे हर्ष होगा।" यद्यपि ठग की यही इच्छा थी कि किसी प्रकार मेरा आवागमन अलीबाबा के घर में हो; तो अवसर पाकर अपना काम करूँ; परंतु उस समय वह न गया और अलीबाबा के पुत्र से कोई बहाना करके चले जाने की फिराक़ में था। इतने में अलीबाबा के नौकर ने द्वार खोला और उसको भीतर ले गया। जब वह घर में गया तो अलीबाबा से प्रसन्नतापूर्वक मिला, जिससे जान पड़े कि वह अपनी प्रसन्नता से आया है। अलीबाबा ने उससे उसकी कुशल पूछी और कहने लगे कि तुम मेरे पुत्र से अत्यंत स्नेह रखते हो और उस पर दया करते हो, इससे मैं तुम्हारा बहुत गुण मानता हूँ। मैं जानता हूँ कि जितनी प्रीति मैं उससे रखता हूँ, तुम उससे भी अधिक रखते हो। तब ठगने भी बहुत सी प्रसन्नता की बातें करके कहा कि मैं आपके पुत्र से अत्यंत खुश हूँ। यद्यपि वह छोटा है, पर ईश्वरने उसे बड़ी बुद्धि दी है, वह बड़ा सुपूत है। इस तरह वह बड़ी प्रीति से वार्त्तालाप करने लगा। थोड़ी देर पीछे ठग ने बिदा माँगी; तो अलीबाबा ने कहा, "कहाँ जाते हो? तुम को तो न्योता है। कृपाकर भोजन करके जाना। यद्यपि आपके योग्य श्रेष्ठ भोजन न होगा; पर मुझ पर दया करके थोड़ा खा लेना। वह बोला, मैं आपकी दयालुता से अत्यंत कृतकृत्य हुआ। और तो कुछ चिंता नहीं, पर एक काम मुझे ऐसा लगा है कि न मैं ठहर सकता हूँ और न कुछ खा सक्ता हूँ। दूसरे कई दिन से मुझे ऐसा एक रोग लगा है कि नमकदार चीज़ कोई नहीं खा सक्ता हूँ। अलीबाबा

ने कहा, "मैं अभी रसोइये से कह देता हूँ कि किसी चीज़ में नमक न डाले। यह कह आपने रसोइये से कहा कि बेनमक की रसोई बनाना। मरजीना यह सुनकर आश्चर्य्य में हुई कि ऐसा कौन मनुष्य है, जो नमक नहीं खाता। वह बोला, "कोई हो, तुम्हें क्या? हम कहें, जैसा करो।" मरजीनाने उनसे तो वैसा ही कहा; पर बड़े अचम्भे में आकर व्यापारी को देखने के बहाने कि कैसा है, जो नमक नहीं खाता। भोजन के पात्र बिछानें गई।

यद्यपि वह ठग व्यापारियों के वस्त्र पहिरे था और अपना भेष बदले था तथापि उसको देखते ही उसने पहिचान लिया और देखा कि अपने कपड़ोंमें एक खड्ग छिपाये है और इसी से नमक नहीं खाता। छलसे उसे मारना चाहता है। यह उसका बड़ा शत्रु है। मरजीना ने अपने मन में कहा कि जो तू संध्या को मेरे स्वामी को मारना चाहेगा तो मैं सवेरे ही तुझे मार डालूँगी। निदान वह पात्र बिछा, भोजन परोस के चली गई। जब भोजन हो चुका, तो फल खिलाये, मद्य पिलाई और आप रसोई जीमने के बहाने से भीतर गई। ठग ने मौका देख प्रसन्न हो, विचारा कि अब इससे अपना बैर लूँ और अगर लड़का बोले, तो उसे भी मारडालूँ, पर जब सब रसोई जीमें, तब यह काम करूँ। मरजीना ने उसकी घात परखली और बिचारा कि भोजन से पहिले इसीको मारना चाहिए। उसने तुर्त ही नाचने के वस्त्र पहिरे और मुँह छिपाने को एक दुपट्टा ओढ़ा। ऐसे भेष बदल नौकर से बोली कि तू तबला ले ले। हम दोनों मिलके स्वामी को रिझावें। यह कह, वे वहाँ जाय नाचने गाने लगे। मरजीना एक खड्ग हाथ में लेकर नाचती २ अलीबाबा के पास गई। उसने प्रसन्न हो

एक अशर्फ़ी दी। वैसे ही पुत्र ने भी दी। ठगकी तरफ़ भी गई, तो उसने भी अशर्फ़ी काढ़ने को जेब में हाथ डाला। उसने मौका पा बड़ी होशियारी से ऐसा खड्ग मारा कि उसका शिर अलग होगया। अलीबाबा यह देख डरकर क्रोध से बोला, "अरी यह क्या अनर्थ किया? अब मैं मारा जाऊँगा।" वह बोली, "नहीं, आप बच गये। देखिए, उसने उसके कपड़े खोले, तो एक छोटी छुरी बड़ी कामिल निकली और बोली यह वही ठग है या नहीं?"

षष्ठ प्रदीप

तुल्येऽपराधे सति तुल्य एव दण्डः प्रदेयो विषमे न देयः।
फले गृहीते लवणाप्रयाते दण्डो द्वयोर्मृत्युसमो यथाभूत्॥

(अर्थ) जिसका जितना अपराध हो, उसे उतनाही दंड देना ठीक है। थोड़े अपराध पर बहुत भारी दंड देना ठीक नहीं है। जैसे, सेब फल के ले लेने में सेवक को और नमक न डालने पर बदरुद्दीन को शूली देने का दंड दिया जाता था।

पर स्त्री और तीन सेवकों की कहानी

खलीफ़ा हारूँरशीद बहुधा रात्रिको भेष बदलकर अकेला बुग़दाद नगर में फिरा करता था। एक दिन जाफ़र मंत्री से कहा कि आज रात में मैं नगर में फिरूँगा। और मालूम करूँगा कि मेरी प्रजा का क्या हाल है? थानेदार किस प्रकार नगर की रक्षा करते हैं? यदि उनको अचेत पाऊँगा, तो उन्हें छुड़ाकर दूसरों को नियत करूँगा और यदि अपने कार्य्य पर तत्पर पाऊँगा, तो उन्हें पारितोषिक दूँगा। जाफ़र मंत्री अपने स्वामी की आज्ञानुसार नियत समय पर आया। खलीफ़ा, मंत्री और खोजियों के

दारोगा मसरूर को अपने साथ ले नगर की ओर गया। तीनों ने अपना ऐसा भेष बनाया कि वे जाने न जाते थे। कई बाज़ारों और गलियों से होते हुये एक तंग गली में पहुँचे। वहाँ उन्होंने चंद्रमा के प्रकाश में एक बड़े डील और श्वेत दाढ़ीके पुरुष को देखा कि जाल शिर पर और नारियल के पत्तों का टोकरा कंधे पर धरे, लाठी टेकता २ चला जाता है। खलीफ़ाने कहा, यह मनुष्य बहुत निर्धन जान पड़ता है।" इससे उसका हाल पूछना चाहिये। मंत्री ने आगे बढ़के उससे पूछा, "तू कौन है?" उसने उत्तर दिया, "स्वामी, मैं धीमर हूँ। इस समय मैं अत्यंत पीड़ित हूँ। आज मध्याह्न समय मैं मछलियाँ पकड़ने गया था, तब से इस समय तक एक मत्स्य भी मेरे हाथ न लगा। ख़ाली हाथ मैं अपने गृहको फिरा जाता हूँ। एक स्त्री और कई छोटे २ पुत्र हैं। मैं बड़े सोच में हूँ कि आज उन्हें भोजन कहाँ से दूँगा।" ख़लीफ़ा को उस पर दया उपजी और उससे कहा, "नदी पर फिर चल। एक बेर तू जाल डाल। कुछ निकले वा न निकले, परंतु ४००) रु० तुझे मिलेंगे। धीमर ने इस वचन पर विश्वास कर, उन तीनोंके सहित, नदी के किनारे जाकर जाल खोला और अपने मनमें सोचने लगा कि यह तीनों अत्यंत बुद्धिमान् और भले मनुष्य जान पड़ते हैं। मुझ से असत्य न कहेंगे। विश्वास है, अपने प्रण को पूरा करेंगे और मुझे तो एक रुपया भी बहुत है। उन्होंने ४००) रु० देने का प्रण किया है। यह विचार उसने अपना जाल समुद्र में डाला। थोड़ी देर बाद उसको खींचा तो अकस्मात् उस जाल में एक बहुतभारी बंद संदूक़ निकला। खलीफ़ा ने धीमर को मंत्री से ४००) रु० दिलवा तुरंत बिदा किया। मसरूर

अपने स्वामी की आज्ञानुसार उस संदूक को अपने कंधे पर रख ले चला। खलीफ़ा को अत्यंत लालसा हुई कि उसे खोल कर देखें कि उसमें कौनसी वस्तु है। उसे तुरंत निज भवन में ले गया। वहाँ पहुँच, उस संदूक को खोला। उसमें कोई वस्तु नारियल की चटाई में लाल डोरे से सी हुई देखी। खलीफ़ा की शीघ्रता के कारण उन्हें टाँके खोलने का अवकाश न मिला। छूरीसे उन टाँको को खोला। उस चटाई के भीतर पुराने वस्त्र में लपेटी हुई एक वस्तु थी। उस पर एक रस्सी बँधी हुई थी। जब उसको खोला तो देख कर अत्यंत आश्चर्यित हुआ। उस वस्त्रमें एक स्त्री की लोथ के टुकड़े थे, जो बरफ से भी अधिक श्वेत थे। खलीफ़ा उसे देख अत्यंत क्रोधित हुआ और मंत्री से कहने लगा, "तू ऐसे ही मेरी प्रजा की रक्षा करता है।" तेरे अधिकार में ऐसे अन्याई और दुष्ट मनुष्य हैं, जो मेरी प्रजा को इस निर्दयता से मारकर नदी में डालते हैं। बड़ा आश्चर्य है! प्रलय में मैं इसका क्या उत्तर दूँगा। यदि तू इसके वध करनेवाले को पकड़ न लावेगा, तो मैं सौगंद खाकर कहता हूँ, "इस खूनी के बदले, तुझे और तेरे घराने के चालीस मनुष्यों को फाँसी देकर मरवा ढालूंगा।" मंत्री ने विनय की, "हे स्वामी! इस सेवक को कुछ सावकाश मिले, तो इस स्त्री के मारनेवाले को ढूँढ़ लावे।" खलीफ़ा ने आज्ञा दी कि तीन दिन का सावकाश दिया जाता है। इस बीच में उसे ढूँढ़ ला।

जाफर मंत्री शोकयुक्त अपने गृह में आया और मनमें कहने लगा कि इतने बड़े और बसे हुये नगर में मारनेवाले का मिलना अति कठिन है। जो उसे मैंने पाया भी तो साक्षियों को कहाँ से

पाऊँगा। विश्वास है कि इसका हिंसक कभी का इस नगर से चला गया होगा। मैं अपने छुटकारे के लिए किसी अन्य हिंसक अपराधी को जो बंदीखाने में कैद हो, खलीफ़ा के सम्मुख लाके उसे उस स्त्री का हिंसक प्रकट करूँ, तो हो सक्ता है। परंतु मेरा मन नहीं चाहता कि ऐसा काम करूँ और दूसरे मनुष्य का अपराध दूसरे पर रक्खूँ। फिर उसने थानेदारों और सिपाहियों को आज्ञा दी कि उस स्त्री के हिंसक को तीन दिन के भीतर ढूँढ़ लावें जो न लावेंगे तो मेरे प्राण जायँगे। वे सब और मंत्री भी अपने प्राण के डरसे नगर के चारों ओर गये और घर २ उस हिंसकको ढूँढ़ने लगे। बहुत ढूँढ़ने पर भी उसका पता कहीं न लगा। तीन दिन बीत गए। वधिक मंत्री को खलीफ़ा के पास पकड़ कर ले गए। खलीफ़ा ने क्रोधित हो आज्ञा दी कि राजमंत्री और उसके घराने के चालीस मनुष्यों को लाकर मेरे दरवाजे पर उनकी गर्दन उतार लो। खलीफ़ा का हुक्म पाते ही फाँसी की इकतालीस लकड़ियाँ तुरंत खड़ी होगईं। उसके कुटुंब के चालीस मनुष्य पकड़ मँगाए गए।

सारे नगर में ढिंढोरा पीटा गया कि खलीफ़ा की आज्ञानुसार जाफ़र मंत्री और उसके चालीस नातेदारों को फाँसी दी जाती है, जिसे देखना हो आकर देखें। एक क्षण में यह बात नगर भर में फैल गई कि मंत्री मारा जाता है। फिर मंत्री को चालीसों नातेदारों समेत फाँसी के नीचे बैठाया गया और उनकी गर्दनों में रस्सियाँ डालीं। इतने में बहुत मनुष्य इकट्ठे हो गये बुगदाद के रहनेवाले मंत्री की शीलता के कारण उससे बहुत प्रीति करते थे। इस दशा में उसे देख सब रोने लगे; राज्य के सब मनुष्य मंत्री के न्याय के कारण उससे बड़े प्रसन्न थे, पर कोई खलीफ़ा

को इस आज्ञा के देने से बरज न सका। बधिक चाहते थे कि उन चालीसों मनुष्यों को फाँसी दें। इतने में एक तरुण रूपवान् पुरुष भीड़ को चीर फाड़ के तुरंत मंत्री के निकट पहुँचा और उस के हाथ को चूम के कहा कि उस स्त्री का हिंसक मैं हूँ। मैंने ही उसको मारा है। यद्यपि मंत्री उस मनुष्य की बात सुन कुछ प्रसन्न हुआ; पर उसकी तरुण अवस्था पर बहुत कुढ़ा और पश्चात्ताप किया। इतने में एक बड़े डील के वृद्ध मनुष्य ने आके मंत्री से कहा, "यह मनुष्य जो कुछ कहता है, सब झूठ है। उस स्त्री को मैंने मारा है मैं ही दंड के योग्य हूँ। यह मनुष्य निर्दोष है। उस वृद्ध ने तरुण के सम्मुख होके कहा कि रे पुत्र, तू घबराकर क्यों कुटुंबियों के मारने का इकरार करता है? यहाँ क्यों आया है? मैं इस संसार में बहुत रहा हूँ, मुझे अपने बदले में मारा जाने दे। उस तरुण ने मंत्री से कहा, "यह वृद्ध झूठ कहता है। उसका मारनेवाला मैं ही हूँ" मंत्री उन दोनों के वादानुवाद को सुन बड़ा विस्मित हुआ और खलीफ़ा के सम्मुख ले गया और विनय की कि हे स्वामी! ये दोनों उस स्त्री के मारने का इकरार करते हैं। उन दोनों ने खलीफ़ा के सम्मुख भी यही कहा। खलीफ़ाने यह सुन आज्ञा दी कि मंत्री आदि को छोड़ दो और इन दोनों को मारो। मंत्री ने छूटकर खलीफ़ा से विनय की कि हे स्वामी! एक हिंसा के बदले दो का मारना न्याय के विरुद्ध है। इतने में तरुण ने सौगंद खाके कहा कि इस स्त्री को मैंने मारा है। चार दिन हुये कि मैंने इसे मारकर और संदूक में बंद करके नदी में डाल दिया था, जो मेरी बात असत्य हो, तो प्रलय में अंधा और काला मुख होके उठूँ। खलीफ़ा को इस वचन के कहने से विश्वास

हुआ कि स्त्री का मारनेवाला यही है । वृद्ध भी चुप हो रहा ।

खलीफ़ा ने जवान से पूछा कि इस निर्दयता से उस स्त्री को तूने क्यों मारा ? अब क्यों आपही उसके बदले मरने को आया है ? तूने परमेश्वर का और मेरा कुछ भी भय न किया ? तरुण मनुष्य ने कहा, "अय स्वामी, जो कुछ मेरे और उस स्त्री के बीच में हुआ, वह सब लिखा जावे जिसमें सांसारिक मनुष्यों को उपदेश मिले । यदि आज्ञा हो तो मैं उस वृत्तांत को कहूँ । खलीफ़ा ने कहा, "अच्छा कहो ।"

फिर उस तरुण ने अपने और उस स्त्री के वृत्तांत को इस भांति वर्णन करना आरंभ किया ।

मरी हुई स्त्री की कहानी

उस मनुष्य ने कहा कि हे स्वामी ! यह मृतक स्त्री मेरी स्त्री और इस वृद्ध की पुत्री थी । यह वृद्ध मेरा चचा है । अभी यह बारहवर्ष की नहीं हुई थी कि इस वृद्धने इसका मेरे साथ विवाह कर दिया । ग्यारवर्ष विवाह को व्यतीत होगए हैं । इससे तीन पुत्र उत्पन्न हुये हैं तीनों पुत्र जीते हैं । यह स्त्री अत्यंत पतिव्रता, मेरी आज्ञापालक और सदैव मेरी प्रसन्नता पर हर्षित रहती थी । मैं भी उससे अत्यंत प्रीति करता था । सदा उसका मनोरथ पूरा करता था । एक मास व्यतीत हुआ कि वह बीमार हुई । मैंने उसकी यथोचित औषध की । वह अच्छी होगई और स्नान के निमित्त स्नानागार में जानेकी इच्छा की । अपने जानेके पहले उसने मुझ से कहा, "मेरा जी सेब खाने को चाहता है; कहीं से ढूँढ़के सेब लादीजिये । सेब न मिली, तो मैं फिर रोगी होजाऊँगी ।" मैंने कहा, "हे सुंदरी ! धीरजधर, जिस भाँति हो सकेगा, तेरे वास्ते सेब ढूँढ़ लाऊँगा ।"

यह कह, मैं तुरंत बाज़ार गया और सब फ़ल बेचनेवालों की दूकान पर ढूँढ़ने लगा और एक सेबके बदले ४) रुपये तक देने लगा, तो भी मुझे एक भी सेब हाथ न लगा। निदान मैं घर आया। जब यह सुंदरी स्नान करके घर आई और उसने सेब को न पाया तो बड़ा सोच करने लगी। रात भर उसे निद्रा न आई। उसके शोचयुक्त होने से मुझे शोक हुआ। सबेरे उसे इसी दशा में देख, नगर के बागों में जाके ढूँढ़ा। वहाँ भी कहीं न पाया। एक वृद्ध माली ने कहा, "इन दिनों बादशाही बागों के सिवाय, जो बाँसरा नगर में हैं, और कहीं सेब तुमको न मिलेगा।" मैंने बाँसरा को जाने की इच्छा की और इतनी दूर की यात्रा स्वीकार की। वहाँ पहुँचा। ढूँढ़ते २ तीन सेब मिले। चार-चार रुपये देकर उन्हें मोल लिये। दो सप्ताह के बाद मैं अपने घर आया और तीनों सेब अपनी पत्नी को दिये। उन्हें वह देख बड़ी प्रसन्न हुई उन को सूँघने लगी और अपनी शय्या के नीचे रख दिये। निर्बलता के कारण वह उसी भाँति लेटी रही।

मैं अपनी दूकान पर जो चौक के बजाजे में थी, बैठा था। थोड़ी देर में मैंने एक गुलाम हब्शी को देखा, जो बड़े डील डौल का था। वह दूकान के आगे से एक सेब हाथ में लिये हुये उछा-लता हुआ जाता था। मैंने उस सेब को पहिचाना कि यह तो उन्हीं सेबों मेसे है, जिनको मैं अभी बाँसरा से लाया था। नहीं तो इन दिनो में इस हब्शी ने सेब कहाँ पाया? मैं भली भाँति जानता था कि बुगदाद नगर में कहीं सेब का नाम भी नहीं है। उस सेब को हब्शी के हाथ में देख, ऐसी डाह उपजी कि मैं अधीर हो गया। निदान उस हब्शी को बुला के पूछा कि तूने इस

सेब को कहाँ पाया ? उसने मुस्कराके उत्तर दिया कि यह मेरी प्यारी की सौगात है। आज मैं उसे देखने गया था। उसके निकट तीन सेब थे। मैंने उससे पूछा, यह सेब कहाँ से आये हैं? उसने कहा मेरा पति दो सप्ताह की यात्रा करके इन्हें मेरे वास्ते लाया है। फिर मैंने और उस सुंदरी ने मिलके भोजन किया। बिदा होते समय मैंने एक सेब वहाँ से उठा लिया।

हब्शी से इस वार्त्ताको सुन मेरी सुधि जाती रही। तुरंत अपनी दूकान बंदकर घर आया और अपनी स्त्री के निकट जाके देखा, केवल दो ही सेब रक्खे थे। मैंने उससे पूछा, "तीसरा सेब क्या हुआ ?" उस स्त्रीने अपने मुखको फेर उस ओर को दृष्टि की जहाँ वह तीनों सेब रक्खे थे। दोही सेब को देख बेपरवाही से उत्तर दिया, "मैं नहीं जानती कि तीसरा सेब यहाँ से क्या हुआ ?" इस तरह उत्तर देने से मुझे निश्चय होगया कि हब्शी ने ठीक कहा है। अब मैं लज्जा और क्रोध से ऐसा बेवश हुआ कि छुरी निकाल उसके कंठ पर फेरदी। उसके शिर को काट लिया और उसके शरीर के चार टुकड़े कर, वस्त्र में बाँध, चटाई में लपेट, ऊपर लाल डोरे से बाँध, रात्रि के समय, उसे संदूक़ में रख, टिकरसनदी पर ले गया और गहरे जल में डुबो दिया। घर आके देखा कि दो छोटे पुत्र सोते हैं और बड़ा लड़का घर से बाहर दरवाजे पर बैठा रोरहा है। मैंने उससे पूछा, "तू क्यों रोताहै ?" उसने उत्तर दिया, "मैंने सबेरे उनतीनों सेबों में से एक सेब को जिनको तुम मेरी माता के वास्ते लाये थे, बे पूछे उठा लिया था और बहुत देरतक अपने छोटे भाइयों के साथ खेलता रहा। एक गुलाम हब्शी जो उधर को जाता था, सेब को मेरे हाथ से छीन ले भागा। मैं उसके पीछे दौड़ा।

सेवको माँगा और रोकर कहा कि मेरा पिता दो सप्ताह की यात्रा करके मेरी रोगी माता के वास्ते इसे लाया है; परंतु उसने मुझे न दिया। तब दौड़ कर उसके पीछे गया। उस गुलाम ने फिर कर मुझे मारा और तुरंत दूसरे मार्ग से भाग गया। मेरी दृष्टि से ओझल हो गया। तब से इस समय तक मैं उसे ढूँढ़ता फिरता था। अभी थककर दरवाजे पर बैठा था कि आपको उधर से आते देखा और भय से रोने लगा। हे पिता! सेबके खोजाने के कारण मेरी माता को कुछ न कहना। फिर मेरा पुत्र फूट २ कर रोनेलगा।"

उसका वचन सुन मेरी ऐसी दशा हुई जिसका वर्णन नहीं हो सक्ता। बहुत देर तक मूर्च्छावश रहा। जब होश आया तो, अपने को खूब बुरा-भला कहा और धिक्कारें देने लगा कि हे भाग्यहीन! तूने ऐसी अपनी प्यारी और पतिव्रता स्त्री को निर्दोष मारा डाला। उस दुष्ट गुलाम के झूठे वचन सुन, जो उसने छल करके कहे थे, सत्य जानकर इतना क्रोध किया। इसी रंज और शोक में बैठा पश्चात्ताप करता था कि मेरा चचा अपनी पुत्री को देखने आया। मैंने उससे सब बातें कहीं। मुझे कुछ कहे सुने बिना, मेरे साथ रोने पीटने लगा। तीन दिन तक मैंने और उसने शोक किया। फिर यह वृद्ध अपनी प्रिय पुत्री के मारे जाने के शोक में मग्न हुआ। तो मैं भी अपना घर नष्ट करके अपने अपराध पर पश्चाताप और शोक करता हूँ। अब मैंने आपके सम्मुख यह कहा है और आशा रखता हूँ कि मेरे मारे जाने की आज्ञा देंगे। अब मेरा जीना व्यर्थ है। ऐसे जीने से मरना कहीं उत्तम है।

खलीफ़ा इस वृत्तांत को सुन बड़े आश्चर्य में हुआ और उसकी दीनता पर दया की और कहा कि जिस मनुष्य ने अनजाने

अपराध किया है, वह परमेश्वर और मनुष्यों के विचार में क्षमा योग्य है। मारने के योग्य तो वह गुलाम है, जो इस स्त्री के मारे जाने का कारण हुआ। फिर खलीफ़ा ने मंत्री से कहा कि तीन दिन का फिर सावकाश देता हूँ। या तो उस हब्शी को ले आ नहीं तो तू ही मारा जायगा। मंत्री, जो छूटा था फिर फँसा और खलीफ़ा से बिदा हो रुदन करता हुआ अपने घर आया और समझा कि केवल तीन ही दिन तक मैं जीऊँगा। चौथे दिन अवश्यही मारा जाऊँगा; क्योंकि इस बुग़दाद नगर में हज़ारों लाखों गुलाम हैं, उसका पता कैसे मिलेगा। पर परमेश्वर की कृपासे निराश होना नहीं चाहिये। जिस भाँति उसने स्त्री के मारने वाले का पता लगाया था, वैसेही वह उसको भी बतावेगा। फिर दो दिन उसके ढूँढ़ने में भी व्यतीत हुये। तीसरे दिन मंत्रीके घरानेवाले सब मनष्य उसके चारों ओर इकट्ठे हो रोने पीटने लगे। जाफ़र मंत्री मारे जाने के लिये तत्पर हो, अपनी स्त्री और मित्रों से बिदा होने लगा। वे भी उसके कंठ लग २ बिदा होते थे। इतने में खलीफ़ाने एक प्रधान को आज्ञा दी कि तीन दिन व्यतीत होगये हैं यदि मंत्री ने उस गुलाम हब्शी को पकड़ा हो, तो लेआवे, नहीं, तो उसको मेरे सम्मुख लाओ। मंत्री खलीफ़ा की आज्ञानुकूल घर से बाहर, उसी आदमी के साथ, जो उसे लेने आया था, चलने की इच्छा की कि एक बालक खिलाने-वाली पाँच छः वर्ष की उसकी पुत्री को लेकर, जिसको मंत्री बहुत प्यार करता था, सम्मुख आई। मंत्री ने पहरे के मनुष्यों से कहा कि यदि मुझे आज्ञा हो, तो इस पुत्री को प्यार कर लूँ। यह कह उस लड़की को प्यार करने लगा। अकस्मात् उसकी छाती में

एक गोलसी वस्तु उसके वस्त्र से बँधी हुई देखी । पूछा हे पुत्री तुम्हारे पास यह क्या वस्तु है ? उसने कहा, "बाबा यह सेब है । जिस पर हमारे बादशाह का नाम लिखा है । मैंने अपने गुलाम हब्शी से जिसका नाम रैहान है, ४) रु० को मोल लिया था ।" जाफ़र मंत्री उस सेव और गुलाम का नाम सुन अचंभित हुआ और तुरंत अपना हाथ उसके वस्त्र में डाल, सेब निकाल लिया और उस गुलाम हब्शी को जो उसी के मंदिर में था, बुलाकर पूछा, "सत्य कह, तूने यह सेब कहाँ से पाया ।" उसने कहा, "मैं आपकी सौगंद खाकर विनय करता हूँ कि न तो इसे मैंने आप के घर से चुराया है और न बादशाह के घर से । कई दिन हुए मैंने एक गली में तीन चार छोटे-छोटे बालकों को खेलते देखा । एक बालक के हाथ से, जो सबसे बड़ा था और सेब हाथ में लिये था, छीनकर ले भागा । वह बालक रोता हुआ मेरे पीछे दौड़ा और कहने लगा कि यह सेब मेरा नहीं है मेरी माता का है । मेरा पिता बहुत दूर की यात्रा करके तीन सेब लाया है । मैं उनमें से एक सेब अपनी माता के पूछे बिना खेलने को लाया हूँ । वह बालक बहुत रोया, परंतु मैंने उसे न दिया । अपने घर में लाकर उसे अपनी छोटी लड़की के हाथ बेचा ।" मन्त्री जाफ़र ने उसकी दुष्टता पर बहुत ही अचंभा किया और उसे बादशाह के सम्मुख लाया । उस गुलाम ने वही वार्त्ता बादशाह के सम्मुख भी कही । बादशाह को उसी का यह अपराध मालूम हुआ और उसके बचन सुन बेबश हो हँस पड़ा । फिर सँभल के मंत्री से कहा कि तेरे गुलाम के कारण यह उपद्रव हुआ है यही दंड के योग्य है, इसका अपराध क्षमा योग्य नहीं है । परंतु मुझे नूरुद्दीन और बदरुद्दीन हसन की

कहानी स्मरण आगई; जो आज्ञा होतो मैं उसे वर्णन करूँ। वह कहानी अद्भुत और विचित्र है। उसके सुनने से प्रसन्नता हो, तो आशा रखताहूँ कि मेरे गुलामका अपराध क्षमा हो। राजाने आज्ञा की कि तुम उस चरित्र को कहो; परंतु मैं जानता हूँ कि तेरी वह कथा सेबों के वृत्तांत से अद्भुत न होगी और तू अपने सेवक को दंड से न बचा सकेगा। फिर मंत्री वह कहानी कहने लगा।

सप्तम प्रदीप

नूरुद्दीनअली और बदरुद्दीनहसन का चरित्र

पूर्वकाल में मिसर का एक बड़ा सामर्थ्यवान्, दयावान् और दानी बादशाह था। जिसके भयसे चारों ओर के बड़े २ बादशाह डरते थे। वह नाना प्रकार की विद्या और गुण का ग्राहक था। उस बादशाह का मंत्री बड़ा प्रवीण और बुद्धिमान् था। वह काव्य आदि शास्त्रों में बड़ा निपुण था। उस मंत्री के दो पुत्र थे, जो बड़े सुंदर और अपने पिता के समान गुणी थे। बड़े पुत्र का नाम शमसुद्दीनमुहम्मद था और छोटे का नूरुद्दीनअली। जब वह मंत्री कालवश हुआ, तब बादशाह ने उसके दोनों पुत्रों को बुलवाके मंत्री की पदवी दी और कहा कि तुम्हारे पिता के मरने से मुझे अति शोक हुआ है। अब तुम दोनों भ्राता अपने पिता की जगह कार्य्य करो। दोनों बिदा हो अपने घर आये और एक मास पर्य्यंत अपने पिता के शोक में रहे। फिर बादशाह के सम्मुख जा राजसभा के नाप आदि के कार्य्यों में जो मंत्री के अधिकार में होते हैं, प्रवृत्त रहे। जब बादशाह अहेर की इच्छा करता तो पारी २ से एक भाई को अपने साथ लेजाता और दूसरे को राजकाज की देख भाल के लिये छोड़ जाता।

एक दिन सायंकाल को दोनों भ्राता भोजन कर बातचीत और हास्य कर रहे थे। बात ही बात में, बड़े भाई ने छोटे से कहा, "मैं चाहता हूँ कि जिस भाँति मैं और तुम एक सम्मति से एक स्थान पर रहते हैं वैसे एकही दिन एक एक सुंदर कन्या से विवाह करें। जिनके माता पिता प्रतिष्ठा में समान हों। इस विषय में तुम्हारी क्या सम्मति है?" नूरुद्दीन ने उत्तर दिया, "भाई, मैं आपका सेवक हूँ, जो आपने आज्ञा की मुझे स्वीकार है और वह मेरे वास्ते उत्तम है।" बड़े भाई ने कहा, "इसके विषय में मेरी कुछ और भी इच्छा है। वह यह है कि विवाह करने के पश्चात् हम दोनों की स्त्रियाँ एकही रात्रि को सगर्भ हों। नौ मास के पश्चात् एकही दिन वह जनें और तुम्हारे घर पुत्र हो और मेरे घर पुत्री। फिर जब वे तरुण हों, तब हम दोनों भाई उनका आपस में विवाह करें।" उसने कहा, "यह भी विचार बहुत उत्तम है। मैं इस में भी राजी हूँ। जो परमेश्वर इसे सत्य करे और विश्वास है कि मेरा पुत्र भी तुम्हारी कुँवरि से प्रीति करेगा।" दूसरे ने कहा, "निस्संदेह; परंतु एक शर्त्त है। तू यह वचन दे कि दहेज के निमित्त ६०००) रु०, तीन उत्तम बसे हुये ग्राम की जागीर और तीन बाँदियाँ, दुलहिन की सेवा करने के लिये देगा।" छोटे भाई ने कहा, "मुझे यह अंगीकार नहीं; क्योंकि हम तुम दोनों भाई पदवी में तुल्य हैं। तुम जानते हो कि पुरुष की पदवी स्त्री से अधिक होती है। तुमको चाहिये कि तुम अपनी पुत्री को बहुत दहेज दो, न कि तुम हमसे लो। जो कुछ कि तुम्हें करना उचित है, वह तुम दूसरे के शिर डालते हो।" यद्यपि नूरुद्दीन ने यह हँसी में कहा था; परंतु बड़ा भाई क्रूर प्रकृति का था। उसको ये वचन

बहुत कटु लगे अति रिससे उसने उत्तर दिया कि तू अपने पुत्र को मेरी पुत्री से बढ़कर समझता है। मैं तो समझता था कि तू मेरी पुत्री की प्रतिष्ठा करेगा। पर तूने उसको अपने पुत्रकी अपेक्षा हेय समझा और तूने जो अपने को मेरी पदवी के बराबर समझा, यह भी अनुचित है। मैं अपनी पुत्री का विवाह तेरे पुत्र के साथ कभी न करूँगा। उन दोनों का यह झगड़ा अपने विवाह करने और उनकी स्त्रियों के गर्भ रहने और संतान उत्पन्न होने के पहले का था। इसमें बहुत वादानुवाद हुआ। यहाँ तक कि बड़े भाई ने छोटे को डराकर कहा, "भोर होने दे, मैं बादशाहके सम्मुख जाकर तुझे इस ढिठाई का दंड दिलाऊँगा, जिससे सब लोगों को बोध हो। और कोई छोटा भाई अपने बड़े भ्राता की इस भाँति अप्रतिष्ठा न करे जैसे कि तूने की है। यह कह वह अपने मकान में चला गया।

छोटा भाई भी अपने शयनालय में जा सो रहा। शमसुद्दीन मुहम्मद दूसरे दिन भोर को उठ, बादशाह के निकट गया और वहाँ से बादशाह के साथ अहेर खेलने चला गया। छोटा भाई बड़े भाई के धिक्कार और बुरा भला कहने से रात्रि भर नहीं सोया, क्रोध में तड़फता और तलमलाता रहा। और निश्चय किया कि अब भाई के साथ न रहूँगा। उसने मुझे बहुत बुरा कहा है। तब उसने एक मजबूत खच्चर पर असंख्य रत्न-द्रव्य और खाने पीने की वस्तु साथ लाद, चलते समय अपने भृत्यों से बहाना कर कहा कि दो तीन दिन के वास्ते कहीं जाता हूँ। जब उस नगर की सीमा के बाहर निकला तो उसने अरब में जाने की इच्छा की। मार्ग में उसका खच्चर बीमार हुआ। वह उसे वहीं छोड़ पैदल

चला। अकस्मात् हसन नगर से एक सवार बाँसरा को जाता था, उसने नूरुद्दीन को पैदल देख अपने पीछे चढ़ा लिया। जब वे बाँसरा में पहुँचे तो, नूरुद्दीन ने उसकी कृतज्ञता की और उस से बिदा हो रहने का स्थान ढूँढ़ता आगे बढ़ा। मार्ग में एक सुपात्र मनुष्य को देखा कि बड़ी सजधज और धूमधाम से उसकी सवारी जाती है। नगर के लोगों ने झुकझुक उसे प्रणाम किया और पंक्ति बाँध खड़े रहे, नूरुद्दीन ने भी उसको देख, सबके साथ प्रणाम किया। वह बाँसरा के राजमंत्री की सवारी थी। प्रजा के भले बुरे को देखने आया था। नूरुद्दीन के रूप और भलमनसात को देख, विस्मित हुआ और सवारी उसके समीप पहुँची, उसने मुसाफ़िरों की भाँति उसे पाया। उसके पास ठहर के, पूछा कि तू कौन है और किधर से आता है? नूरुद्दीन अली ने कहा, "स्वामी मैं मिसरी हूँ" और कैरू देश में मेरा निवास है। किसी कारण अपने संबंधी से अप्रसन्न हो, मैंने अपना देश छोड़ दिया है। अब यह इच्छा है कि अपने नगर में कभी न जाऊँ और शेष आयु नगर-नगर, देश-देश में फिर व्यतीत करूँ। उस मंत्री ने जो वृद्ध और बुद्धिमान् था, नूरुद्दीन के इस वचन को सुनके कहा, "हे पुत्र! इस इच्छा को अपने मन से दूर कर। यात्रा में दुःख और हानि के सिवाय और कोई लाभ नहीं। तू मेरे साथ चल। तुम्हारे साथ मैं ऐसा उपकार करूँगा कि तुम उस शोक को निपट भूल जाओगे।" नूरुद्दीनअली मंत्री के साथ गया और उसके निकट रहने लगा।

वह राजमंत्री उसकी बुद्धि और चतुरता को देख, उसका बड़ा सत्कार करता था। यहाँ तक कि एक दिन उसने एकांत में कहा,

"हे पुत्र! अब मैं बहुत शिथिल हो गया हूँ। मेरे जीने की कुछ आशा नहीं। परमेश्वर ने मुझे अति रूपवती केवल एक पुत्री दी है। अब वह विवाह के योग्य हुई है। बहुत से भलेमानस, धनाढ्य और प्रधान उसकी चाहना करते हैं; परंतु मैंने स्वीकार नहीं किया। मैं तुझे प्राण से भी अधिक प्रिय समझता हूँ। वह तेरे योग्य है। यदि तू इस बात को स्वीकार करे, तो मैं तुझे दूँ और बादशाह की आज्ञानुसार उसको तुझे विवाह दूँ और अपने बदले तुझे इस देश का मंत्री बना दूँ। और अपनी सब वस्तु भी तुझे दूँ।" नूरुद्दीन ने उसकी कृतज्ञता प्रदर्शित कर कहा, "आप मेरे बड़े हैं। आपकी आज्ञा मुझे स्वीकार है।" मंत्री ने उसकी राय लेकर विवाह की तय्यारियाँ कीं और नगर के वासियों को इस विवाह के निमित्त न्योता दिया। जब सब लोग आये नूरुद्दीन ने मंत्री से कहा, "अब तक मैंने अपनी जाति पाँति को छिपाया, अब मैं प्रकट करता हूँ, "मेरा पिता मिश्र के बादशाह का राजमंत्री था। मैं उसका छोटा पुत्र हूँ। मेरा एक बड़ा भाई है। मेरे पिता के मरने के पश्चात् बादशाह ने हम दोनों भाइयों को हमारे पिता के अधिकार पर नियत किया। हम यथोचित उस कार्य को करते रहे। एक दिन हम दोनों भाइयों में कुछ वादानुवाद हुआ। मैं अप्रसन्न हो इधर को चला आया।"

बाँसरा का राजमंत्री इस वचन को सुन अत्यंत हर्षित हुआ कि यह भी मंत्री-सुवन है फिर उसने सभासदों से कहा, "एक बात में मैं आपकी सम्मति पूछता हूँ। वह यह है कि एक भाई मेरा मिश्रके बादशाह का मंत्री है। उसने अपने पुत्र को यहाँ भेजा है और मिश्र में उसका विवाह न किया। कारण उसके कोई

संतान नहीं और उसकी इच्छा है कि मैं उसका विवाह कर अपने निकट रक्खूँ। मुझे तो यह बात परस्पर की अधिक प्रीति का कारण जान पड़ती है। तुम सब इसमें क्या कहते हो?" उन सब ने एक मत हो के कहा, "यह बहुत ठीक है। परमेश्वर उन दोनों की आयु दीर्घ करे।" निदान जब वे सब इस बात में प्रसन्न हुए, तो मंत्री ने सबको नाना प्रकार के उत्तम-उत्तम व्यंजन खिलाये और उनका यथोचित सम्मान किया। फिर प्रत्येक मनुष्य के सम्मुख मिठाई रक्खी गई। यही वहाँ की रीति थी। काजी ने वहाँ आकर विवाह कराया। फिर सब मनुष्य उस राजमंत्री से विदा हुए। मंत्री ने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि नूरुद्दीन को स्नानागार में लेजाके नहलाओ और उसने नाना प्रकार के वस्त्र और रत्न किश्तियों में लगाकर, जैसे कि विवाह के दिन दूल्हे को पहिनाते हैं, वहीं भेजे। नूरुद्दीन ने स्नान करने के पश्चात् चाहा कि अपने वस्त्र पहिने; परंतु मंत्री के सेवकों ने वही वस्त्र पहिनाकर, नाना प्रकार की सुगंधें लगाईं। नूरुद्दीन भी वस्त्रादि से अलंकृत हो मंत्री के निकट गया। उसने हर्ष से उसे समीप बैठाय पूछा कि तुमने सब हाल तो मुझसे कहा कि तुम मिश्र के मंत्री के पुत्र हो और आप भी बादशाह के मंत्री थे; परंतु एक बात तुमने अबतक नहीं प्रकट की कि तुम अपना देश और कुटुंब को छोड़कर यहाँ क्यों आये? अब हमारा तुम्हारा एक वास्ता है और किसी भाँति का परस्पर में अंतर नहीं। नूरुद्दीन ने अपना सब वृत्तांत विस्तारपूर्वक जैसा कि उन दोनों भाइयों में तकरार हुई थी, मंत्री से कहा। मंत्री यह सुन बहुत हँसा और कहा केवल इतनी ही बातके वास्ते तुम दोनों भाइयों में यह

झगड़ा हुआ। यह तो केवल विचार ही था। कहाँ तुम्हारा पुत्र और कहाँ तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता की बेटी, जिसका विवाह उन प्रतिज्ञाओं पर होता। तुमने अपने देश को छोड़ा; परंतु तुमने केवल हास्य में कहा था। इस विषय में तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता की अधिकता जान पड़ती है। इसी कारण तुम्हें परदेश जाना उचित न था; परंतु मेरे प्रारब्ध में तो था कि तुम ऐसा कुलीन और उच्च जाति का मनुष्य मेरा दामाद हो, इसी कारण तुम्हारे मन में यह बात उपजी और तुम इस नगर में आए। अब देर न करो अपनी दुलहिन के समीप जावो। वह तुम्हारी राह देखती होगी। कल मैं तुमको बादशाह के समीप ले जाऊँगा। मुझे विश्वास है कि तुम्हारी भेंट होते ही वह तुम पर प्रसन्न होंगे। जिससे हम दोनों को लाभ होगा नूरुद्दीन अपने श्वशुर से बिदा होकर अपनी दुलहिन की शय्या पर गया।

शमसुद्दीन नूरुद्दीन के ज्येष्ठ भ्राता का हाल भी वर्णन किया जाता है, जो शिकार को गया था। एक मास तक वह बादशाह के साथ अहेर खेलता रहा। जब वह आया और नूरुद्दीन के भवन में गया, तो उसे उसके सेवकों से विदित हुआ कि वह उसी दिन दो दिनके वास्ते कहकर कहीं गया है। शमसुद्दीन को बड़ा शोक हुआ और उसने जान लिया कि वह मेरे कठोर वचनसे अवश्य अप्रसन्न होकर, किसी ओर को निकल गया। उसने चारोंओर उसके ढूँढ़नेके लिये मनुष्य दौड़ाये। वह दमिश्क और हलब पर्यंत हो आए। कहीं उसका पता न लगा; क्योंकि वह बाँसरा में था फिर दूरदूर के देशों में भी ढूँढ़ हुई। वहाँ परभी न मिला। निदान हार मानशमसुद्दीन ने विवाह का विचार

किया। संयोग वश उसी दिन और उस मुहूर्त्त में जिसमें नूरुद्दीन का विवाह हुआ था, उसने अपना विवाह एक प्रतिष्ठित मनुष्य की कन्या के साथ किया। और अद्भुत बात यह कि नौ मास व्यतीत होने के पश्चात् शमसुद्दीन के घर में कन्या और नूरद्दीन के घर में पुत्र हुआ। जिसका नाम उसने बदरुद्दीनहसन रक्खा।

बाँसराका मंत्री नवासे के होने से अत्यंत हर्षित हुआ। छठी के दिन बड़ी धूमधाम की और अपने सेवकों को खूब पारितोषिक दिया। कुछ काल के पश्चात् उसने सोचा कि अपने दामाद नूरुद्दीन को बादशाह के सम्मुख ले जाय और उसे अपना अधिकार दिलाये। जब वह उसे पहले पहल बादशाह के सम्मुख ले गया था बादशाहने उसे योग्य और बुद्धिमान् और गुणवान् पाके और बहुत से मनुष्यों से उसकी प्रशंसा सुनके बहुत खुश हुआ था। अब अपने पुराने मंत्री की इच्छानुसार उसने राजमंत्री का अधिकार नूरुद्दीन को दिया। दूसरे दिन मंत्री ने अपने दामाद को देखा कि उसने न्याय के सब कार्यों को भली भाँति किया वह अत्यंत हर्षित हुआ। नूरुद्दीनअली राजसभा में सदैव प्रवृत्त रहने लगा। प्रत्येक मनुष्य को अपनी शीलता और मिलनसारी से ऐसा प्रसन्न रखता कि सब छोटे बड़े उसको आशीर्वाद देते थे। इसी भाँति उसे चार वर्ष व्यतीत हुये। खुसरो नूरुद्दीन शिथिलता और वृद्धता के कारण कालवश हुआ। नूरुद्दीनअली ने वहाँ की रीत्यनुसार रोनापीटना और शोक भली भाँति मनाया।

जब बदरुद्दीनहसन सात वर्ष का हुआ, तो नूरुद्दीनने उसके पढ़ाने और उपदेशार्थ बड़े बड़े गुणवानों को नियत किया।

बदरुद्दीन अति कुशल बुद्धि का था। कुछही समय में उसने कलाम अल्लाह मुखाग्र करली और बारह वर्ष की अवस्था में संपूर्ण विद्या पढ़ली। वह ऐसा सुंदर था कि उसे सब लोग देख प्रसन्न होते और आशीर्वाद देते। फिर जब वह राज दरबार तथा मंत्री के कार्य में निपुण हुआ, तो नूरुद्दीन उसे बादशाह के सम्मुख ले-गया। उसने ऐसी सुबुद्धी से प्रणाम किया कि बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उस पर परम अनुग्रह करने लगा। पिता उसकी निपुणता और उसके गुण से अत्यंत प्रसन्न रहता और सदैव उसे उपदेश दिया करता। जब वह समय आया कि उसके कार्य से कुछ लाभहो, अकस्मात् नूरुद्दीनअली रोगी हुआ और धीरे २ मरने के निकट पहुँचा। अंत समय अपने पुत्र बदरुद्दीनहसन को बुलवा कर उपदेश किया कि यह संसार असार और त्यागने के योग्य है। मेरे मरने पर रुदन मत करना और संतोष रखना। जैसा कि तुम्हारी जाति में होता है और तुमने अपने गुरुसे भी पढ़ा है, उन सब को तुम भली भाँति जानते हो। अब मैं थोड़ी सी बातें तुमको बताता हूँ और कुछ उपदेश देता हूँ। विश्वास है, तुम मेरे उपदेशानुसार मेरे पीछे चलोगे। प्रथम यह कि मैं मिश्रका बासी हूँ, मेरा पिता वहाँ के बादशाह का राजमंत्री था। मैं और मेरा भाई शमसुद्दीनमुहम्मद नामी जो अबतक जीता है, दोनों उसी बादशाह के मंत्री थे। कोई ऐसा कारण हुआ कि मैं स्वतः अपने भाई से अलग होकर यहाँ चला आया और यहाँ भी मंत्री की पदवी पाई। फिर उसने जेबी कलमदान खोल, एक काग़ज़, जिसको वह सदैव अपने समीप रखता था, निकालकर बदरुद्दीन-हसन को दिया और कहा, "इसको समय मिलने पर पढ़ना।

तुमको इसका वृत्तांत भली भाँति विदित होगा। इसमें तुम मेरे विवाह और अपने उत्पन्न होने की तिथि पाओगे। इस पत्र को रक्षापूर्वक रखना।"

बदरुद्दीनहसन अपने पिता को मृत्यु के निकट देख, अत्यंत दुःखित हुआ और उस पत्र को ले, प्रण किया कि इसे कभी अपने पास से अलग न करूँगा। फिर नूरुद्दीनअली ऐसा बेसुध हो गया कि लोगों ने समझा कि वह मर गया। पर थोड़ी देर के बाद उसने फिर सुध ली और अपने पुत्र बदरुद्दीन को यह उपदेश किया तुम किसी से मित्रता न करना और न किसी से अपना भेद कहना। किसी मनुष्य पर अन्याय न करना कि वह तुमसे वैर और डाह रक्खे। यह संसार को देने लेने की जगह समझो; जैसा करोगे, वैसा भोगना पड़ेगा। ऐसे वचन न कहना, जिससे पीछे लज्जित होना पड़े। बहुत वार्त्ता न करना क्योंकि बकवादी सदैव लज्जित होता है और गंभीर पुरुष बहुधा अनेक दुःखों से बचा रहता है। इन बातों को सदा ध्यान में रखना बुद्धिमानों का वचन है कि गंभीरता प्रतिष्ठा की बचानेवाली और प्राण की रक्षा करनेवाली होती है। जो मनुष्य थोड़ा बोलता है, वह कदापि लज्जित नहीं होता और जो बहुत बकता है, वह पीछे से कष्ट पाता है मद्य कभी मत पीना वह बुद्धि को नष्ट करता है। सदा किफ़ायत करना; क्योंकि तुम बहुत खर्च करोगे, तो तुरंत निर्धन हो जावोगे। मेरा प्रयोजन यह है कि न तो इतना खर्च करना कि निर्धन हो जावो और न इतनी किफ़ायत कि तुम्हें लज्जित होना पड़े। सर्वदा सम रहना चाहिये; क्योंकि जब तुम्हारे निकट द्रव्य रहेगा, सब मित्र तुम्हें घेरे रहेंगे और जो खाली होगे, तो तुम्हें

कोई बात भी न पूछेगा न कोई तुम्हारे समीप आवेगा। श्वास निकलते पर्यंत नूरुद्दीन अपने पुत्र बदरुद्दीन को उपदेश करता रहा। उसके मरने पर बदरुद्दीन ने बड़ी धूमधाम से उसकी अंतिम क्रिया की। इतनी कथा कह, रानी शहरजाद ने बादशाह शहरयार से कहा, "खलीफ़ा हारूँरसीद यहाँ तक इस कहानी को सुन अति प्रसन्न हुआ।

जाफ़र मंत्री कहने लगा कि नूरुद्दीन के मरने के बाद सब लोग बदरुद्दीन को बाँसराई कहने लगे; क्योंकि वह उसी नगर में उत्पन्न हुआ था। बदरुद्दीनहसन उस देश की रीत्यानुसार एक महीने तक अपने पिता के शोक में किसी से न मिला न राज-सभा में जाता। दूसरा महीना भी उसी दशा में बीत गया। इस बेपरवाही से बादशाह बड़ा अप्रसन्न हुआ। उसके स्थान पर किसी अन्य मनुष्य को अपना मंत्री बना काम लिया करता था।

एक दिन अपने नए मंत्री को बुलाकर आज्ञा दी कि पुराने मंत्री का धन दौलत आदि छीन लो और उसे कैदकर मेरे सम्मुख तुरंत लावो। नया मंत्री बादशाह की आज्ञानुसार, सेना साथ ले चला बदरुद्दीन का एक सेवक मार्ग में यह दशा देख, दौड़ा आया और बदरुद्दीनहसन के निकट घबराया हुआ पहुँचकर, उसके चरणों पर गिर पड़ा और उसके वस्त्र को चूमके कहा, "स्वामी यहाँ से शीघ्र भाग जावो।" बदरुद्दीनहसनने उसके शिरको अपने चरणों से उठाकर पूछा, "कुशल तो है?" उसने उत्तर दिया, "अब कहने सुनने का अवकाश नहीं। बादशाहने क्रोधित हो, आपको पकड़ने और आपका सब द्रव्य जपत करने को सेना भेजी है।" बदरुद्दीन-हसन उस अपने हितैषी सेवक की बात सुन घबरा गया और

पूछा, "क्या इतना अवकाश है कि कुछ धन वा रत्न अपने साथ ले लूँ।" उसने कहा, "इस समय किसी वस्तु का विचार न कीजिये। यहाँ से बच भाग जाइये। मंत्री आपके घर के समीप पहुँच चुका है। क्षणमात्र में यहाँ आया ही चाहता है।"

बदरुद्दीन इस बातको सुन वहाँ से उठा पाँवों में जूती पहिन कर अपने वस्त्रों से अपना मुख छिपाया, जिसमें कोई उसे पहिचाने नहीं और परमेश्वर पर भरोसा रख एक ओर को चला। पर इतनी बुद्धिमानी की कि भवन के दूसरे दरवाजे से होकर तुरंत कबरिस्तान को चला। जाते जाते सूर्य्यास्त हो जाने से अँधियारा होगया था। वह अपने पिता की कबर के पास जो बहुत बड़ी थी और जिसे नूरुद्दीनही बनवा गया था, पहुँचा। अकस्मात् वहाँ एक यहूदी व्यापारी से भेंट भई। वह यहूदी बदरुद्दीन को पहिचान कर, ठहर गया और बड़ी प्रतिष्ठा से उसे नम्रतापूर्वक प्रणाम किया और हाथ चूमके आश्चर्य्य से कहने लगा कि रात्रि को अकेले कहाँ जाते हो। कौनसा ऐसा कार्य्य है कि तुमने इतना श्रम किया? बदरुद्दीन हसन ने उत्तर दिया, "मैंने अपने पिता को स्वप्न में देखा है कि वह मुझसे अप्रसन्न और मुझे क्रोध से देखते हैं। मैं जग उठा और अकेला दौड़ता हुआ यहाँ आया हूँ।" उस यहूदी ने उसके वचनका विश्वास न कर कहा, "तुम्हारा पिता बड़ा प्रतापी व शीलवान् था। वह मेरा स्वामी था। असबाब के लदे हुये कई जहाज़ स्थान स्थानपर गये हैं और अभी कोई यहाँ पहुँचा नहीं है। अब तुम उस असबाब के स्वामी हो। पहले जहाज़ का असबाब जो इस नगर में पहुँचे, मेरे हाथ बेचो, तो मैं इसी समय आपको ६०००) रु० देता हूँ और एक

तोड़ा उसके सम्मुख रख दिया। बदरुद्दीन ने उस दशा में इतने रुपयों को परमेश्वर की देन ही समझा। हर्षपूर्वक उसको अंगीकार किया। यहूदीने कहा कि आपने पहले जहाज़ का माल जो इस नगर में पहुँचे, ६०००) को वेचा। बदरुद्दीनहसन बोला, "मैंने अपनी खुशी से तेरे हाथ बेचा।" यहूदी ने तोड़ा उसके हाथ में देकर कहा, "हे स्वामी! यद्यपि मुझे आपके कहने पर विश्वास है, परइसे आप लिख दीजिये कि औरों के निकट सनद हो।" बदरुद्दीन हसन ने कहा, "बहुत अच्छा।" यहूदी ने अपनी कमर से कलम, दावात और कागज़ निकाल सामने रख दिया। बदरुद्दीनहसन ने उसमें लिखा बदरुद्दीनहसन बाँसराई ने अपने प्रथम जहाज़ की वस्तु को ६०००) रु० पर इसहाक यहूदी के हाथ वेचा। नीचे अपने दस्तखत कर यहूदी को दे दिया। यहूदी वह ले चलागया।

बदरुद्दीनहसन सीधा अपने पिता की कबर पर गया और रोकर कहने लगा, "अभी मेरे प्रिय पिता के मरने का शोक मेरे हृदय से न गया था कि इस अन्यायी बादशाह ने मेरे घरबार को छीन लिया और मेरे पकड़ने की आज्ञा दी। अब मैं भाग कर यहाँ आया हूं कि मैं उसके हाथ से छूटूँ।" इसी भाँति देर तक रोता और बातें करता रहा। उसी दशा में वहाँ सोगया। एक क्षण भी न हुआ था कि एक पिशाच जो वहाँ रहता था रात में सैरके लिये वहाँ आया। बदरुद्दीनहसन को वहाँ पड़ा देख उसकी सुंदरता पर मोहित होगया और कहने लगा, "यह देवता जान पड़ता है। परमेश्वर ने इसे स्वर्ग से संसार में प्रकाश के लिये भेजा है; क्योंकि मैंने अबतक और किसी मनुष्य को

ऐसा सुंदर नहीं देखा। जब उसे मन भरके देख चुका, तो वहाँ से उड़, वायु में मिलकर एक अप्सरा से मिला। उस पिशाच ने अप्सरा से कहा, "मेरे साथ पृथ्वी पर उतर। मैं तुझे एक सुंदर मनुष्य को दिखाऊं जो उस कबर पर सोता है उसके देखने से तू प्रसन्न होगी।" वह अप्सरा चलने को तैयार हुई और दोनों क्षणमात्र में वहाँ आपहुँचे। पिशाच ने उसे बदरुद्दीनहसन को दिखाकर कहा, "सत्य कह, तूने कहीं ऐसा सुंदर मनुष्य देखा है?" अप्सरा ने बड़े ध्यानसे देखके कहा, "वास्तव में यह मनुष्य बड़ा सुंदर है। परंतु मैं कैरू में एक अद्भुत चरित्र देख आई हूँ, यदि तू सुना चाहे, तो कहूँ" पिशाचने उत्तर दिया, "जो तू उस कहानी को सुनावेगी, तो मुझे बड़ा हर्ष होगा।"

अप्सरा ने कहा कि मिसर के बादशाह का एक मंत्री है, जिसका नाम शमसुद्दीनमुहम्मद है। उसकी एक बीस वर्ष की अति सुंदरी लड़की है। बादशाहने उसके अनूपरूप की प्रशंसा सुन मंत्री से कहा कि अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ कर। मंत्रीने उत्तर दिया, "आपकी इच्छा मुझे स्वीकार नहीं; क्योंकि आपको भी विदित होगा कि मेरा एक नूरुद्दीनअली नाम भाई है पहले वह भी मेरी तरह आपका मंत्री था। बहुत दिनसे वह कहीं चला गया है। अबतक उसका समाचार नहीं मिला; परंतु पाँच चार दिन हुए हैं मैंने सुना है कि वह बाँसरा का मंत्री होगया था। अब वह एक पुत्र छोड़ के मर गया है। हम दोनों भाइयों में प्रण होचुका है कि हम दोनों की संतान में परस्पर विवाह होगा। मुझे विश्वास है कि उसने अंत समय इस बातको अपने पुत्रको बताई होगी। आप मुझे इस बात में क्षमा कीजिये।

इस नगर में बहुत सी अति प्रतिष्ठित और सुंदर लड़कियाँ हैं। उनसे आप विवाह कीजिये।" बादशाह इस बातको सुन अत्यंत अप्रसन्न हुआ और क्रोधित होकर कहा, "तूने मुझे बहुत तुच्छ समझा है। तेरी इस ढिठाई के लिये देख, तुझे कैसा दंड देता हूँ। मैंने प्रतिज्ञा की है कि तेरी कन्या महाकुरूप सेवक को ब्याहूँगा।" यह कह मंत्री को विदा किया।

उसी दिन बादशाह ने अश्वपालकों में से एक गुलाम को, जो बहुतही बदसूरत, कुबड़ा था और उसका पेट बहुत बड़ा और पाँव टेढ़े मिरगीवाले रोगी के समान थे, विवाह के निमित्त ठीक किया और मंत्री को कहला भेजा कि अपनी पुत्री के विवाह की सामग्री तय्यार कर। काजी को साक्षियों सहित विवाह करने को बुला मंत्री ने अति ग्लानि से बादशाह की आज्ञापालन की। रात्रि में मिसर नगर के गुलाम इकट्ठे हुए और मसालें हाथों में ले स्नानागार के किवाड़ पर उस कुबड़े के आने की बाट देखते रहे कि उसे स्नानागार में ले जायँ और नहलाधुला दूलह बनाकर मंत्री के घर ब्याहने को ले जायँ। उस अप्सरा ने कहा अब वह उसे दूलह बना रहे हैं। मैंने जाके देखा कि उस लड़की को भी नहलाधुला उस कुबड़े के वास्ते दुलहिन बनाया है; परंतु पाश्चात्ताप है कि उस मंत्री की ऐसी रूपवती कन्या ऐसे अयोग्य, भयानक रूप मनुष्य के साथ विवाही जाय। जब वह अप्सरा इस वृत्तांत को कह चुकी तो पिशाच ने कहा, "क्या अच्छी बात है कि मंत्री की ऐसी सुंदरी रूपवती लड़की इस नवकिशोर के साथ विवाही जाय।" अप्सरा ने कहा, मैं भी यही चाहती हूँ कि बादशाहके अन्याय से इसे बचाऊँ और कुबड़े को धोखा दे,

उसी जगह इस मनुष्य को बिठाऊँ और बादशाह के व्यर्थ-क्रोध का बदला लूँ कि जिससे उस दुलहिन और उसके पिताको लज्जित न होना पड़े और उस कुबड़े के विवाह से उसकी जाति-पाँति में अप्रतिष्ठा न हो।" पिशाच ने अप्सरा से कहा, "यदि तू भी इस कार्य में मेरी सहायता करे, तो होसक्ता है। मैं इसके जागने के पहिले, इसे यहाँ से उठा कैरू में लेजाता हूँ।" तब पिशाच और अप्सरा दोनों इस कार्य में लगे। पिशाच बद-रुद्दीनहसन को धीरे से उठा उसी स्नानागार के समीप, जहाँ वह कुबड़ा गुलामों के साथ स्नान को आया था, ले गया। जब बदरुद्दीनहसन जगा और अपने को एक समूह में पा, डरा और चिल्लाने की इच्छा की; परंतु पिशाचने उसके कंधे पर हाथ रख के समझाया कि तू बोलियो मत, चुपका होरह और मशाल हाथ में ले, इस समूह के साथ होले और मंत्री भवन में जहाँ सब वि-वाह करने जाते हैं, तू भी बेधड़क चलाचल। उस कुबड़े की दा-हिनी ओर, जिसका वृत्तांत तुझे अभी विदित होगा निर्भय होकर सभा में जा, मुट्ठी २ रुपये अपनी थैली से निकाल, गाने बजानेवालों का, जो दूल्हे के साथ जायँगे देना और सभा में पहुँचकर उन बाँदियों को जो, दुलहिन के चारोंओर होंगी, बहुत द्रव्य देना। चैतन्य रहना, अपनी थैली में कुछ न रखना, जो मैं कहता जाऊँ वही करना। किसी से डरना मत। बदरुद्दीन उस पिशाच की ये बातें सुन और उन्हें भले प्रकार स्मरण रख स्नानागार के दरवाज़े पर गया और पहिले उसने गुलामों के समान अपने हाथ में मशाल ले ली और उस समूह में ऐसा मिला कि कैरू के बासियों सा जान पड़ने लगा। उन सबके साथ

कुबड़े के पीछे स्नानागार से नहाकर बाहर निकला और बादशाह के घोड़े पर सवार होके चला। जब गाने बजानेवालों के निकट पहुँचा, तो एक २ मुट्ठी भर रुपये उनको देने लगा। जिससे वे सब बड़े प्रसन्न हुए और उसके अनूप रूप को देख अत्यंत आश्चर्य में हुये निदान इसी भाँति देता लेता अपने चचा मंत्री शमसुद्दीन के द्वार पर पहुँचा, तो चोबदारों ने सबको भीतर जाने न दिया। बदरुद्दीन को भी रोका; परंतु गाने बजानेवालों ने, जिन्हें कोई न रोक सकता था, धन के लोभ से बदरुद्दीनहसन की ओर सैन करके कहा, "इस मनुष्य को क्यों रोकते हो? यह गुलाम नहीं, किंतु अन्य देश का वासी है। इस नगर में बरात देखने आया है।" यह कह उन सबों ने बदरुद्दीनहसन का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया और अपने साथ महल में लेगये। उसके हाथसे मशाल ले ली और सभा में लेगए। दूल्हे के दाहिनी ओर, तख़्त पर दुलहिन के बराबर बैठाया। यद्यपि वह दुलहिन अति सुंदरी अप्सरा के तुल्य थी, परंतु शोक के कारण मुरझाई हुई दिखाई देती थी। उस समय मिसर की स्त्रियाँ और बाँदियाँ मोमी मशालें हाथों में लिये हुये उस कुबड़े का कुरूप देख एकमत हो कहने लगीं कि हम इस दुलहिन को इस मनुष्य अर्थात् बदरुद्दीनहसन को देंगे। इस कुरूप कुबड़े को नहीं। बादशाह इस आज्ञा का कि रूपवती स्त्री के साथ कुरूप मनुष्य ब्याहा जाय, फिर कुछ भय न किया। गाना बजाना बंद होगया। क्षणमात्र में डोमनियाँ और गाने बजानेवालियाँ दुलहिन को वस्त्र पहिनाने लगीं। निदान डोमनियों ने सात जोड़े सात प्रकार के शमसुद्दीन मंत्रीकी पुत्रीको प्रत्येक रागपर पहिनाये। जब उस देश

की रीत्यानुसार दुलहिन जोड़े बदल चुकी तब और स्त्रियों के साथ वह अपने स्थान अर्थात् कुबड़े दूल्हे के पास से उठी और ग्लानि-पूर्वकदृष्टि से उसे देख, बदरुद्दीनहसन के पास जा बैठी। बदरुद्दीन-हसन उस पिशाचके आदेशानुसार उन बाँदियों और गानेवालियों को अपनी थैली से मुट्ठी भरभर रुपये निकाल के देता रहा। वे प्रसन्न हो, एक दूसरी को झिड़क-झिड़क कर चुनने लगीं और आशीर्वाद देती थीं। परस्पर सैन से कहतीथीं कि यही दूल्हा मंत्री की पुत्री के योग्य है। यह कुबड़ा और कुरूप मंत्री-कुँवरि के योग्य नहीं। महल के सेवकों में भी यही वार्त्ता होती थी। वह कुबड़ा कुछ तो उनकी बातें सुनपाता और कुछ नहीं; क्योंकि अनेक नकल कर उन लोगों ने उसे रिझा रक्खा था। जब वस्त्र बदलने की यह रीति होचुकी और गाना बजाना बंद हुआ, तब उन्होंने बदरुद्दीनहसन को सैन की कि खड़ा हो। उसके खड़े होने पर भवन के सब मनुष्य उस स्थान से चले गये और दुलहिन अपने मकान में गई। बाँदियों ने दुलहिन को रात्रि के वस्त्र पहिराये। अब उस स्थान पर केवल बदरुद्दीनहसन, कुबड़ा और बाँदियाँ रह गईं। कुबड़े ने क्रोध की दृष्टि से बदरुद्दीन की ओर देख कर कहा, "तू क्यों यहां ठहरा है? यहाँ से चला क्यों नहीं जाता?" बदरुद्दीन-हसन उसके क्रोधित वचन सुन घबराया और वहाँ से जाने की इच्छा की, पर पिशाच और अप्सरा ने उससे कहा, "तू कहाँ जाता है? ठहर। कुबड़े को हम यहाँ से निकाल देते हैं। तू दुल-हिन के पास जा और उससे कह, तेरा पति मैं हूँ। बादशाह ने हास्य से कुबड़े को दूल्हा बना यहाँ भेजा था। उसके वास्ते कुछ भोजन अश्वशाला में भेजो और दुलहिन को अपने साथ

मिला लो। दुलहिन तुझे देख बहुत प्रसन्न होगी। तुम कुबड़े का भय मत करना उसको अभी दूर करते हैं। निदान जब अप्सरा ने बदरुद्दीन को इस भाँति की शिक्षा से दृढ़ किया, तो वह उसी स्थान पर ठहरा और वह मलिन कुबड़ा वहाँ से भागा; क्योंकि पिशाच बिल्ली बन ऐसी तीक्ष्ण दृष्टि से उसे देखने और घुर्राने लगा, जैसे सिंह अपने भक्ष्य को देख, नाद करता है। कुबड़ा उसे धमका कर दोनों हाथों से बड़े वेग से मारने लगा कि वह डरकर भग जाय; पर वह बिल्ली उसकी ओर घूरने लगी और अपने नेत्र अंगारों के समान लाल किये और पहले से अधिक शब्द करने लगी। वह इतनी फूली और बड़ी हुई कि गधे के समान हो गई। तब वह कुरूप उसे देखकर डरा और भाग जाने की इच्छा की। इतने में वह पिशाच बहुत बड़ा भैंसा बन डकारने लगा और बड़ा शब्द करके कहा, "हे कुबड़े! भाग के कहां जायगा? खड़ा रह।" कुबड़ा भय से पृथ्वी पर गिर पड़ा और अपना मुख वस्त्र में छिपा लिया कि उस विकराल भैंसे का स्वरूप देख न पड़े और अति नम्र हो गिड़गिड़ा के कहने लगा, "हे महिपराज! मुझे क्या आज्ञा है?" भैंसे ने उत्तर दिया, "क्या तुझे इतनी शक्ति थी कि मेरी स्त्री के साथ तू विवाह करने को आया?" कुबड़े ने उत्तर दिया, "हे स्वामी! मेरा अपराध क्षमा कीजिये। मुझे विदित न था कि यह सुंदरी आपकी प्यारी है।" महिप ने कहा, "तू यहाँ से सूर्य्योदय तक मत जाना यहाँ चुपका पड़ा रह। दिन होते ही इस स्थान से चले जाना और फिरके इस ओर मत देखना नहीं, तो अपने दोनों सींग तेरे पेट में घुसेड़ कर तुझे मार डालूँगा। उसके बाद भैंसा वह शरीर त्यागकर मनुष्य बन गया और उस कुबड़े की टाँगें उठा,

शिर नीचे कर दीवार के साथ खड़ा कर दिया और कहा, "जो तू सवेरे तक हिला और इसी भाँति खड़ा न रहा, तो तुझे इसी दीवार के साथ रगड़ डालूँगा।"

फिर वह पिशाच और अप्सरा दोनों चले गये और बदरुद्दीन अति हर्ष से दुलहिन के महल में गया। उस समय एक वृद्धा उसे कहीं एकांत में लेआई और दूल्हे से कहा, "भैया इस दुलहिन के साथ संसारी व्यवहार वर्त्तना।" इतना कह, उस मकान का द्वार बंदकर उसमें ताला लगा चलीगई। वह दुलहिन बदरुद्दीनको पाकर बड़ी प्रसन्न हुई और पूछा, "तुम मेरे पति के साथियों में से हो?" बदरुद्दीनहसन ने उत्तर दिया, "मैं कुबड़े का साथी नहीं; किंतु तेरा पति हूँ। पहले बादशाहने चाहा था कि अपना विवाह तुम्हारे साथ करें, पर तेरे पिताने उसे स्वीकार न किया। तब बादशाह ने क्रोधित हो, प्रकट में हास्य से कुबड़े को नियत किया कि उसके साथ तेरा विवाह हो, परंतु वास्तव में मुझे ही विवाह के निमित्त भेजा है। मैं तुम्हारा सजाती हूं तुमने देखा नहीं कि सब मनुष्य उससे हँसी करते थे। अब मैंने उसे फिर अश्वशाला में भेज दिया है। तुम धैर्य्य रक्खो। वह तुम्हें दिखाई भी न देगा।" मंत्री कुँवरि जो चिंता में थी, इस वचन को सुन और अपने भर्त्ता को सुंदर देख, खूब प्रसन्न और हर्षित हुई और कहनेलगी, "मैं बड़े शोच-विच[illegible] थी कि मेरी सब उम्र उस कुबड़े के साथ दुःख में कटेगी; प[illegible] परमेश्वर का धन्यवाद है कि उसने मुझे बचाकर तुम्हारेसाथ विवाहकिया" यह कह वह बदरुद्दीन के साथ सोरही। बदरुद्दीन भी उसके अनूप रूप को देख हर्षित हुआ और अपने वस्त्र और थैली, जिसे उसने इसहाक यहूदी

से पायाथा एक चौकी पर उतारके रखदिया। इतना देने पर भी वह थैली उसी भाँति द्रव्यसे भरी थी। यह केवल पिशाच की मंत्रविद्या थी। फिर पगड़ी भी शिर से उतार रात्रिका मुकुट पहिन लिया और एक तंग पायजामा और मिरजई पहन के अपनी दुलहिन के साथ सो रहा। जब कुछ रात बाकी रही तब वह पिशाच फिर उस अप्सरा से मिला। पिशाच ने कहा, "भोर होने के पहिले ही उस मनुष्य को सोते हुये वहाँ से उठाकर किसी अन्य देश में पहुँचा दे. सो अप्सरा ने धीरेसे दूल्हे को दुलहिन के समीप से उठा दमिश्क नगर की जामामसजिद पर ले जा, लिटा दिया और आप पिशाच सहित वहाँ से लौट गई।

जब वहाँ के वासी भोरकी अजाँ सुन निमाज पढ़ने आये, तो भी इसको रात के वस्त्र पहिने देख बड़े विस्मित हुए किसी ने कहा कि यह अपनी स्त्री से रूठके आया है। इतना भी अवकाश न पाया कि कपड़े बदलता। दूसरे ने कहा कि यह पुरुष रातभर अपने मित्रोंके साथ मदिरा पीतारहा, अब मदमत्त हो यहाँ आ-पड़ा है और निद्रावश हो अचेत पड़ा है। तीसरा और कुछ कहता। परंतु किसीको ठीक विदित न हुआ कि वह क्योंकर वहाँ आया। मनुष्यों की चिल्लाहट और ठंढी हवा चलने से वह जगा और मनुष्यों को अपने चारों ओर देख आश्चर्य में हुआ और अपने को एक मसजिद के निकट, जिसे कभी न देखा था, पड़ा देख अत्यंत विस्मित हो उनसे पूछा, "मुझे बताओ मैं कौन हूँ? तुम लोग क्यों मेरे चारों ओर इकट्ठे हुए हो?" और क्या वार्ता करते हो? एक मनुष्य ने कहा, "हे मित्र! मैंने तो तुझे अभी देखा है। क्या तू नहीं जानता कि यह दमिश्क की

मसजिद का दरवाजा है ?" तब बदरुद्दीनहसन ने कहा, "वाह परमेश्वर की माया ! कल मैं कैरू में सोया था। भोर को क्यों कर दमिश्क में पहुँचा ?" इस वचन को सुन उन मनुष्यों ने कहा, "यह मनुष्य दया करने योग्य है। ऐसा सुंदर पुरुष सौदाई हो और ऐसी बहकी बातें करे।" उनमें से एक वृद्धने कहा, "हे पुत्र ! तुम क्या कहते हो ? ऐसा नहीं हो सक्ता कि रात्रि को तुम कैरू में हो भोर को दमिश्क में।" बदरुद्दीन ने कहा, "मैं सत्य कहता हूँ। कल भोरको मैं बाँसरा में था।" इस वचन के सुनते ही सब मनुष्य ठट्ठामार हँसने लगे। और पूछा "क्या तू विक्षिप्त वा निर्बुद्धि है ? या इसमें कुछ गुप्त भेद है ? बड़ा पश्चात्ताप इसकी तरुण अवस्था पर है। ऐसा उत्तम मनुष्य विक्षिप्त होजाय।" फिर एकने कहा, "यह बात कैसे होसक्ती है कि एक मनुष्य रात्रि को कैरू में और भोर को दमिश्क में पहुँच जाय। अभी-तक तुम सोते हो यह तुम्हारी स्वप्न अवस्था की बातें हैं।" बद-रुद्दीनहसन ने उत्तर दिया कि यह बात सत्य है। कल रात्रिको मेरा विवाह कैरू में हुआ था। यह सुन मनुष्य अधिक हँसने लगे। फिर उसी मनुष्य ने कहा, "तूने अवश्य स्वप्न देखा है। अभीतक तेरा वही विचार है।" बदरुद्दीनहसन ने कहा, "मैंने स्वप्न नहीं देखा है। कल रात्रि को मेरी दुलहिन को सात प्रकार के वस्त्र पहिनाये गये। उस स्थान पर एक कुरूप कुबड़ा भी था उन्होंने चाहा कि उसका विवाह उसी दुलहिन से करें। मैं बड़ा विस्मित हूँ कि मेरे वस्त्र पगड़ी और धनकी थैली जो कैरू में मेरे साथ थीं क्या हुई ?" यद्यपि वह इन बातों को ऐसा कहता था कि विश्वास हो, परंतु किसी को विश्वास नहीं आता था।

उलटे सब हँसते थे। निदान जब बदरुद्दीन अपना वृत्तांत कह चुका, तब वहाँ से उठ नगर की ओर गया। उसके पीछे मनुष्य कहते जाते थे कि यह मनुष्य विक्षिप्त है। इस शब्द को सुन और बहुत से मनुष्य चारों ओर द्वारों पर खड़े होकर उसको देखते और हँसते थे। कोई २ चिल्लानेवालों के साथ होकर कहते थे कि यह सौदाई है; परंतु उसकी विक्षिप्तता का वृत्तांत किसी को विदित न था। यहाँतक कि वह बिचारा घबराकर एक हलवाई की दूकान पर गया और दूकान के भीतर जाकर अपना पीछा उनसे छुड़ाया। विदित हो कि यह हलवाई प्रथम पश्चिम कधाड़ियों का प्रधान था, जो परदेशियों को लूटा करते थे। अब वह निंद्यकर्म को छोड़ दमिश्क में वास करता था। यद्यपि उसकी मिलनसारी और शील से उस नगर के वासी उससे प्रसन्न थे, परंतु अब भी बहुत से मनुष्य उससे डरते थे। इसलिये उसके भय से सब भाग गये। तब उसने बदरुद्दीनहसन से पूछा, "तू कौन है? यहाँ क्योंकर आया है?" उसने अपना संपूर्ण वृत्तांत जन्म से विवाह पर्यंत विस्तारपूर्वक वर्णन किया और कहा! इस भोर को मैंने अपने को इस नगर की मसजिद के द्वार पर पृथ्वी पर पड़ा पाया।" कुछ भी विदित नहीं कि मैं इस थोड़े समय में कैसे उन नगरों को लाँघता हुआ, यहाँ पहुँचा।" उस हलवाई ने उसका वृत्तांत सुन कहा, "तेरी कहानी अद्भुत है। इस वृत्तांत को किसी से न कहियो। मेरे संतान नहीं है, मैं तुझे अपना पुत्र बनाया चाहता हूँ। जो तू राजी हो तो मनुष्यों के सम्मुख प्रतिज्ञा कर। फिर तू इस नगर में हर्षपूर्वक फिरना। मेरा पुत्र जान, तुझे कोई न टोकेगा।" यद्यपि हलवाई की गोद में बैठना अनुचित और

जाति हीनता का कारण था; परंतु उस आपत्ति की दशा में, उसने इसे उत्तम जान स्वीकार किया। फिर हलवाई ने उसे उत्तम २ वस्त्र पहिनाये और बहुतसे मनुष्यों को इकट्ठा किया और बदरुद्दीनहसन ने अपने को उनके सामने भी उसका पुत्र ठहराया। फिर वह हलवाई सब साथियों सहित उसे न्यायाधीश के निकट लेगया। बदरुद्दीनने भी उसके सम्मुख भी यही कहा कि मैं इसका गोद लिया हुआ पुत्र हूं। अब वह उसके घर में आनंदपूर्वक रहने लगा। दमिश्क में हसन नाम से विख्यात होकर उसने हलवाई का कार्य्य सीखा।

अब उस दुलहिन अर्थात् मंत्री कुँवरि का भी हाल जानना चाहिये सबेरे जब शमसुद्दीनमुहम्मद की पुत्री जगी तो उसने बदरुद्दीन को छपरखट में न पाया। जाना कि वह लघुशंका आदि करने के लिये बाहर गया होगा शीघ्र फिर आवेगा। वह दुलहिन उसके आनेकी बाट देखती थी। इतने में मंत्री शमसुद्दीनमुहम्मद अत्यंत चिंता और लज्जापूर्वक वहाँ आया और मुरझाकर अपनी पुत्री का नाम लेकर पुकारा। दुलहिन ने तुरंत उठ किवाड़ खोला और रीतिपूर्वक अपने पिताके हाथको चूमा। मंत्री ने उसे प्रसन्न पा आश्चर्य किया। वह समझा था कि यह भी इस लज्जा से दुःख को प्राप्त हुई होगी। मंत्री ने कहा, "अभागी, तू मेरे सम्मुख अपनी प्रसन्नता प्रकट करती है।" दुलहिन ने उत्तर दिया, "यहाँ पर वह कुरूप कुबड़ा नहीं है और मैं उसके साथ विवाही नहीं गई। वह यहाँ से कभी का भागा है। मेरा विवाह किसी रूपवान् मनुष्य से हुआ है और वही मेरा पति है।" शमसुद्दीन मंत्री ने कहा, "तू क्या कहरही है? तेरे साथ वह कुबड़ा

क्यों नहीं सोया ?" दुलहिन ने कहा, "नहीं वह मनुष्य है, जिसकी भवें काली और नेत्र बड़े २ हैं।" मंत्री उसके वचन पर विश्वास न कर क्रोधित हुआ और कहा, "तूने दुष्टतासे यह विरुद्ध वचन कहे। तेरा पति वही कुबड़ा है।" उसने कहा, "मैं कुबड़े को धिक्कार देती हूँ मैं उसके साथ नहीं सोई। मेरा पति मलमूत्र त्यागने बाहर गया है। अभी आता होगा। उसे तुम देख लेना कि वह कैसा है।" शमसुद्दीन बाहर निकल, उसे ढूँढ़ने लगा कहीं न पाया; परंतु एक ओर देखा कि वह कुबड़ा दीवार के साथ लगा उलटा खड़ा है। पाँव ऊपर, शिर नीचे, जैसा वह पिशाच उसे खड़ा कर गया था। उसके भय से अटल खड़ा था। मंत्री ने उसे इस दशा में देख पूछा, "तुझे इस भाँति किसने खड़ा किया है ?" कुबड़ेने मंत्री का शब्द पहिचान उत्तर दिया, "आपने मुझसे अच्छी हँसी की कि भैंसकी स्त्रीके साथ मेरा विवाह ठहराया। वह सुंदरी तो एक कुरूप पिशाच की प्यारी है।" मंत्री समझा कि यह बड़बड़ा रहा है। उस की बातों को सुनी अनसुनी कर कहा, "सीधा होकर खड़ा रह।" उस कुबड़े ने उत्तर दिया, "सूर्य उदय पर्यंत मैं हिल भी नहीं सका; क्योंकि मैं रात्रि को बड़े दुःख में पड़ा था। प्रथम तो एक श्यामवर्ण बिल्ली मेरे सम्मुख आई। क्षणमात्र में वह एक बड़ी भैंस बन गई और जो कुछ उसने मुझसे कहा मैं नहीं भूला। तुम मुझे इसी दशामें छोड़ अपना कार्य करो।" मंत्रीने उस कुबड़े को पकड़ सीधा कर दिया। सीधा होतेही वह कुबड़ा ऐसा भागा कि वह जरा भी न ठहरा और न पीछे फिरके देखा। दौड़ता हुआ बादशाह के सम्मुख गया और अपने संपूर्ण वृत्तांत को प्रकट किया। बादशाह इस कहानी को सुन बहुत हँसा।

मंत्री भी अपनी पुत्री के निकट आके कहने लगा, "क्या तू यह बातें सत्य कहती है ?" कुँवरिने कहा, इसके अलावा अपनी सत्यता की एक और साक्षी देनी हूँ। वह यह है। इस कुरसी पर मेरे पति के वस्त्र रक्खे हैं, उनको भली भाँति देखो। उनमें से ही कोई ऐसी वस्तु प्रकट होगी, जिससे तुम्हारे हृदय का संदेह मिट जायगा। फिर उसने बदरुद्दीनहसन की पगड़ी उठा मंत्री को दी। मंत्री ने जब उसको चारों ओर घुमाकर देखा तो विदित हुआ कि यह मुवस्सल के वासियों के मंत्री की पगड़ी है। उसमें से एक वस्तु वस्त्र में लपेटी हुई पाई। उसने उसे खोला, तो उसमें एक पत्र, जो नूरुद्दीन मंत्री ने अपने अंत समय बद-रुद्दीनहसन को लिख दिया था, पाया। बदरुद्दीन अपने पिता की निशानी को अपनी पगड़ी में रखता था। मंत्री ने वह पत्र देखते ही अपने भ्राता को पहिचान लिया। द्रव्य से भरी हुई एक थैली भी पाई। उस थैली में इसहाक यहूदी के हाथ का लिखा हुआ एक पत्र दृष्टि पड़ा। उसमें लिखा था कि मैंने ६०००) रु० में बदरुद्दीन से एक जहाज़ मोल लिया। यह पढ़ते ही वह मूर्च्छित हो गया। पत्र उसके हाथ से गिर पड़ा। जब वह होश में आया तो लड़की से कहा, "तुम्हारी प्रसन्नता बहुत ठीक है।" पति तुम्हारा चचेरा भाई है। फिर उसने अपने भाई के पत्र को उठा कईबेर चूमा और रोया। उसमें लिखा था कि मैं अमुक तिथिको कैरू से बाँसरा आया। अमुक तिथि को विवाह हुआ और अमुक मुहूर्त्त में मेरा पुत्र बदरुद्दीन उत्पन्न हुआ। शमसुद्दीन ने जब उन तिथियों का मिलान किया तो अपने और अपने भाई के विवाह आदि की तिथि मुहूर्त्त एकही

पाई। जिस मुहूर्त्त में बदरुद्दीन उत्पन्न हुआ था, उसी में मंत्री के घर कन्या हुई थी। इससे वह अत्यंत आश्चर्य में हुआ कि यह संयोग कैसे ठीक मिलगया। इन गुप्त बातों के जानने से वह सब शोच और दुःख भूल गया, और प्रसन्न हुआ। पत्र और पगड़ी वह बादशाह के सम्मुख लेगया। वह भी इसे देख अत्यंत हर्षित और अचंभे में हुआ और आज्ञा दी कि यह वृत्तांत हमारी इतिहास की पुस्तकों में लिखा जाय।

शमसुद्दीन एक सप्ताह पर्यंत अपने भतीजे के आने की राह देखता रहा। जब वह इस बीच में न आया, तब उसने कैरू नगर भर में उसकी ढूँढ़ की। कहीं उसे न पाया। इससे उसे बड़ा शोच हुआ और वह विचारने लगा कि वह कहाँ चला गया? उसे क्या हुआ, जो नहीं मिलता। फिर उसने विवाह के मकान को विवाह की सब वस्तु सहित बंद किया। बदरुद्दीन के वस्त्र और पगड़ी को गठरियों में रक्षापूर्वक बाँध, एक मकान में रक्खा और कुफुल लगादी।

थोड़े दिन बाद मंत्री की पुत्री ने अपने को गर्भयुक्त पाया और नव मासके बाद उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उस सुंदर पुत्र के पालन पोषणार्थ बहुतसे मनुष्य नियत किये गए। नाना ने उसका नाम अजब रक्खा। जब अजब सात वर्ष का हुआ तो, मंत्री ने उस लड़के को घरमें पढ़ाना उचित न समझा और उसे पाठशाला में भेजा। जिसका गुरु बड़ा गुणवान् और बुद्धिमान् था। दो अनुचर उसकी सेवाके निमित्त तैयार रहते। बहुधा अजब पढ़लिखकर अपने सहपाठियों से खेला करता। जो विद्यार्थी अजब से पदवी में न्यून थे, वे सब अपने गुरुकी आज्ञानुसार उसकी

बड़ी प्रतिष्ठा और सत्कार करते। इसकारण अजबको बड़ा गर्वहुआ। वह बालकों को दुर्वाच्य कहा करता और बहुधा मारता भी था। इससे वह सब उसकी संगति से आजिज आगये। और अपने गुरु से ये सब बातें कहीं। गुरु ने उन्हें समझाया कि इसके दुर्वाच्य का बुरा न मानो, इसे क्षमा किया करो, मैं उसे समझाऊंगा। अजब को एकांत में लेजाकर गुरुने उसे धमकाया, पर उसने अधिक दुःख देना आरंभ किया। तब गुरुने विद्यार्थियों से कहा, अजब मेरे समझाने से नहीं समझता। दिन प्रतिदिन ढीठ होता जाता है। तुमको अब मैं एक बात बताता हूँ, जिससे वह तुम्हें फिर दुःख न देगा और शाला में आना छोड़ देगा। वह यह कि कल जब तुम और वह खेलने को इकट्ठ हो, तो तुम सब उसे घेरना, तुममें से एक यह कहे, "आज हम यह खेल खेलते हैं कि प्रत्येक विद्यार्थी अपने माता पिता का नाम बतावे, जो न बतावेगा, उसे जानेंगे कि वह वर्णसंकर है। वह हमारे साथ खेलने योग्य नहीं है।" जब सब विद्यार्थी खेलने को इकट्ठ हुए, उन्होंने अपने गुरुके उपदेशानुसार वही खेल खेलना आरंभ किया और अजब के चारों ओर से घेरकर एकने कहा, "आवो हम सब अपनी अपनी पारी से अपने पिता का नाम बतावें और जो न बतासके उसके साथ् हम न खेला करेंगे।" उन सब बालकोंने कहा, "बहुत अच्छा। हम सब इस खेल में प्रसन्न हैं। फिर एक एक ने प्रत्येक विद्यार्थी से उसके बापका नाम पूछना आरंभ किया और तुरंत उत्तर पाया। सबोंने अपने माता पिता का नाम ठीक ठीक बताया। जब यही प्रश्न अजब से किया, उसने कहा, "मेरा नाम अजब है, मेरी माता का नाम हसना और पिता का नाम शमसुद्दीनहसन

है, जो बादशाह का मंत्री है।" उसके वचन को सुन सब बालक बोल उठे, "अजब तू क्या कहता है? यह तेरे पिताका नाम नहीं; किन्तु तेरे नाना का नाम है।" अजब ने उन्हें कुवाच्य दे कहा, "क्या शमसुद्दीनहसन मेरा पिता नहीं?" उन सबोंने ठट्ठामार कहा, "वह तेरा पिता नहीं, नाना है। तुझे अपने पिता का नाम मालूम नहीं। आज से तुझे उचित है, तू हमारे साथ न खेला कर। यह कह, वे सब वहाँ से उठ खड़े हुए और उसे दुर्वाच्य कहने और हँसने लगे। अजब अत्यंत लज्जित हो, रोने लगा। गुरुजो वहाँ समीप ही ये सब बातें सुनता था, तुरंत अजब के निकट चला आया और कहा, "अजब क्या यह सत्य है? शमसुद्दीनमुहम्मद तो तेरा पिता नहीं है। तेरा मातामह अर्थात् तेरी माता का पिता है। तेरे पिता का नाम हमें भी मालूम नहीं। इतना जानता हूँ कि बादशाह ने चाहा था कि तेरी माता का विवाह एक कुबड़े अश्वपाल से करें; परंतु किसी पिशाचने उसे निकाल दिया और आप तेरी माता के साथ भोग किया। अब तू विद्यार्थियों को दुःख न दिया कर। अजब इस वचन को सुन तुरंत रोता हुआ अपनी माता के समीप गया और मा से कहा, "परमेश्वर के वास्ते मुझे बता मेरा पिता कौन है?" उसकी माता ने उत्तर दिया, "हे मेरे प्रिय पुत्र! तेरा पिता शमसुद्दीन है, जो तुझे नित्य प्यार करता है।" अजबने कहा, "तू मुझसे झूठ कहती है। वह मेरा पिता नहीं; किंतु तेरा पिता है। मेरे पिता का नाम बता। मैं किसका पुत्र हूँ।" उसकी माता प्रथम संग की रात और अपने पति के खोजाने को स्मरण कर रोने लगी।

ये दोनों, मा बेटे रो रहे थे, इतने में मंत्री शमसुद्दीन आया

और उनसे रोने का कारण पूछा। अजब की माता ने विद्यार्थियोंसे लज्जित होने का हाल विस्तारपूर्वक कहा। मंत्री भी उसके साथ रोने लगा और अत्यंत शोचयुक्त हो अपने मनमें कहा, "बड़ा पश्चात्ताप है कि मेरी लज्जा का हाल संपूर्ण नगर में ख्यात है और सब छोटे बड़े जानते हैं।" इसी भाँति रोता हुआ बादशाह के सम्मुख गया और उसके चरणों पर गिर, विनय करके कहा कि थोड़े दिनों की मुझे छुट्टी मिले, तो मैं अपने भतीजे बदरुद्दीनहसनको मुख्य मुख्य नगरों और विशेष बाँसरा में जाकर ढूँढ़ूँ, क्योंकि इस सेवक को इस कुवाच्य सुनने से धैर्य नहीं है। नगर के वासी कहते हैं कि मेरी पुत्री ने पिशाच से पुत्र उत्पन्न किया। बादशाह भी बहुत पछताया और उसकी इच्छा स्वीकार की और स्थान-स्थान पर राहदारी के पत्र अपने भृत्यों और बादशाहों के नाम इस विषय में लिखवाकर उसे दिए कि जिस नगर में वा देश में बदरुद्दीन नामक मेरे मंत्री का भतीजा हो, उचित है कि उससे इसकी भेंट करा दें और उसकी यथावस्थित सहायता करें। जो मेरी यह आज्ञापालन करेगा, मैं उससे अति प्रसन्न होऊँगा। शमसुद्दीनमुहम्मद अपने स्वामी की इस दयालुता पर कृतज्ञ हुआ और फिर उसके चरणों को चूम बिदा हुआ। अपनी पुत्री और नवासे को साथ ले वहाँ से निकला और बीस दिवस के बाद दमिश्क में पहुँचा। नदी के तट पर, जो उस नगर के नीचे बहती थी, डेरे खड़े किये और अपने सेवकों को आज्ञा दी कि इस नगर में जावो और जो कुछ चाहो बेचो और मोल लो। बहुत से मनुष्य, मिसर से जो वस्तुएँ लाये थे; उन्हें बेंचा और वहाँ की उत्तम-उत्तम वस्तुएँ मोल लीं। मंत्री बदरुद्दीन को

ढूँढ़ने लगा। एक दिवस अजब भी अपने कई सेवकों के साथ दमिश्क नगर में गया। उस नगर के मनुष्य उसके स्वरूप को देख अत्यंत प्रसन्न हुये और उसके चारों ओर इकट्ठे हुये। अकस्मात् फिरते २ बदरुद्दीन की दुकान पर गये और उस दुकान पर उन्होंने विश्राम किया; क्योंकि मनुष्यों के एकत्र होने से वे घबरा गये थे।

वह हलवाई जिसने कि बदरुद्दीन को गोद बैठाया था, मर गया था। अपना सब धन बदरुद्दीन को देगया था। बदरुद्दीन की हलवाइयों में बड़ी प्रतिष्ठा थी; क्योंकि वह मिठाई बनाने में बहुत प्रवीण था। बदरुद्दीन ने अपनी दुकान पर भीड़ देखी और उस समूह में उसकी दृष्टि अजब पर पड़ी। देखते ही प्रीति उत्पन्न हुई और बेवश हो उसे देखने लगा। परंतु प्रीति का कारण न जानता था। यद्यपि नगर के वासी भी उसे प्रीति की दृष्टि से देखते; परंतु बदरुद्दीन को अपने रुधिर से उत्पन्न होने के कारण अधिक मोह उपजा। यहाँ तक कि बदरुद्दीन अपनी दुकान के सब कार्य को भूल गया और अजब के निकट जा नम्रता और विनयपूर्वक कहा, "आप मेरी दुकान पर आकर कुछ भोजन कीजिये, ताकि मैं आपको भली भाँति देख लूँ।" यह कहकर उसके नेत्रों से अश्रु की धारा बह निकली। अजब के मन में भी बदरुद्दीन के देखने और उसके साथ वार्त्ता करने की इच्छा उत्पन्न हुई। उसने चाहा कि उसकी दुकान पर बैठ, उससे वार्त्ता करें; परंतु इसके सेवकों ने कहा, "तुम मंत्री के पुत्र हो, तुम्हें उचित नहीं कि हलवाई की दुकान पर बैठ के कुछ भोजन करो।" बदरुद्दीन ने अजब से कहा, "आप अपने

बेशील सेवकका कहना न मानिये। इनकी बात को मत सुनिये।" फिर उसने सेवकों की भी बहुत बिनती की और ऐसा एक राग गाया कि वह सुन सब हर्षित हुए और उसकी बात को मान गये। उस राग का अर्थ यह है—यद्यपि तुम बाहर से श्याम हो; परंतु भीतर से अति उज्ज्वल हो। मैं कवि हूँ। तुम्हारी ऐसी प्रशंसा करूँगा कि तुम संसार में विख्यात होगे। उसने और भी बहुत से गीत हब्शियों की प्रशंसा में कहे। जिन्हें सुन वे हब्शी खूब प्रसन्न हुये और अजब को उसकी दुकान पर लेजाकर बैठाया। बदरुद्दीनहसन उसे अपनी दुकान पर बैठा देख हर्षित हुआ और कहा, "मैं बहुत अच्छी मलाई बनाता हूँ। मेरी माता के सिवाय जिसने मुझे उसे बनाना सिखाया है, संसार में मेरे समान वैसी अच्छी मलाई कोई नहीं बना सक्ता। विश्वास है कि आप उसे खाकर प्रसन्न होंगे। मेरे पास उसकी बहुत दूर-दूर से फरमायशें आती हैं।" यह कह, "उसने कड़ाही से मलाई निकाल, अनार का अरक़ और शक्कर डाल, अजब के सम्मुख रक्खी। अजब उसे खाकर बहुत प्रसन्न हुआ। फिर उसने सेवक को खिलाई। उसने भी उसे खा खूब प्रशंसा की और प्रसन्न हुआ। जब वे दोनों मलाई खाचुके तब बदरुद्दीनहसन अजब को बार बार देखता और मनमें विचारता कि कदाचित् उस रूपवती छविधाम कोमलांगी स्त्री से, जिससे शीघ्रही वियोग हुआ ऐसा सुंदर पुत्र उत्पन्न हो, यह शोच वह रोता। फिर बदरुद्दीनहसन ने अजब से पूछा इस दमिश्क नगर में आपका आना क्योंकर हुआ?" अभी अजब ने उत्तर न दिया था कि उस सेवक ने कहा, "बड़ी देरहुई। शीघ्र चलो।" यह सुन अजब उठ चला। बदरुद्दीन-

हसन जिसका अजब के देखने से मन न भरा था, अपनी दुकान बंद कर उनके पीछे हो लिया। यहाँ तक कि उनके साथ दौड़ता हुआ नगरद्वार तक पहुँचा। सेवक, उसे साथ आते देख, अत्यंत विस्मित हुआ और क्रोध से पूछा, तू क्यों हमारे साथ लगा चला आता है?" बदरुद्दीन ने बहानाकर कहा, "मुझे कुछ काम है। इस निमित्त इधर से होकर वहाँ जाता हूँ।" इस वचन से उस सेवक को बोध न हुआ और अजब से कहा इसी वास्ते मैंने तुमको हलवाई की दुकान पर नहीं बैठने दिया था। अब पश्चात्ताप करता हूँ कि क्यों मैंने तुमको बैठने की आज्ञा दी और क्यों हलवाई को मुँह लगाया हमारे पीछे चला आता है। अजब ने उसे उत्तर दिया, "वह अपने कार्य को जाता है। मार्ग में सभी चलते हैं। हम किसी को मना नहीं कर सके।" फिर पीछे न देखकर तुरंत डेरों की ओर चले जब डेरे पर पहुँचे, तो अजब ने फिरके देखा कि हलवाई उसके पीछे चला आता है। वह डरा कि कहीं ऐसा नहो कि मेरे नाना को विदित हो कि अजब ने उसकी दुकान पर मलाई खाई है, तो यह बात उसकी अप्रसन्नता का कारण होगी। इसवास्ते उसने एक बड़ा सा पत्थर उठा बदरुद्दीनहसन के माथे पर मारा कि उसका माथा लहू-लुहान होगया और फिर तुरंत अपने सेवक सहित अपने डेरे में घुस गया। सेवक ने बदरुद्दीन को समझा बुझाकर लौटा दिया। वह उसी दशामें नगरको लौट आया और अपने को धिक्कारने लगा कि क्यों अपनी दुकान छोड़ ऐसों के पीछे गया था। यदि मुझसे कोई शंका न होती, तो कदापि वह मुझे इस निर्दयता से न मारता। निदान वह अपने घरमें आया और घाव पर पट्टी

बाँधी। फिर दुकान पर गया। उसका चचा अर्थात् मंत्री शमसुद्दीन तीन दिवस ठहर हलब, नार, मवस्सल, सरवर आदि और नगरों में गया और प्रत्येक नगरमें अपने भतीजे को ढूँढ़ता हुआ बाँसरा में पहुँचा। वहाँ के बादशाह से भेंट की। बादशाहनें उस पर बहुत कृपा कर आगमन का कारण पूछा। शमसुद्दीनमुहम्मद ने विनय की, "मैं नूरुद्दीन अपने भाई के पुत्र बदरुद्दीनको ढूँढ़ने आया हूँ। आपको उसका वृत्तांत यदि विदित हो, तो मुझे बतलाइये।" बादशाहने कहा, "बहुत दिन हुये नूरुद्दीन मरगया और उसका पुत्र बदरुद्दीन अपने पिता के मरने के दोमास पश्चात् यहाँ से कहीं चला गया। उसका कुछ भी वृत्तांत मुझे मालूम नहीं। बहुत ढूँढ़ने पर भी उसका मुझे कुछ पता नहीं मिला; परंतु उसकी माता हमारे मंत्री की स्त्री अबतक जीती है। शमसुद्दीनमुहम्मदने अपनी भावजसे भेंट करने और उसे अपने साथ मिसर में लेजाने की आज्ञा ली और दूसरे दिन तक उसका वासस्थान पूछकर अपनी पुत्री और नवासे सहित वहाँ गया। वह एक बहुत अच्छे घर में रहती थी। शमसुद्दीन मुहम्मदने पहले उसके घर के द्वार पर जाकर, नूरुद्दीन का नाम जो, एक पाट पर सुनहले वर्णों में लिखा था, चूंमा। फिर उसने उन मनुष्यों से जो उस घरमें रहते थे अपनी भावज को पूछा कि वह कहाँ है। उन्होंने कहा कि वह बहुधा अपने पति की क़बर पर रहती है और अपने पुत्र के चित्र को देखकर जो बहुत दिनसे गुप्त होगया है, प्रतिदिन रोती और नाना प्रकारके कष्ट सहती है। निदान शमसुद्दीनमुहम्मदनें घरके भीतर प्रवेशकर संपूर्ण वृत्तांत विवाहादि का अपनी भावज से कहा और अपनी पुत्री और नवासे को दिखाया।

वह स्त्री बदरुद्दीन के मिलने से निराश थी। इस वृत्तांत और अपने बहू बेटे के देखने से हर्षित हुई। उस समय उसे विश्वास हुआ कि मेरा पुत्र जीता है। फिर उठ अपनी बहू और अजब को कंठ से लगाया और प्यार किया। अजब के रूप और मुखको अपने पुत्र के समान देख अत्यंत प्रसन्न हुई। उसे अपने हृदय से लगा बदरुद्दीनहसन को स्मरण कर रोने लगी। शमसुद्दीनमुहम्मद ने कहा, "हे सुंदरी! यह रोने का समय नहीं; किन्तु हर्ष का है। अब तुम इस शोक को अपने मनसे परित्याग कर मेरे साथ मिसर को चलो। मैंने ब दशाह से तुम्हें अपने साथ लेजाने की आज्ञा लेली है। मुझे परमेश्वर से पूरी आशा है कि बदरुद्दीनहसन तुम्हारा पुत्र अवश्य हमको मिलेगा। मेरी पुत्री के विवाह का अद्भुत चरित्र इसकी पुस्तकों में लिखने के योग्यहै।" उसकी भावज इस वृत्तांत को विस्तारपूर्वक सुनके प्रसन्न हुई और तुरंत यात्रा की तय्यारी की। चलते समय शमसुद्दीनमुहम्मद फिर वहाँ के बादशाहके पाससे बिदा होने गया। बाँसरा के बादशाहने मिसर के नरेशकी प्रसन्नता के लिये दिव्य सौगातें और उत्तम २ वस्त्र और पारितोषकादि दे, उसे बिदा किया। शमसुद्दीनमुहम्मद फिर अपने कुटुंबसहित दमिश्क की ओर चला और नगर में पहुँच कर नगर के बाहर डेरा डाला। बादशाह से भेंट करने को वहाँ की बहुत अच्छी २ वस्तुएँ लेने को तीन दिन तक ठहरा और बहुमूल्य और उत्तम २ वस्तु आदिके जो वहाँ के व्यापारी लाते थे, देखने में प्रवृत्त हुआ। अजब ने अपने नाना को उक्त कार्य में लगा देख अपने रक्षक सेवकों से कहा, "मुझे नगर में ले चलो। मैं भली भाँति देखूँ और उस हलवाई

को, जिसे पत्थर से मारा था, उसका हाल मालूम करूँ; क्योंकि उस वार मुझे इतना सावकाश न मिला था कि उसे अच्छे प्रकार देखता।" सेवक भी राजी हो गया और उसकी माता की आज्ञा लेके नगर की ओर गया। फिर दोसी नाम नगर के दरवाजे से होकर चौक से, जहाँ वहुत उत्तम वस्तुएँ विकती थीं, लाया और धीरेधीरे देखते भालते दुपहर में वदरुद्दीनहसन की दूकान पर पहुँचा और वदरुद्दीनहसन को अपने कार्य में प्रवृत्त देख प्रणाम किया और कहा, "तुम मुझे पहिचानते हो? कुछ तुमको स्मरण है? प्रथम भी तुमने मुझे देखा था।" वदरुद्दीनहसन को अजव के इस वचन के सुनते और उसकी ओर देखते ही अति प्रीति उमड़ी और पहलेकीसी उसकी दशा हुई। कुछ कहे सुने विना वह विह्वल हो, खड़ा रहगया। थोड़ी देर के बाद नम्रता और विनयपूर्वक कहा, "हे स्वामी! अपने सेवक सहित एक क्षण मेरी दुकान पर ठहरो और थोड़ी सी मलाई खाओ।" अजव ने कहा, "यदि तुम पहले की तरह हमारा पीछा न करो, तो हम तुम्हारी दूकान पर ठहरें। हम कल भी तुम्हारी दुकान पर आवेंगे; किंतु जबतक मेरा नाना यहाँ ठहरा है, हम प्रति दिन एक बार तुम्हारे यहाँ आया करेंगे।" वदरुद्दीन ने कहा, "जैसा आप कहते हैं, वैसाही करूँगा। तुम्हारी आज्ञा का उल्लंघन कदापि न करूँगा।" फिर जब अजब अपने सेवकों सहित बैठ गया, वदरुद्दीन ने मलाई के प्याले उनके सम्मुख रक्खे। अजवने वदरुद्दीनको भी अपने साथ बैठाया। उन्होंने खूब मलाई खाई और भोजनके उपरांत अजबने प्रीतियुक्त वार्त्ता कर ताकीद कर कहा, "अपनी प्रीति कदापि प्रकट न करना और हमारे पीछे

जानेकी इच्छा मत करना।" बदरुद्दीन ने कहा, "मैं आपके कहने के विपरीत न करूँगा।" बदरुद्दीन ने मलाई न खाई; क्योंकि वह अपने अतिथियों का सत्कार करता रहा। जब अजब भोजन करचुका बदरुद्दीन उसके हाथ धुलाकर, एक अति उज्ज्वल वस्त्र हाथ पोंछने के लिये ले आया। फिर उसने चीनी के पात्र में शरबत बनाया और कंदके ओले डाल अजब को दिया और कहा, "यह गुलाब का शरबत बड़ा मीठा और स्वादिष्ठ है।" इस नगर में ऐसा केवल मेरी दूकान पर बनताहैं।" अजब उसे पीकर खूब खुश हुआ। बदरुद्दीन ने उसके रक्षक को भी शरबत दिया। वह उसे एकही श्वास में पी गया। फिर अजब और उसका सेवक बदरुद्दीन की कृतज्ञता कर अपने डेरे की ओर चले और शमसुद्दीन के डेरे में पहुँचे। अजब और उसका रक्षक अपनी दादी के डेरे में गये। दादी उसे अपने कंठ से लगा रोई और कहा परमेश्वर मुझे वह दिन दिखाये कि मैं तुम्हारे पिताको देखूँ और उसे भी अपने हृदय से लगाऊँ। फिर उसकी दादी रात्रिके भोजन के हेतु मेज पर बैठी और अजब को भी अपने साथ बैठाया और उसने इधर उधरकी बातें पूछीं। अजब ने नगरके सैर तमाशे आदिका वृत्तांत जो अपने रक्षकसहित देख आया था उससे कहने लगा। फिर उसकी दादी ने उससे खाने को कहा। अजब ने न खाया और कहा, "इस समय मुझे कुछ इच्छा नहीं है।" फिर उसने एक टुकड़ा मलाई का उसे और उसके रक्षक को दिया। यद्यपि यह मलाई आपही ने जमाई थी; परंतु वह पेट भर खा आये थे। सेवक और अजब ने उसकी ओर दृष्टिभी न की; परंतु दादी के कहने से उसे अपने सम्मुख रख लिया। उसकी दादी

ने उसके न खानेसे अत्यंत आश्चर्य किया और कहा, "इस उत्तम मलाई को जो मैंने अपने हाथसे बनाई है; क्यों नहीं खाते। इस भाँति की मलाई केवल मैं और मेरा पुत्र बदरुद्दीन, जो तुम्हारा पिता है बनाना जानते हैं।" मैंने ही उसे बनाना सिखाया है। संसार भर में और कोई ऐसी नहीं बना सका। अजब ने कहा यदि मेरा अपराध क्षमाहो, तो विनय करूँ। इस नगर में एक हलवाई है। मैंने उसकी दूकान पर बैठकर मलाई खाई है। उससे तुम्हारी मलाई उत्तम न होगी। यह वचन सुन उसकी दादी उस रक्षक से अत्यंत अप्रसन्न हुई और कहा क्यों रे शावान, तू मेरे बच्चेकी कैसी रक्षा करता है? उसने हलवाई की दूकान पर बैठ भिक्षुकों की भाँति भोजन किया?" शावान ने उत्तर दिया, "हम केवल उसकी दूकान पर सुस्ताने को बैठे थे। हमने कुछ खाया पिया नहीं।" अजबने उसको विपरीत कहा, "हम उसकी दुकान पर गये थे। मलाईभी खाई थी। यह सुन वह शावान पर अधिक क्रोधित हुई और उसी कोप में शमसुद्दीनमुहम्मद के डेरे में जाकर उसने इस वृत्तांत को कहा। शमसुद्दीन मुहम्मद अपनी भावज के डेरे में आया और शावान पर अति क्रोधित हुआ और कहा, "क्या यह सत्य है?" शावान ने इन्कार किया; परंतु अजब ने अपने नाना से कहा, 'हम दोनों ने उसकी दुकान पर बहुतसी मलाई खाई है। इससे हमें इस समय अपनी दादी के साथ भोजन करने की इच्छा न हुई। उस हलवाई ने हमें शरबत भी पिलाया था। शमसुद्दीनमुहम्मद ने शावान से कहा, "क्यों रे तू मुझसे झूठ कहता है? क्या उसकी दुकान पर नहीं गये थे? वहाँ बैठ कुछ खाया नहीं था?" शावान ने फिर

भी मंत्री के भय से इन्कार किया और झूठी सौगंद खाई कि हमने उसकी दुकान पर कुछ नहीं खाया । शमसुद्दीनमुहम्मद ने कोपित हो भली भाँति उसे दंड दिया । यहाँतक कि बेचारा शावान मान गया और कहा, "उस हलवाई की मलाई अजब की थी दादी से अधिक स्वादिष्ठ थी ।" अजब की दादी ने अप्रसन्न हो कहा, "तू असत्य कहता है । कभी उसकी मलाई मेरी मलाई से उत्तम न होगी ।" फिर उसने शावान से कहा, "मेरे वास्ते तू वही मलाई ला ।"

वह बदरुद्दीन की दुकान पर गया । उसे कुछ द्रव्य दे कहा, "मुझे मलाई दे । मेरी स्वामिनी ने मँगवाई है । बदरुद्दीन ने उसे एक पात्र में मलाई दे के कहा, "यह मलाई बहुत उत्तम बनी है । इसको केवल मैं और मेरी माता बना सके हैं ।" शावान ने उसे लाकर अजब की दादी को दी । वह खाते ही मूर्च्छित हो गई । शमसुद्दीनमुहम्मद इस दशा को देख अत्यंत दुःखित हुआ और उसके मुँह पर गुलाबजल छिड़का । जब वह चैतन्य हुई तो कहने लगी, "यह मलाई अवश्य मेरे पुत्र बदरुद्दीन की बनाई हुई है । शमसुद्दीन को जब भली भाँति विदित हुआ कि इसका बनानेवाला बदरुद्दीनहसन है, तो वह अत्यंत हर्षित हुआ । परंतु प्रकट में अपनी भावज से कहा, "क्या संसार में और कोई तुम्हारे पुत्र के सिवाय ऐसी मलाई नहीं बना सका ।" उसकी भावज ने कहा, "निःसंदेह इस मलाई को सिवाय बदरुद्दीन के और किसी ने नहीं बनाया ।" मंत्री ने कहा, "जरा ठहर, मैं उसे बुलवाता हूँ । तुम और तुम्हारी बहू जिन्होंने उसे देखा है, पहिचान लेना । यदि वही है तो हम उसे तुरंत अपने साथ लेकर

कैरू में चलेंगे।" यह कह शमसुद्दीनमुहम्मद वहाँ से अपने डेरे में आया और पचास सिपाहियों को आज्ञा दी, "तुम एक एक लाठी अपने हाथ में लो और शावान के साथ यहाँ के निवासी हलवाई की दूकान पर जावो और जब वहाँ पहुँचो, तो जो वस्तु उसकी दूकान पर पावो उसे तोड़ डालो।" जो वह तुमसे उसका कारण पूछे, तो कुछ न कहना; किंतु उससे पूछना, "तूने ही वह मलाई बनाई है, जो शावान लेगया है और तुरंत उसे बाँध मेरे निकट ले आना; परंतु उसे मारना नहीं, और न किसी भाँति का उसे दुःख ही देना। तुरंत जावो, देर न करो।" पचास सिपाही मंत्री की आज्ञानुसार शावान के साथ बदरुद्दीन की दूकान पर गये और सब बरतन जो उसकी दूकान पर रक्खे थे तोड़ फोड़ चूर-चूर कर दिये और मिठाई आदि फेंक फाँक दी। बदरुद्दीन इस दशा को देख बड़ा दुःखित हुआ और नम्रतापूर्वक उनसे पूछा, "भाइयो! मैंने तुम्हारा कौनसा अपराध किया है, जिससे दंड देते हो।" उन्होंने कहा, "वह मलाई जो तुमने शावान के हाथ बेची थी, तुम्हीं ने बनाई है?" बदरुद्दीन ने कहा, "हाँ, मैंने उसे अपने हाथ से बनाई थी और मैं प्रतिज्ञा करता हूँ इस नगर में सिवाय मेरे और कोई वैसी मलाई नहीं बना सक्ता।" इस वचन के सुनते ही उन्होंने चारों ओर से उसे घेर लिया और उसकी पगड़ी से उसके हाथ पाँव बाँध लिये। बाजार के मनुष्य यह दशा देख इकट्ठे हुये और चाहा कि शमसुद्दीनमुहम्मद के सेवकों से बदरुद्दीन को छीनलें; परंतु अशक्त थे। निदान उस मंत्री के डेरे में ले गये। शमसुद्दीन उस समय दमिश्क के बादशाह के सम्मुख गया था कि उसे विदित करें कि जिसकी खोज में मैं निकला था, उसे

मैंने पाया; परंतु थानेदारों को आज्ञा हो कि मेरे काम में कोई बाधक न हो; किंतु यथोचित मेरी सहायता करें। जब शमसुद्दीन अपने डेरे में आया तो सिपाहियों ने बदरुद्दीन को मंत्री के सम्मुख ला खड़ा किया। बदरुद्दीन ने रोके मंत्री से पूछा, "स्वामी मैंने आपका कौनसा अपराध किया है जिससे आपने मेरी दूकान लुटवाई और मुझे अप्रतिष्ठा और दुर्गतिसे पकड़ बुलाया?" मंत्रीने उत्तर दिया, "तू वही है, जिसने अपने हाथसे मिठाई बनाकर मेरे सेवक के हाथ बेंची थी?" बदरुद्दीनहसन ने कहा, "निःसंदेह, मैं वही हूँ।" शमसुद्दीनमुहम्मद ने कहा, "यही तेरा अपराधहै। इस वास्ते मैंने तुझेपकड़ मँगवायाहै अभी तुझे कुछ दण्ड नहीं मिला है इससे अधिक तुझे दंड दूँगा अर्थात् तेरे प्राणलूँगा। तूने ऐसी बुरी मलाई मेरे वास्ते भेजी?" बदरुद्दीन ने कहा, "जो कोई बुरी मलाई जमावे वही अपराधी होताहै?" मंत्री ने कहा, "निस्संदेह।"

इधर यही वार्त्ता होरही थी कि उसकी माता और स्त्री ने अपने डेरों में से उसे देख पहिंचान लिया और मूर्च्छित होगई। जब [illegible] हुई तो उन्होंने दौड़कर बदरुद्दीन से लिपटना चाहा; परंतु शमसुद्दीनने उनसे यह प्रण पहलेही करा लिया था कि जबतक मैं न कहूँ कोई उसके निकट मत जाना, न उसके सामने ही होना। निदान वे स्त्रियाँ चुप हो रहीं। मंत्री उसी दिन तैयारी कर भोरको ही वहाँ से मिसर की ओर चला। बदरुद्दीन को संदूक में बंद कर ऊँट पर लाद, अपने साथ ले चला। संध्याको उसे निकाल कर बैठाता और फिर उसे बंद कर रखता। इसी भाँति मंत्री नगर के निकट पहुँच एक स्थान पर उतरा और उसे अपने सम्मुख निकलवा कर बैठाया और उसके सम्मुख एक बढ़ई को

आज्ञा दी कि एक लकड़ी की शूली तुरंत बनावे। बदरुद्दीन ने मंत्री से पूछा, "यह शूली किसके निमित्त बनती है?" मंत्रीने उत्तर दिया, "कल रात्रिको नगर में प्रवेश करूँगा और तुझे इस काष्ठ पर बैठाकर नगर भरमें फिराऊंगा और तेरे आगे एक मनुष्य यह डौंड़ी पीटता जावेगा कि यह उस मनुष्य का दंड है, जिसने मलाई में कालीमिरच नहीं डाली।" बदरुद्दीन यह वचन सुन रोने लगा और कहा, "मैं कल, इस दुर्दशा से, मलाई में काली-मिरच न डालने के कारण, मारा जाऊँगा।"

इतना कह मलकाशहरज़ाद ने शहरयार से कहा, "खलीफ़ा हारूंरशीद यद्यपि गंभीर था, मंत्री जाफर से यह वृत्तांत सुन ठट्ठा मार के हँसा।" बदरुद्दीनहसनने कहा, "हे परमेश्वर! कहीं ऐसा भी होताहै और किसी ने सुनाहै कि कोई मनुष्य, इतने अपराधके कारण लूट लियाजाय और पकड़कर शूली पर चढ़ा दियाजाय?" इतना अन्याय केवल इतनेही अपराध पर कि मलाई में काली-मिरच क्यों न डालो, मुसलमानों के न्याय के विरुद्ध है। इसी भाँति की बातें कर वह रोता जाता और कहता ऐसी मलाई बनाने पर धिक्कार है इससे मैं संसार में उत्पन्न न होता तो कहीं अच्छा था। इसी समय परमेश्वर ऐसा करे कि मैं मरजाऊं कि ऐसी अप्र-तिष्ठा के मरने से छूटूँ। यह विचार कर बदरुद्दीन रोता था। इतने में लकड़ी मंत्री के सम्मुख लाई गई और उसके शिर पर लोहे की सलाख लगाई गई, जिसे देख बदरुद्दीनहसन बहुत घबराया और कहने लगा, "न तो मैंने किसी की चोरी की, न किसी को मारा और न कुछ अपने धर्म में विपरीतताही की, केवल इतनी ही बात के वास्ते कि मैंने मलाई में कालीमिरच न डाली मुझे

शूली देंगे।" फिर जब संध्याहुई मंत्री शमसुद्दीनने आज्ञादी कि इसे उसी संदूक में बंद करो और उसकी ओर देख के कहा, "तू आज रात्रि को इसी में रहेगा, कल मैं तुझे नगर में लेजाके वध करूँगा।" सो उसे संदूक में बंद किया और उसी ऊँट पर चढ़ाया और मंत्री अपने वाहन पर चढ़ा और आज्ञादी कि इस ऊँट को मेरे आगे लेचलो। वह बड़ी धूम से कैरूमें पहुँचा। अपने घरमें प्रवेश कर आज्ञा दी, "इस संदूक को उतारो; पर खोलना मत। जब सब असबाब उतारा गया, मंत्री ने अपनी पुत्री को एकांत में लेजाके कहा, "परमेश्वर का धन्यवाद है, तुम्हारा पति मिला। आज तुम उसी भाँति अपना शयनागार अलंकृत करो जैसा कि विवाह में सजा हुआ था और प्रत्येक वस्तु को उसी मकान में उसी भाँति रक्खो जिस प्रकार उस रात्रि को रक्खी गई थी, जो कुछ भूल होगी मैं ठीक करा दूँगा।" उस मंत्री की पुत्री ने आज्ञा पालन की और प्रत्येक वस्तु को उसी स्थान पर रक्खा। उसी भाँति सिंहासन बिछाया गया और मोमकी बत्तियाँ जलाई गईं। जब वह मकान पहले की भाँति अलंकृत हुआ, शमसुद्दीन मुहम्मद ने स्वयं वहाँ जाके बदरुद्दीन के वस्त्र जिसे वह विवाह की रात्रि को पहिने था, उसी द्रव्य की थैली सहित रक्खे जैसा कि बदरुद्दीन रखकर अपनी स्त्री के साथ सो गया था। तदनंतर मंत्री ने अपनी पुत्री से कहा, "तू रात्रि के वस्त्र पहिर और उसी दिनके समान शय्या पर रह। जब बदरुद्दीनहसन इस मकान में आवे और तुझे जगावे, तो तू उसके आने का आश्चर्य न करना; किन्तु उसे अपने समीप सुलाना और भोर को जो कुछ परस्पर वार्त्ता हो, अपनी सास और मुझसे कहना।" इतने

में भोर हुआ। मलका शहरजाद इस कहानी को यहीं तक छोड़ चुप हो रही।

फिर जब रात्रि हुई, बादशाह को इस कहानी की लालसा से रात भर निद्रा न आई और नियमानुसार पिछले पहर मलका को जगाया और कहा, "उस चरित्र का अंत में क्या हुआ?" मलका ने फिर इस भाँति वर्णन किया। मंत्री शमसुद्दीन ने आज्ञा दी कि इस मकान में केवल दो या तीन बाँदियाँ रहें। जब रात हुई और अनुमानतः एक पहर रात व्यतीत हुई तो मंत्री ने बदरुद्दीनहसन को संदूक सहित उस मकान के समीप भिजवाया। संदूक से उसे निकाल, मिरजई आदिक वस्त्र उसे पहिनाये और मकान के भीतर छोड़, बाहर से बंद करने को आज्ञा दी। बदरुद्दीनहसन दुःख के कारण ऐसा अचेत हो सो गया कि मंत्री के सेवकों ने उसे संदूक से निकाल नंगा किया और उसे मकानमें ले गये। तदनंतर जब वह मकान में पहुँचकर जगा, तो उसने अपने को उस कोठे में पाया और चारों ओर विवाह की सामग्री देखी। अपने विवाह की रात्रि स्मरण करके उसे पहिचाना कि यह उसी स्त्री का मकान है, जिसमें मैंने बादशाह के कुरूप अश्वपालक को देखा था, अत्यंत आश्चर्य में हुआ। उसके भीतर अपने वस्त्र देखे कि उसी भाँति रक्खे हैं। इससे वह अधिक विस्मित हुआ और कहने लगा, "हे परमेश्वर! यह क्या बात है? क्या मैं स्वप्न देखता हूँ वा जाग्रत हूँ।" इतने में उसकी स्त्री ने मसहरी से शिर निकाल मुख बदरुद्दीनहसन की ओर कर बड़े प्यार से कहा, "हे मेरे प्रिय प्रियतम! तुम किवाड़ पर खड़े क्या करते हो? शय्या पर आ आनंद करो। जब जागने

पर मैंने तुम्हें शय्या पर न पाया, तो अत्यंत आश्चर्य में हुई और चिरकाल पर्यंत जागती और तुम्हारे आगमन की बाट देखती रही।" बदरुद्दीन उस वचन को सुन अत्यंत हर्षित हुआ। वह शोक और भय जो उसे मंत्री से प्राप्त हुआ था, भूल गया। उसके मुख का वर्ण बदल गया और उस स्त्री को वैसीही रूपवती, मनहरण पाया; जैसा कि विवाह की रात्रि को देखा था। फिर मकान के भीतर गया और मनमें सोचने लगा, क्योंकर दश वर्ष की अवधि एक रात्रि में बीती? तदनंतर वह वहाँ गया, जहाँ उसके वस्त्र और द्रव्य की थैली रक्खी थी उसे वहीं और उसी भाँति रक्खा हुआ पाया; कुछ भी अंतर नहीं था। फिर वह कहने लगा, "हे परमेश्वर! यह क्या बात है? जिसे न तो मैं कुछ समझ सक्ता हूं और न विचार ही सक्ता हूँ।" उस सुंदरी ने फिर कहा, "हे पति! शय्या पर आके शयन करो। खड़े क्या सोचते हो?" इस वचन को सुन वह शय्या के समीप जा खड़ा हुआ और कहा, "हे सुंदरी! सच कहो; मुझे तुमसे बिछुड़े कितना समय हुआ होगा?" उसने कहा, "मुझे तुम्हारे इस प्रश्न से अत्यंत आश्चर्य हुआ, अभी तो तुम सोते हुये शय्या पर से उठे हो।" बदरुद्दीनहसन ने कहा, "तुम क्या कहती हो? हाँ, यह सत्य है। एक रात्रि मैं तुम्हारे साथ सोया; परंतु उसे दश वर्ष का समय हुआ और तब से मैं दमिश्क में था। कुछ नहीं जाना जाता यह वही रात्रि है जिसमें मेरा विवाह तुम्हारे साथ हुआ या नहीं। जो वही रात है तो दश वर्ष पर्यंत मैं क्यों तुमसे बिछुड़ा रहा। अब तुम मुझे बताओ, मैं किस बातको सच जानूँ, और दशवर्षके वियोगको स्वप्न समझूँ?. उसकी पत्नीने उत्तरदिया

"क्या तुम विक्षिप्त होगये हो कि तुम यह कहते हो कि मैं दमिश्क में था।" बदरुद्दीन इस वचन को सुन हँसा और कहा, "यह बड़ी हँसी की बात है; क्योंकि दमिश्क के द्वार पर यही वसन पहिने पड़ा था और वहाँ के वासी मुझे देख हँसते और ठट्ठा मारते थे यहाँ तक कि वहाँ से मैं भागा और एक हलवाई की दूकान में जा छिपा। उसने मुझे गोद में बैठाया और अपना जाति कार्य सिखाया और अंत समय अपना धन सौंपा। मैं उसी दूकान पर बैठ दश वर्ष पर्यंत कालक्षेप करता रहा। एक मंत्री कहीं से उस नगर में आया। उसका पुत्र अत्यंत सुंदर और सुकुमार था। जिसके देखने से मुझे प्रीति उत्पन्न हुई। एक दिन वह अपने सेवक सहित मेरी दूकान पर आया और मलाई ले वहीं बैठके खाई। जब वह अपने पिताके डेरे में गया, तब उस मंत्री ने बालक के रक्षक से थोड़ीसी मलाई मेरी दूकान से मँगवाई। फिर मुझे पकड़ मँगाया और कालीमिरच के न डालने से मेरी दूकान लुटवाई। मुझे संदूक में बंद किया और दमिश्क से ऊँट पर लाद अपने घर लाया। तदनंतर मुझसे कहा, "तुझे फांसी दी जावेगी। यह वचन सुन शोक युक्त हो, मैं संदूक में बेसुध होगया। जब जगा, तब मैं अपने को तुम्हारे निकट पाया।

यह सुन उसकी स्त्री ने कहा, "जान पड़ता है तुमने कोई बड़ा अपराध किया होगा, जिससे तुम पर यह आपत्ति पड़ी और यह कठिन दंड विचारा गया। बदरुद्दीन ने कहा, "सुंदरी मैंने कोई ऐसा अपराध नहीं किया। यह दंड केवल इतने ही के लिये मेरे वास्ते विचारा गया था कि मैंने कालीमिरच बिना क्यों मलाई जमाई और बेंची।" वह सुंदरी इस बात को सुन

बहुत हँसी और कहने लगी, "नहीं तुमने कोई और बड़ा अपराध किया होगा।" बदरुद्दीन ने कहा, "और तो कोई भी नहीं केवल इसी से मेरी दूकान की सब वस्तु नष्ट की गई और मुश्कें बाँध मुझे संदूक में बंद किया। जिसमें मैं दिनरात रहता था। कल मुझे बाहर निकाल मेरे सम्मुख बढ़ई को आज्ञा दी कि शूली की लकड़ी बना और उस पर लोहेकी शलाख लगाकर शीघ्र लावे; परंतु परमेश्वर का धन्यवाद है वे सब बातें स्वप्न थीं।"

बादशाह शहरयार इस कहानीको सुन बहुत हँसा। यह वृत्तांत अत्यंत अद्भुत है और मुझे विश्वास हैं कि शमसुद्दीनमुहम्मद और उसकी भावज कलको बदरुद्दीन की यह वार्त्ता सुन के अत्यंत हर्षित होंगे। दूसरे दिन मलकाशहरजाद ने रात्रि के अंतमें बादशाह शहरयार से कहा, "स्वामी उस रात्रि को बदरुद्दीन इसी भ्रम में रहा कि मैं स्वप्न में अपनी स्त्री के समीप हूँ वा जाग्रत अवस्थामें। कभी शय्या से उठ मकान के चारों ओर घूमता और सब वस्तुओंको पहिचानके कहता, "क्यों यह मकान वही है, जिसमें मेरा विवाह हुआथा? यह वही स्त्री है, जिससे बादशाह ने उस कुरूप कुबड़े के साथ विवाह विचारा था। अब मैं उसके साथ सोता हूँ।" वह इसी विचारमें था कि भोर होतेही मंत्री शमसुद्दीन ने आकर ताली बजाई और भीतर जाकर प्रणाम किया। बदरुद्दीनहसन ने मन्त्री को पहिचान कहा, "आपही ने मेरे वास्ते शूली बनाने को आज्ञा दी थी, जिसके भयसे मैं अबतक काँपता हूँ और केवल इतनेही अपराध के लिये कि मैंने मलाई में कालीमिरच नहीं डाली, यह दंड मेरे निमित्त नियत किया था।" मंत्री ने मुसकराके उत्तर दिया, "मैंनेही तेरा विवाह अपनी

पुत्री के साथ, जिसका विवाह बादशाह ने एक कुबड़े के साथ विचारा था, किया। तू मेरा भतीजा है।" तदनंतर उस पत्र को जो नूरुद्दीन के हाथ से लिखा था उसको दिखाया कि केवल तेरे ढूँढ़ने को मैं कैरू से बाँसरा और दमिश्क को गया था। मंत्री ने बदरुद्दीन को हृदय से लगाय प्यार किया और कहा, "यह सब बातें जो मैंने तुमसे की हैं, क्षमा करो। इन बातों से मेरा यह प्रयोजन था कि तुमको इस उपाय से कुशलपूर्वक अपने घर में लाकर तुम्हारे परिवार से मिलाऊँ। जो यह उपाय न करता, तो संभव था, इस हर्ष में तुम्हारे शरीर में किसी भाँति का दुःख पहुँचे व आनंद के कारण मृत्यु होजाय। इसी से तुम्हें इस भय में रक्खा। तुम अपने वस्त्र लो। मैं तुम्हारी माता को जो तुमसे बिछुड़ने के कारण दुःखित और अधीर होरही है, भेंट कराऊँ। तुम्हारे पुत्र को जिसे तुमने दमिश्क में अपनी दूकान पर बड़ी प्रीति से मलाई खिलाई थी लाऊँ। बदरुद्दीन को उसकी माता से भेंट करने में जो हर्ष हुआ था, सो लिखने में नहीं आसक्ता। निदान उसकी माता उसे कंठ लगा बहुत रोई। जो कुछ आपत्ति और कष्ट उसके बिछुड़ने में उसपर पड़े थे, अपने पुत्र बदरुद्दीनहसन से कह सुनाया। उसका पुत्र उसकी छाती से लिपट गया। बदरुद्दीनहसनने उसे पहिचानकर कहा, "यह वही बालक है, जिसे मैंने दमिश्क में देखा था। इसकी ओर मेरी अत्यंत प्रीति उपजी थी। फिर उसे कंठ से लगा, बहुत प्यार किया।"

शमसुद्दीन मंत्री उन्हें वहीं छोड़, बादशाह के सम्मुख गया और अपनी यात्रा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। बादशाह इस वृत्तांत को सुन हर्षित हुआ और आज्ञा दी कि यह सब कहानी

हमारी पुस्तकों में लिखी जाय। मंत्री बादशाह से विदा हो, हर्ष-पूर्वक सकुटुंब नाना प्रकार के व्यंजन और पाक भोजन किये। वह दिवस बड़ी प्रसन्नता में कटा। जाफर मंत्रीने इस कहानी को समाप्त कर बादशाह हारूँरसीद से विनय की, "आप हब्शी रैहाँ का भी अपराध क्षमा कीजिये।" बादशाह ने उसका अपराध क्षमा कर दिया। उस मनुष्य को जिसने धोखे से अपनी स्त्री को मारा था, धीरज दे अपनी एक बाँदी के साथ उसका विवाह कर दिया और बहुतसा धन दिया और कुछ मासिक नियत किया। वह उस बादशाह की दया से जन्मभर आनंद में रहा।

अष्टम प्रदीप

सरस्वती बालमुखे वसति व्यवहारिणः।
यथा कृतो निर्णयो हि बालैस्तेनापि स कृतः ॥

अर्थ—बालकों के मुख में सरस्वती निवास करती है, जैसे व्यापारी अलीख्वाजे का फ़ैसला जो बालकों ने किया था, वही बादशाह ने भी किया।

खलीफ़ा हारूँरसीद की सल्तनत में एक व्यापारी बग़दाद में रहता था। वह थोड़ी सी वस्तुसे व्यापार करता और अपने दादे परदादे के बनाये हुये घर में रहता था। उसके कुटुंब में कोई न था। उसने तीन रात तक बराबर यह स्वप्न देखा कि कोई सत्पुरुष उससे यह कहता है कि तुझे मक्के की यात्रा उचित है, क्यों नहीं करता? व्यापारी इस स्वप्नको देख मनमें बहुत डरा। उस सत्पुरुष का कहना उसके मनमें ऐसा गड़ा कि वह अपना सब दूकान का असबाब बेंचकर मक्का को जाने की इच्छा की। अपने मकान में

एक किरायेदार को रख दिया और मक्के को जाते हुए विदेशियों के साथ हो लिया। जाने से पहिले एक हज़ार अशर्फ़ी जो राह-खर्च के अलावा बच रही थीं, उन्हें एक ठिलिया में रख, उसके भीतर जैतूनका तेल भरके, उसका मुँह बंद किया और एक सौदागर जो उसका पुराना मित्र था, उसके घर लेगया और उससे कहा कि आपने सुना होगा कि मैं मक्काकी यात्राको जाताहूँ। जैतून के तेलकी एक ठिलिया तुम्हारे घर रखने आयाहूँ, इसे मेरे लौट आने तक अपने पास रखना। उसने यह सुन मकान की कुंजी उसे देकर कहा कि तुम जहाँ चाहो रखजाओ, आके अपना सँभाल लेना।

वह फिर व्यापार की वस्तु ऊँट पर लाद मक्के को चला। वहाँ पहुँचाकर उसने सबके साथ मक्के की परिक्रमा की। फिर निश्चिंत होकर असबाव वेचने चला।

अकस्मात् दो व्यापारी सैर करते हुये अलीख़्वाजे के मकान पर गये और उसकी वस्तु देखके प्रसन्न हुये। आपस में वे कहने लगे कि यह व्यापारी अगर अपने असबाब को मिसरकी राजधानी कैरू में लेजाय, तो वहाँ बड़ा दाम पावेगा। अलीख़्वाजा पहिले से ही उस देश की प्रशंसा सुन चुका था। वह उसे देखना चाहता था। यह बात सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और बुग़दाद देशको छोड़ मिसर जाने की इच्छा की और यात्रियों के साथ उस देश को पधारा। वहाँ पहुँचके, और वहाँ सैर करके वह अत्यंत हर्षित हुआ। असबाब बेचकर उसने बहुतसा लाभ भी उठाया। अब उसने दूसरा असबाब मोलले, दमिश्क जाने की इच्छा की। एक मास कैरू में रहकर खूब सैर की। नील नद के तट पर कई मंजिल से वह दीखता है। और, नील नद के कूल पर

बसे और नगरों को देखके दमिश्क की ओर चला। मार्ग में सय्यद सलेम आदि मसजिदों का; जो मुसलमानों ने बनायी थीं, दर्शन किया। फिर दमिश्क नगर में गया, वहाँ उस देश को बहुत आबाद देखा और कुंड भी बहुत देखे। खेती और खिले फूलवाले बागों को देखा, तो बुग़दाद की याद भूल गया। वहाँ से हलब मवस्सल और शीराज देश को गया। वहाँ से सात वर्ष बाद बुग़दाद को लौटा।

प्राचीन व्यापारी ने जो धूर्त्तता की, सो सुनिये। इस सात वर्ष में उसने इसकी वस्तु की कुछ भी सुधि न ली, पर एक दिन अपनी स्त्रीके साथ भोजन करते समय अकस्मात् जैतूनके तेलकी बात चली, तो उसकी स्त्री ने कहा कि मेरा मन उसे खाने को चाहता है। पति ने कहा कि तेरी बात से मुझे अलीख़्वाजे की याद आगयी। सात वर्ष हुये, वह मक्का गया है। जाते समय एक ठिलिया जैतून के तेल की धर गया था; पर न जानें, अब वह कहाँ है? जीता है या मर गया? यदि उसका तेल बिगड़ न गया हो, तो उसमें से थोड़ा निकाल ला, चखके देखें, तो। उसकी स्त्री अत्यंत धर्मिष्ठा थी। वह बोली कि ऐसा कर्म न करो। किसी की धरोहर में चोरी करना ठीक नहीं। यह तुमने कैसे जान लिया कि वह जीते जी नहीं आवेगा? क्या तुमने किसी से उसका मरना सुन लिया है? संभव है कि वह कल वा परसों लौट आवे और अपना तेल माँगे और तुम लज्जित हो। फिर मैं तुम्हारी साथिन नहीं रहूँगी, सात वर्षका पुराना तेल खाने योग्य कब होगा? मैं तुम्हें सौगंद देती हूँ कि तुम इस काम को मत करो। उस धर्मवती ने पति को बहुत समझाया और उसने भी

उस समय उसकी इच्छा छोड़ दी; पर दूसरे समय एक रकाबी ले तेल की कोठरी में चला, तब फिर स्त्री बोली, "मैं इस कर्म की साथिन नहीं हूँ। तुम पर कोई आपत्ति आवेगी।" उसने उसका कहना नहीं माना और कोठरी में जाय, उस तेल को खोला। यद्यपि वह तेल सड़ गया था, तब भी उसने ठिलिया को हिलाके, उसमें से तेल निकाला, तो एक अशर्फ़ी उसको दिखाई दी। लोभवश हो उसने सब अशर्फ़ियाँ निकाल लीं और स्त्री से आके यही कहा कि तू सत्य कहती थी, वह बिगड़ गया है। फिर आप नया तेल ला उसमें भरकर उसका मुँह वैसे ही बंद करके कोठरी में रख दिया। ईश्वर की कृपा से एक महीने बाद वह व्यापारी भी लौट आया। अपने मित्र से मिलने आया। उससे मिला; प्रकट प्रसन्नता पूछ, अपनी वस्तु माँगी; तो उसने कहा, "मैं नहीं जानता, तुमने उसे कहाँ धरी है। यह कुंजी लो और अपनी वस्तु जहाँ रक्खी हो, वहाँ से ले जाओ। वह ठिलिया को निकाल ले आया और बिदा हो अपने घर आया। जब उसने उसमें अशर्फ़ियाँ न पायीं, तो वह बहुत रोया और जाकर अपने मित्र से बोला कि हे मित्र! ईश्वर साक्षी है, मैं यात्रा के समय एक हज़ार अशर्फ़ियाँ ठिलिया में रख गया था। अब उसमें नहीं हैं। अगर तुमने किसी आवश्यकता में उन्हें खर्च किया, तो कुछ चिंता नहीं है। चाहे जब देना, पर बता दीजिये। वह बोला मैं जानता ही नहीं कि तुमने तेल की ठिलिया कहाँ धरी थी। वह भी तुम उठा ले गये। मैं क्या जानूँ, अशर्फ़ियाँ कहाँ थीं? अब आज उसका नाम लेते हो। उसने बहुत बिनती की कि यह मेरी जन्म भर की कमाई है, दे दो। पर, लोभी ज़रा भी न माना।

मुँह लाल करके बोला, "चले जाओ, मेरे घर फिर न आना।"

यह वार्त्ता हो रही थी, इतने में मुहल्ले के बालक वृद्ध एकट्ठे हो गये। झगड़े का हाल नगर भर में फैल गया। यह लाचार हो उसे न्यायाधीश के पास ले गया। उसे सब वृत्तांत सुनाया, तो न्यायाधीश ने ख़्वाजे व्यापारी से कहा कि तेरा कोई साक्षी भी है? वह बोला, मैंने भेद खुल जाने के कारण कोई साक्षी नहीं किया। मैं इसे अपना विश्वासी मित्र समझ इसके पास रख गया था। न्यायाधीश ने उस व्यापारी से सौगंद खाने को कहा, तो उसने सौगंद खाकर कहा, मैं नहीं जानता कि इसकी अशर्फ़ियाँ कहाँ हैं। तब न्यायाधीश ने व्यापारी को निर्दोष समझकर छोड़ दिया।

अलीख़्वाजा इसके न्याय से बड़ा निराश हुआ। दूसरे दिन एक अर्जी लिखाकर बादशाह को, जिस समय वह मसजिद में निमाज पढ़ने आया था, तब दी। बादशाह ने अर्जी को पढ़ अभिप्राय समझ के आज्ञा दी कि कल दोनों मनुष्य मेरी सभामें आवें। और आप संध्या समय अपने नियमानुसार भेष बदल के नगर का हाल जानने को निकला। उसने दूर से देखा कि चंद्रमा की चाँदनी में दश बारह बालक खेल रहे हैं। वहाँ उनमें एक जो अत्यंत सुंदर और चतुर था, बोला, "आओ हम तुम मिलकर उस न्यायाधीशकी नक़ल करें। मैं न्यायाधीश बनताहूँ और तुम व्यापारी बनो।" यह सुन बादशाह अचरजसे विचारने लगा कि इनकी तो अर्जी ही कल मेरे पास लगी है। देखूँ, तो क्या निर्णय होता है? तब न्यायाधीश बने बालक ने उनका हाल सुन, उस व्यापारी से पूछा तुमने अशर्फ़ियाँ नहीं लीं। वह सौगन्द खाने

लगा, तो उसने कहा, सौगंद का काम नहीं है। मैं वह ठिलिया देखना चाहताहूँ, जिसे उसने तेल से भरकर तेरे घर धरी थी। वह उसे ले आया। तब उसने दोनोंसे पूछा कि यही वह ठिलिया है न? अच्छा, इसमें से थोड़ा तेल लाओ। मैं चखके देखूँ, कैसा तेल है। वे लाये। देखा, तो बोला कि इसका स्वाद अच्छाहै। मैं समझता था कि सात वर्ष में स्वाद बिगड़ गया होगा। यह कहके उसने कहा कि बाज़ार से दो तेलवालों को बुला लाओ। वे आये। उनसे पूछा कि जैतून का तेल कबतक अच्छा रहता है? वे बोले कि यत्न से रखने पर भी तीन वर्ष में बिगड़ जाता है। तब उसने उनसे कहा, इस ठिलिया के तेल को देखो कि क वर्ष का धरा है। देखकर उन्होंने कहा, "यह तो अच्छा स्वादिष्ठ है। तब न्यायाधीश ने कहा, तुम झूठ बोलते हो। यह सात वर्ष से धरा बतलाता है।" तब वे बोले, "यह तेल एक वर्ष के भीतर का ही धरा हुआ है।"

न्यायाधीश ने तब उस व्यापारी से कहा, "तू चोर है।" यह कहके सब बालक ताली बजाने लगे और उसे पकड़के दंड देने को ले गये। बादशाह यह हाल देख अत्यंत आश्चर्य युक्त हुआ और कहने लगा कि कल मैं भी इसी तरह निर्णय करूँगा। यह विचार उसने जाकर मंत्री से कहा कि इस बालक को पहिचान लेना। कल इसे मेरे पास लाना और उस व्यापारी से कहना कि वह ठिलिया और दो तेलवालों को भी लेता आवे। बादशाह यह आज्ञा दे महल में गया।

सवेरे मंत्री उसी बालक को ले गया, तो सबसे पूछा कि तुममें से किसने वह न्याय किया था। जिसने किया था, उससे

कहा कि तुझको बादशाह ने बुलाया है, मेरे साथ चलो। तब उसकी माता रोने लगी, तो उससे कहा, "तू घबरा न एक घड़ीमें तेरे लड़के को लौटा लेआऊँगा।" यह कह, वह उसे वस्त्र पहिराय वहाँ लेगया। बादशाह ने उस लड़के को अपने पास बैठाया। जब वे फरियादी आये, तो बादशाह ने उनसे कहा, तुम सब अपना हाल इस बालक से कहो, यही निर्णय करेगा। तब दोनों ने अपनी अपनी बातें कहीं। वह व्यापारी इनकार करके सौगंद खाने लगा। तब बालक बोला, अभी सौगंद खाने का काम नहीं है, वह ठिलिया लाओ। जब ठिलिया आई, तब बादशाह को उसमें से थोड़ा तेल चखाया और तेलवालों को भी चखाया। उन्होंने कहा, "यह तेल इसी वर्ष का धरा हुआ है, तुम झूठ बोलते हो। यह सात वर्ष से नहीं धरा है।" तेलवाले भी बोले, "यह कभी नहीं हो सक्ता। तीसरे वर्ष यह तेल सड़कर बिगड़ जाता है।"

निदान व्यापारी ने हार मानके अपराधी को दंड दिवाना चाहा। तब बालक ने बादशाह से कहा, "यह काम आपका है। हमने तो कल यह खेल खेला था, वह दिखला दिया है। हमारे में यह सामर्थ्य नहीं। आप उसे दंड देकर अशर्फ़ियाँ ख़्वाजे व्यापारी को दिला दीजिये।" सोही बादशाह ने उस व्यापारी को शूली का हुक्म दिया और अशर्फ़ियाँ अलीख़्वाजे को दिया और उस बालक को कंठ से लगाय, हजार अशर्फ़ियाँ और इनाम दे, उसके घर को पहुँचा दिया।

नवम प्रदीप

कलके घोड़े का दृष्टांत

वस्तु सम्पद्यते योग्यं योग्येऽयोग्ये द्विषत्यपि ।
शाहज़ादी हृताप्येवं यथायोग्यपतिं गता ॥

अर्थात् योग्य वस्तु योग्यही के पास जा पहुँचती है, चाहे कोई अन्य कपटी उससे द्वेष भी करता होवे । जैसे, हरी जाने पर भी शाहज़ादी निज योग्य पति के पास जा पहुँची ।

दृष्टांत—आपको भली भाँति मालूम होगा कि हजारों वर्ष से पारस के निवासी नौरोज़ को अर्थात् वर्ष के प्रथम दिन को खुशी मनाते हैं । अग्निपूजक उस दिन नृत्य और अनेक भाँति के तमाशे देखते, अति उत्तम और विचित्र विचित्र वस्तुएँ बादशाह और धनवानों को भेंट देते । नाना प्रकार के गुणवान् महासुंदर और दिव्य वस्तुएँ बादशाह के सामने लाते और हजारों रुपये पारितोषिक पाते ।

एक बार नौरोज़ को पारस का एक महा तेजस्वी बादशाह ज़ो उदारता में अति विख्यात था नगर के बाहर तमाशा देखने को गया । सब सभासद और नौकरों ने आ आकर उसे अपनी अपनी भेंटें दीं । बड़े बड़े गुणी कारीगरों ने नाना प्रकार की वस्तुएँ दीं । उनमें हिंदुस्तान का निवासी एक गुणवान् हिंदू आया और बादशाह को करजोड़ दंडवत् कर, एक कलका घोड़ा भेंट किया और विनय की कि इसे इस सेवक ने बहुत दिनों में बड़े परिश्रम से बनाया है । निश्चय है कि ऐसी अद्भुत वस्तु आप को अब तक किसी ने नहीं दी होगी । तब बादशाह ने कहा

कि घोड़ा केवल काष्ठ का बना है। उसे सुनहली रुपहली साज से सजाया है। इससे भी उत्तम और हो सक्ता है। इसके सिवाय और कोई लाभ गुण इसमें मैं नहीं देखता हूँ। वह बोला स्वामिन्! इतने गुण की बड़ाई मैं नहीं करता हूँ इसमें खास कारीगरी यह है कि कोई भी इसकी कल को हिला के चढ़ जाय तो इसे यह हवा के साथ उड़ा ले जाय और सौ दो सौ कोस जाकर फिर वहाँ ही लाकर उतार देता है। यदि आज्ञा हो तो मैं इसका गुण दिखाऊँ। यह सुन बादशाह ने अति प्रसन्न हो उस कारीगर की सच झूठ पहिचानने की इच्छा की और बायाँ पैर उसकी रकाब में रख उचक कर उसकी पीठ पर जा चढ़ा और पूछा कि कहाँ जाने की आज्ञा होती है? बादशाहने कहा शीराज नगर की राजधानी से डेढ़ कोस के प्रमाण से बड़ा ऊँचा एक पर्वत था, जो कचहरी से दिखाई देता है यह पर्वत कुछ अधिक दूर तो नहीं है; पर परीक्षा हो सक्ती है। वहाँ खजूर का एक बड़ा ऊँचा वृक्ष है उसका पत्र तोड़ कर यहाँ ले आओ। यह सुनते ही उसने ज्यों उसके कंठ के तले की कल हिलाई। त्योंही वह हवाके साथ हो लिया और आँख से ओझल हो गया, लोग सब अचरज करते रह गए। उधर पाव घड़ी के बाद वह घोड़ा उतरता नजर आया और उस सवार के हाथ में वृक्षकी डाली देखी, तो सब अत्यंत आश्चर्यित हुये।

बादशाह ने उसका मोल पूछा, तो उसने कहा, "स्वामी, मैं घोड़े को बेचता नहीं पर एक प्रतिज्ञा पर बेच सकता हूँ। जो मेरी बात आप मंजूर कीजिये, तो उसे बेचूँ।" बादशाह ने कहा, "तू कहे जिस देशका तुझे राजा बना दूँ।" हिंदू कारीगर ने

कहा, "मुझे कुछ देश या द्रव्य का लोभ नहीं है। मेरा अभिप्राय कुछ और ही है। यदि अपराध क्षमा हो तो निवेदन करूँ। बादशाह ने कहा, "कह।" कारीगर ने कहा कि अपनी पुत्री मुझे व्याह दीजिये तब तो सब इस पर अप्रसन्न हुये पर बादशाह के भयसे कुछ कह नहीं सके। उस पर बादशाह का लड़का बड़ा कुपित हुआ कि यह हिंदू मेरा दामाद बनेगा। उसने बादशाह से कहा, "यदि आप इसकी इच्छा पूरी करेंगे, तो बड़ी हँसी होगी।" बादशाह बोला कि हाँ, हँसी तो है; पर ऐसा कल का घोड़ा आज तक कहीं देखा नहीं। यह देखा कि बादशाह घोड़े के बदले लड़की ब्याह देने पर प्रसन्न हैं तो लड़का बोला कि मैं इस पर सवार हो परीक्षा करूँ, जो मेरी सवारी से उत्तम रहा तो अवश्य खरीद लेंगे। यह कह फ़ीरोज़शाह उस पर सवार हुआ और घोड़े के कंठ की कल मरोड़ी, तो वह हवा के साथ, बाण के समान उड़ा और झटही ओझल हो गया और हिंदू कारीगर ने चिंतित हो कहा, "हे स्वामी! मैं फ़ीरोज़शाह से शीघ्रता में यह कह नहीं सका कि किस कल से यह ठहरता है। वह यह समझा कि कंठ की एक कल ही के घुमाने से यह चलता और ठहरता है। पर उसमें अलग २ अनेक कलें हैं। उसे मालूम नहीं कि कहाँ की कल हिलाने से घोड़ा निज स्थान पर लौट आता है, ईश्वर जाने उस पर कुछ आपत्ति पड़ जावे, तो मेरा अपराध नहीं है।" बादशाह इसको सुन चिंता करने लगा कि मेरे पुत्र को कल का हाल मालूम नहीं, न जाने जीते जी आवे या नहीं। तब कारीगर बोला कि कदाचित् उसका हाथ दूसरी कल पर पड़ जावे, तो

वह निःसंदेह यहीं आ सक्ता है। तब फिर बादशाह ने कहा कि न जाने वह घोड़ा धरती पर, नदी में, वा पहाड़ पर गिरा तो। कारीगर बोला, "आप न डरें। नदी का पाट चाहे जितना हो; पर वह तैर कर सवार समेत पार उतर आता है। सवार को बस्ती में पहुँचा देता है।" तब बादशाह ने क्रोधित होकर कहा, "तुम जालसाज हो, तुम्हारी बात का इतबार नहीं। या तो तीन महीने में मेरा लड़का घर आवे या कुशल मालूम हो, नहीं तो तुझे प्राण से मार डालूँगा। यह कह बादशाह ने उसे कैद कर रक्खा।"

अब फ़ीरोज़शाह का वृत्तांत सुनो। वह आकाश की ओर एक घड़ी में ही वह इतना ऊँचा चला गया कि धरती भी न देख पड़ती थी। पर्वत उसे मिट्टी के ढेले के समान नजर पड़ते थे। उसकी यह इच्छा हुई कि जहाँ से मैं चढ़ा हूँ वहीं पर उतरूँ। तब उसने उसी पेचको उलटा घुमाया पर कुछ न हुआ। फिर चारों ओर घुमाया तब भी न उतरा। फिर तो फ़ीरोज़शाह बहुत घबड़ाया और पेचों की बात न पूछने के कारण बड़ा लज्जित हुआ और कहने लगा कि बड़ा ही खेद है, मेरे प्राण व्यर्थ ही गये। फिर निराश हो उसने घोड़े की गर्दन और कान को टटोला। निदान बहुत ढूँढ़ने के उपरांत उस घोड़े के दाहिने कानके नीचे एक पेच पाया। उसे मरोड़ने से वह नीचे उतरने लगा उस समय डेढ़ घड़ी रात बीती थी, वह जीने की आशा पा प्रसन्न हुआ। उसने चाहा कि किसी नगर में उतरूँ। निदान वह घोड़ा आधीरात को धरती पर उतरा। फ़ीरोज़शाह भूखा था, घोड़े से तुरंत उतर पड़ा। जानना चाहा कि कौन जगह है। मालूम हुआ कि किसी विशाल महल की छत है, तो उसके

चारों ओर घूमके राह देखने लगा। एक ओर उसने भीतर की सीढ़ी पाई जिसके किवाड़ का एक पट खुला था और एक बंद। उसने सोचा कि ईश्वर जाने किसी बैरी से भेंट हो, पर विचारा कि किसी का बुरा करने तो आया ही नहीं हूँ फिर विना शस्त्र हूँ, तो मेरा कोई क्या करेगा? इतना सोच वह धीरे २ दबे पाँव किवाड़ खोल के एक दालान में पहुँचा। वहाँ खुर्राटों के सिवाय कुछ न सुना। फिर वह कई पैर आगे बढ़ा, तो दीपक के प्रकाश में देखा कि हब्शी और नौकर सो रहे हैं। उन्हें देख वह समझा कि ये खोजी किसी मलका के मन्दिर के रक्षक हैं। वास्तव में वहाँ बादशाह की पुत्री रहती थी। वह उसके शयन का स्थान था। उसके आगे रेशमी पर्दा लगा था। वह दबे पाँवों से आगे बढ़ा कि किसी को उसके आने की आहट मालूम न हो। फिर उस पर्दे को हटाया, तो देखा कि सुंदर दालान में कई दासियाँ शय्या पर सो रही थीं। आगे बढ़के देखा, जड़ाऊ शय्या पर शाहजादी सो रही है। शाहजादा उसके सुंदर रूप को देख मोहित हो गया और विचारने लगा कि यदि यह सुंदरी मुझ पर प्रसन्न होजाय, तो इसे छोड़ के कहीं भी न जाऊँ। इसमें मेरे प्राण भी चाहे चले जायँ, यह विचार वह आगे बढ़ा। जो चादर उसके मुँह पर पड़ी थी उसे धीरेसे उठा कर उसको नयन भर देखने लगा तो वह जाग उठी और उस पर पुरुष को देख वह भय-भीत हुई और विस्मित हो चुप रही, तो फ़ीरोज़शाह ने धीरज धरा के कहा कि आप भय न खाइये। मैं ईरान देश का शाह-जादा हूँ। प्रभात को मैं अपने पिता के पास नौरोज़ के तमाशे में था, अब मैं परदेश में हूँ, मुझे भी प्राण का भय है। यदि

आपकी कृपा न हुई तो मारा जाऊँगा । आशा है कि मुझ पर आप कृपा करेंगी ।

वह सुंदरी बंगाल देशकी थी । उसकी कई छोटी २ बहिनें भी थीं । बादशाह ने वह विशाल मंदिर उसी के लिये बनवाया था । उसने इसका हाल सुन कर कहा कि तुम धीरज धरो । तुम्हें किसी प्रकार का भी कष्ट नहीं होगा । जैसे तुम निज देश में थे तैसेही यहाँ भी रहोगे । मैं तुम्हारी सहायता करूँगी तो तुम में भी इतनी सामर्थ्य हो जायगी कि तुम्हीं औरोंके सहायक होजाओगे । तुम्हारा मेरे भवन में ही अधिकार न होगा; किंतु सब बंगाल देश में होगा । यह सुन उसने उसकी बड़ी प्रशंसा की और अपना मस्तक धरती पर रखने लगा; पर उसने नहीं धरने दिया और बोली कि कहो तुम्हारा आना कैसे हुआ ? राजधानी कब छोड़ी ? किस उपाय वा मंत्रके बल से तुम मेरे मकान में पहुँचे ? मालूम होता है कि तुम भूखे हो । भोजन करके विश्राम कीजिए । मैं कल आपको दूसरे मकान में रख दूँगी । ये दोनों बातें करते ही थे कि वे सब दासियाँ भी जग उठीं । दोनों को देख आश्चर्य में हुईं और विचारने लगीं कि यह यहाँ कैसे आया ? फिर आज्ञा पाय वे उसे एक मकान में ले गईं । उसके आराम के लिये नाना प्रकार की वस्तुएँ धरीं और सुंदर सेज बिछा दी और रसोई में जाय शीघ्र सामान बनाया । फिर उसे भोजन कराय शय्या पर सुलाया । वह शाहजादी भी उसे देख उसपर मोहित हो गई थी । थोड़ी देर में दासी उसके पास से शाहजादी के पास आयीं और भोजन करने का हाल कहा । उनमें से एक दासी शाहजादी के बहुत मुँह लगी थी । उसने

शाहजादे की बहुत प्रशंसा करके कहा कि यदि ऐसे सुंदर कि-
शोर से आपका विवाह होजाय, तो क्या ही अच्छी बात है।
शाहजादी इस बात को सुन मन में अति प्रसन्न हुई; पर प्रकट में
बोली कि चुप रह बकै मत, अपनी जगह जा सो रह। फिर
शाहजादी प्रभात को उठते ही बहुत देर तक दर्पण में मुख देख
के शृंगार करती रही। फिर शाहजादे के पास आयी और
पूछा कि अब सब हाल खुलासा कहिये तब शाहजादा कहने
लगा कि नौरोज़े उत्सव में मेरे पिता के पास एक हिंदी कारी-
गर एक कल का घोड़ा बनाकर भेंट करने को लाया। मैं उस
पर परीक्षा करने को चढ़ा सोही वह मुझे ले उड़ा। बहुत ही
घूमता रहा फिर कल मिलने से दैववश तुम्हारी छत पर ले
उतरा। वहाँ एक सीढ़ी देखी जिसके किवाड़ का एक पट खुला
हुआ था। मैं उस सीढ़ी से धीरे २ नीचे को आया। वहाँ
मैंने झिलमिलाता प्रकाश देखा और सब खोजियों को सोते
हुये पाया। सामने के मकान में बहुत उजियाला देखा। जिस
के दरवाजे पर रेशमी परदा लटक रहा था। यद्यपि मुझे वहाँ बहुत
भय हुआ कि कोई खोजी जगकर मुझको देख लेगा, तो नि-
स्संदेह मार डालेगा। तथापि आगे बढ़ा और समझा कि उस
स्थान पर अवश्य कोई शाहजादी सोती होगी। फिर तो सब
आपको मालूम है और जो आपने ऐसे समय मुझ पर कृपा की
है उसका सहस्र जिह्वा से गुणानुवाद नहीं कर सक्ता। अब मैं
मन और वचन से तुम्हारा सेवक हूँ। मन से बढ़कर और कोई
वस्तु मेरे पास भेंट देने को नहीं है; परन्तु कठिनता यह है कि
यह भी मेरे अधिकार में नहीं रहा। उसे तुम्हारी प्रीति ने आक-

र्षित कर लिया है । अब जो कुछ मुझे आज्ञा हो उसे करूं। शाहज़ादी यह प्रीति की वार्ता सुन अत्यंत प्रसन्न हुई । और एकबारगी उत्तर दिया कि तुमने अपना अति विचित्र वृत्तांत सुनाया और मुझे प्रसन्न किया है । अब तुम बताओ कि तुम बहुधा इस घोड़े पर सैर करते रहोगे । संयोग से आज मेरे यहाँ भी आ निकले । इससे तुम्हारे वचन पर विश्वास करना और अपने मनको तुमसे लगाना वृथा है। ईरान देश तुम्हारी जन्म-भूमि है तुम्हें वहाँ जाने की अवश्य लालसा होगी । फ़ीरोज़-शाह ने हर एक प्रश्न का उत्तर यथार्थ देकर अपनी ओर से उसे धैर्य दिया । इतने में एक दासी ने आकर कहा कि भोजन तय्यार है । शाहज़ादी फ़ीरोज़शाह का हाथ पकड़ कर ले गई और उसको बैठाया और आप भी उसके सम्मुख जा बैठी । यद्यपि शाहज़ादी के भोजन का समय न था; पर यह विचार कर कि रात्रि को फ़ीरोज़शाह ने भली भाँति भोजन नहीं किया होगा, आप भी उसके मन रखने को भोजन करने लगी । दासियों नें अति स्वच्छ पात्रों में अनेक प्रकार के स्वादिष्ठ भोजन परोसे । जब वह खाने लगे, तो उसी समय सब बाँदियाँ जो बड़ी सुंदर थीं मीठे स्वरों से गान करने लगीं और नाना भाँति के दिव्य बाजे बजाने लगीं । शाहज़ादी भी अत्यंत प्रीति से फ़ीरोज़शाह को भोजन कराती और परस्पर के हावभाव से दोनों का हृदय कामरूपी अग्नि से दहकता था । जब वे भोजन से निश्चिंत हुये, तो शाहज़ादी उसे पकड़ के दूसरे कमरे में ले गई जिसमें अति शोभायमान सुनहली और लाजवर्द की अति विचित्र चित्रकारियाँ थीं । उसकी सब सामग्री सुनहली और रुपहली

वस्तुओं की थी। वे दोनों एक दिव्य दालान में जाकर बैठे, जिसके सम्मुख बड़ी सुंदर पुष्पवाटिका थी, जिसमें अनेक भाँति के रंगों के फूलों की लपट से मनुष्यों का मन लोभता और ठौर ठौर पर मीठे फलों के घने वृक्ष फले हुये थे, जिन पर भाँति भाँति के पक्षी मीठी मीठी वाणी बोलते थे। फ़ीरोज़शाह उस वाटिका और दिव्य सामग्री को देख बड़ा प्रसन्न हुआ और कहने लगा, "मैं जानता था कि जो जो भवन और बाग़ हमारे फ़ारस देश में हैं, वैसे पृथ्वी-मंडल में न होंगे।" परन्तु अब सूचित हुआ कि वहाँ के सब मंदिर इसके सामने तुच्छ हैं। शाहज़ादी ने कहा, यह भवन जिसकी तुम प्रशंसा करते हो, ऐसा उत्तम नहीं है। यदि मेरे पिता का भवन जो यहाँ के बादशाह का है, देखोगे, तो निस्संदेह प्रसन्न होगे। तुम मेरे पिता से अवश्य भेंट करो, वह तुम्हारा भली भाँति सत्कार करेगा। फ़ीरोज़शाह को राजमंदिर देखने की अति लालसा हुई। शाहज़ादी का यह विचार था कि जब उसका पिता ऐसे रूपवान् और सुशील शाहज़ादे को देखेगा, तो अति प्रसन्न होगा और मुझे उसे विवाह देगा।

फ़ीरोज़शाह कई दिन उसके पास रहा। उसका मन वहाँ ऐसा लगा कि और जगह पर जाने का उद्योग न करता था। फिर इस हेतु वहाँ के बादशाह के निकट न गया। एक दिन फिर शाहज़ादी ने अपने पिता के निकट जाने की रुचि दिखाई, पर फ़ीरोज़शाह ने कुछ शोच विचारकर उससे कहा कि हे सुंदरी! जो कुछ तुम कहती हो, मुझे स्वीकार है, पर बादशाही सामग्री बिना ऐसे चक्रवर्ती बादशाह के पास जाना उचित नहीं यद्यपि वह मेरे कुल का नाम सुन प्रसन्न होगा, पर इस दशा में

उसकी दृष्टि में तुच्छ हो जाऊँगा। शाहज़ादी ने कहा, "यहाँ सब कुछ उपस्थित है। इस जगह बहुत से व्यापारी तुम्हारे देश और जाति के हैं। तुम उनसे सब सामग्री जो कुछ तुमको आवश्यक हो, मोललो और एक अलग मंदिर में रहकर अपनी पदवीसमान सामग्री इकट्ठी करो।" उसने कहा, "बहुत अच्छा। अब एक अभिलाषा यह है, उसे मन लगाके सुनो। मुझे अपने पिता का हाल मालूम नहीं कि उसकी मेरे वियोग में क्या दशा हुई होगी। मुझे अत्यंत भय है कि ऐसा न हो जो शोच के कारण उसका देहांत होजाय। यदि प्रसन्नतापूर्व्वक मुझे आज्ञा दो, तो तुरंत जाकर अपने पिता से भेंट करूँ और उनको धैर्य्य दूँ। विवाह को जो तुम्हें भी स्वीकार है, अपने पिता से वर्णन करके उनसे आज्ञा ले आऊँ।" शाहज़ादी ने यह बात पसंद की; पर उसी समय उसे यह विचार पैदा हुआ कि यदि यह शाहज़ादा फिर अपने देश से न आवे और अपने माता पिता की प्रीति में वहीं रह जाय और मुझे अपने विरह में तड़पता छोड़े, तो मैं उसका क्या कर सकूँगी। इससे उत्तम है कि थोड़े दिन और इसे यहाँ रखना चाहिये। कदाचित् यहाँ रहने से मुझसे प्रीति अधिक हो और अपने देश में जाने का उद्योग न करे। निदान यह विचार मनमें ठान फ़ीरोज़शाह से कहा कि थोड़े दिन और ठहर जाइये, उसने स्वीकार किया। फिर बहुकाल पर्य्यंत फ़ीरोज़शाह शाहज़ादी के साथ रहकर नाना भाँति के तमाशे देखता और मनमाना आनंद उठाता रहा। प्रति दिन वन में जाकर अहेर खेलता और शाहज़ादी उसके मन बहलाने को नकलें दिखाती और संध्या को उसी दिव्य मंदिर में जिसमें नाना भाँति के अति-

सुंदर बिछौने और उत्तम २ तकिये रक्खेहुयेथे, आनंद भोगते और हर एक प्रकार की वार्त्ता करते। बहुधा फ़ीरोज़शाह फ़ारसदेश के कोशों और सेना का वर्णन करता। जब दो महीने बीते, तो उसका मन शाहज़ादी के प्रेम और अमृतरूपी बातों में ऐसा फँसा कि उसका वियोग क्षणमात्र उसको न सुहाता। बहुत काल के पश्चात् उसने अपने पिता का स्मरण कर शाहज़ादी से जाने के लिये आज्ञा माँगी और कहा, यदि तुमको मेरे वचन पर निश्चय न हो तो तुम भी मेरेसाथ चलो। वह इस बात से प्रसन्न हुई दूसरे दिन रात को जब सारे मन्दिर के नौकर और दासियाँ सोगईं तब फ़ीरोज़शाह शाहज़ादी को छत पर ले गया और उसको अपने आगे घोड़े पर चढ़ा लिया और घोड़े का मुख फ़ारसदेश की ओर कर चलने के पेंच को घुमाया तो वह घड़ी भरमें शीराज़ में, जो फ़ारस की राजधानी है, जा पहुँचा। फ़ीरोज़शाह न तो अपने मंदिर में उतरा और न अपने पिता से मिलने गया; किंतु एक ग्राम में जो शीराज के पास था, घोड़ेसे नीचे उतरा और शाहज़ादी को एक बादशाही महल में जो उस गाँव में बना हुआ था, उतारा और शाहज़ादी से कहा, "अब मैं जाकर अपने पिता से तुम्हारे आने का समाचार देकर तुम्हारे पास चला आता हूँ। फिर उस मंदिर के प्रबंधक को आज्ञा दी, जो २ वस्तु शाहज़ादी के लिये आवश्यक हों, संग्रह करे और एक घोड़ा मेरे लिये ला और दिव्य पात्रों में स्वादिष्ठ पाक लाकर शाहज़ादी को भोजन करा। मैं अभी शीराज़से लौटकर आता हूँ। यह आज्ञा प्रबंधक को दे, वह घोड़े पर सवार हुआ। मार्ग में पुरवासी उसे देखकर प्रसन्न होते; क्योंकि वहाँ के रहनेवाले उसके लिये ईश्वर से

प्रार्थना करते कि ईश्वर उसे कुशलपूर्वक यहाँ पर पहुँचाये। जब शाहज़ादा अपने पिता के पास गया तो बादशाह को उसके देखने से अति प्रसन्नता हुई और बड़ी प्रीति से अपने कंठ में लगाया और आनन्द के आँसू बहाए फिर उसने सब वृत्तांत वर्णन किया। तदनंतर बंगाल देश की शाहज़ादी का हाल वर्णनकर कहा, मैं उसे अपने साथ विवाह करने की प्रतिज्ञाकर कल के घोड़े पर लाया हूँ और अमुक गाँव के मंदिर में उसको छोड़कर पहिले मैं आया हूँ कि आप की आज्ञा पाकर उसे सम्मानपूर्वक ले आऊँ। इतना कह फ़ीरोज़शाह अपने पिता के चरणों पर गिर पड़ा और उसको लाने तथा उसके साथ विवाह करने की आज्ञा माँगी। बादशाह ने उसको चरणों से उठाकर अपने हृदय से लगाया और कहा, "हे पुत्र! मैं तुम्हें केवल विवाह करने की आज्ञा नहीं देता; किंतु मुझे इच्छा है कि मैं ही जाकर उसका सत्कार करूं और फिर उसको सवार कराके अपने मंदिर में लाऊं और आज ही विवाह की सब रीतें करूं।"

फिर बादशाह ने आज्ञा दी कि मेरी सवारी शीघ्र तैयार हो और सब मनुष्य खुशी मनाएँ और विवाह के बाजे बजें। और आज्ञा दी कि उस हिंदू को जो क़ैद में है, मेरे सामने लाओ। उस हिंदू को तत्काल बादशाह के निकट लेगये। बादशाहने उससे कहा, यद्यपि तू मार डालने के योग्य था, परंतु ईश्वर का धन्यवाद कर कि मेरा पुत्र मुझसे कुशलपूर्वक मिला। इसलिये मैंने अब तुझे छोड़ दिया, इसी समय अपना घोड़ा लेकर यहाँ से चला जा। फिर कभी मेरे पास न आइयो। उस हिंदू ने बंदीखाने से निकलते ही सुना था कि फ़ीरोज़शाह उस घोड़े पर एक बड़ी

सुंदरी शाहज़ादी अपने साथ लाया है और उसे अमुक गाँव में बादशाह के महल में छोड़कर आप अकेला यहाँ आया है। बादशाह ने वहाँ जाने की तय्यारी की है कि उस गाँव में जाकर शाहज़ादी को लेआये। वह हिंदू बादशाहके जाने के पहिले उस गाँव को चला और उस भवन के प्रवन्धक से जाकर कहा कि बादशाह और फ़ीरोज़शाह ने मुझे बंगाले की शाहज़ादीके लेजाने के लिये आज्ञा दी है कि मैं उस कलके घोड़े पर उसको सवार कराके ले जाऊँ। अब वे दोनों शाहज़ादी की बाट देखते हैं; क्योंकि बादशाह की इच्छा है कि इस घोड़े के चरित्र को सब शीराज़ के वासी भी देखें। प्रबन्धक उसके क़ैदके छूटने का हाल तो सुन चुका था। उसकी बात को निश्चय समझा और उस शाहज़ादी के पास ले जाकर कहा कि बादशाह ने तुम्हारे ले जाने के लिये इस मनुष्य को भेजा है। वह प्रसन्न होकर जाने के लिये तय्यार हुई। वह हिंदू पहले आप कलके घोड़े पर सवार हुआ फिर शाहज़ादी को अपने आगे बैठाकर, कलको मरोड़ा। वह घोड़ा आकाश की ओर उड़ा और उसी क्षण बादशाह भी बड़ी धूमधाम से उस गाँव की ओर चला। उस समय फ़ीरोज़शाह की यह इच्छा हुई कि बादशाहके पहुँचने के पहिले शाहज़ादी को बादशाह के पहुँचने का समाचार दूँ कि वह चलने की तय्यारी करे। जब वहाँ पहुँचा तो प्रबंधक से शाहज़ादी के लेजाने का हाल सुन बड़ा दुःखित हुआ, जिसका वर्णन नहीं होसक्ता। और सभासद इस समाचार को सुन अति व्यथित हो अपने महल को लौट गये; परन्तु फ़ीरोज़शाह बहुत देर तक मूर्च्छित रहा। जब सुधि सँभाली तो उसी समय प्रबंधक ने आकर

फ़ीरोज़शाह के चरणों पर शिर रक्खा और कहा, इस सेवक से यह अपराध अज्ञानता में हुआ है। अब जो चाहिये, दंड दीजिये। फ़ीरोज़शाह ने उससे कहा, "उठ, तुझसे मेरीही ग़फ़लत से अपराध हुआ, अब विलंब मत कर। शीघ्र मेरे लिये योगियों के वस्त्र ला।

उस मंदिर के पास एक योगी और उसके कई चेले रहते थे। रक्षक ने जाकर कहा कि बादशाह एक रईस से अति अप्रसन्न हुआ है, उसकी इच्छा है कि उसे पकड़ कर मार डाले। वह ऐसी दशा में अप्रतिष्ठा के कारण मुझसे कहने लगा, यदि मुझे योगियोंके वस्त्र मिलें, तो मैं वेष बदल इस नगर से निकल जाऊं, सो उस योगीने अपने वस्त्र उसे दिये। वह उसे फ़ीरोज़शाह के पास लाया। फ़ीरोज़शाह उन वस्त्रों को पहिन, अपने वेष को बदल और उत्तम २ रत्नों का संदूक़चा राह-ख़र्च के लिये लेकर रात्रि को अँधियारे में वहाँ से वन को चला और मनमें यह ठानी कि जबतक बंगाले की शाहज़ादी मुझे न मिलेगी, तबतक न लौटूँगा।

उस कलके घोड़ेने दो तीन घंड़ी के समय में हिंदू को काशमीर की राजधानी में पहुँचा दिया। उस समय उस हिंदू को भूख लगी और समझा कि शाहज़ादी भी भूखी होगी। वह सघन शीतल छायादार वृक्षोंके नीचे जहाँ निर्म्मल जल का दिव्य सरोवर था, उतरा और भोजन की कोई वस्तु ढूँढ़ने के लिये एक ओर को गया। उसके जाने के उपरांत शाहज़ादी महाकुरूप मनुष्य के अधिकार में अपने को देखकर अति चिंतित हुई और उसे इच्छा हुई कि किसी भाँति मेरा पातिव्रत धर्म्म बचे और कहीं

जाकर उससे छिपे, पर बहुत देर से भोजन न किया था और मार्ग के श्रम से निर्बलता के कारण इतनी सामर्थ्य अपनी देह में न पाई कि वहाँ से उठ कर छिपे। वह ईश्वर से प्रार्थना करती थी कि मैं मर जाऊँ तो अच्छा हो निदान वह इन्हीं विचारों में थी कि इतने में हिंदूने आकर उसे कुछ भोजन कराया। भोजन के उपरांत उस दुष्टने उससे भोग की इच्छा की। जब उस पतिव्रता ने इन्कार किया, तब वह दुष्ट उसे धमकाने और मारने लगा। वह बिचारी लाचार होके चिल्लाने और रोने लगी। उसके रोने से उस वन में कोलाहल मच गया। संयोगवश मनुष्यों के समूह ने आकर उन दोनों को घेर लिया। वे सवार कशमीर के बादशाह के साथ थे, जो अहेर खेल कर लौटते समय शाहज़ादी के भाग्य से उधर आ निकले और रोने का शब्द सुनकर वहाँ दौड़े आये थे। निदान कशमीर के बादशाह ने हिंदू से पूछा कि तू कौन है और तेरा क्या नाम है? यह स्त्री तेरी कौन है और इसके आँसू क्यों नहीं थमते हैं? उस हिंदूने कड़े होके कहा, यह मेरी जोरू है। किसी को क्या सामर्थ्य है कि हम दोनों के बीचमें बोल सके। शाहज़ादी ने कशमीर के बादशाह से कहा, ईश्वर तुमको केवल मेरे धर्म के बचाने के लिये लाया है, यह झूठा है। इसकी बातों को ठीक मत जानना। ईश्वर मुझे इसकी स्त्री न बनावे। यह जादूगर मुझे फ़ारस के शाहज़ादे के घर से चुरा कर जादू के घोड़े पर बैठाकर ले भागा है। बादशाह को उस शाहज़ादी के रोने पर दया आई और उसके रूप अनूप चंद्रमुख को देख आश्चर्य्य में हुआ। उसके वचन पर विश्वास कर सवारों को आज्ञा दी कि इस दुष्ट को ऐसे कुकर्म्म के बदले बध कर

डालो। उसी समय सवारों ने उस हिंदू का शिर तन से काट डाला।

अब वह शाहज़ादी एकसे छूट दूसरे के फंदे में पड़ी। कशमीर का बादशाह उसको एक घोड़े पर सवार करा अपने नगर में ले गया और एक विशाल भवन उसके रहने के लिये नियत किया। बहुतसी दास दासियाँ उसकी सेवा को दीं। उसको बहुत धैर्य्य देकर कहा, "हे सुंदरी! तुम थकी मालूम होती हो, इसलिये विश्राम करो।" इतना कह बादशाह चला गया। शाहज़ादी ऐसे अयोग्य और दुष्ट मनुष्य की संगति से अति चिन्ता को प्राप्त हुई थी, आराम पाकर सो रही। जब जगी तो शोचने लगी कि कशमीर के बादशाह ने बिना प्रयोजन मुझे उस दुष्ट से छुड़ाया और मेरा भली भाँति सत्कार किया। दो तीन दिन के उपरांत बादशाह ने उससे विवाह की इच्छा की और तय्यारी करने की आज्ञा दी। चारों ओर नौबतें बजने लगीं और सल्तनतभर में यह समाचार फैल गया कि हर मनुष्य अपनी शक्तिभर तमाशा देखकर खुशी मनावे। जब बादशाह को यह इच्छा भई कि बंगाले की शाहज़ादी से जाकर यह कहै कि वह शृंगारकर मेरे आगमन की बाट देखे। इतने में शाहज़ादी की आँखें बाजों के शब्द से खुल गईं। उसने दासियों से पूछा, "बाजे क्यों बजते हैं?" उन्होंने कहा, "तुम्हारा विवाह बादशाह के साथ होगा, यह सब उसकी धूम है।" इतना सुनते ही शाहज़ादी मूर्च्छा खाकर गिर पड़ी। बाँदियों ने यह दशा देखकर बादशाह कशमीर को यह हाल कह सुनाया। वह सुनते ही उसकी ओषधि आदि यत्न करने लगा, पर शाहज़ादी उसी दशा में पड़ी रही। जब चैतन्य हुई, तो उसने

मरनेकी इच्छा की; क्योंकि उसको फ़ारसके शाहज़ादे के सिवाय किसी से विवाह करने की इच्छा न थी। तदनंतर उसने आपको विक्षिप्त बनाया और बादशाहको हज़ारों गालियाँ देने लगी। धड़ाधड़ उसे मारने लगी। बादशाह उसकी यह दशा देख बड़ा चिंतित हुआ और उसके पास से उठकर बाहर आया और दासियों को आज्ञा दी कि इसका घड़ी २ का हाल मुझ से कहो। वह यह समझा कि इस सुंदरी को कोई भूत-बाधा हुई है इसलिये आज्ञा दी कि वैद्य, फूकने और झाड़नेवाले आवें और इस शाहज़ादी को हज़ार यत्न और मंत्र इत्यादि से चंगा करें। पहिले नगर के वैद्यों ने उसकी ओषधि की। फिर सब सयानों ने यत्न आदिक किये और नाना प्रकार के अभिमंत्रित जल पिलाये और धूनी दी, पर वह कुछ अच्छी न हुई; किंतु संध्या को उसकी बुरी दशा हुई, जिससे बादशाह रात भर बेचैन रहा। दूसरे दिन प्रभात को भी उसकी वही दशा रही, तो बादशाह ने यह इश्तिहार दिया कि जो कोई शाहज़ादी को अच्छा करेगा उसे बहुतसा पारितोषिक दूंगा। फिर वैद्यों ने परस्पर सम्मतिकर बादशाह से विनय की कि यदि यह रोग शाहज़ादी को नवीन उपजा होगा, तो निस्संदेह साध्य है। यदि प्रचीन है, तो असाध्य होगा। यह बात बिना रोगी के देखे स्पष्ट विदित नहीं हो सक्ती। बादशाह ने खोजियों को आज्ञा दी कि इन वैद्यों में से एक अथवा दो को लेजाकर शाहज़ादी की नाड़ी दिखाओ। वे लेजाने लगे। शाहज़ादी यह बात सुनकर मनमें विचार करने लगी कि यदि वैद्य मेरी नाड़ी देखेंगे और उनको मालूम होगा कि मुझे कुछ रोग नहीं है। मकर से विक्षिप्त बन गई है, तो मेरी बनावट का हाल खुल जायगा। अब ऐसा

हाल अपना बनाना चाहिये कि मेरे पास कोई न आसके। जो कोई उसके पास जाता तो वह उसको काटने और मारने दौड़ती। इस भय से कोई उसके पास न जा सका। फिर उन सब वैद्यों ने यह दशा देख नाड़ी के देखे बिना विक्षिप्तता को हटानेवाले अनेक भाँति की औषधि और क्वाथ उसको पीने को दिये। शाहज़ादी उन्हें तत्काल पी जाती। फिर वह मनुष्यों के दिखाने के लिये विक्षिप्त बन जाती और एकान्त में अच्छी होजाती। निदान बादशाह ने देशदेश के वैद्य शाहज़ादी के लिये बुलाये। पर किसी से वह अच्छी न हुई।

फ़ीरोज़शाह योगियों के वस्त्र पहिन अपना वेष बदल बंगाल देश के नगर नगर ढूँढ़ता फिरता था। उसके सब अंग सूख गये थे। इसी भाँति घूमता घूमता एक नगर में पहुँचा जो हिंदुस्तान से संबंधित था। उसने वहाँ के निवासियों से सुना कि कशमीर में एक बंगालदेश की शाहज़ादी है, जिससे वहाँ का बादशाह विवाह करना चाहता है। वह ऐसी विक्षिप्त होगई है कि किसी भाँति अच्छी नहीं होती। यह सुनते ही फ़ीरोज़शाह समझ गया कि वही शाहज़ादी है, जिसको मैं ढूँढ़ता यहाँ तक पहुँचा हूँ। वह वहाँ से सिधारा और बहुतसा मार्ग का कष्ट उठाकर कशमीर में जा पहुँचा और एक सराय में जा उतरा। दिनभर शाहज़ादी का हाल सुना किया। उसकी यह भी इच्छा हुई कि उस दुष्ट हिंदू का हाल भी जो शाहज़ादी को ले भगा था, मालूम करें; पर उसका वृत्तांत किसी ने उसे न सुनाया। फिर वह समझ गया कि शाहज़ादी ने अपने बचाव के लिये यह उपाय किया होगा। निदान फ़ीरोज़शाह ने योगियों के वस्त्र उतार

सांगोपांग वैद्यों के वस्त्र, जैसी कि उस देश में प्रथा थी, पहिन लिये और दूसरे दिन वह वैद्यों की भाँति गलियों में फिरने लगा। एक दिन बादशाह के दरवाजे पर जाकर उसके रक्षक से कहा कि मैं शाहजादी के अच्छा करने के लिये बहुत दूर से आया हूँ। उसने घृणा से उत्तर दिया, "अपना मुख तो देख। तू क्या शाहज़ादी को अच्छा करेगा। हज़ारों बुद्धिमान् वैद्यों से तो कुछ न हुआ। तुझसे क्या हो सकेगा?" उसने कहा, मैं कुछ बादशाह से माँगता नहीं, केवल भाग्य की परीक्षा के लिये यहाँ आया हूँ। बहुत सी लाभकारी औषधियाँ भी मैं जानता हूँ। रक्षक को उस पर दया आई और उसको ठहराकर बादशाह से जो शाहज़ादी के अच्छे होने से निराश हो चुका था, जाकर बिनती की कि एक वैद्य बहुत दूर से आया है और उसके पास बहुत अच्छी अच्छी दवाइयाँ हैं। इतना सुनते ही बादशाह ने आज्ञा दी कि उसको मेरे पास लाओ। वह बादशाह के पास गया। बादशाहने संपूर्ण वृत्तांत उससे वर्णन करके कहा कि वह अपने पास किसी को आने नहीं देती; पर तुम उसे दूर से देख करके ऐसी ओषधि दो, जिससे वह अच्छी हो। इतना कह उसे एक मकान में जो शाहज़ादी के भवन से लगा हुआ था, ले गया। फ़ीरोज़शाह ने उस मकान में जाकर देखा कि शाहज़ादी अपनी अभाग्यता के गीत गा रही है, जिसके सुनने से मनुष्य का मन फट जाता है। फ़ीरोज़शाह ने उसे देखकर पहिचाना और ध्यान से देखा कि उसने अपने को विक्षिप्त बनाया है। वास्तव में उसे कोई भी रोग नहीं है। फिर शाहज़ादेने उस मकान से आके कहा कि मैंने उसे भली भाँति देखा, उसका रोग साध्य है। यदि आज्ञा

हो तो मैं उससे कुछ पूछूं और हाल मालूम करूं। फिर उपाय सुगम होजायगा; क्योंकि फ़ीरोज़शाह भली भाँति जानता था कि मेरा शब्द सुनते ही वह अपनी नक़ली विक्षिप्तता को छोड़ देगी और जो मैं कहूँगा वही करेगी। बादशाह ने आज्ञा दी कि उस मकान का किवाड़ खोल दो। इस वैद्य को उसके पास जाने दो। जब शाहज़ादा उस मकान में गया, तो शाहज़ादी उसे वैद्य के वेष में देख क्रोध करके गालियाँ देने लगी; पर वह हटा नहीं। उसके पास चला गया और नम्रतापूर्वक धीरे से उससे कहा, मैं वैद्य नहीं हूँ। मैं फ़ीरोज़शाह फ़ारसदेश का शाहज़ादा हूँ। तेरे लिये मैंने अपनी यह दशा बनाई है। यद्यपि शाहज़ादे ने अपना वेष बदला और लंबी दाढ़ी रक्खी थी, पर वह उसे शब्द और रूप से पहिचान कर सावधान होगई और अति प्रसन्न होकर उसका मुख देखने लगी; जैसे कि कोई मनुष्य किसी वस्तु की इच्छा करे और वह उसे बहुत कालके बाद अति परिश्रम करके पावे। फिर फ़ीरोज़शाह ने उससे सब हाल पूछा और अपना वृत्तांत भी संक्षेप में वर्णन किया कि नगर २ देश २ फिरा, तब तेरा यहाँ का ठिकाना मालूम हुआ; अब प्रसन्न हो। मैं तुझे यहाँसे निकाल ले जाऊँगा। शाहज़ादी ने यह वृत्तांत सुनके कहा कि मैंने धर्म्म के बचाने के लिये यह उपाय किया है। उसका सब हाल सुन फ़ीरोज़शाह ने कहा, "तुझे मालूम है कि उस कलके घोड़े को बादशाह ने कहाँ रक्खा है।" उसने कहा, "मैं नहीं जानती।" फ़ीरोज़शाहने विचारा कि बादशाह ने उस घोड़े को रक्षापूर्वक रक्खा होगा। फिर उसे धैर्य्य देकर कहा, "अब तुझे यह उचित है कि तू अच्छी बन जा कि बादशाह जाने कि

तू मेरी दवासे अच्छी हुई, जिससे जो कुछ मैं कहूँगा, वह मानेगा।" उसने कहा, "अच्छा।"

दूसरे दिन शाहज़ादी वस्त्र बदल सुधि में आई और सब से भली भाँति यथोचित व्यवहार करने लगी। बादशाह उसको भली चंगी देख अत्यंत प्रसन्न हुआ। वैद्य की बहुत सी प्रशंसा की। फ़ीरोज़शाह ने जो कुछ उचित था, कहकर पूछा कि यह बंगाल देश की शाहज़ादी यहाँ कैसे आई? इसके पूछनेसे प्रयोजन उसका यह था कि बादशाह कलके घोड़े का हाल कहे, पर बादशाह उसके अभ्यंतर को कुछ न समझा। उसने शाहज़ादी के आगमन का हाल जैसा फ़ीरोज़शाह ने शाहज़ादी से सुना था कहा। यह भी कहा कि काष्ठ का घोड़ा जो उनके पास था, उसे मैंने रक्षापूर्वक रख दिया है। शाहज़ादे ने यह सब सुनकर कहा कि इससे मालूम होता है कि यह शाहज़ादी उस जादू के घोड़े पर चढ़के आई थी। उतरते समय उसे कोई सुगंध और धूनी नहीं दी गई, इसी कारण उसे प्रेतबाधा हुई। यद्यपि मैं उसे जादू के बलसे सुधि में लाया; पर अभी वह भली भाँति अच्छी नहीं हुई है। यदि तुम्हारी यह इच्छा है कि वह अच्छी हो जाय और फिर कभी उसे भूतबाधा न हो तो आप सब नगर निवासियों को बड़े मैदान में इकट्ठा कीजिये और उस जादू के घोड़े को भी वहाँ मँगवाइये कि मैं शाहज़ादी को उस पर चढ़ाकर उसे धूनी दूँ कि वह फ़िर कभी बीमार न हो; परंतु उस दिन शाहज़ादी को उत्तम उत्तम वस्त्र पहिनने उचित हैं। बादशाह ने अपने सब सभासदों को आज्ञा दी कि जिस बात को यह वैद्य आज्ञा करे, उसे तुरंत प्रतिपालन करो। दूसरे दिन कल के घोड़े को उठा लाए और

राजभवन के आगे एक बड़े मैदान में उसे रक्खा और डौंड़ी पिटवाई कि नगर के सब लोग अमुक मैदान में इकट्ठे हों और सेना भी घेरा बाँधकर खड़ी हो। जब नगरवासी इकट्ठे हुये और बादशाह भी वहीं आया, तो वैद्यने कहा कि उस घोड़े के पास कोई न जाय। बादशाह भी अपने डेरे में ही विराजमान रहें और उसके चारों ओर सब सभासद खड़े रहें। बङ्गालदेश की शाहज़ादी अपनी लौंडियों समेत उस घोड़े पर सवार हुई। जब उसके कहने के अनुसार सब हो चुका और दासियों ने शाहज़ादी को घोड़े पर सवार करा घोड़े की बाग पकड़ के खड़ी हुईं, तो उस वैद्य ने घोड़े के आसपास बहुतसी अग्नि की अङ्गीठियाँ रखवाईं और उसमें तेल और मट्टी भरभर सुगंध डाल तीन बेर उसकी परिक्रमा की। धोखा देने को वह कुछ योंही पढ़ने लगा। तब अंगीठियों से ऐसा धुवाँ निकला कि वह शाहज़ादी घोड़े समेत छिप गई। वह अवसर पाकर उसके पीछे चढ़ा और चलनेके पेच को घुमाया। अब वह घोड़ा तत्काल आकाश की ओर उड़ा। तब फ़ीरोज़शाह ने ऊँचे शब्दों से कहा, "हे कशमीर के बादशाह! तूने शाहज़ादी से विवाह की इच्छा की थी। अब तू जान कि यह शाहज़ादी फ़ारस के शाहज़ादे का माल है, जो अपने साथ उसे लिये जाता है। बादशाह कशमीर और उसके सभासद यह बात सुन अति आश्चर्य में हुये। उसी दिन फ़ीरोज़शाह कई घड़ी के उपरान्त बङ्गाले की शाहज़ादी को लेकर फ़ारस देश में पहुँचा। फिर वह बादशाह के पास गया। बादशाह अपने पुत्र को देखकर अति प्रसन्न हुआ और कई दिन के पश्चात् उसका विवाह बड़ी धूमधाम से कर दिया। विवाह के बाद बादशाह ने

बङ्गाले के बादशाह को यह संदेशा भेजा कि तुम्हारी बेटी के साथ मैंने अपने बड़े बेटे का विवाह कर दिया है और तुम्हारी बेटी यहाँ अति प्रसन्न है। बङ्गाले के बादशाह को इस बात से अति हर्ष हुआ और उसका उत्तर यथोचित लिख असंख्य द्रव्य और रत्नादिक भेजे ॥

दशम प्रदीप

अहमद शाहज़ादा और बानू परी।

उपकारेऽपकारं यो मन्यते केनचित्कृते;
सनश्यति यथा बादशाहोभूतान्मृतोऽकृतः।

जो कोई किये हुए उपकार को अपकार मानता है, वह आपही नष्ट होजाता है; जैसे, बादशाह ने निज उपकार को बुरा जाना तो वह ज़िद से मारा गया।

पूर्व काल में हिन्दुस्तान का एक बड़ा तेजस्वी बादशाह था, उसके तीन पुत्र थे। बड़े का नाम हुसेन, दूसरे का नाम अली और तीसरे का नाम अहमद था। नूरुन्निहार उसके भाई की पुत्री थी। बादशाह ने अपने भाई के मरने के बाद अपनी भतीजी को अपने महलमें लाकर रक्खा था। बड़े बड़े विद्वानों और गुणवानों से उसको पढ़वाया था। वह अपनी हमजोलियों और निज कुटुंब और बादशाह के परिवार में सब से अधिक रूपवती और बुद्धिमती थी। बाल्यावस्था से ही इन तीनों शाहज़ादों के साथ खेलती थी। बादशाह ने विचारा कि तरुणावस्था में इसका विवाह किसी दूसरे शाहज़ादे के साथ करूँगा; पर जब उसको मालूम हुआ कि मेरे तीनों पुत्र उस पर मोहित हैं और प्रत्येक की यह लालसा है कि उसका विवाह मेरे साथ हो, तो वह

अति चिंता करने लगा और सोचा कि यदि इसका विवाह उन तीनों में से जिसके साथ करूँगा, तो दूसरे अप्रसन्न होंगे। मैं किसी की अप्रसन्नता नहीं चाहता। यदि किसी दूसरे शाहज़ादे को व्याह दूँ। तो सब के सब अप्रसन्न होंगे। संभव है वे उसके मोह में पड़कर अपने प्राण त्याग दें अथवा किसी दूसरे देश में चले जायँ। इससे उपाधि उठे बिना न रहेगी। ऐसा कोई उपाय करना चाहिये कि चाहे जिसके साथ उसका विवाह हो, पर दूसरे दो भाई अप्रसन्न न होवें। इसी भाँति वह बादशाह बहुत दिनों तक सोचता रहा। अंतको उसने एक उपाय विचार लिया और अपने तीनों पुत्रों को बुलाकर कहा कि मेरे विचार में तुम तीनों बराबर हो। मैं एक को तुममें से बड़ा समझकर नूरुल्निहार का विवाह नहीं कर सक्ता और यह भी नहीं हो सक्ता कि उसका विवाह तुम तीनोंके साथ कर दूँ। इसलिये मैंने एक बात सोची है जिसमें तुम में से किसी न किसी के साथ उसका विवाह होजायगा और कोई तुममें से अप्रसन्न भी न होगा, तुम तीनों की प्रीति स्थिर होवेगी, तुम में से कोई डाह और वैर न करेगा। वह बात यह है कि तुम तीनों पृथक् २ यात्रा करो और एक विचित्र वस्तु मेरे लिये लाओ। जिसकी वस्तु अद्भुत होगी। उसी के साथ नूरुल्निहार का विवाह करूँगा। उस वस्तु के लाने को जो कुछ तुमको द्रव्य चाहिये, मेरे कोश से लेजाओ। इतना सुन उन तीनों ने इस बात को स्वीकृत किया। हर एक अपने मनमें प्रसन्न हुआ। सब कहने लगे कि तीनों भाइयों में मैं ही अच्छी वस्तु लाकर नूरुल्निहार के साथ विवाह करूँगा।

बादशाह ने सबको उनकी इच्छानुसार द्रव्य देकर आज्ञा दी कि अब शीघ्र यात्रा की तैयारी करके सिधारो। वे तीनों व्यापारियों का वेष धर कुछ वस्तु और दासों को साथ लेकर एक साथ ही अपने पिताकी राजधानी से चले। कई मंजिलों तक तो इकट्ठे गये। फिर वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचे, जहाँ देशों के मार्ग भिन्न भिन्न थे। वहाँ वे एक सराय में उतरे। उन्होंने परस्पर मिलके भोजन किया और यह प्रतिज्ञा की कि अब तक हम तीनों भाइयों की एकही राह थी कल हम अलग-अलग होकर भिन्न भिन्न देशों में जायँगे। उचित है कि हम तीनों भाई एक वर्ष से अधिक यात्रा न करें और इतनी अवधि के बाद इस सराय में आवें और यहाँ परस्पर भेंट करके पिता के निकट जायँ। जो कोई पहले पहुँचे, वह यहाँ बैठकर दोनों भाइयों के आगमन की राह देखे। निदान दूसरे दिन वे तीनों भाई परस्पर मिलके बिदा हुए, और घोड़ों पर सवार हो न्यारे न्यारे देशों में गये।

हुसेन शाहज़ादा जो सबसे बड़ा था, सदा विष्णुगढ़ की प्रशंसा सुनता और उसके देखने की अति लालसा रखता था, सो वह उस नगर की ओर यात्रियों के समूह के साथ जहाज़ पर चढ़ा। तीन मास तक जलकी यात्रा की। फिर पृथ्वी पर बहुत से नगर और दिव्य देश लाँघ कर विष्णुगढ़ जा पहुँचा। वहाँ वह एक सराय में उतरा, जहाँ विशेष कर व्यापारी उतरा करते थे। वहाँ के निवासियों से मालूम हुआ कि वहाँ एक बाज़ार है, जहाँ अति विचित्र और उत्तम वस्तुएँ बिकती हैं। दूसरे दिन शाहज़ादा उसी बाज़ार में गया। उसकी लंबान, चौड़ान और परिधि को देख बड़ा आश्चर्य में हुआ। उसमें हज़ारों दूकानें अति

स्वच्छतापूर्व्वक बनी थीं। प्रत्येक दूकान के सामने सायवान धूप के बचाव के लिये, इस शोभा और उपाय से लगा हुआ था कि दूकानों पर तनक भी अँधियारा न पड़ता होता। प्रति वस्तु की दूकानें भिन्न भिन्न थीं। भाँतिभाँति के रंग बिरंग बूटेदार दिव्य वस्त्र दूकानों पर क्रम से रक्खे हुये थे। वृक्ष और सुन्दर पुष्पों के चित्र इस उत्तमता से उन कपड़ों पर कढ़े हुये थे कि उनके देखने से यही ज्ञात होता था कि वास्तव में ये वृक्ष और पुष्प ही हैं। इसके अलावा ईरान और चीन के बने हुये असंख्य रेशमी थान थे। कहीं तो शीशे और चीनी आदि के सुंदर पात्र दूकानों पर सजे हुये थे और हज़ारों प्रकार के सुंदर क़ालीन आदि बिकते थे। उनके देखने से वह अचंभे में हुआ। फिर वहाँ से उन दूकानों पर आया, जिनमें सुनहले रुपहले बर्तन और हीरे आदि रत्न थे। उनकी चमक-दमक से दूकानें प्रकाशित हो रही थीं। हुसेन एक ही बाज़ार में इतना असबाब और रत्न देख मनमें समझा ईश्वर जाने नगर भरमें कितना माल और असबाब होगा! वहाँ के ब्राह्मणों को देख अधिक आश्चर्य में हुआ कि सबके सब द्रव्य की आधिक्यता से दिव्य आभूषणों से अलंकृत होकर फिरते हैं। उनके दास भी सुवर्ण के कड़े और कंठे और अनेक भूषण पहिने रहते थे। प्रत्येक बाज़ार में हरएक भाँति के फूलों के ढेर के ढेर नज़र आते। वहाँ के निवासी दिव्य पुष्पों की माला हाथों में लिये या गले में पहने नगर में घूम रहे हैं। हाट-बाट पर दूकानदार फूलों के गुलदस्ते चुन के रखते। इस सुगंध से बाज़ार भर सुगंधित हो रहा था। हुसेन बहुत कालपर्यंत फिरा। फिर थक कर कहीं बैठने की इच्छा की, सो एक दूकानदार ने अपनी बुद्धि से जानकर प्रीति-

पूर्वक उसको अपनी दूकान पर बैठाया। एक घड़ी के बाद एक दल्लाल को देखा कि एक चार गज़ का चौकोण गलीचा लिये हुये कहता है कि यह गलीचा तीस हज़ार अशरफ़ी को बिकता है। जिसका मन चाहे मोल ले। शाहज़ादे ने यह शब्द सुन आश्चर्य किया और उस दल्लाल को बुलाया और गलीचे को देख कर कहा कि ऐसा गलीच. एक रुपये को बिकता है। इसमें ऐसा कौन गुण है, जिसकी तुम तीस हज़ार अशरफ़ी माँगते हो? उसने शाहज़ादे को व्यापारी समझ कर कहा, "भाई क्या तुम इस गलीचा का मूल्य बहुत समझते हो। इसके स्वामी ने मुझसे कहा है कि मैं चालीस हज़ार अशरफ़ी से कम में न बेचूँगा।" शाहज़ादे ने कहा, "इसमें कोई बड़ा गुण होगा, जिसका इतना बड़ा मोल है।" उसने कहा, "इसमें एक बड़ा गुण है। जिस समय तुम इस पर बैठकर किसी स्थान पर, दूर अथवा निकट, जाने की इच्छा करो, तो तत्कालही तुम उसी स्थान पर पहुँच जाओगे।" शाहज़ादा यह सुन समझा कि इससे संसार में कोई भी विचित्र वस्तु न होगी। ईश्वर का धन्यवाद है कि इस यात्रा का जो मुझे प्रयोजन था, वह प्राप्त हुआ। निश्चय है कि इसको बादशाह देख अत्यंत प्रसन्न होगा। इसे पसंद भी करेगा। तदनंतर शाहज़ादे ने उसे मोल लेने की इच्छा से दल्लाल से कहा कि यदि इसका यह गुण है, तो इतने मूलपर मैं ही लिये लेता हूँ। दल्लाल ने कहा जो तुम्हें मेरे वाक्य पर संदेह हो तो इसकी परीक्षा कर लीजिये और इसी पर बैठ कर सराय में चलिये। वहीं पर इसका मूल्य दे दीजियेगा। दल्लाल ने उस दूकान के पीछे गलीचा को बिछा शाहज़ादे को उस पर

बैठाय आप भी उस पर बैठ कर जाने की इच्छा की। वह गलीचा तत्काल ही देवता के विमान के सदृश वायु में उड़ा और वे शीघ्र ही सराय में पहुँच गये। शाहज़ादे ने चालीस हज़ार अशरफ़ियाँ उस गलीचे का दाम और बीस अशरफ़ियाँ उस दल्लाल को इनाम दीं। बड़ा प्रसन्न हुआ और निश्चय हुआ कि अपने पिता के निकट यह गलीचा ले जाने से अवश्य मुझे नूरुलनिहार ब्याही जावेगी। ऐसी अद्भुत और अपूर्व वस्तु मेरे भाइयों को चाहे वह संसार भर में फिरें प्राप्त न होगी। फिर यह सोचा कि उस गलीचे पर बैठकर उसी सराय में जहाँ से वे तीनों भाई अलग हुये थे, जाकर उतरें और सब भाइयों के आने की राह देखें। परंतु साथ ही यह भी सोचा कि मुझे उस जगह बहुत ठहरना होगा और अकेला घबड़ाऊँगा, इससे उत्तम है कि यहाँ के निवासियों और बादशाह को भली भाँति देख लूँ और इस नगर की भली भाँति सैर करूँ।

इसलिये वह कई महीने तक वहाँ रहा। वहाँ के बादशाह का यह नियम था कि प्रति सप्ताह में एक दिन परदेशी व्यापारियों की व्यवस्था सुनने और न्याय चुकाने के लिये बैठता। हुसेन उसको इस कारण भली भाँति देखता। पर हुसेन को अपने को प्रगट करने की इच्छा न थी। शाहज़ादा भी अत्यंत रूपवान्, अतिचतुर, वाचाल और तीव्र बुद्धि का था। इस कारण विष्णुगढ़ का बादशाह और व्यापारियों से उससे अधिक प्रीति करता था। बहुधा उससे हिन्दुस्तान के राज्य का हाल पूछता। फिर शाहज़ादा अति विख्यात मंदिरों के देखने को गया। एक देवालय को अति सुंदर, जो पीतल का बना हुआ था, देखा। भीतर से वह दश

गज चौकोण था। उसके मध्य में एक मूर्ति मनुष्य के आकार की इस भाँति रक्खी थी कि चहुँ ओर के देखनेवाले उसे अपनी ओर देखते हुये समझते और उसके नेत्र बहुमूल्य रत्नों से जड़े थे। तदनंतर दूसरे गाँव में भी देवालय देखा कि वह अति विचित्र और पहिले के समान बना हुआ था। उस जगह एक मैदान अनुमान आधे बीघे के चौड़ा था, जिसमें अति सुगंधित पुष्प के वृक्ष बड़ी सुंदरता से लगे थे। उस पुष्पवाटिका के चहुँ ओर दीवारें अनुमान तीस गज के ऊँची थीं। जिससे कोई पशु उसके भीतर न जासके और उस मैदान के मध्य में एक चबूतरा एक मनुष्य की उँचाई का पत्थर का बना हुआ था। उसके पत्थरों को इस कारीगरी से जमाया था कि वह एक ही पत्थर का मालूम होता था। उस चबूतरे पर एक देवालय पचास गज का ऊँचा था जो चारों ओर कोसों से दीखता। उसकी लंबान तीस गज की और चौड़ाई बीस गज की थी। वह निपट संगमरमर का बना हुआ था, और उसका पत्थर ऐसा साफ और चिकना था कि शीशे के सदृश उसमें मुख दीखता था। उसका मंडप अति विचित्र बना हुआ था। उसमें देवताओं के सैकड़ों चित्र रक्खे थे। प्रति दिन सबेरे और संध्या को ब्राह्मणों की स्त्री-पुरुष और बालक आते और नाना भाँति की पूजाकर कुतूहल करते। कोई तो मग्न होकर नाचता और कोई प्रसन्नता से गाता-बजाता। स्थान-स्थान पर इंद्र के तुल्य सभा लगा कर नाच-तमाशे देखते। दूर दूर से लाखों मनुष्य भेंट देने को एकत्र होते और नाना भाँति की असंख्य वस्तुएँ और बहुत सा द्रव्य उस देवालय में चढ़ाते। शाहज़ादे ने वहाँ का वार्षिक मेला भली भाँति देखा। मेले के दिन सब नगरों

के प्रधान और मुख्य मुख्य नगरनिवासी उस देवालय में पूजन कर परिक्रमा करते। एक विशाल देवालय में बड़े-बड़े पण्डित षट्शास्त्री चार-पाँच महीने की राह से वहाँ आकर यथाविधि वंदना करते। हिंदुस्तान भर के वासी पूजन के निमित्त इकट्ठे होते। उनको देख शाहज़ादा आश्चर्य में हुआ।

उस मैदान के एक ओर चालीस स्तम्भों पर नव खंडा एक बड़ा विशाल सुंदर भवन था, जिसमें बादशाह, उसके मंत्री और प्रधान परदेशियों के न्यायके लिये बैठा करते। वह मंदिर भीतर से बहुत सी अमूल्य और सुंदर सामग्री से अलंकृत था। बाहर से नाना प्रकार के देशों और विशेष कर पशु-पक्षी के सुंदर चित्रों से चित्रित था। वे चित्रकारियाँ इस सुंदरता और कारीगरी से खिंची थीं कि सचमुच की मालूम होतीं। दूसरे देहाती गँवार महा विकराल पशुपक्षी, जैसे कि सिंह आदिक का चित्र देखकर डर जाते। इस मैदान के तीन ओर काष्ठ के अति विचित्र मंदिर उसी भाँति भीतर बाहर से सजे हुये इस कारीगरी से बने हुये थे कि जिस ओर को चाहें, घुमाने से मनुष्यों समेत फिरते। मनुष्य तमाशा देखने के लिये काष्ठ के मंदिरों को घुमाते और प्रति स्थान पर अनुमान एक हज़ार मत्त हाथी, जो सुनहली झूलों और रुपहले हौदों से सुशोभित थे, दृष्टि पड़े। उनपर गवैये गाते और नकाल नकलें करते। हाथियों के पाठे नाना भाँति के रंगों में चित्रित थे। हुसेन शाहज़ादा हाथियों का तमाशा देख अधिक आश्चर्य में हुआ अर्थात् एक बहुत बड़ा हाथी चार तिपाइयों पर, जिनके नीचे पहिये लगे थे, चारों पैर से खड़ा हुआ। शूँड़ से बाँसुरी बजाता था, जिसके सुनने से सब

लोग वाह वाह करते और उस हाथी को जिधर चाहते खींचकर लेजाते। दूसरा हाथी पहिले से कुछ छोटा एक काठ के बड़े शहतीर के एक सिरे पर खड़ा था। वह शहतीर एक ऊँची तिपाई पर जो अनुमान आठ गज के थी, रक्खा था। उस शहतीर के दूसरे सिरे पर हाथी के वजन का लोहा था। कभी वह हाथी जोर करने के कारण धरती पर आ लगता और कभी वह उठ कर ऊपर को आ जाता। वह हाथी उस अवस्था में हावभाव कर अपना नाच दिखाता और शूँड़ से तानके साथ गाता। दूसरे हाथी भी उसके साथ गाते। मनुष्य उसको इसी दशा में इधर उधर लिये फिरते। यह हाथियों का तमाशा बादशाह के सम्मुख होता। हुसेन शाहज़ादा ऐसे अनूठे तमाशे देखने के लिये एक वर्ष पर्य्यंत विष्णुगढ़ में रहा।

तदनंतर एक दिन सराय के पिछवाड़े, जिसमें वह रहता था, जाकर उस गलीचे को बिछाया और उसपर अपने सेवक समेत जिसको वह साथ लाया था बैठा। और मन में उसी सराय में पहुँचने की इच्छा की, जहाँ उसके भाइयों ने मिलने की प्रतिज्ञा की थी। इतना विचारते ही वह तत्काल वहाँ पहुँच गया। व्यापारियों के वेष में ही वहाँ ठहर कर अपने भाइयों के आने की राह देखने लगा।

शाहज़ादा अली जो हुसेन से छोटा था यात्रियों के एक समूह के साथ ईरान देश को सिधारा। चार महीने के उपरांत वह शीराज में, जो फ़ारस की राजधानी थी, पहुँचा। अन्य व्यापारियों के साथ, जिनसे अति प्रीति होगई थी, वह एक सराय में उतरा। अपने को रत्नपारखी प्रसिद्ध कर उनके साथ प्रीति-

पूर्वक रहने लगा। जब व्यापारियों ने लेन देन का उद्योग किया, तब शाहज़ादा भी अपने वस्त्र बदल वहाँ के बड़े बाज़ार में गया। वह बाज़ार सब पक्का था। सब दूकानें मंडपाकार गोल स्तंभों पर बनी हुई थीं। अली उस बाज़ार की सैरकर अचंभा करने लगा कि एक ही बाज़ार में करोड़ों रुपयों की वस्तुएँ हैं। नगर भर के द्रव्य का क्या हिसाब। दल्लाल प्रति वस्तु के नमूने दिखाते फिरते थे। उनमें से एक दल्लाल आधे गजकी लंबी और पौन गजकी चौड़ी दिव्य हाथीदाँत की दुरबीन हाथों में लिये हुये कहता फिरता है कि इस दूरबीन का मोल तीस हज़ार अशर्फ़ियाँ हैं। शाहज़ादा अली यह सुन विचारा कि यह दल्लाल विक्षिप्त होगा। तदनंतर शाहज़ादे ने एक दूकानदार से पूछा, "क्या यह दल्लाल विक्षिप्त है कि तीस हज़ार अशर्फ़ी एक हाथीदाँत की कहता फिरता है? भला कोई भी दीवाना होगा जो इस छोटी वस्तु को इतनी अशरफ़ियों पर मोल लेगा?" उस दूकानदार ने कहा, भाई यह दल्लाल और दल्लालों से अधिक चतुर और विश्वासित है। इसके द्वारा हज़ारों रुपयों का व्यवहार होता है। कलतक भलाचंगा था। आज का हाल मालूम नहीं कि विक्षिप्त हो गया हो। यदि वह इस दूरबीन की तीस हज़ार अशरफ़ी कहता है, तो वह अवश्य इसी मोलकी होगी। अभी इसका हाल मालूम हुआ जाता है। ज़रा यहाँ आने दो। तब तक आप मेरी दूकान पर ठहरिये। सो वह वहाँ ठहर गया। इतने में वह दल्लाल वहाँ पहुँचा। उस व्यापारी ने उसे निकट बुलाकर कहा कि इस दूरबीन का गुण कहो। क्योंकि बहुधा मनुष्य इसका मोल सुनकर आश्चर्य्य करते हैं। विशेष कर इसने

तुझे विक्षिप्त बनाया है। उसने उत्तर दिया कि आप इसका मोल सुनकर मुझे विक्षिप्त बनाते हैं जब मैं इसका गुण वर्णन करूँगा तो इसी समय इसको मोल ले लीजियेगा। आप ही नहीं नगर के और आदमी भी इसकी क़ीमत सुनकर हँसते हैं। फिर उसने वह दूरबीन अलीशाहज़ादे को दिखाकर कहा, "इसके देखने का प्रकार मैं तुमको बताता हूँ। इसके दोनों सिरों पर शीशे के दो टुकड़े लगे हुये हैं। तुम अपनी दृष्टि को उन दोनों शीशों के सामने करो। यद्यपि वह वस्तु हज़ार कोस पर क्यों न हो, पर वह इस भांति दिखाई देगी, जैसे तुम्हारे निकट रक्खी हुई हो।" शाहज़ादे ने कहा, "मुझे तेरे कहने का विश्वास नहीं। ज़बतक कि मैं इस दूरबीन की परीक्षा न ले लूं।" दल्लाल ने दूरबीन शाहज़ादे के हाथ में दी और देखने की विधि उसको बताकर कहा, "जिसको तुम देखना चाहो, अपने मनमें उसका सङ्कल्प कर, देखो। अली ने अपने पिता के देखने के विचार से दूरबीन को अपनी दृष्टि के सामने किया तो उसने अपने पिता को कुशलपूर्वक तख़्तपर बैठे देखा। फिर अपनी प्रिया नूरुन्‌निहार को भी देखा कि वह भी अपनी शय्या पर कुशलपूर्वक बैठी है और उसकी दासियाँ उसकी शय्याके चहुँओर हाथ बाँधे खड़ी हैं। इस अपूर्व दूरबीन को देख वह बहुत अचंभे में हुआ और मन में कहने लगा, यदि दश वर्ष पर्यंत देश-देश घूमता और ढूँढ़ता, तो भी इस विचित्र दूरबीनसी कोई वस्तु प्राप्त न होती। फिर उस दल्लाल से कहा, "वास्तव में जैसा तुमने इसका गुण कहा था, वैसा हमने पाया। तीस हज़ार अशरफ़ियाँ मुझसे लो।" दल्लाल ने कहा, "भाई, इसके स्वामी ने प्रण किया है

कि चालीस हज़ार अशरफ़ी से कम न लूँगा।" शाहज़ादे ने दल्लाल को सच्चा जान सराय में लेजाकर चालीसहज़ार अशरफ़ियाँ उसको गिन दीं। वह दूरबीन को, जो वास्तव में संसार, दर्शक थी, मोल लेकर अति प्रसन्न हुआ। समझा कि इस दूरबीन के कारण मुझे अवश्य नूरुन्निहार मिलेगी।

तदनंतर वह पारसदेश की सैर करने लगा। एक वर्ष के अनुमान वहाँ रह कर यात्रियों के साथ हिंदुस्तान को सिधारा। कुशलपूर्वक उसी सराय में पहुँचा, जहाँ हुसेन बैठा था। अब वह हुसेन के साथ रहने लगा।

तीसरा शाहज़ादा जिसका नाम अहमद था, अपने भाई से विदा होकर समरकंद की ओर गया। वहाँ जाकर एक सराय में उतरा। दूसरे दिन उस नगर के चौक में गया। वहाँ उसने एक दल्लाल को देखा कि वह सेब हाथ में लिये हुये कहता फिरता है कि यह सेब पैंतिस हज़ार अशरफ़ी को बिकता है। अहमद ने उसको निकट बुलाकर पूछा, "मुझको यह सेब दिखाओ और इसका गुण कहो। दल्लाल ने वह सेब अहमद को देकर कहा आप इसको देखिये और इसका इतना मोल सुनकर अचंभा मत कीजिये, इसके गुण सुनिये। मनुष्य कितना ही रोगी हो गया हो अथवा मृत्यु निकट पहुँचे, इसके सूंघते ही तत्काल आरोग्य हो जायगा। मानो उसे कदापि रोग न व्यापा था। तुरंत उसकी देह में बल आ जाता है। फिर जन्मभर रोगी न होगा। अहमद ने कहा, "जो यह सत्य है, तो मैं इसे इसी दाम पर मोल लेता हूँ।" दल्लाल ने कहा, "भाई इस बात को यहाँ के सब व्यापारी जानते हैं। यह सेब एक बड़े वैद्यने कई बूटियाँ और औषध मिलाकर कई

वर्ष परिश्रम करके बनाया था। ओषधियों की प्राप्ति के लिये उसने बहुतसा धन व्यय किया। सैकड़ों रोगियों को केवल सुँघाने से ही अच्छा किया; परंतु वह अकस्मात् कालवश हुआ और इस सेब को आप सूँघने न पाया। मरने के उपरांत कुछ भी द्रव्य न छोड़ा था। उसके परिवार में बहुत से असमर्थ बालक हैं। अब उसकी स्त्री ने लाचार होकर इस सेब को बेंचने के लिये निकाला है। दल्लाल की बातें सुनकर बहुत से मनुष्य एकत्र होगये। संयोगवश उस समूह में से एक मनुष्य ने आगे बढ़कर कहा कि मेरा मित्र बहुत काल से रोगी होगया है। अब वह अपने जीवन से निराश है। तुम चलके ज़रा यह सेब उसे सुँघा दो, तो मैं तुम्हारा बड़ा गुण मानूँगा। जन्मभर तुम्हारा यश बखानूँगा। अहमद ने यह बचन सुनकर दल्लाल से कहा, "जो वह रोगी इस सेब के सूँघने से नीरोग हो जायगा, तो अभी चालीस हज़ार अशरफ़ी दूँगा। उसने कहा, बहुत अच्छा, आप इसकी परीक्षा ले लीजिये। मैंने तो इसके द्वारा अनेक रोगियों को नीरोग किया है। निदान वह रोगी उस सेब के सुँघाते ही नीरोग हो गया। फिर अहमद ने चालीस हज़ार अशरफ़ियाँ उसको गिन दीं और वह सेब मोल लिया। अब इच्छा की कि जो कोई यात्री हिंदुस्तान जानेवाला मिले, उसके साथ यहाँ से चलूँ। जबतक न मिले, तबतक इधर उधर की सैर करूँ। कितने दिनों के बाद अहमद यात्रियों के साथ हिंदुस्तान को चला और कुछ काल में कुशलपूर्वक उसी सराय में जहाँ दोनों भाई उतरे थे, जा पहुँचा।

तीनों भाई परस्पर भेंट कर अत्यंत प्रसन्न हुये। ईश्वर का

धन्यवाद किया। हुसेन शाहज़ादे ने जो सबसे बड़ा था कहा; "अब हम अपनी अपनी यात्रा का हाल और अपनी वस्तु का हाल कहते हैं। उसका गुण भी वर्णन करते हैं। मैंने एक गलीचा जिस पर बैठा हूँ, मोल लिया है। यद्यपि यह प्रकट में कुछ वस्तु नहीं जँचती, पर इसमें बहुत बड़ा गुण है। जब कोई मनुष्य इस पर बैठकर किसी दूर वा निकट देश को जाने की इच्छा करे, तो उसी समय वह वहाँ पहुँच जाता है। मैंने इसे चालीस हज़ार अशरफ़ी में मोल लिया है। मैं इसी पर बैठके यहाँ आया हूँ। पाँच महीने से तुम्हारे आने की राह देखता हूँ, जिसका मन चाहे, परीक्षा ले ले।

जब हुसेन बड़ा शाहज़ादा कह चुका तो अली कहने लगा कि भाई सच है, तुम्हारी वस्तु अति अपूर्व है। फिर उसने हाथीदाँत की दूरबीन निकालकर दिखाया और कहा, "मैंने भी इसे इसी दाम पर मोल लिया है। इसका गुण यह है कि सैकड़ों कोसों की वस्तु इस प्रकार दिखाई देती है, जैसे कि सामने रक्खी है। जिसका मन चाहे परीक्षा लेले। मैं तुमको इसकी विधि बताता हूँ। हुसेन ने उस दूरबीन को लेकर जिस तरह से उसने उसे बताया था, नूरुल्‌निहार के देखने की इच्छा की। दूर से दोनों भाई उसकी ओर देख रहे थे कि देखें वह क्या कहता है। अकस्मात् उन्होंने देखा, उसके मुखका रंग बदल गया उसे चिंतायुक्त देखकर आश्चर्य में हुये। हुसेन ने कहा कि हम तीनों ने जो इतना परिश्रम नूरुल्निहार के लिये किया था सब वृथा हो गया। अब मैंने इसको देखा है, वह अत्यंत रोगी है, मृत्यु के निकट है। उसके चहुँओर दासियाँ और ख्वाजे खड़े हैं। यदि तुम भी

चाहो, तो उसका अंतिम दर्शन कर लो। शाहज़ादा अली ने भी देखा तो वही दशा पाई, फिर उसने वह दूरबीन अहमद को दी, तो उसने भी उसे उसी दशा में देखा। तब अपने भाइयों से कहा यद्यपि नूरुल्निहार पर हम सब मोहित हैं परंतु मैं उसे इसी समय नीरोग कर सक्ता हूँ। इतना कह उसने उसी सेब को जेब से निकाल कर उन दोनों को दिखाया और कहा यह भी ग़लीचे और दूरबीन के मोल से कम मोल का नहीं है। अब इसकी परीक्षा का यही समय है इसमें बड़ा गुण है। कोई मनुष्य चाहे, वह कैसा ही रोगी हो, इसके सूँघते ही आराम हो जाता है। पर इसी समय वहाँ पहुँचना चाहिए। हुसेन ने अहमद से कहा, यह कुछ कठिन नहीं। हम ग़लीचे पर बैठकर तत्काल ही नूरुल्निहार के समीप पहुँच सकते हैं। अब विलंब मत करो। मेरे साथ तुम दोनों बैठ जावो कि बातकी बात में वहाँ पहुँच जायँ। सब सेवकों को यहीं छोड़ो। पीछे से वहाँ पहुँचते रहेंगे।

वे तीनों उसी ग़लीचे पर बैठे और सबने पहुँचने की इच्छा की। तत्काल ही वे सब नुरुलनिहार के समीप पहुँच गये। सेवक उनको देखकर डर गये। कहने लगे कि यह तीन मनुष्य क्योंकर यहाँ घुस आये। पहिले उन्होंने चाहा कि उनको मार-कर निकाल दें। फिर पहिचानकर आश्चर्य में हुये। सबसे पहिले शाहज़ादा अहमद ने आगे बढ़कर वह औषधमयी सेब नूरुल्-निहार को सुँघाया। थोड़ी ही देर में उसने अपने नेत्र खोल दिये। अपना मुख इधर-उधर फेरकर उन सबको देख; फिर अपनी शय्या से उठके वस्त्र माँगे और यह समझी कि सोकर

अभी उठी हूँ। इतने में दासियों ने उससे कहा, "यह तीनों तेरे चचेरे भाई अभी आये हैं। अहमद ने तुम्हें कोई वस्तु सुँघाकर अच्छा किया है। वह उनको देखकर अति प्रसन्न हुई और अहमद्का गुण माना और तीनों शाहज़ादे भी उसके आरोग्य होने से प्रसन्न हुये। तदनन्तर नूरुल्निहार से विदा होकर बादशाह के समीप गये।

उनके पहुँचने के प्रथम सेवक सब वृत्तान्त कहचुके थे। बादशाह ने उठके सबको प्रीतिपूर्वक अपने कंठ से लगाया। नूरुल्निहार को इन शाहज़ादों के द्वारा नीरोग होने से अति आश्चर्य किया। तदनन्तर उन्होंने अपनी-अपनी वस्तु बादशाह को दी। उनके गुण वर्णन किये और कहा, इन तीनों वस्तुओं को देखकर जो सबसे उत्तम और विचित्र हो अपने प्रण के अनुसार उसके लानेवाले को नूरुल्निहार से विवाह कर दीजिये। यह सुन बादशाह अति चिंता करने लगा और मनमें सोचा, यदि मैं नूरुल्निहार को अहमद्को विवाह दूँ तो औरों पर अन्याय होगा। जो अलीके निकट दूरबीन न होती, तो क्योंकर उसके बीमार होनेका हाल विदित होता। इसी प्रकार जो हुसेन का गलीचा न होता, तो किस प्रकार से नूरुल्निहार के समीप पहुँचते। और उसको आरोग्य करते, मेरे विचार में तीनों की वस्तु तुल्य है। यदि एक वस्तु न होती, तो उसका अच्छा होना असंभव था। फिर भी इसका निर्णय न हुआ। अभी वही कठिनता है। मैं चाहता हूँ कि आज कोई दूसरा उपाय विचारकर उसमें जिसको श्रेष्ठ पाऊँ, उसे नूरुल्निहार को ब्याह दूँ। इतना सोचकर वह उनसे कहने लगा, "तुम तीनों भाई घोड़ों पर सवार हो, अपने साथ

धनुषबाण लेकर अमुक मैदान में घुड़दौड़ के लिये जाओ। मैं भी अपने सभासदों सहित आता हूँ। तुम तीनों भाई मेरे सामने एक २ तीर फेंको। जिसका तीर दूर जायगा, उसीको नूरुल्-निहार मिलेगी।"

वह सब अपने पिता की आज्ञानुकूल उसी मैदान में गये। बादशाह भी उन विचित्र वस्तुओं को कोष में भिजवाकर वहाँ पहुँचा। पहिले हुसेन ने जो सबसे बड़ा था तीर छोड़ा फिर अली ने। इसका तीर थोड़ी दूर आगे गया। इसके बाद अहमद ने तीर चलाया पर उसका तीर किसी को दृष्टि न पड़ा कि वह कहाँ गिरा। निदान सबने यही विचारा कि वह तीर या तो इतनी दूर गया कि किसी को दिखाई नहीं दिया अथवा अहमद के हाथ में ही रह गया। बादशाहने इस बात का अधिक विचार न करके अली के साथ नूरुल्निहार का विवाह ठहराया। कुछ दिनके बाद बड़ी धूमधाम से विवाह कर दिया पर हुसेन शाहजादा डाह से उस समाज में शामिल न हुआ; क्योंकि वह और भाइयों की अपेक्षा नूरुल्निहार से बहुत प्रीति करता था। लज्जा से उसने योगियों के सदृश गेरुवे वस्त्र पहिने और संसार की मायामोह जो सदा स्थिर नहीं रहती, परित्याग किया। अहमद को भी बड़ी डाह उपजी। लज्जा के कारण वह भी विवाह में न गया; पर योगी का वेष धारण न किया। सदैव अपने तीर को ढूँढ़ता रहता था। एक दिन वह अकेला उस तीर के ढूँढ़ने के लिये चला और वहाँसे सीधा दाहिने-बायें देखता हुआ आगे बढ़ा और कई बड़े २ पर्वतों के शिखरों पर ढूँढ़ने लगा, तो उसे एक बड़े टीले पर पड़ा हुआ पाया। आश्चर्य में होकर मनमें विचारने लगा कि

तीर का इतनी दूर आना असंभव है। उस तीर को देखकर वह अचंभे में हुआ कि वह पत्थर पर चिपका हुआ है। उसने विचारा कि इसमें कोई भेद अवश्य है। आगे बढ़कर उसी शिखर पर एक कंदरा में गया। थोड़ी दूर जाकर उसे एक लोहे का दरवाज़ा दृष्टि पड़ा। उसके भीतर जाकर उसने कुछ ढलाव पाया, जिसमें वह तीर समेत चला और समझा कि यहाँ अधिक अँधियारा होगा; पर वहाँ दिव्य उजियारा था और वहाँ से पचास-साठ क़दम पर बड़ा सुंदर और विशाल भवन था। उसमें उसने देखा कि एक अति रूपवती स्त्री राजसी ठाठ से स्वच्छ वस्त्र आभूषणों से अलंकृत अपनी अनुचरियों के मध्यमें धीरे-धीरे द्वार की ओर चली आती है। शाहज़ादा उसे प्रणाम करने लगा। उसने आप ही निकट आकर अत्यंत प्रीति और मीठी वाणीसे आगत-स्वागत और शिष्टाचार कर कहा, "हे अहमद! कुशल से तो हो?" शाहज़ादा अपना नाम सुन आश्चर्य में हुआ कि यह मृगनयनी जिससे मेरी कभी भी भेंट नहीं, मेरा नाम कैसे जानती है। फिर उसके चरणों को छूकर कहा, "हे मृगनयनी! मैं तुम्हारे सत्कार करने से गुण मानता हूँ। पर आश्चर्य में हूँ कि तुमने मेरा नाम कैसे जाना।" उसने कहा, "अब हम और तुम बारहदरी में चलके आनंद भोगें। वहाँ पहुँचकर तुम्हारे प्रश्नका उत्तर दूँगी।" इतना कहकर वह चंद्रमुखी शाहज़ादे को अपने साथ लेकर बारहदरी में गई। शाहज़ादा वहाँ पहुँचकर उसको देखने लगा। उसके सुनहली गोल मंडपाकार गुंबज़ पर लाजवर्द से चित्रकारियाँ थीं और नाना भाँति की दिव्य सामग्री से अलंकृत देख आश्चर्य में हुआ। इससे परीने कहा यह मकान और

मकानों से तुच्छ है। जब उनको देखोगे, तो अति प्रसन्न होगे। फिर अहमद को अपने निकट बैठाकर कहने लगी, "तुम मुझको नहीं जानते, पर मैं तुमको भलीभाँति जानती हूँ। अब मैं अपने कुल का हाल कहती हूँ, सुनो। तुमने पुस्तकों में पढ़ा होगा कि धरती पर कहीं जिन्न भी रहते हैं। मैं एक बड़े प्रतिष्ठित जिन्न की पुत्री हूँ, मेरा नाम परीबानू है। अब तुम अपने पिता का वृत्तान्त मुझसे सुनो। नूरुल्‌निहार तुम्हारी चचेरी बहिन है, तुम तीन भाई हो। प्रत्येक को यह इच्छा थी कि नूरुल्‌निहार मुझे मिले। तुम तीनों ने अपने पिता की आज्ञा के अनुकूल बहुत दूर की यात्रा की और समरकंद में जाकर औषधियों का सेब, जिसका कारण मैं हुई, लाये। तुम्हारा बड़ा भाई विष्णुगढ़ में जाकर ग़लीचा लाया और अली हाथीदाँत की दूरबीन। बस, इतना वर्णन बहुत है। मैं तुम्हारे पूरे हाल को जानती हूँ। अब तुम सत्य कहो, मैं अच्छी हूँ या अब भी नूरुल्‌निहार के साथ तुम्हारा मन विवाह को चाहता है? जब तुमने तीर फेंकने का इरादा किया था, उस समय मैंने विचारा कि तुम्हारा तीर हुसेन से आगे न जावेगा सो तुम्हारे छोड़ते ही मैंने उसे वायु में पकड़ा और दृष्टि बंदकर इस शिखर पर डाल दिया इसलिये कि तुम उसे अवश्य ढूँढ़ने आओगे और इसी बहाने मेरी तुमसे भेंट होगी। जब वह इतना हाल कह चुकी, तो प्रीति की दृष्टि से उसने अहमद को देखा और लज्जित होकर नयन नीचे कर लिये।

शाहज़ादा ये सब बातें सुनकर अति प्रसन्न हुआ। यह तो वह जानता था कि अब नूरुल्‌निहार किसी भाँति नहीं मिल सकी। परीबानू भी अति सुन्दरी है। उसके सुंदर मनहरण रूप

को देखते ही वह मोहित हो गया। नूरुल्निहार की प्रीति भूल गया। निदान उस सुंदरी को अति संतुष्ट पाकर कहने लगा, "अब मेरी यही इच्छा है कि जन्म भर तुम्हारी सेवा में रहूँ। मैं मनुष्य हूँ और तुम जिन्न की पुत्री हो। तुम्हारे गुरुजन इस संबंध को क्योंकर स्वीकार करेंगे।" उसने कहा, 'मैं इस विषय में स्वाधीन हूँ, जिसके साथ चाहूँ अपना विवाह कर लूँ। पर जो तुमने कहा कि मैं तुम्हारी सेवामें रहूँ, यह अनुचित है। तुम मेरे पति हो तथा इन वस्तुओं और भवनादि के स्वामी हो। मुझे ही अपनी दासी समझो। मुझे तुम्हारे साथ विवाह की अति लालसा है। मुझे तुम्हारी बुद्धि और प्रवीणता से पूरी आशा है कि तुम इस बातसे इन्कार न करोगे। मैं तो कहचुकी कि मैं स्वाधीन हूँ। हमारे कुलमें यह रीति है कि तरुण अवस्था में हरएक परी जिन्न अथवा मनुष्य में जिसपर उसका मन लोभायमान हो, उसके साथ अपना विवाह कर ले। इससे जन्मभर स्त्री-पुरुष में परस्पर प्रीति रहती है।"

जब बानूपरी ने ये सब बातें कहीं, तब शाहज़ादा उसके उत्तर में अत्यन्त कृतकृत्य होकर उसके वस्त्र को झुककर चूमने लगा, पर बानूपरी ने उसे झुकने न दिया और उसके पलटे अपना हाथ दिया, जिसे शाहज़ादे ने अति प्रीति से वहाँ की रीति के अनुकूल चूमा और अपने नेत्र और हृदय में लगाया। बानू ने मुसकरा के कहा, अब इस हाथ पकड़ने की लाज रखकर विश्वासघात मत करना, इसी बात पर मैं भी स्थिर हूँ। अहमद ने कहा, "उस मनुष्य की जो तुम पर मोहित हो, क्योंकर प्रीति भंग हो सकी है? मैंने अपने को तुम्हें सौंपा। जैसा तुम्हारा मन

चाहे करो।" उसने कहा, "तुम मेरे पति हो और मैं तुम्हारी भार्या।" यही प्रण जो परस्पर हुआ है, विवाह है। जो कुछ रीतें विवाह की होती हैं, सब व्यर्थ हैं। अब हम तुम संध्या को एक दिव्य भवन में आनंद भोगेंगे, जिसको देखकर तुम अति प्रसन्न होगे। फिर दासियाँ नाना प्रकार के दिव्य व्यंजन लाईं और उन दोनों ने भोजन किया उसके बाद शराब उड़ी। जब निश्चिन्त हुये तब बानूपरी शाहज़ादा को अपने मुख्य भवन में ले गई, जो उसके सोने का था। वहाँ शाहज़ादा हर जगह रत्नों के ढेर देख बड़ा विस्मित हुआ और बानू से कहने लगा कि ऐसा स्वच्छ भवन और यह अलभ्य सामग्री संसार भर में न होगी। उसने कहा, "तुम मेरा निवासस्थान देखकर इसकी इतनी प्रशंसा करते हो। यदि जिन्नों के घर देखोगे, तो क्या कहोगे। मेरे बाग़ को भी देखकर तुम अति हर्षित होगे पर अब उसके देखने का समय नहीं रहा।" फिर वह उसे और मकान में ले गई जहाँ वह रात्रि में भोजन करती थी। उसकी सजावट भी औरों से कम न थी। उसमें सैकड़ों सुगन्धित दीपक उचित उचित स्थानों पर प्रकाशित थे। बिल्लौर के बरतन, जिनमें बहुतरत्न जड़े थे, अति सुन्दर गुलदस्ते और अनेक भाँति के दिव्य पात्र धरे हुये थे। कई गानेवाली स्त्रियाँ जो अति उत्तम वस्त्र पहिने हुये थीं, मीठीवाणी से गान करने लगीं। फिर वे दोनों भोजन करने लगे। बानूपरी दिव्य और स्वादिष्ठ भोजन अपने हाथ से उठाकर अहमद के आगे रखती और उन पदार्थों का नाम उसे बतलाकर शाहज़ादे को चखाती। जो जो पाक अहमद ने कदापि नहीं खाये थे उनके बनाने की विधि बतलाती।

इसके उपरांत उन्होंने मद्यपान किया और मिठाई और फलादिक खाये। जब इससे भी निश्चिंत हुये, वे दोनों एक बड़े दालान में जिसमें अच्छी मसनद और सुनहरे तकिये रक्खे हुये थे, जाकर बैठे। उनके विराजमान होते ही बहुतसी परियाँ वहाँ आईं और विचित्र नृत्य और मीठे स्वरों से गाने लगीं। वे दोनों उनके अद्भुत गाने से अति प्रसन्न हुये और वहाँ से उठकर दूसरे मकान में गये। वहाँ रत्नजटित छपरखट था और सब बराती वहाँ से छिन्नभिन्न होकर इधर उधर चले गये कि दूलह दुलहन आराम करें। कई दिन इसी भाँति आनंद मंगल रहा। यदि अहमद शाहज़ादा हज़ारों वर्ष मनुष्यों में रहता तो भी ऐसा आनंद न देखता। निदान छः महीने तक उस परी के साथ अनेक भाँति के सुखों को भोगता रहा और उसका मोह उसके मनमें ऐसा समाया कि उसके देखे बिना उसे क्षणमात्र चैन न पड़ती। इसी भाँति बानूपरी भी उसकी प्रीतिसागर में मग्न थी। प्रतिक्षण उसी ... शिष्टाचार और आदर में रहती। अहमद उस प्रीति में अपने कुटुंब को भूल गया; पर कभी २ उसे पिता के दर्शनकी लालसा होती और इच्छा उपजती कि किसी प्रकार अपने पिताकी कुशल मालूम करें। यह संभव न था कि अपनी प्रिया की आज्ञा बिना जावे। निदान एक दिन उसने बानू से इस बात के लिये आज्ञा माँगी कि यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो मैं अपने पिताके दर्शन कर आऊँ। बानूपरी को इस विचार से कि शाहज़ादा यहाँ से बहाना करके जाना चाहता है अति चिंता में हुई और उससे कहने लगी, "तुमने मुझसे पहिले क्या प्रतिज्ञा की थी, अब उसके विपरीत किया चाहते हो। जान पड़ता है कि

तुम्हारे हृदय से मेरी प्रीति उठ गई है।" अहमद ने उत्तर दिया, "मेरा प्रयोजन यह नहीं कि यहाँ से उदास होकर चला जाऊँ और फिर न आऊँ। मेरे बुड्ढे पिता को मेरे वियोग से अति-दुःख हुआ होगा। यदि तुम्हारी आज्ञा हो, तो दर्शन करके शीघ्र तुम्हारी सेवा में आऊँ। कोई बात तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कदापि न होगी; किंतु मेरी ईश्वर से यह प्रार्थना है कि जन्मभर तुम्हारी सेवा में रहूँ।"

इस प्रकार की बातों से उसे प्रसन्न किया। उसे विदित हुआ कि शाहज़ादा भी मुझे बहुत ही चाहता है फिर उसे आज्ञा दी, "जाओ अपने पिता के दर्शन करके शीघ्र लौट आना, अधिक न ठहरना।"

हिंदुस्तान के बादशाह ने विधिपूर्वक अली शाहज़ादे का नूरुन्निहार से विवाह कर दिया। उस दिनसे हुसेन और अहमद को न देखकर अति शोक में रहा करता था। एक दिन उसने दोनों का हाल पूछा सभासदों ने विनय किया कि हुसेन तो योगी-वेष धारणकर तपस्या करता है और अहमद शाहज़ादा किसी ओर को निकलगया। बादशाह ने यह बात सुनकर अहमद के ढूँढ़ने के लिये अपने गुमाश्तों को पत्र लिखे कि जहाँ कहीं उसको पाओ, सम्मानपूर्वक मेरे निकट लाओ। बहुत ढूँढ़ने पर भी उसे न पाया। निदान जब सब सभासदों ने बादशाह को अहमद के खोजाने से बहुत विकल पाया, तो इस विषय में अति चिंता करने लगे। एक को स्मरण हुआ कि इस नगर में एक अति चतुर जादूगरनी है। उसको बादशाह के पास लाकर उसकी प्रशंसा की और विनय किया कि आप उसको बुलवाकर शाहज़ादे

का हाल पूछे। बादशाह ने कहा, "अच्छा, तुम उसे अपने साथ लेते आना।" निदान वह जादूगरनी आई। बादशाहने उससे कहा, "जबसे मैंने अली अपने कुँवरका नूरुलूनिहार से विवाह कर दिया है, तब से अहमद का कुछ पता नहीं लगा। तू अपने जादू के बलसे उसका हाल मालूम करके मुझसे कह कि जीता है वा नहीं। यदि जीता है तो कहाँ है? किस देश में है? उससे मेरी भेंट होगी वा नहीं?" उसने उत्तर दिया, "मैं आपके प्रश्न का उत्तर इसी समय नहीं देसक्ती। यदि आज सावकाश मिले तो कल मैं ठीक २ इसका उत्तर दूँगी।" बादशाह ने कहा, "यदि तू मेरे प्रश्न का उत्तर देगी तो मैं तुझे बहुत कुछ दूँगा।" दूसरे दिन प्रभात को वह जादूगरनी बादशाह के निकट आई और विनय किया, मैंने अपनी जादूकी विद्या से मालूम किया है कि अहमद जीता है। इस समय इस बात के सिवा और कुछ नहीं बतला सक्ती कि वह कहाँ है। बादशाह यह बात सुन अति प्रसन्न हुआ और उसे उसके मिलने की आशा हुई।

जब अहमद परीबानू से आज्ञा लेचुका, तो परीबानू ने उससे कहा, "मेरे इस उपदेश को मत भूलना कि अपने पिता और निवासियों से अपने विवाह के सिवाय किसी विचित्र वस्तु का वर्णन मत करना, केवल अपने पिता के धैर्य के लिये यही कहना कि वहाँ अति प्रसन्नता से रहता हूँ, आपके दर्शन के निमित्त आया हूँ। इतना कह बानूपरी ने यात्राकी तय्यारी की आज्ञा दी। जब सामग्री तय्यार होचुकी तो बीस सवार उसके साथ किये और दिव्य घोड़ा जो अति उत्तम रत्नों की सामग्री से सजा था, शाहज़ादे के चढ़ने को दिया। उसे

कंठ से लगाकर बिदा किया और शाहज़ादा बिदा होते समय उस प्रतिज्ञा को दृढ़ कर घोड़े पर सवार हुआ। बीस सवारों सहित जो जिन्न थे, बड़ी धूमधाम से नगर की ओर चला। शाहीमहल पास ही था, क्षणमात्र में पहुँच गये। बादशाह के सब सभासद और नगरनिवासी अहमद को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुये। निज काज तज झुक २ कर प्रणाम करने और आशीर्वाद देने लगे, उसके साथ, बादशाही महल तक गए। शाहज़ादा सभा में उतर अपने पिताके चरणों पर जा गिरा। बादशाह ने खड़े होकर उसे अपने हृदय से लगाया और बहुत प्यार किया और कहने लगा, "हे पुत्र! तुम नूरुन्निहार से निराश होकर ऐसे गुप्त होगये कि बहुत ढूँढ़ने पर भी तुम्हारा ठिकाना न लगा। मैं तुम्हारे वियोग में इस दशा को प्राप्त हुआ हूँ, इतने कालतक कहाँ थे? किस भाँति कालक्षेप किया? अहमद ने बिनती की कि जबसे नूरुन्निहार विवाही गई मुझे अति खेद प्राप्त हुआ। आपको भलीभाँति स्मरण होगा कि जिस दिन हम तीनों भाइयों ने आपकी आज्ञानुसार तीर चलाया, बड़ा मैदान होने पर भी, मेरा तीर दृष्टि से लुप्त होगया सो मैं उसी चिंता में अपना तीर ढूँढ़ते २ अकेला निकल गया और दाहिने बाँयें इधर उधर ढूँढ़ने लगा; पर वह तीर कहीं न दीखा। फिर उसको ढूँढ़ते २ दूर निकल गया और निराश होकर मनमें विचारने लगा, इतनी दूर मेरा तीर काहे को आया होगा। किंतु तीर चलानेवाले का भी तीर यहाँ नहीं आसक्ता। निदान इसी चिंता में मैंने अपने तीर को एक ऊँचे पर्वत के शिखर पर जो यहाँ से अनुमानतः चार कोस के है, पाया। फिर मनमें सोचा कि

तीर का इतनी दूर आना विना किसी भेदके नहीं है। यह सोच वहाँ से ऐसे स्थान पर पहुँचा, जहाँ मैं अबतक अति आनंद से रहा इससे अधिक नहीं कह सक्ता। केवल आपको धैर्य देने के लिये यहाँ आया हूँ। अब मुझे आज्ञा हो तो फिर मैं वहाँ जाऊँ। कभी कभी आपके दर्शन को आया करूँगा। बादशाह ने कहा, मैंने प्रसन्नता से आज्ञा दी और मुझे भरोसा हुआ कि तुम आनंदपूर्वक मेरे नगर के पास रहते हो। यदि तुम्हारे आने में कुछ देर हुई तो मैं किस भाँति तेरे कुशलका समाचार पाया करूँगा। अहमदने विनय की, "आप चाहते हैं कि मेरे भेदको मालूम करें। मैं तो पहिलेही विनय कर चुका हूँ, जो कुछ मैंने कहा, इससे अधिक वर्णन नहीं कर सक्ता। आप धैर्य रखिये। मैं अक्सर आया करूँगा।" बादशाह ने कहा, "बेटा मेरा प्रयोजन तो केवल यही है कि तुम्हारा समाचार मालूम हुआ करे। मुझे तुम्हारे भेदके पूछने की कुछ आवश्यकता नहीं। अब मैंने तुझको बिदा किया कि यहाँ शीघ्र आकर मुझसे मिल जाना।"

अहमद तीन दिनतक वहाँ रहा। चौथे दिन भोर को वहाँ से बिदा हुआ और अपनी प्रिया के निकट पहुँचा। वह उसके जल्दी लौट आने से अति प्रसन्न हुई। फिर दोनों प्रिया और प्रियतम अत्यंत प्रीति और सम्मानपूर्वक अनेक भाँति के भोग और विलास करने लगे। जब एक महीना बीता और शाहज़ादा अपने पिता के दर्शन को न गया तो उसकी प्रिया ने कहा कि तुमने पूर्व में कहा था कि मासके प्रारंभ में अपने पिता के निकट जाऊँगा सो अब क्यों नहीं जाते हो? तुम्हारा पिता तुम्हारी रास्ता देखता होगा। शाहज़ादे ने कहा, "सत्य है, पर

आपकी आज्ञा बिना मैंने वहाँ का उद्योग नहीं किया।" उसने कहा, "प्यारे तुम मेरी आज्ञा पर मत रहो, महीने के आदि में तुम मेरे पूछे बिना भेंट कर आया करो।" सो शाहज़ादा दूसरे दिन प्रभात को बड़ी धूम धाम से अपने पिताके पास गया। फिर तो उसने एक नियम कर लिया कि प्रति मास के आरंभ में अपने पिता के पास जाकर और वहाँ तीन दिन रहकर चौथे दिन चला आता। दिन पर दिन उसके साथ धूमधाम अधिक होती जाती थी। अंतको एक दिन एक प्रधान जो बादशाह के मुँह लगा था, शाहज़ादे की सवारी की धूम अधिक देख विस्मित हुआ और शोचने लगा कि शाहज़ादे का हाल कुछ जाना नहीं जाता कि कहाँ रहता है। यह ऐश्वर्य इसको कहाँ से प्राप्त हुआ? उसने ईर्षा से बादशाह को बहकाकर कहा, "तुम अपने पुत्र से अचेत हो। यह नहीं देखते कि उसका ऐश्वर्य दिन २ बढ़ता जाता है। ऐसा न हो, जो आपको मौका पाकर दुःख दे और क़ैदखाने में डालकर आपका तख़्त छीन ले। जब से तुमने नूरुन्निहार को अली से व्याह दिया, तब से हुसेन और यह अर्थात् अहमद अत्यंत अप्रसन्न हैं। यहाँ तक कि एक ने संसार को ही त्याग दिया और दूसरा अहमद है सो वह भी बड़ा तेजस्वी है। ऐसा न हो कि आपसे वह बदला ले।"

बादशाह बड़ा निर्बुद्धि था, उस प्रधान के छलमें आगया और अहमद के रहने का स्थान खोजने लगा। एक दिन वज़ीर के पूछे बिना, जो अहमद का हितैषी था, उसी जादूगरनी को चोर दरवाज़े से निज शयनस्थान में ले जाकर उससे कहा, "जैसे तूने

अपनी विद्या से कहा था कि अहमद जीता है, उस बात को यथार्थ पाकर मुझे तेरा विश्वास हुआ। अब यह इच्छा है कि उसका कुछ और भी वृत्तांत वर्णन कर। यद्यपि वह प्रकट होकर प्रति मास मेरी भेंट को आता है; पर अबतक मैं उसके रहने की जगह को नहीं जानता। मैं इस बात को उससे अधिक पूछ भी नहीं सक्ता। अब तू मेरे सेवकों से छिपकर उसके रहनेकी जगह मालूम कर। आजकल वह नियम के अनुकूल आया हुआ है। मुझसे पूछे विना थोड़ी दूर आगे जाकर वह गुप्त हो जायगा। आज तू मार्ग में ऐसे स्थानपर छिपकर बैठ, जिससे उसके जाने का हाल मालूम होजाय, फिर आकर मुझे बताना।"

वह बादशाह से विदा होकर वहाँ गई, जहाँ अहमदने अपना तीर पाया था। एक कंदरा में छिपकर अहमद के आगमन की बाट देखती रही। अहमद सबेरे उठकर नगर से गया। जब उस गुफ़ाके समीप पहुँचा तो जादूगरनी ने क्या देखा कि वह और उसके सेवक बड़े बड़े टीलों और शिखरों पर चढ़कर दूसरी दिशा को जाते हैं। वह ऐसा भयानक स्थान है कि कोई मनुष्य सवार अथवा पैदल वहाँ नहीं जा सक्ता। उसने सोचा कि उन शिखरों के दूसरी ओर कोई विशाल कंदरा है, जिसमें जिन्न और राक्षस आदि निवास करते हैं। वह इसी विचार में थी, अकस्मात् शाहज़ादा अपने सेवकों सहित वहाँ से गुप्त हो गया। फिर वह जादूगरनी उस गुफ़ासे बाहर निकली और चारों ओर दूर दूर, अपनी सामर्थ्य भर फिरी; पर पता न लगा। वह लोहेका द्वार भी उसे न मिला; क्योंकि वह द्वार और भवन उस मनुष्य के सिवाय, जिसको बानू अप्सरा चाहती थी, दूसरे को न मिलता था। उस जादूगरनी

ने मनमें कहा, मैंने इतना परिश्रम व्यर्थ किया। जिस कामके लिये आई थी, वह भी न हुआ। फिर बादशाह के पास गई और वहाँ का संपूर्ण वृत्तांत कह सुनाया। उसने कहा; "मैंने उसके निवास के ढूँढ़ने के लिये बहुतसा श्रम किया; पर कुछ लाभ न हुआ। यदि मुझे आप सावकाश दीजिये तो फिर जाकर जिस भाँति होसके, मालूम करूँ।" बादशाहने उसे आज्ञा देकर कहा, चाहे जिस प्रकार उसका पता लगा। मैं तेरे आनेकी बाट देखता रहूँगा। इतना कहकर बादशाह ने एक हीरे का बहुमूल्य बड़ा टुकड़ा उसे देकर बिदा किया और कहने लगा, "जिस दिन उस बात को मुझे सुनावेगी, मैं तुझको अति प्रसन्न करूँगा।"

वह जादूगरनी अपने घर में बैठकर अहमद के आगमन की बाट देखने लगी; क्योंकि उसे मालूम था कि शाहज़ादा प्रति मास के आरंभ में एक बेर अपने पिता की भेंट को आया करता है। निदान जब महीने के बीतने में एक दिन शेष रहा, तो वह उसी शिखर पर सीढ़ी के समीप बैठ रही। दूसरे दिन जब शाहज़ादा अपने सेवकों समेत जो उसके साथ सदा रहा करते थे, उसी लोहे के द्वारे से उसी जादूगरनी के निकट होकर निकला, तो उसे गुदड़ी ओढ़े हुये देखकर समझा कि यह कोई शिला फूटकर गिरी है, पर जब उस जादूगरनी ने अहमद को अपने निकट चलते देखा, तब वह रोने लगी। जैसे कोई दुखिया किसी से सहायता की इच्छा करे। अहमद को उसके रोने पर अति दया उपजी और खड़े होकर सैन से पूछा, "तू क्या कहती है?" वह जादूगरनी जो बड़ी धूर्ता और चतुरा थी, अधिक विलाप करने लगी। शाहज़ादे को उसपर अधिक दया आई। जब उस-

ने शाहज़ादे की अपने ऊपर अधिक कृपा पाई तब ठंढी श्वास भर धीरे धीरे कहा, "मैं अपने घर से किसी आवश्यक कार्य के लिये अमुक ग्राम को जाती थी। अकस्मात् मुझे ज्वर और शीत बड़े वेगसे आया, जिससे मेरी शक्ति जाती रही और बेहोश होकर गिरपड़ी।" शाहज़ादे ने कहा, "कोई ऐसा स्थान नहीं, जहाँ पर तुझको भिजवाऊँ; पर एक मकान पासही है जो तू कहे तो तुझे वहाँ भिजवा दूँ। वहाँ तू शीघ्र नीरोग हो जायगी। तू उठकर मेरे पास आ।" उस दुष्टा ने एक और श्वास भरकर कहा कि मैं ऐसी निर्बल होगई हूँ कि उठ नहीं सकी। तब शाहज़ादे ने एक सवार से कहा, "इस वृद्धा को अपने घोड़े पर चढ़ा ले।" उसने तुरंत उसको अपने घोड़ेपर बैठा लिया और अहमद वहाँ से लौटकर लोहे के द्वारपर गया। भवन में प्रवेशकर अपनी प्यारी को बुलावाया। वह उसके पास आई और उसने पूछा "कुशल तो है? तुम क्यों मार्ग से लौट आये? मुझे क्यों बुलवाया?" उसने वृद्धा का वृत्तांत वर्णन किया कि मार्ग में इसे मैंने बीमार पाया और दया से इसको अपने साथ लाया हूँ अब तुम इसको यहीं रक्खो और इसकी औषधि करो। बानू अप्सरा ने अपनी अनुचरियों से कहा, इसे लेकर किसी अच्छे स्थान में रक्खो और इसकी औषध करो। जब वे उसे लेगई, तो बानू अप्सरा ने उससे कहा, "हे प्राणप्यारे! मैं तुम्हारी दयालु प्रकृति से अति प्रसन्न हूँ। तुम्हारे कहने के अनुसार उसकी सुधि लेती रहूँगी; पर मुझे डर है कि ऐसा न हो कि तुमको भलाई के पलटे बुराई मिले; क्योंकि मैं इस वृद्धा को ऐसा रोगयुक्त नहीं पाती, जिससे वह इस दशा को प्राप्त हो। मुझे मालूम होता है

कि तुम्हारे किसी वैरीने तुम से छल किया है। अच्छा, अब तुम सिधारो।" अहमद ने यह सुन कहा, हे मेरी प्यारी! ईश्वर तुम को जीता रक्खे, तुम्हारी कृपा से मुझे कोई दुःख न देगा। मुझे भली भाँति मालूम है कि मेरा कोई वैरी नहीं है। मैं सबके साथ भलाई करता हूँ, इससे किसी से बुराई की आशा नहीं। इतना कहकर वह बिदा हुआ और अपने पिता के मंदिर में पहुँचा। बादशाह जो प्रधान के बहकाने से भय मानता था, जाकर भेंट की।

वे लौंड़ियाँ जो उस वृद्धा की सेवा के निमित्त नियत थीं, उसे एक दिव्य भवन में लेगईं, जो अति उत्तम सामग्री से अलंकृत था। एक सुंदरी शय्या पर उसे लिटा दिया, एक दासी उसके पास बैठी और दूसरी शीघ्रही उठकर चीनी के पात्र में एक अर्क लाई, जो ज्वरका हटानेवाला था। फिर उन दोनों ने उसे पकड़कर बैठा दिया और कहा, इसको पी जा। इसके पीने से किसी भाँति का रोग शरीर में नहीं रहता। जादूगरनी वह औषध लेकर पी गई और फिर लेट गई। उन्होंने उसे लिहाफ़ ओढ़ाकर कहा, सो रह। थोड़े ही काल में तू नीरोग हो जायगी। उसने यह छल केवल इसी लिये किया था कि अहमद का वासस्थान मालूम पड़े। जब उसे भलीभाँति विदित होगया, तो वह उठकर बैठी और उन दासियों से उसने कहा, "मुझे उस औषध के पान करने से शरीर भर में पसीना छूटा, अब मैं निपट नीरोग होगई और मेरी देह में बल भी आगया। अब यही समाचार अपनी स्वामिनी से जाय कहो कि मैं उसके पास जाऊँ और उनसे बिदा होकर अपने घरको सिधारूँ। फिर वे जादूगरनी को हर एक

मकान दिखाती हुई, उस बारादरी में लेगई, जो अति सुंदर और दिव्य वस्तुओं से सजी थी। वहाँ उसने उस परी को दिव्य तख़्त पर विराजमान देखा, जो उत्तम २ हीरे और मणियों से जटित था, उसके चारों ओर सुंदर २ दासियाँ थीं। जादूगरनी उस अति सुंदर भवन को देख अति विस्मित हुई। बानूके भय से कोई मुखसे वचन न निकाला। तब वह उसके चरणों में गिर पड़ी। बानू परीने उसे भरोसा देकर कहा, "हे वृद्धा! तेरे यहाँ आने से मैं प्रसन्न हुई, तुम मेरे महल को भली भाँति देखो। मेरी दासियाँ सब दिखावेंगी। तब जादूगरनी उसके नीचे की धरती को चूम, बिदा हुई, फिर वह भवनके हर एक महल को देखभाल वहाँ से चली। दासियों ने उसे लोहके द्वार से बाहर लेजाकर जहाँ से अहमद उसे लाया था, छोड़ दिया और कहा, अब तू अपने घर जा। वह आगे बढ़ी, पर थोड़ी दूर जा उसने लोहे के द्वारको देखना चाहा कि उसे पहिंचान रक्खें। वह द्वार उसकी दृष्टि से गुप्त होगया। वह वहाँ चारों ओर फिरी, पर कुछ भी ठिकाना न लगा। निदान लाचार होकर नगर में आई और गुप्त मार्गों से बादशाह के महल के चोर दरवाज़े से भीतर गई और बादशाह को अपने आगमन का संदेशा कहला भेजा। बादशाहने उसे भीतर बुलवाया। वह उसके सम्मुख चिंतित होके गयी। बादशाह समझ गया कि आज भी प्रयोज़न सिद्ध न हुआ होगा। निदान उससे पूछा, "वह काम कर आई या नहीं?" वह बोली, "मैं उस बात को भली भाँति मालूम कर आई हूँ। पर चिंता के चिह्न जो मेरे मुख पर हैं, उनका कारण दूसरा है।" फिर उसने संपूर्ण वृत्तांत कह सुनाया और

कहा, "उस परी और अहमद में स्त्री पुरुष का व्यवहार है। शायद आप उस परीके ऐसे व्यवहार को सुन के प्रसन्न हुए होंगे और यह समझा होगा कि अहमद को उसके साथ सांसारिक सुख प्राप्त हुआ, पर मेरे विचार में ये सब बातें आपके लिये दुःखदायी जान पड़ती हैं कि ऐसा न हो जो आपका पुत्र आप से कुछ वैर ठाने। आप जो यह समझें कि अहमद मेरा पुत्र है, उससे ऐसा काम बन न पड़ेगा, यह सच है; पर इस समय वह परी की प्रीति में फँसा है। क्या आश्चर्य है कि उसके उपदेश के अनुकूल किसी अनुचित कर्म का उद्योग करे। यह शंका का स्थान है, इसका उपाय आप अवश्य कीजिये।" इतना कह वह बादशाह से विदा होने लगी। बादशाह ने चलते समय उससे कहा, "मैं तुझपर दो प्रकार से प्रसन्न हुआ, एक जो तुमने इतना परिश्रम उस वृत्तांत के मालूम करने के लिये उठाया और दूसरे तेरे अति हितकारक उपदेश से। जब बादशाह ने समझा कि वह मंदिर में से जा चुकी तब उसने अपने प्रधान को जिसने उसके मन में शंका डाली थी, बुलाकर संपूर्ण वृत्तांत कह सुनाया। उससे पूछा कि इस बातका क्या उपाय किया जाय? उसने कहा, "इसका उपाय अति सुगम है। अहमद अभी यहीं है; उसे क़ैद में डाल दीजिये; मारडालना उचित नहीं। इस बात को उसने पसंद किया। उस समय तो वह चुप हो रहा, दूसरे दिन फिर उसने जादूगरनी को बुलवाकर अहमद के क़ैद करने के लिये सम्मति पूछा। उसने कहा, "मेरे विचार से यह उपाय अनुचित है; क्योंकि जब उसे क़ैद करोगे, तो यह भी ज़रूरी है कि आप उसके साथियों को भी क़ैद करें। वे सबके सब जिन्न हैं, उनको

सब कुछ सामर्थ्य है। ऐसा न हो, जो वह बंदीखाने से निकल-कर उस परी से कहें और वह अपने पति की दशा सुनकर एक उपाधि मचावे, जिसका निवारण आपको कठिन हो। यदि आपको मेरा विश्वास हो, तो मैं एक ऐसा यत्न बताऊँ, जिससे आपको बहुत लाभ हो और किसी भाँति की हानि न हो। बहुधा आपको अहेर आदिक में खेमे की आवश्यकता पड़ती है और उसके बनाने में बहुतसा द्रव्य व्यय होता है। अब आप अहमदसे कहें कि एक बड़ा डेरा कहींसे मुझे ला दे, जिसमें मेरी संपूर्ण सभा और सेना समा जाय और वह ऐसा हलका हो कि एक मनुष्य उसे जहाँ चाहे उठा ले चले। जब वह आपको यह ला देवे, तो और बहुतसी वस्तुएँ मँगाने के योग्य आपको बताऊँगी। निदान वह आपकी माँगों से बहुत तंग हो जायगा और इसी उपाय से जिन्नों की बनाई अद्भुत वस्तुएँ आपको प्राप्त होंगी। अहमद भी दिक्क होकर लज्जा के मारे कदापि आपकी देहरी पर पैर न धरेगा और आप उसके छल और वैर से बचेंगे। ऐसे कपूत के मारने अथवा क़ैद करने की आपको आवश्यकता न पड़ेगी।"

फिर बादशाहने यही बात अपनी सम्पूर्ण सभासे कहकर उनकी सम्मति ली। वे सब सुनके चुपके हो रहे। बादशाह इस सम्मति को अच्छा समझ चुप हो रहा। दूसरे दिन जब अहमद बादशाह के निकट गया और बहुत देर तक परस्पर वार्ता होती रही, तब बादशाह ने अवसर पाकर कहा, "पहले मैं बहुत दिन तक तुम्हारे वियोग से चिन्ता में रहा। जब तुम मेरे पास आये, तो मुझे तुम्हारे देखने से अति प्रसन्नता हुई। यद्यपि मुझे तुम्हारे रहने की

जगह मालूम न थी तथापि मैंने उसके पूछने में तुमसे हठ न किया, परंतु अब मुझे यह भेद मालूम हुआ कि तुमने महाऐश्वर्य और अति रूपवती परी के साथ अपना विवाह किया है। इससे मैं अधिक प्रसन्न हुआ; पर यह कहो कि जो मैं तुमसे कोई वस्तु माँगूँ, तो तुम वह परी से ला सक्ते हो और उसको तुम्हारा इतना पक्ष है कि जो वस्तु मैं तुमसे माँगूँ, उसको वह निःशंक दे देगी। तुम्हें खूब मालूम है कि बहुधा मैं अहेर को जाया करता हूँ। मुझे डेरों की आवश्यकता हुआ करती है जिसके उठाने के लिये बहुत से ऊँट दरकार होते हैं। मैं चाहता हूँ कि मुझको ऐसा डेरा मिले जिसमें मेरा संपूर्ण कटक समा जावे और वह इतना हलका हो, जिसको तुम अथवा कोई और एक मनुष्य उठा लावे। यह तुम मुझे उस परी से ला दो। अहमद ने कहा, बहुत अच्छा, मैं अपनी भार्या से जाकर कहता हूँ, परंतु मैं नहीं जानता कि ऐसा उत्तम डेरा उसके पास है वा नहीं। यदि है तो वह देगी, नहीं तो नहीं। इसहेतु उसके लाने की प्रतिज्ञा आपसे नहीं करता। बादशाह ने कहा, जो तू वैसा डेरा न लावेगा, तो मैं तेरा मुख न देखूँगा और तुम कैसे उसके पति हो और वह कैसी तुम्हारी पत्नी है कि ऐसी तुच्छ वस्तु भी तुम्हारे कहने से न देगी। जान पड़ता है कि तुम को वह तुच्छ और दासवत समझती है। जो तुम उससे डेरा माँगोगे और उसने दिया, तो जानना कि वह तुमसे अति हित रखती है, नहीं तो नहीं। मुझे निश्चय है कि वह तुम से बहुत प्रीति रखती है। जो कुछ उससे माँगोगे, वह तुमको प्रसन्नता से देगी।

शाहज़ादा अपने नियम के विपरीत दो ही दिन रहकर तीसरे

ही दिन चल पड़ा। जब वह भवन में पहुँचकर बानूपरी के पास गया, तो उसने उसे चिंतित देखा। उसने पूछा, कुशल तो है? आज अपने पिता के घर से तुम उदास होकर क्यों आये हो? शाहज़ादे ने संपूर्ण वृत्तांत कह दिया। बानूने इतना सुनकर उत्तर दिया, "तुम धैर्य धरो, मैं तुमको डेरा अवश्य दूँगी। पर मुझे मालूम हुआ है कि उसका काल निकट आ पहुँचा है।" अहमद ने कहा, ईश्वर मेरे पिताको बहुत दिन तक जीता रक्खे। हे सुंदरी! वह कुछ रोगी नहीं है। अभी उनको कुशलपूर्वक छोड़ आया हूँ, पर मैं आश्चर्य में हूँ कि मैंने यहाँ का कुछ हाल उससे नहीं कहा, फिर उनको सब हाल कैसे मालूम हुआ? बानूपरी ने उत्तर दिया, "हे प्रीतम! तुम को स्मरण होगा कि मैंने उस वृद्धा को, जिसे तुम रोगी समझकर यहाँ उठा लाये थे, देखकर क्या कहा था? वह बीमार नहीं थी। उसने केवल तुम्हारा हाल मालूम करने को बहाना किया था। उसी ने जाकर वहाँ यह सब हाल कहा है। जब तुम उसको यहाँ छोड़ गये थे, तब मैंने उसको औषध पिलाई। वह बहाना करके अच्छी होगई और मेरे पास बिदा होने आई। मैंने उसके साथ दासियाँ करके उसे इस भवन की सब सामग्री दिखाई। फिर वह देख भालकर बिदा हुई और किसी की सामर्थ्य नहीं, जो यहाँ तक पहुँचे। क्या आश्चर्य है कि यहाँ का सब भेद वह जान गई हो? शाहज़ादे ने उसकी बहुत प्रशंसा करके कहा, "अब मेरी इच्छा है कि तुम्हारी कृपा से वैसा डेरा अपने पिता के पास लेजाऊँ।" उसने कहा, "इस तुच्छ वस्तु के लिये इतनी चिंता क्यों करते हो? उसे मैं अभी मँगाती हूँ।" इतना कह उसने एक दासी को जो ख़ज़ा-

नची थी, बुलवाकर कहा कि फलाना डेरा शीघ्र ले आ। वह दौड़ी गई और उसी डेरे को लाई और बानू की सैन के अनुकूल उसे अहमद शाहज़ादे को दिया। अहमद उसे मुट्ठी में दबाकर समझा कि हमारी प्यारी ने मुझ से हास्य किया है। बानू इस बात को जानकर ठट्ठा मारके हँसी और कहने लगी, "हे प्यारे! तुमने अपने मनमें समझा होगा कि मैं तुम से हँसी करती हूँ। फिर उसने अपनी दासी से कहा कि इस डेरे को लेकर एक बड़े बनमें खड़ा कर, जिससे अहमद को इसका गुण मालूम होजाय। वह दासी उस डेरे को लेकर भवन से बहुत दूर चली गई और वहाँ उसने वही डेरा खड़ा किया। शाहज़ादे ने उसे ऐसा बड़ा पाया कि दो बादशाह भी सेना समेत वहाँ भली भाँति बैठ सकें और किसी को कष्ट न हो। उस दासी ने फिर उसे तह करके शाहज़ादा अहमद को दिया। यह उसी समय उसे लेकर सिधारा और अपने नियमित सवारों सहित अपने पिता के सम्मुख गया और उस डेरे को उन्हें दिया। बादशाह भी उसे देख समझा कि यह तो बहुत छोटा है। जब वह खड़ा हुआ, तो उसको बहुत बड़ा देख खूब आश्चर्य्य में हुये। ऐसी अद्भुत वस्तु ला देने से अहमद का अति गुण माना। फिर उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि इसे रक्षापूर्वक रक्खो।

इस अपूर्व वस्तु की प्राप्ति से उसे भय और शंका अधिक हुई। उसने विचारा कि वह परी वास्तव में अहमद को बहुत चाहती है। अपने द्रव्य और ऐश्वर्य से बड़े २ काम कर सकी है। मेरा राज्य लेना कौन बड़ी बात है। फिर उसने जादूगरनी को बुलवाकर इस विषय में उसकी सम्मति पूछी। उसने कहा,

"शाहज़ादे से पानी चश्मेंशेरों का माँगो।" जब बादशाह संध्या के समय अपनी सभा के समूह के मध्य में बैठा था कि अहमद आया और चरण चूम बादशाह के पास बैठ गया। बादशाह ने उससे कहा, मैं तुम्हारे डेरेके लाने से अति प्रसन्न हुआ। निस्संदेह कोई ऐसी विचित्र बस्तु हमारे खज़ाने में नहीं थी, पर एक बस्तु मुझे और चाहिये। यदि उसे भी लाओ तो मैं अति प्रसन्न हूँगा। तुम्हारी प्रिया के पास पानी चश्मेंशेरों का है, जिसके पीते ही सर्व भाँति के ज्वरादि रोग नाश होजाते हैं। मुझे निश्चय है कि मेरी आरोग्यता तुझको स्वीकार होगी। थोड़ासा जल मेरे लिये लाओ कि आवश्यकता पर उसको पिया करूँ। शाहज़ादा इस बात को सुनकर चुप हो रहा और सोचने लगा कि डेरे को जिस तरह मैंने समझा था, उस तरह ला दिया। ऐसा न हो, जो उस जल के माँगने से परी अप्रसन्न हो जाय। अहमद को यह बात भली भाँति बिदित थी कि जो वस्तु मैं उससे माँगूँगा, वह नाहीं न करेगी। इस चिंता के उपरांत उसने उत्तर दिया, मेरे अधिकार में कोई बस्तु नहीं; पर मैं उस जलको भी माँगूँगा। यदि उसने दिया तो लाऊँगा। आपसे प्रतिज्ञा नहीं कर सक्ता। आपकी माँगी हुई वस्तु लाने में अपनी सपूती समझता हूँ; पर इस बस्तु के माँगने में कष्ट अवश्य है।

दूसरे दिन बादशाह से बिदा होकर अपनी प्रिया के निकट आया और कुशल पूछने के बाद कहा, "मेरा पिता आपकी कृपा का बड़ा गुण मानता है; पर उसने सिंहरक्षित सरोवर का जल माँगा है। यदि तुमको उसके देने में कष्ट न हो, तो मुझे मँगवा दो, मैं उसको जाकर दे आऊँ। बानूपरी ने कहा, "जान

पड़ता है कि तुम्हारा पिता तुम्हारी और मेरी परीक्षा लेता है। जो कुछ जादूगरनी उसको सिखाती है, वही वस्तु वह माँगता है। अच्छा वह भी तुमको मैं दूँगी। इसमें भी मुझे कुछ हानि नहीं, पर कुछ भय है। अब मैं उसे वर्णन करती हूँ, ध्यान से सुनो। अमुक मैदान में एक दिव्य सरोवर है; उसकी रक्षा के लिये अति बलवान् चार सिंह हैं। उनकी उस पर चौकी रहती है। पारी २ से दो सिंह जागते हैं और दो सोते हैं। वे किसी मनुष्य को जल के पास जाने नहीं देते। मगर मैं तुम्हें ऐसी तदबीर बताऊँगी कि जिसके सबब से तुम्हें उन शेरों से कुछ नुक़सान न पहुँचेगा।

इतना कह, उसने सुई और धागा निकालकर अपने हाथ से कई गेंदें बनाईं। एक गेंद शाहज़ादे को देकर कहा, पहिले तुम इस गेंद को सुरक्षित रक्खो। दूसरे यह कि तुम दो अति तेज घोड़े लेना। एक पर तुम चढ़ना और दूसरे पर एक भेंड़ के चार टुकड़े करके लादना। वह भेंड़ मैं आज काट के रक्खूँगी। तीसरे यह कि तुमको मैं एक पात्र देती हूँ, तुम उसमें जल भरना। अब सबेरे एक घोड़े पर सवार हो और दूसरे घोड़े की बाग पकड़ उसी मैदानकी ओर जाना। जब उस मैदान के निकटवर्त्ती भवन के लोहे के द्वार पर पहुँचो, तो इस गेंद को आगे डाल देना। यह गेंद आपही लुढ़कता हुआ उस भवन के द्वार तक पहुँचेगा। तुम उस गेंद के पीछे चले जाना। जहाँ कहीं यह गेंद ठहरेगा, वहीं पर तुम उन चारों सिंहों को देखोगे और द्वार भी खुल जायगा। वे दो सिंह जो जगे होंगे, सोते हुओं को भी जगा देवेंगे। फिर वे चारों तुमको देखकर नाद करेंगे, पर तुम

उनसे भय मत करना । भेंड़ के चारों टूक तुम उनके सम्मुख डाल देना । घोड़े पर से उतरना मत । एँड़ मारकर, भवन के भीतर पैठकर सरोवर पर पहुँच जाना । वहाँ से जलभर लौट आना । वे सिंह तो भोजन करते रहेंगे, तुम से कुछ न कहेंगे ।

शाहज़ादा सबेरे उठ, उधर को चला । उसी भवन के निकट पहुँचा और पात्र जल से भरा । जब कुछ दूर निकल आया, तो दो सिंह उसके पीछे दौड़े । उसने उनका भय न किया और अपने बचाव के लिये तलवार म्यान से निकाल ली । एक सिंह उसे जाते हुये देख लौट गया और शाहज़ादे को शिर और पूंछ से सैन की कि तू अभय चला जा; पर दूसरा सिंह उसके साथ लगा हुआ था । इतने में शाहज़ादा नगर में पहुँचा । बादशाह के महल में चला गया, और वह सिंह जो पीछे चला आता था, अहमद को मंदिर में प्रवेश करते देख, लौट गया । उसे कुछ दुःख न दिया । फिर बहुत से मनुष्य अहमद को अकेले देख उसके साथ हो गये । वहाँ पहुँच उसे घोड़े से उतारा । उस समय बादशाह सभा में बैठ अपने देशके प्रबंध की बातें करता था । शाहज़ादे ने उसे प्रणाम कर वही जल का घट उसे भेंट किया । उसने विनय की कि यह वही जल है, जो आपने माँगा था । यह जल अलभ्य है । ऐसी अपूर्व बस्तु आपके निकट कदापि न होगी । ईश्वर न करे आपकी देह में किसी भाँति की व्यथा हो । यदि हो, तो थोड़ा सा इसको पी लीजियेगा, तत्काल निवृत्त होजायगी । बादशाह ने अति हर्ष से उसका हाथ पकड़, उसे अपने दाहिनी ओर बैठा लिया और कहने लगा, तुम इस जल को अति भयानक स्थान से लाये हो, इससे मैं तुमसे अति

प्रसन्न हुआ हूँ। इस भयानक स्थान का हाल जादूगरनी ने बादशाह से कहा था। फिर बादशाह ने अहमद से पूछा, तुम वहाँ कैसे गये? शेरों से कैसे बचकर जल लाये? शाहज़ादे ने कहा, आपके प्रताप से मैं वहाँ कुशलपूर्वक पहुँचा। फिर उसने संपूर्ण वृत्तांत वर्णन किया। जब बादशाहने अपने पुत्रका इतना साहस देखा, तो प्रथम से अधिक डर और दशगुना बैर और भय उसके मन में समाया। तब उसे शीघ्र बिदाकर मंदिर में गया और उस जादूगरनी को बुला भेजा और संपूर्ण समाचार उससे कहा। वह तो पहिलेही यह सब हाल सुन चुकी थी। अब बादशाह से सब वृत्तांत सुन अत्यंत विस्मित हुई। फिर विनय की कि अबकी बेर अहमद से ऐसी वस्तु माँगिये जो वह न ला सके। बादशाह ने उसको बिदा किया।

जब अहमद दूसरे दिन बादशाह के निकट आया, तो उसने कहा, "हे प्रिय पुत्र! मैं तुम्हारी सेवा से अति प्रसन्न हुआ। अब तीसरी बात की भी मुझे ज़रूरत है। यदि तुम उसे भी करो, तो जन्मभर तुम से प्रसन्न रहूँगा।" शाहज़ादे ने विनय की कि वह कौनसी बात है? आप कृपा कर कहिये।" बादशाह ने कहा, "एक ऐसा मनुष्य लाओ, जिसका डील एक गज़ से अधिक न हो। उसकी दाढ़ी बीस गज़ की हो। साढ़े छःमन की जरीब कंधे में लेकर चले। वह उसे इस भाँति घुमाये, जैसे कोई काठ के सोंटे को घुमाता है। अहमद ने विनय की कि इस भाँति का मनुष्य संसार में उत्पन्न न हुआ होगा।"

निदान जब वह बानूपरी के निकट गया; तब उससे यह हाल वर्णन किया। बानू की ओर देखकर कहा, "ऐसा मनुष्य

जगत् भर में न होगा । बादशाह समझे बूझे बिना यह आज्ञा मुझको दे चुका है । यदि ऐसा मनुष्य भी मिला तो इतनी भारी ज़रीब अपने कंधे पर कैसे उठा सकेगा ?" इतना कह वह कहने लगा, "मेरे बिचार में तो कोई ऐसा मनुष्य नहीं है। जो तुम जानती हो, तो बताओ । उसने कहा; "इस बात की तुम कुछ चिंता न करो। तुम ने तो बड़े भयानक स्थान से अपने पिता को जल ला दिया है, यह बात उससे कठिन नहीं है, इस गुणवाला मेरा भाई शब्बर है। यद्यपि वह और मैं एक ही माता पिता की संतान हूँ; पर ईश्वर ने उसका स्वरूप ऐसा ही रचा है। वह बड़ा धीर और साहसी है। वह अमुक स्थान का बादशाह है। एक लोहे की ज़रीब के सिवाय वह और कोई शस्त्र अपने पास नहीं रखता । अब म उसको बुलाती हूँ। तुम उससे डरना मत। शाहज़ादे अहमद ने कहा, जो शब्बर तुम्हारा भाई है और उसका स्वरूप अद्भुत है, तो मैं उसको देखकर वैसे ही प्रसन्न होऊंगा जैसे कि कोई शख़्स अपने मित्र और भाई-बंधु के देखने से प्रसन्न होता है। उसे देखकर डरूँगा क्यों ? फिर परी-बानू ने सुनहली अँगीठी मँगवाकर उसमें अग्नि जलाई। एक सुवर्ण का संदूक़चा मँगवाकर उसने उसे खोला और उसमें से कोई सुगंध निकाल उसमें डाली। जब उसका धुवाँ उठा, तो कई क्षण के बाद उसने कहा, "मेरा भाई शब्बर आया। तुम उस-को देखते हो वा नहीं।" शाहज़ादे ने शिर ऊपर को उठाकर शब्बर को देखा कि वास्तव में उसका डील गज़ भर का था और बड़ी तमक-झमक से वह आता था। उसके कंधे पर लोहे की साढ़े छः मन की ज़रीब रक्खी हुई थी। उसकी दाढ़ी बहुत घनी थी और

बीस गज़ की लंबीथी, परंतु वह उसको इस उपायसे रखताथा कि वह धरतीमें नहीं लगतीथी, मूछें कानोंतक पहुँचतींथीं; जिससे उसका मुख छिपा हुआ था। उसके नेत्र शिर में घुसे हुये थे और उसका शिर जिस पर अति उत्तम मणि-जटित मुकुट था, आगे और पीछे कुबड़ा था। अहमद शब्बरको देख डरा नहीं और उसी भाँति अपनी प्रिया के पास बैठा रहा। शब्बर ने आगे बढ़कर उसको एक दृष्टि से देख, पूछा कि तुम्हारे निकट यह कौन बैठाहै? बानू परीने कहा यह अहमद नामका मेरा पतिहै। यह हिंदुस्तानके बादशाहका पुत्र है। भाई, मैंने अपने बिवाह में तुम्हें इसलिये नहीं बुलाया कि उन दिनों तुम बड़े युद्ध में प्रवृत्त थे। अब तुमने ईश्वर की कृपा से अपने बैरियों को परास्त किया है। इसलिये मैंने तुमको बुलाया है। इतना सुनते ही उसने अहमदको प्रीति से देखा और अपनी बहिन से कहा, "क्या इस शाहज़ादे का कोई ऐसा काम अटका है कि मैं उसे करूँ?" उसने उत्तर दिया "हिंदुस्तान का बादशाह अर्थात् इस शाहज़ादे का पिता तुम्हारे दर्शनों की इच्छा रखता है। कृपा करके तुम इनके साथ वहाँ जाओ।" उसने कहा, "मैं इसी समय जाने को तय्यार हूं।" बानूने कहा, "भाई, आज तुम दिन भर के थके हो, कल भोर को जाना। संध्या को मैं अहमद का संपूर्ण वृत्तांत तुमसे वर्णन करूँगी।

तदनंतर बानूपरी ने बादशाह और उसके मंत्री आदि संपूर्ण सभासदों का और जादूगरनी का वृत्तांत वर्णन किया। दूसरे दिन प्रभात को शब्बर अहमद के साथ चला। मार्ग में मनुष्य शब्बर के विकराल स्वरूप को देखकर भय से दुकानों और घरों में छिपकर बैठ रहे और अपने अपने किवाड़ों को बंद कर लिया।

कोई घबराहट से पगड़ियों और जूतियों को छोड़कर भाग गये। फिर वह शाही दरबार में गया, जहाँ बादशाह अपने सब सभासदों और मंत्रियों सहित बैठा था। वहांभी मनुष्य शब्बर को देख छिप गये। शब्बर ने अति ग्लानि और अहंकार से बादशाह के तख़्त के निकट जाकर कहा, "तूने मेरे दर्शन की अभिलाषा की थी, सो मैं आया हूँ। कह, मुझसे क्या इच्छा रखता है? बादशाह ने उसके विकराल रूपको देखते ही उत्तर देने के बदले अपने दोनों हाथ आँखों पर रक्खे और वहाँ से भागने की इच्छा की। शब्बर बादशाह की अशीलता से अति अप्रसन्न हुआ कि मैं तो इतना परिश्रम करके इसके बुलाने के अनुकूल यहाँ आया और यह मुझे देखकर भागता है। निदान लोहे की ज़रीब को उठा, उसके शिर पर ऐसा मारा कि उसका शिर खंड खंड होकर चूर्ण हो गया। उस समय तक अहमद वहां नहीं पहुँचा था। उसके पीछे यह उपद्रव हुआ। इतने में अहमद भी पहुँचा। फिर शब्बर ने राजमंत्री को मारना चाहा; पर अहमद ने उसको बचाया कि यह मेरा अति हितैषी मित्र है। इसने कोई अनुचित बात मेरे लिये नहीं की है। बाकी ये सब मेरे बैरी हैं। इतना सुनते ही सब प्रधान और मंत्री जो दोनों ओर पंक्ति बाँधकर खड़े थे; सिवाय उन लोगों के जो भाग गये थे, कोई जीता न बचा। सबके सब मारे गये। फिर शब्बरने सभा से राजभवन में आकर राजमंत्री से जिसके प्राण शाहज़ादे ने बचाये थे कहा, "उस जादूगरनी को जो शाहज़ादे की बैरिन है और बादशाह के उन सलाहकारों को बुला ला कि उनको इस दुष्ट कर्म का दण्ड दूँ।" इतना सुनतेही मंत्री उस जादूगरनी को और सब सभासदों को,

जो शाहज़ादा के बैरी थे, बुला लाया। शब्बर ने उनको भी ज़रीब से मारा और जादूगरनी से कहा, "तेरे बुरे उपदेश का फल यही है, जो तुझको मिला। तदनंतर शब्बर ने नगर भर के मनुष्यों को मारना चाहा; पर शाहज़ादे ने सबको बचा दिया।

शब्बर ने अहमद को शाहीबान पहिनाकर तख़्त पर बैठाया। उसके नाम की नगर में डौंड़ी पिटवा दी। नगर के सब लोग अहमद से प्रसन्न थे। उसके तख़्त पर बैठने से संतुष्ट हुये और अपनी २ सामर्थ्य भर भेंट दे, बड़े नाद से उसको आशीर्वाद देने लगे। जब शब्बर यहाँ यथेच्छ प्रबंध कर चुका, तो अपनी बहिन को भी वहाँ ले आया। फिर शब्बर बिदा हो अपने भवन को गया। अहमद ने अलीनूरुन्निहार को बहुत कुछ दे, नगर का अधिपति करके बिदा किया और एक प्रधान को हुसेन के पास भेजकर कहला भेजा कि जिस देश को तुम चाहो, उसका बादशाह तुमको बना दें; पर हुसेन उस दशा में प्रसन्न था। उसने राज-पाट स्वीकार न किया। उसी प्रधान के द्वारा अहमद की कृतज्ञता कहला भेजी और अपना जन्म ईश्वर के आराधन व तपस्या में बिताया।

शहरज़ाद इस कहानी को पूर्ण करके दूसरे दिन तीन बहिनों के परस्पर ईर्षा की दूसरी कहानी कहने लगी। ऐसी ही विचित्र कहानी कहकर अपने प्राण को बचाती।

एकादश प्रदीप

यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।
यथेष्टोद्वाहमापन्ना यथासन् भगिनीत्रयः॥

अर्थ—जैसी जिसकी भावना होती है वैसी ही उसको सिद्धि होती है; जैसे तीन बहिनें अपनी अपनी इच्छा के अनुसार बिवाह को प्राप्त हुईं।

तीन बहिनों की कहानी

पूर्वकाल में फ़ारस देश का ख़ुसरो शाह नामक शाहज़ादा बहुधा रात्रि को वेष बदल एक सेवक को अपने साथ ले नगर की सैर किया करता था। संसार के अद्भुत विषयों को देखता। निदान जब शाहज़ादे के पिता का वृद्धावस्था के कारण देहांत हो गया, तो शाहज़ादा तख़्त पर बैठा। उसने अपना नाम क़ैख़ुशरो जारी किया। उसी भाँति संध्या को वज़ीर साथ में ले और वेष बदल नगर के बाज़ारों और गलियों में फिरने लगा। अकस्मात् वह एक ऐसी गली में जापड़ा, जहाँ उसने एक घर में दो तीन स्त्रियों को बातें करते हुये सुना। बादशाहने पास जाकर दरवाज़े की दरार से झाँककर देखा कि तीन बहिनें एक दालान में बैठी हुई आपस में बातें करती हैं। वह कान लगाकर उनकी बातें सुनने लगा।

बड़ी बहिन ने अपना मनोरथ इस भाँति प्रकट किया। मैं चाहती हूँ कि मेरा बिवाह बादशाह के रोटी पकानेवाले से हो कि अति उत्तम और स्वादिष्ठ रोटियाँ खाकर तुम दोनों को तरसाया करूँ। मँझली बहिन ने कहा कि मेरी इच्छा यह है कि मेरा बिवाह बादशाह के बावर्ची से हो कि उत्तम उत्तम भोजन कि जिनके आगे बादशाह की रोटियाँ तुच्छ हैं, मेरे खाने में आया करें। तीसरी बहिन ने जो सबसे छोटी, चतुर और वाचाल थी, अपनी पारी में कहा कि मेरी इच्छा तुम दोनों

से छोटी नहीं है। मै चाहती हूँ कि इस देश के बादशाह से मेरा ब्याह हो और उस बादशाह से एक पुत्र उत्पन्न हो, जिसके एक ओर के बाल स्वर्ण के हों और दूसरी ओर रूपे के। जब वह बालक रोवे तो उसकी आँखों से मोती झड़ें और हँसती समय उसके लाल ओष्ठ कली के सदृश खिले हुये मालूम होवें। बादशाह उन तीनों बहिनों के, विशेषकर उस छोटी बहिन का मनोरथ सुन अति आश्चर्य में हुआ। उसने इच्छा की कि उन तीनों बहिनों की इच्छा पूर्ण करें। इस बात को अपने मन में ठान, मंत्री से कहा कि तू इस घर को खूब पहिचान रख और सुबह इन तीनों बहिनों को मेरे पास लाना।

दूसरे दिन सबेरे मंत्री उन तीनों बहिनों को बादशाह के सम्मुख ले गया। बादशाह ने उनसे कहा कि कल रात्रि को तुम क्या कहती थीं। उन सब बातों को मुझसे वर्णन करो, पर ध्यान रहे कि उन बातों में अंतर न पड़े; क्योंकि वे बातें मुझको मालूम हैं, मैं अपने कानों से उन्हें सुन चुका हूँ। इस बात को सुनकर वे तीनों बहिनें मारे लज्जा के कुछ उत्तर न दे सकीं। अपना २ शिर नीचे करके चुप होरहीं। बादशाह छोटी बहिन को जो बड़ी सुंदर और नखशिख से बहुत अच्छी थी, देखकर मोहित होगया। जब बहुत पूछा, तो उन्होंने इन्कार किया। बादशाहने उनको दिलासा देकर कहा कि तुम कुछ भय मत करो। लाज छोड़ो, जैसा कि रात्रि को वार्त्ता करती थीं, मुझसे वर्णन करो कि मैं तुम्हारे मनोरथों को पूर्ण करूँ। निदान उन्होंने अपने अपने मनोरथों को प्रकट किया। बादशाह ने उनके मनोरथ सुनकर उसी दिन बड़ी बहिन का विवाह अपने रोटी पकानेवाले के साथ

और मँझली का बिवाह बवर्ची के साथ कर दिया। फिर अपने बिवाह की तय्यारी की आज्ञा दी। तय्यारी होने पर बादशाहों के समान बड़े धूम धाम से छोटी बहिन से बिवाह किया और उसको अपनी मलका बनाया। बड़ी दोनों बहिनों का बिवाह रसोईदारों की प्रतिष्ठा के अनुसार अर्थात् बिना धूम धाम के किया था। उन सबको उचित था कि अपनी अपनी अभिलाषा को पूरी पाकर प्रसन्न होतीं; पर अपनी छोटी बहिन के बिवाह की धूम-धाम और प्रताप देखकर वे ईर्षा करने लगीं। वे रात दिन जला करती थीं।

एक दिन बड़ी और मँझली बहिन हम्माम में नहाने के लिये आईं। वहाँ बड़ी ने मँझली से कहा, "छोटी बहिन हमसे ऐसी सुंदर न थी कि मलका होती। मुझको यह बात बुरी मालूम हुई।" मँझली ने उत्तर दिया, "बहिन मैं भी इस बात से बहुत अप्रसन्न हूँ। मैं नहीं जानती कि बादशाह ने उसे क्या देखकर पसंद किया। वह तो मलका होने योग्य न थी। मेरे बिचारसे तू ही बादशाह के बिवाह के योग्य थी। बादशाह को उचित था कि तुझे ही मलका बनाता।" बड़ी बहिन ने उत्तर दिया कि मैं बड़े आश्चर्य में हूँ। यदि बादशाह तुझे पसंदकर तुझसे बिवाह करता, तो उस छोकड़ी से हज़ार हिस्से अच्छा था। निदान बादशाह की अनीति से हम बड़े खेद में रहती हैं। अब कोई ऐसा यत्न किया जाय कि जिससे वह छोकड़ी बादशाह की दृष्टि से गिर जाय।

वे दोनों बहिनें इसी चिंता में रहतीं। जब उन दोनों की भेंट होती, तो वे यही बातें किया करतीं। उसके मार डालने और कष्ट देने का उपाय सोचतीं, पर कुछ न बन पड़ता। छोटी बहिन उन

दोनों का अति सत्कार करती। जिस भाँति उसको उन दोनों से पहिले प्रीति थी, अब भी वही प्यार रखती । संयोग से कितने महीनों के बाद उसे गर्भ रहा। बादशाह इस खबर को सुनकर अति प्रसन्न हुआ और अपने संबंधित संपूर्ण नगरों में खुशी करने के वास्ते आज्ञा दी। वे दोनों बहिनें अवसर पाके बादशाह के महल में गईं और मलका से कहा कि हमको ईश्वर ने यह दिन दिखाया है। हम चाहती हैं कि जब प्रसूति का समय हो, तो हम हीं जनवायें, चालीस दिन तक कामकाज के लिये उपस्थित रहें। मलका ने कहा कि बीबियो, बहुत अच्छा। तुमसे अधिक और कौन विश्वासित होगा कि जिनका हम ऐसे काम में विश्वास करें; पर मैं बादशाह की आज्ञा पालक हूँ उनकी आज्ञा के बिना कोई काम नहीं कर सक्ती इससे उत्तम है कि तुम्हारे पति बादशाह से इसकी आज्ञा ले लें। निश्चय है कि बादशाह रिश्तेदारी के सबब से रहने की आज्ञा दे देंगे। फिर उन दोनों के पतियों ने अपनी २ स्त्रियों का कहना मानकर बादशाह से अपनी स्त्रियों की रहने की प्रार्थना की । बादशाह ने कहा कि मैं पूछकर उत्तर दूँगा।

बादशाह ने अपनी स्त्री से पूछा कि तुम्हारी इच्छा हो, तो तुम्हारी बहिनें प्रसूति के समय तुम्हारे पास उपस्थित रहें। मेरे बिचार से ऐसे समय पर बेगानों से तो उनका रहना उत्तम होगा। मलका ने कहा कि मैं भी इसे अच्छा समझती हूँ। बादशाह ने मलका की दोनों बहिनों के रहने की आज्ञा दी और वे दोनों उसी समय से बादशाह के महल में रहने लगीं। अब उनको मनोरथ पूर्ण करने का अवसर मिल गया। जब मलका के प्रसूति का

समय पहुँचा, तो उसके एक अति सुंदर पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसके देखने से उन दोनों के मन में ईर्षा बढ़ गई। मलका की दृष्टि बचाकर उस पुत्र को एक कम्मल के टुकड़े में सावधानी से लपेट, एक पिटारी में बंद कर नहर के बहाव में, जो मलका के महल के नीचे जारी थी, डाल दिया। उसकी जगह एक कुत्ते का मरा हुआ पिल्ला लेकर लोगों को दिखाया कि मलका ने इसको पैदा किया है। यह खबर बादशाह को पहुँची, जिससे वह अति क्रोधित होकर मलका के मार डालने का इरादा किया; पर मंत्री ने, जो संयोग से उपस्थित था, बादशाह को कह सुनकर रोका और मलका की निर्दोषता बहुत से प्रमाण देकर प्रतीत कराई। अकस्मात् वह पिटारी बहते बहते बागों की नहर में गई और बाग के दारोगा की दृष्टि जो नहर के किनारे पर टहल रहा था, उस पिटारी पर पड़ी। उसने तुरंत ही एक बागवान को पुकारा और उस पिटारी को दिखाकर कहा कि शीघ्र जाके उस पिटारी को मेरे पास ला। देखूँ, तो उसमें क्या है? बागवान दौड़कर नहर के किनारे पर गया। पिटारी को लकड़ी से खींचकर बाहर निकाल दारोगा के पास लाया। दारोगा उस पिटारी में, उसी समय का पैदा हुआ अति सुंदर कम्मल में लिपटा हुआ लड़का देखकर अति आश्चर्य में हुआ। दारोगा के कोई पुत्र न था, संतान के लिये सदैव ईश्वर से प्रार्थना करता था। उस बालक को देखते ही पिटारी समेत उसे घर लेगया और अपनी स्त्री से कहा कि ईश्वर ने मुझको यह लड़का दिया है, अभी एक दाई बुलाकर दूध पिलवा। इसको अपनेही उदर का पुत्र जानकर बड़ी सावधानी से इसका पालन पोषण कर। उसकी पत्नी अति प्रसन्न

होकर उसका पालन करने लगी। दारोग़ा ने इस बात की कुछ तलाश न की कि वह बालक कहाँ से आया। उसने मनमें समझा कि वह लड़का निश्चय करके मलका के महल से आया है। दूसरे वर्ष मलका के एक और पुत्र उत्पन्न हुआ और उसकी दुष्ट बहिनों ने ईर्षा से उस बच्चे के साथ भी वही बर्ताव किया। उसको भी कपड़े में लपेट और पिटारी में बंदकर उसी नहर में डाल दिया और यह बात प्रसिद्ध की कि अबकी बेर मलका के बिल्ली का बच्चा पैदा हुआ है। संयोग से वह लड़का भी दारोग़ा के हाथ लगा। उसने उस लड़के को ले जाकर अपनी स्त्री को दिया और कहा, "इसका भी पालन कर।"

बादशाह इस हाल को सुनकर पहले से भी अधिक अप्रसन्न हुआ और मलका के मार डालने की इच्छा की; पर मंत्री ने कह सुनके इस बार भी मलका को बचाया। बादशाह के क्रोध को समझा बुझाकर निवृत्त किया। तीसरी बार मलका के एक लड़की पैदा हुई और वह भी अपने भाइयों की तरह पिटारी में बंद करके नहर में डाली गई। वह लड़की भी उसी दारोग़ा को मिली और उसने उसको भी अपनी स्त्री को देकर कहा, "उन दोनों लड़कों के साथ इसका भी पालन कर।" इस बार उन दोनों बहिनों ने प्रकट किया कि अबकी बार मलका के छछूँदर पैदा हुई। बादशाह ने क्रोधित होकर कहा, मुझे अब उचित है कि मैं इस स्त्री को मार डालूँ। यह सुनते ही राजमंत्री और सभासद जो उपस्थित थे, बादशाह के चरण-कमलों पर गिर पड़े और क्षमा माँगी। मंत्री ने हाथ बाँध के विनय की कि हे बादशाह! ऐसे मनुष्य का मार डालना जो निर्दोष हो, उचित

नहीं। विधाता की रचना में कोई उपाय नहीं चलता। जो आप उससे ऐसे ही अप्रसन्न हैं, तो उसके पास न जाया कीजिये। कुछ दान पुण्य कीजिये। फ़ारस का बादशाह ऐसी ऐसी बातें सुनकर समझा कि वास्तव में मलका का मारना अनुचित है। तब उसने मंत्री से कहा कि मैं उसको न मारूँगा, पर उसके लिये मैंने एक दंड बिचारा है, वह मार डालने से भी बुरा है। एक क़ैदख़ाना जामा मसजिद के दरवाज़े के पास बनवाया जाय और मलका काठ के पिंजरे में क़ैद करके उसमें रक्खी जाय, जो मुसलमान निमाज़ पढ़ने को आवे तो पहिले मलका के मुखपर थूककर फिर मसजिद के भीतर पैर रक्खे। अगर कोई मनुष्य ऐसा न करे, तो वह भी ऐसा दंड पावे। बादशाह की यह बात सुनकर मंत्री चुप हो रहा। बादशाह ने निर्दोष मलका के लिये जो दंड बिचारा था, वह उन दोनों दुष्ट बहिनों को दिया जाता, तो उचित था। निदान क़ैदख़ाना तय्यार होगया और वह बेचारी मलका उसमें क़ैद की गई। नगरवासी जो मसजिद में निमाज़ पढ़ने को जाते तो पहिले उस मलका के मुँह पर थूकते। वह बिचारी संतोष करके इस दुःख को सहती और जो कोई उसके अपराध को, जिसके सबब से बादशाह ने यह दंड नियत किया था, सुनता तो उसको निर्दोष समझ दया करता। उसके इस दुःख से छूटने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता।

दारोग़ा और उसकी स्त्री उन दोनों शाहज़ादों और शाहज़ादी को बड़े प्यार से पालते। ज्यों ज्यों वे बढ़ते त्यों त्यों उन दोनों प्राणियों को बड़ा हर्ष होता। जब वे तीनों सयाने हुये तो दारोग़ा ने उनके पढ़ाने लिखाने के लिये बड़े २ विद्वान् नियत

किये। शाहज़ादी की भी जब पढ़ने की इच्छा पाई तो उन्हीं की भाँति लिख पढ़के वह भी निपुण होगई। कविता, इतिहास उन तीनों ने खूब पढ़ा। थोड़े दिनों में वे ऐसे होशियार हुये कि उनके अध्यापक भी आश्चर्य्य से कहने लगे कि ये तो हमसे भी निपुण होगए। फिर उन तीनों ने घोड़े की सवारी सीखी। इन गुणों के अलावा परीज़ाद ने गाना बजाना सीखा। दारोग़ा इन तीनों संतानों को सब विद्या और गुणों से सम्पन्न पाकर अति प्रसन्न हुआ। उसका घर उनके रहने के योग्य न था, इससे नगर के बाहर जाकर उसने थोड़ी दूर पर जङ्गल में हरियाली के निकट जगह मोल लेकर वहाँ बहुत बड़ा महल बनवाना प्रारंभ किया और आप उसके बनवाने में दिनरात प्रवृत्त रहता। जब वह मकान बन चुका, तो उसमें बड़े २ चित्रकारों से अनेक प्रकार की चित्रकारियाँ बनवायीं। अच्छी २ वस्तुओं से उसे सजाया और उसके पास एक सुंदर पुष्पवाटिका बनायी, जिसमें सब प्रकार के फल फूल और मेवे आदि के वृक्ष लगाये। एक बड़ा रमना तय्यार किया, जिसके चारों ओर ऊँची दीवार खिंचाकर उसमें सब प्रकार के शिकारी जानवर छुड़वाये कि वे तीनों शाहज़ादी शाहज़ादे उसमें अहेर खेला करें।

जब वह मकान सब तरह से तय्यार हुआ, तो दारोग़ा ने बादशाह से जाकर महल में रहने की आज्ञा माँगी। वह उससे अति प्रसन्न रहता था, उसने प्रसन्नता से आज्ञा दी। दारोग़ा बादशाह से बिदा होकर उन तीनों समेत उस महल में रहने लगा। उसकी स्त्री कई वर्ष पहिले मर गई थी। वह भी महल में आने के पाँच छः महीने बाद अकस्मात् बीमार होकर मर गया।

उसे इतना भी सावकाश न मिला कि उन तीनों संतानों के उत्पन्न होने का हाल बतलाये; पर केवल इतना ही कहने पाया कि बाबा तुम प्रतिज्ञापूर्वक बहिन भाई मिले रहना। उसके देहांत के बाद बहमन, परवेज़ और परीज़ाद ने उसका यथोचित कर्म किया और परस्पर प्रीतिपूर्वक रहने लगे।

वे शाहज़ादे बड़े हौसलेदार थे। वे बहुत बड़े दरजे को पहुँचे। एक दिन दोनों शाहज़ादे शिकार खेलने गये। परीज़ाद शाहज़ादी अपने घर में अकेली ही रही। संयोग से एक धर्मिष्ठ वृद्धा उसके दरवाज़े पर आई और उसने शाहज़ादी से इच्छा की कि जो आज्ञा हो तो मैं मकान के भीतर आकर निवाज़ पढ़ूँ; क्योंकि मेरा निवाज़ का समय जाता है। शाहज़ादी ने उसे भीतर आने की आज्ञा दी। जब वह वृद्धा अपने नियमित बंदना आराधना से निश्चिंत हुई, तो शाहज़ादी की दासियाँ सैन के अनुसार उसे सारे महल और बाग़ में फिरा लायीं। उसने अच्छी तरह वह महल, बाग़, असबाब और सामान देखा। मनमें प्रसन्न हो सोचा कि जिस मनुष्य ने इस मकान को बनाया है, वह इस काम में बड़ा निपुण था। फिर लौंडियाँ उस वृद्धा को परीज़ाद के पास, जो बारहदरी में बैठी थी, लाईं। शाहज़ादी ने उसको देखकर कहा कि हे माता! आवो, मेरे पास बैठो। ऐसी धर्म्मिष्ठा और आचारवाली की संगति करके मैं अपने को कृतार्थ समझती हूं। तुम ने ईश्वर के आराधन का ऐसा आचार स्वीकार किया है कि सब कोई उसी मार्ग की इच्छा करते हैं। वृद्धा ने चाहा कि नीचे बैठें; परंतु शाहज़ादी ने सुशीलता से उठकर उसका हाथ पकड़ अपने साथ बैठा लिया। उस वृद्धा ने कहा,

"बीबी तुमसी शीलवती मैंने किसी स्त्री को नहीं पाया। यद्यपि मेरी ऐसी पदवी नहीं कि मैं तुम्हारे पास बैठूँ; पर आपकी आज्ञा प्रतिपालन करती हूँ।" फिर वह वृद्धा परीज़ाद से बात चीत करने लगी। इतनेमें लौंडियों ने बरतन बिछाकर उसमें नाना भाँति के भोजन, कुलचे, रोटियाँ और सूखे हरे मीठे मेवे तश्तरियों में रक्खे और कई प्रकार की मिठाई लाकर चुनी। शाहज़ादी ने एक रोटी उठाकर उस बुढ़िया को दी और कहा, हे माता! इसको भोजन कर और जो मेवे तुमको अच्छे लगें, उनको खावो। क्योंकि तुम बड़ी देर की घर से निकली हो, राह में भोजन करने का संयोग न हुआ होगा। उस तपस्विनी वृद्धा ने कहा, "मुझे ऐसे स्वादिष्ठ भोजनों के भोजन करने का अभ्यास नहीं है, पर जो अब खाऊँ तो हानि नहीं, क्योंकि ईश्वर ऐसी उदार स्त्री के हाथ से भोजन खिलवाता है। जब उस वृद्धा और शाहज़ादीने थोड़ा सा भोजन किया, तो शाहज़ादी ने ईश्वर की बंदना की विधि उससे पूछा। उसने अपनी बुद्धि के अनुसार उसे बताया। फिर उस बुढ़िया से पूछा कि यह महल कैसा बना है? सब मकान और असबाब रीति के अनुसार रक्खा है? कोई वस्तु इस मकान और बाग़ में कम है या नहीं? वृद्धाने कहा, "हे सुन्दरी! इस बात को मुझ से मत पूछ। यद्यपि यह बाग़ और मकान खूब बना है और हर तरह से अलंकृत है; परंतु मेरे विचार से तीन वस्तुओं की इसमें ज़रूरत है। अगर वे भी इस बाग़ में हों, तो सब तरह से यह उत्तम हो जाय।" परीज़ाद ने सौगंद देकर उससे पूछा कि वे तीन चीज़ें कौन हैं? मैं उनके इकट्ठे करने में अति परिश्रम करूँगी। निदान शाहज़ादी के बहुत हठ करने पर वृद्धा ने लाचार होके

कहा, "हे सुंदरी! पहिला एक पक्षी है, जिसको बुलबुल हज़ार-दास्ताँ कहते हैं और वह नायाब है, वह कहीं नहीं मिलता। जब वह अपनी प्रिय वाणी से बोलता है, तो हज़ारों जानवर उसकी सुन्दर वाणी सुनने के वास्ते आते हैं और उसकी आवाज़ के साथ अपनी आवाज़ मिलाते हैं। दूसरा एक वृक्ष है, जिसके पत्ते बहुत चिकने हैं और पवन के लगने से जब एक पत्ता दूसरे पत्ते के साथ रगड़ता है तो अच्छी आवाज़ और भाँति भाँति के गान सुनाई देते हैं, जिसके सुनने से मनुष्य विह्वल हो जाता है। तीसरा सुनहले रंग का पानी कि जो एक बूंद उसकी किसी ठिलिया में डालकर बाग़ में रक्खे तो थोड़ी देर में वह बरतन भर जायेगा। फिर फ़व्वारे के समान उछलता और छूटता रहेगा। कभी भी बंद न होगा। वह पानी उठकर फिर उसी बरतन में पड़ता है। शाहज़ादी ने कहा, निश्चय है कि तुमको ऐसी विचित्र वस्तुओं का हाल मालूम होगा कि वे कहाँ हैं? मुझको उन जगहों का पता बतला। वृद्धा ने कहा, ये तीनों चीज़ें हिंदुस्तान से बाहर और देशों अर्थात् और विलायतों में मिलेंगी। इस जगह से अमुक ओर को बीस दिन की राह पर हैं। बीसवें दिन जाके पूछना कि गानेवाली चिड़िया और गानेवाला वृक्ष और सोने के रंग का पानी कहाँ है? वह मनुष्य जिससे तुम को पहिले भेंट होगी, इन तीनों चीज़ों का ठिकाना बतायेगा। यह कहकर वृद्धा ने शाहज़ादी से बिदा होकर अपनी राह ली।

परीज़ाद ने वे बातें जो उस वृद्धा से सुनी थीं, खूब याद रक्खीं। वृद्धा यह समझती थी कि शाहज़ादी ने साधारण इन चीज़ों का पता पूछा है। यह नहीं कि आप ही वहाँ जाने का

इरादा करेगी। इसलिये उसने साफ़ पता बता दिया और परी-ज़ाद ने उसको खूब याद रक्खा। इन चीज़ों की प्राप्ति का उपाय विचारने लगी। इसी चिंता में थी कि उसके भाई शिकार से लौट आये। परीज़ाद को इस दशा में देखकर वे अति विस्मित हुये। निदान बहमन ने उससे पूछा कि बहिन आज तुम सुस्त क्यों हो? क्या तुम कुछ बीमार हो गई हो? कोई बात तुम्हारी मरज़ी के प्रतिकूल हुई हो, तो हमसे कहो, हम उसका कोई उपाय करें। शाहज़ादी ने थोड़ी देर तक कुछ उत्तर न दिया। फिर अपना शिर उठा दोनों भाइयों की ओर देखा और फिर नीचे आँखें करके कहा कि कुछ नहीं। बहमन ने कहा कि कोई तो बात अवश्य है, जो हमको नहीं बताती हो। अब हम तब तक तुम्हारे पास से न जायँगे, जब तक तुम अपने रंज का हाल प्रकट न करोगी। जब परीज़ाद ने देखा कि दोनों भाई बड़े अधीर्य्य हैं, तो लाचार होकर कहा, "इस चिंता का हाल प्रकट करना तुम को भी रंज करना है; पर कहे बिना नहीं बनता। इसलिये वर्णन करती हूँ। यह घर हमारे पिताने निर्म्माण किया था, यह बहुत सजा हुआ है, पर आज मुझे मालूम हुआ कि जो तीन चीज़ें इस महल में और बाग़ में होतीं तो यह अपूर्व था। संसार में फिर इसके सदृश कोई मकान न पाया जाता। वे तीन चीज़ें यह हैं। एक बोलनेवाली चिड़िया, दूसरा गाने-वाला वृक्ष और तीसरा सोने के रंग का पानी। जब से मैंने इन तीनों चीज़ों का हाल सुना है तब से मुझे इनकी अति ला-लसा हुई है कि जिस तरह से हो सके, इन चीज़ों को प्राप्त क-रके अपने घर में रक्खूँ। जो तुम से हो सके, तो तुम इन चीज़ों

के ढूँढ़ने में मेरी सहायता करो।" बहमन ने कहा कि अगर तुम इनके मिलने का स्थान और पता मुझे बतादो तो मैं कल सुबह उधर जाऊँगा। परवेज़ ने जब देखा कि बड़ा भाई सफ़र करने को तय्यार है, तो उसने कहा, "भाई, तुम हम सबसे बड़े हो, तुम्हारा घर में रहना उचित है। मुझे आज्ञा दो, तो मैं ही सफ़र करूँ और तीनों चीज़ों को ढूँढ़कर अपनी प्यारी बहिन के लिये लाऊँ।" बहमन ने कहा, "भाई मुझे तुम्हारे साहस और हिम्मत पर निश्चय है कि जो काम मुझसे न हो सकेगा, उसे तुम सिद्ध कर लोगे; पर जो मैं जाऊँ, तो अच्छी बात है। तुम अपनी बहिन के पास रहो।"

दूसरे दिन शाहज़ादा बहमन ने उस जगह का नाम और निशान, जहाँ ये तीनों बस्तुएँ थीं, परीज़ाद से पूछकर बिदा माँगी और शस्त्र बाँधके घोड़े पर सवार हुआ। उस वक़्त परीज़ाद को अपने भाई के बियोग से बड़ा दुःख हुआ। वह रोकर कहने लगी, भाई मुझे तुम्हारा बियोग असह्य है। मैं नहीं चाहती कि तुम मुझ से और अपने भाई परवेज़ से अलग हो। मुझे इन तीनों चीज़ों के न पाने से इतना दुःख न होगा जितना तुम्हारे वियोग से। अगर हर रोज़ का हाल तुम्हारा मालूम होता जाता, तो भी हम दोनों को कछ न कुछ धैर्य्य होता। शाहज़ादे से बहमन ने कहा, "मैं इस सफ़र का पक्का इरादा कर चुका हूँ और बहुत जल्दी इस काम को करके आ मिलता हूँ। कुछ चिंता मत करो। कदाचित् मेरे जाने के बाद तुमको मेरे हाल के मालूम करने की इच्छा हो तो मैं तुमको अपना निशान दिये जाता हूँ। उससे मेरा बुरा भला हाल मालूम हो जायगा। यह कहकर बह-

मन ने अपनी कमर से एक करौली निकालकर परीज़ाद को दी और कहा, तुम इसको अपने पास रक्खो। जिस दिन वा जिस वक़्त तुमको मेरी कुशल का हाल मालूम करना हो, इसको निकालकर देखना। जो इसको साफ़ और चमकता हुआ पाना, तो समझना कि मैं कुशलपूर्वक हूँ। अगर उसमें लोहू टपकता हुआ देखना, तो मुझे जीता न समझना।

शाहज़ादा इस तरह से परीज़ाद को धीरज देकर बिदा हुआ और अपनी सीधी राह ली। कहीं भी रास्ता न भूला। जब फ़ारस देश से बीस दिन की राह लाँघ चुका, तो उसने एक वृद्धको, जिसका स्वरूप अति भयानक और विकराल था, देखा कि एक वृक्ष के नीचे बैठा है। उस दरख़्त के पास एक झोपड़ा पड़ा हुआ है। उसके सबब वह गर्मी और सर्दी से बचा रहता है। वह इतना बूढ़ा था कि उसकी भौंहें, मूछें और डाढ़ी के सब बाल बरफ़ के समान सफ़ेद थे। वे इतने लंबे और गुंजान थे कि उसके सारे मुँह को छिपा लिया था। उसकी डाढ़ी पैरोंतक पहुँची थी। हाथ पाँव के नाखून बहुत बढ़ गये थे। वह बूढ़ा अपने शिर पर एक लंबीसी टोपी पहिने और सारे शरीर में एक चटाई लपेटे हुये था। वह कोई सिद्ध था, जो बहुत दिनों से संसार की माया मोह छोड़कर ईश्वर की बंदना में प्रवृत्त हुआ था। इसलिये उसका ऐसा स्वरूप बन गया था। बहमन उसी दिन सबेरे से ढूँढ़ता था कि किसी मनुष्य को देखूँ कि जिससे उन तीनों चीज़ों का ठिकाना पूछूँ। उस सिद्ध को जो कि पहिले वही बीस दिन के पीछे मिला था, देखकर उसके पास आ खड़ा हुआ और समझा यह वही मनुष्य है, जिसको उस बुढ़िया ने बताया था। फिर शाहज़ादे

ने घोड़े से उतरके उस सिद्ध को दंडवत् कर कहा, "हे पिता! ईश्वर तेरी आयु अधिक करे और तेरे सब मनोरथ सिद्धि करे। सिद्ध ने उस शाहज़ादे को दंडवत् का उत्तर दिया, पर वह कुछ शाहज़ादे की समझ में न आया। शाहज़ादे को मालूम हुआ कि मूछों ने इस सिद्ध का मुँह ऐसा ढक रक्खा है, जिससे उसकी बात कुछ समझ में नहीं आती। फिर शाहज़ादे ने घोड़ा दरख़्त में बांधकर मिक़राज़ निकाली और कहा, "हे सिद्ध! तुम्हारी मूछें इतनी बढ़ गई हैं कि सारे मुँह को ढक रक्खा है। जो मरजी हो, तो मैं तुम्हारी मूछें और भौंहें कतर डालूँ। उनके बढ़ने से तुम्हारा स्वरूप रीछ के समान बन गया है, जिससे आप मनुष्य नहीं मालूम होते। उस सिद्धने इशारे से कहा, "बहुत अच्छा।" शाहज़ादे ने क़ैंची से उसकी मूछें और भौंहें कतर डालीं। अब उस बृद्ध का चेहरा जवानों के मुखकी सदृश मालूम होने लगा। शाहज़ादे ने कहा, "यदि मेरे पास शीशा होता, तो मैं तुमको तुम्हारा स्वरूप दिखाता कि तुम जवान मालूम होते हो।" ऐसी स्वार्थ की बातों से वह सिद्ध मुसकराया और बोला, मैं तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हुआ। जो सेवा मुझसे हो सके, मैं करूँ। तुम्हारा क्या अर्थ है? मुझसे कहो, तो मैं अपनी सामर्थ्य भर उसमें परिश्रम करूँ।" शाहज़ादे ने कहा, "हे सिद्ध, मैं बहुत दूर से बोलती चिड़िया, गानेवाले वृक्ष और सुनहले पानी के लिये यहाँ आया हूँ। मुझे मालूम है कि ये तीनों चीज़ें निकट हैं; पर उस स्थान को नहीं जानता। जो तुम जानते हो तो दया करके मुझे बताओ।" शाहज़ादे की यह बात सुन सिद्ध के मुख का रंग उड़ गया और उसने आँखें नीची कर लीं

और कुछ भी उत्तर नहीं दिया। शाहज़ादे ने फिर सिद्ध से कहा, "हे पिता ! मैंने जो कुछ तुमसे कहा, तुमने समझा या नहीं। जो तुम इस हाल को नहीं जानते, तो मुझसे वैसाही कहो कि मैं किसी और मनुष्य से जाकर पूछूँ। सिद्ध ने बहुत देर के पीछे उत्तर दिया कि जिस जगह को तुम ढूँढ़ते हो, उसे मैं जानता हूँ; पर तुमने मेरी बहुत सेवा की है, इसवास्ते तुमसे प्रीति हो गई है। मैं नहीं चाहता कि इस राह और स्थान को तुम्हें बताऊँ। शाहज़ादे ने पूछा कि क्या कारण है, जो तुम मुझसे उस स्थान को छिपाते हो। सिद्ध ने कहा, "उस मार्ग में बहुत से खतरे हैं और बहुत से मनुष्य इस जगह आये और मुझसे उस मकान की राह पूछी। मैंने उस राह के बताने में बहुत ढील की; पर उन्हों ने मेरी बात न मानी। मैंने लाचार होके उस रस्ते को बताया। अब तुम निश्चय मानों कि वे सबके सब उसी राह में मारे गये। कोई मनुष्य जीता बचकर इधर नहीं आया। जो तुमको अपनी जान प्यारी है, तो मेरा उपदेश मानों और आगे मत जाओ। यहीं से अपने घर फिर जावो। शाहज़ादे ने जो कि अपने इरादे पर दृढ़ था, उस सिद्ध से कहा, तुमने अति प्रीति से जो ये हित-कारक उपदेश किये, मैंने उनको सुना। इसका मैं आपका अति गुण मानता हूँ। चाहे इस मार्ग में कितने ही भय हों; पर मैं अपने इरादे से हट नहीं सक्ता। यदि मुझ पर कोई चढ़ भी आवेगा तो अपने शस्त्रों से जो मेरे पास हैं, अपनी रक्षा करूँगा। मुझे निश्चय है कि कोई मुझसे अधिक साहसी और पुरुषारथी न होगा। सिद्ध ने कहा, "वे तुम्हारे सामने होके उस मकान के जाने में बाधक न होंगे; किंतु वे तुम्हें दिखाई भी न देंगे। फिर तुम क्यों

कर उनसे बच सकोगे।" शाहज़ादे ने कहा, "मुझे उनका कुछ भय नहीं है। तुम मुझे राह बतावो।" सिद्ध ने जब उस शाहज़ादे को इस इरादे में दृढ़ पाया तो उसने अपनी थैली में हाथ डालकर एक गेंद निकाला और कहा, "खेद है कि तुमने मेरे उपदेश को न माना। अब मैं लाचार हूँ। खैर, इस गेंद को लो और जब तुम सवार हो, तो इस गेंद को अपने आगे डाल दो। यह लुढ़कता हुआ आगे को जायगा। तुम भी उसके पीछे जाना। जब गेंद एक पहाड़के नीचे ठहर जाय तो तुम घोड़े से उतरना और घोड़े की गरदन पर बाग डालकर छोड़ देना। वह घोड़ा वहाँ से जब तक कि तुम फिर न आवोगे, कहीं न जायगा। जब तुम उस पहाड़ पर चढ़ोगे तो अपने दाहिने बायें बड़े २ काले पत्थर देखोगे। अपने चारों ओर बुरे २ शब्द सुनोगे, जो तुमको क्रोध और भ्रम दिलावेंगे और तुम्हें पहाड़ के शिखर पर जाने न देंगे; पर चैतन्य रहना और आवाज़ों से मत डरना, मुँह फेर के पीछे मत देखना। जो तुम डरोगे अथवा मुँह फेरके पीछे देखोगे, तो उसी समय काले पत्थर बन जावोगे। मार्ग में जो पहाड़ मिलेंगे वे सब मनुष्य थे। तुम्हारी तरह उन्हीं तीन चीज़ों के लेने के लिये गये थे और राह में उन आवाज़ों से डरके काले पत्थर होगये। जब तुम कुशलपूर्वक पहाड़ के शिखर पर पहुँचोगे, तो वहाँ पर एक पिंजड़ा पाओगे, जिसमें बोलती चिड़िया बोलती [illegible]। तुम उस चिड़िया से पूछना कि गानेवाला वृक्ष और सुनहले रंग का पानी कहाँ है। वह चिड़िया दोनों चीज़ें तुमको बतावेगी। फिर जब तुम उन तीनों चीज़ों को पाओगे तो फिर कुछ भय न रहेगा। फिर भी तुमसे कहता हूँ कि अभी

कुछ नहीं भया है। मेरा कहना मानके तुम इस उद्योग को छोड़ दो और अपने घर चले जावो। बहमन ने सिद्ध से कहा, "अब तो मैं अपने प्रयोजन को सिद्ध किये बिना नहीं फिरता। अब मैं उस तरफ़ को जाता हूँ।"

यह कहके शाहज़ादे ने घोड़े पर सवार हो उस गेंद को अपने आगे फेंक दिया। वह गेंद जल्दी जल्दी लुढ़कता हुआ आगे को चला। शाहज़ादा उसी गेंद की तरफ़ देखता हुआ उसके पीछे जाता था। जब वह गेंद उस पर्व्वत के नीचे जिसका उस सिद्धने वर्णन किया था, पहुँचा तो ठहर गया। शाहज़ादा भी उसी जगह पर जाकर उतरा और घोड़े की लगाम गरदन पर डालकर वहीं छोड़ दिया। आप पहाड़ पर चढ़ने लगा। जहाँ तक उसकी दृष्टि उस पर्व्वत पर पड़ती थी, काले पत्थर पड़े हुये उसको दिखाई देते थे। अभी चार पाँच क़दम भी ऊपर न चढ़ा था कि वहाँ चहुँ ओर से शोर सुनाई पड़ा, पर शाहज़ादे ने वहाँ किसी को न देखा। कभी सुनता था कि यह कौन अहमक़ है? किधर को जाता है? इसको न जाने दो। कभी वहाँ से यह आवाज़ आती थी कि इसको पकड़कर ठहरावो और बध कर डालो। कभी ऐसे ज़ोर से आवाज़ आई कि जैसे बादल गरजता है। उसमें कोई कहता है, हे चोर, हे ख़ूनी, हे क़ातिल, और कभी यह आवाज़ धीरे से उसके कानों में पहुँचती, इसे कुछ न कहो; जाने दो। यह वही मनुष्य है, जो पिंजड़ा और चिड़िया को ले आवेगा। बहमन इन बातों को सुनकर कुछ न डरा और पूर्ववत् बड़े साहस और दिलावरी से पहाड़ पर चढ़ता गया; पर जब पास पहुँचा तो चहुँ ओर से आवाज़ें आने लगीं, तो वह

ऐसा भयभीत हुआ कि उसके पाँव काँपने और थर्राने लगे और वह ठहर न सका। मारे भय के सिद्ध की सब बातें भूल गया और मुँह फेरके देखने लगा। उसके मुख फेरते ही वह काला पत्थर बन गया।

जब से बहमन शाहज़ादा परीज़ाद से विदा हुआ था, तबसे वह उस छुरीको गिलाफ़ समेत अपनी कमर में रखती। जब चाहती उसको निकालके शाहज़ादे का हाल मालूम करती और उस दिन के पहिले जिस दिन कि शाहज़ादा पत्थर हो गया था, कई बेर छुरी को देखा तो उसे साफ़ और उज्ज्वल पाया। पर उस दिन परवेज़ ने परीज़ाद से कहा, "बहिन मुझे छुरी दो, तो मैं उसमें अपने भाई का हाल देखूँ।" परीज़ादने छुरी निकालकर परवेज़ के हाथ में दी। जब परवेज़ ने उसको मियान से खींचकर देखा तो उस छुरी से रक्त की बूंदें टपकने लगीं। यह देखतेही उसने छुरी हाथ से फेंक दी और रोने लगा। जब परीज़ाद को भी यह हाल मालूम हुआ तो वह भी रोके कहने लगी। बड़ा खेद है कि भय्या मेरे लिये तुमने प्राण दिया। मुझ अभागिन ने बोलती चिड़िया, गाते दरख़्त और सुनहले रंग के पानी का तुमसे क्यों वर्णन किया ? क्यों मैंने उस वृद्धा से इस घर का अच्छे बुरे होने का हाल पूछा ? जिसके उत्तर में उसने इन वस्तुओं का वर्णन किया। अच्छा होता, वह बुढ़िया न आती। वह बड़ी मकार और दुष्टा थी। मैंने उसका बड़ा सम्मान किया और उसने मेरे साथ यह अपकार किया और मैंने क्यों उन वस्तुओं का उससे रास्ता पूछा था ? जो वे चीज़े अब मेरे हाथ भी लगें, तो मेरे भाई के मरने के पीछे किस काम की हैं ? और

उन्हें लेकर मैं क्या करूँगी ? शाहज़ादी उसके गुण वर्णन कर बहुत रोई । परवेज़ भी अपनी बहिन के साथ खूब रोया। फिर शाहज़ादी से कहा कि अब मुझे अवश्य सफ़र करना चाहिए, जिससे मालूम हो कि मेरा भाई अपने काल से मरा या किसी ने उसको मारा । मैं उसके मारनेवाले से जाकर बदला लूँगा । परीज़ादने उसे बहुत समझाया कि अब तुम वहाँ जाने का इरादा मत करो, क्योंकि इस राह में बड़े खतरे और भय हैं । ऐसा न हो कि दूसरा भाई भी मेरे हाथ से जावे; किंतु परवेज़ ने उसका कहना न सुना और दूसरे दिन तय्यार होके अपनी बहिन से बिदा होकर चाहा कि सिधारूँ । इतने में परीज़ाद ने कहा कि मुझे छुरी के देखने से बहमन का बुरा भला हाल मालूम होता था, तुम्हारा हाल कैसे मालूम होगा ? परवेज़ ने उसे एक मरवारीद की एक माला देकर कहा कि जब तक इस माला के दाने अलग अलग देखना और देखना कि वे चलते हैं, तो जानना कि मैं जीता हूँ और जब इसके दाने एक दूसरे से चिपट जायँ, तो समझना कि मैं जीता नहीं । परीज़ाद ने उस माला को लेकर अपने गले में डाल लिया और हररोज़ उसे देखकर परवेज़ की कुशल का हाल मालूम करने लगी ।

दूसरे दिन शाहज़ादा परवेज़ उस तरफ़ को गया । बीस मंज़िलें लाँघकर उसी सिद्ध से, जहाँ पर बहमन ने भेंट की थी मिला और उसको प्रणाम करके पूछा कि अगर आपको मालूम हो कि जिस जगह पर बोलती चिड़िया, गाता दरख़्त और सुवर्ण के रंग का जल है और वे कैसे मिलेंगे तो मुझको बताओ । सिद्ध ने वहाँ के सब खतरे उसे बताकर कहा कि एक मनुष्य

तुम्हारी ही शकल और आयु का थोड़े दिन हुये हैं कि आया था, उसने मुझसे इसी बात का प्रश्न किया था। मैंने उसे बहुत समझाया, पर उसने न माना। अंतको मेरे बताने से वह उन्हीं तीनों चीज़ों की तलाश करने को गया। फिर वह वहाँ से न लौटा। मालूम हुआ कि वह भी औरों की तरह जो इन्हीं चीज़ों के ढूँढ़ने के लिये गये थे, मर गया। परवेज़ ने कहा कि मैं उस मनुष्य को, जिसका तुमने अभी वर्णन किया खूब जानता हूँ, वह मेरा भाई था। मुझे यह निश्चय हुआ है कि वह मारा गया, पर यह मालूम नहीं कि कैसे मारा गया। सिद्धने कहा कि इस हाल को तो मैं तुमसे खूब वर्णन कर सक्ता हूँ। वह औरों के सदृश पत्थर बन गया है। जो तुम मेरा उपदेश न सुनोगे, तो तुम भी वैसे ही बन जावोगे। अच्छाहो कि तुम इस इरादे को छोड़ दो। परवेज़ ने कहा कि तुम मेरी भलाई के वास्ते जो कुछ कहते हो, उसका मैं आपका कृतज्ञ हूँ; पर आशा रखता हूँ कि आप मुझे भी उसका रास्ता बताओगे। इस विषय में मेरा ऐसा इरादा नहीं कि मैं इससे हट जाऊँ। सिद्ध ने कहा कि अगर तुम मेरी बात नहीं मानते, तो मैं लाचार हूं। बृद्धावस्था के कारण से मैं तुम्हारे साथ राह बताने को नहीं जा सक्ता। इसलिये मैं तुमको एक गेंद देता हूँ, वह तुमको रास्ता बतावेगा। जब परवेज़ सवार हुआ तो सिद्धने अपनी झोली से गेंद निकालकर उसको दिया और उससे कहा, तुम उन शब्दों से, जो पहाड़ पर सुनोगे और आवाज़ करनेवालों को न देखोगे तो डरना नहीं। पहाड़ पर चढ़े चले जाना। बोलनेवाली चिड़िया, गानेवाला वृक्ष और सोने के रंग का जल तेरे हाथ लगेगा। इतना कह उस सिद्ध ने शाहज़ादे को बिदा किया।

शाहज़ादे ने घोड़े पर सवार हो, गेंद को अपने आगे डाल दिया और घोड़े को एड़ मार, उस गेंद के पीछे चलाया। जब वह पहाड़के नीचे पहुंचा और गेंद भी ठहर गया, तो वह भी घोड़े से उतरकर ठहर गया। फिर उन बातों को जो सिद्ध से सुनी थीं, अपने दिल में एक-एक करके जमाई। फिर बड़े साहससे पर्वत के शिखरपर जाने का इरादा किया और उस पर चढ़ने लगा। पाँच-छः क़दम भी न गया होगा कि अकस्मात् उसने मनुष्य का शब्द सुना, जो उसको डराता और गाली देता है कि हे भाग्यहीन! आपत्ति के मारे खड़ा हो जा कि मैं तुझे इस ढिठाई का दंड दूँ। जब परवेज़ ने बुरी गाली सुनी तो मारे लज्जा के क्रोध में आ गया और सिद्ध की सब बातें भूलकर मियान से तलवार निकाल पीछे फिरा कि उस मनुष्य को जो गाली देता है मारे, पर उसने वहाँ किसी को नहीं देखा। फिर उसी दम शाहज़ादा और उसका घोड़ा काले पत्थर बन गये।

परीज़ाद परवेज़ के जाने के बाद हर वक़्त मोतियों की माला को देखा करती और उसके मोती गिना करती थी। रात्रि को वह माला गले में डालकर सो जाती। जिस दिन परवेज़ अपने भाई के सदृश पत्थर बन गया था, माला को देखा, तो उसके मोती एक दूसरे से ऐसे मिले और चिपटे पाये कि किसी तरह एक दूसरे से अलग न होते। इससे परीज़ाद को निश्चय होगया कि शाहज़ादे परवेज़ के भी प्राण गये। उसने अपने मनमें कहा कि ऐसे प्यारे दोनों भाइयों के मर जाने के बाद मेरा जीना वृथा है, अब तू भी यहाँ से चल दे।

दूसरे दिन परीज़ाद मरदाने कपड़े पहिनकर नौकरों चाकरों

से कहा, "मैं थोड़े दिनों के लिये किसी ओर जाती हूँ, तुम मकान और असबाब की खबरदारी करना।" फिर शस्त्र बाँध, घोड़े पर सवार होके अकेली उसी ओर को चली। शाहज़ादी घोड़े पर खूब सवार होती थी, शिकार भी खूब कर सक्ती थी। इसलिये उसे मार्ग के कष्ट कुछ मालूम न हुये। जब शाहज़ादी उस सिद्ध के पास पहुँची, तो घोड़े से उतर उसके पास जा बैठी और उससे पूछा कि यहाँ पासमें कौन ऐसी जगह है, जिसमें बोलती चिड़िया, गानेवाला वृक्ष और सोने के रंग का जल है; दया करके मुझे वह स्थान बता दीजिये। सिद्धने कहा कि तुम्हारी बातों से मालूम होता है कि तुम स्त्री हो। मैं उस जगह को खूब जानता हूँ, तुम उसे क्यों पूछती हो? परीज़ाद ने कहा, "मैंने तीनों चीज़ों का वृत्तांत सुना है। मैं चाहती हूँ कि उनको अपने घर ले जाकर रक्खूँ।" सिद्धने कहा, "वास्तव में वे ऐसी ही विचित्र और अपूर्व्व वस्तुएँ हैं। तुम्हारे पास वे रहने लायक़ हैं; पर तुम्हें मालूम नहीं कि उन चीज़ों के प्राप्त करने में कैसे-कैसे भय हैं। तुम्हारे वास्ते यही उत्तम है कि तुम उनका विचार छोड़ दो। यहीं से अपने घर लौट जाओ।" परीज़ाद ने कहा, "हे पिता, मैं बहुत दूर से आई हूँ। मैं अपने मनोरथ को सिद्ध किये बिना नहीं लौट सक्ती। तब उस सिद्ध ने वहाँ के डरावने हाल, जैसे कि उसने बहमन और परवेज़ से कहे थे, इससे भी कहे कि वे सब खतरे पर्व्वत के आरंभ से शिखर तक रहेंगे। पहिले बोलनेवाली चिड़िया मिलेगी। चिड़िया के बताने से गानेवाला वृक्ष और सोने के रंग का पानी भी प्राप्त होगा। उस पर्व्वत के चढ़ने में बड़े-बड़े भयानक शब्द सुन पड़ेंगे और चारों ओर जितने काले पत्थर

देखोगी, वे सब मनुष्य थे। बड़े साहस से इसी मतलब के लिये वहाँ गये और मार्ग में भय खाकर पत्थर बन गये। उनका हाल यह है कि जब कोई उन भयानक और दुर्वादों को सुनकर क्रोध में आया और डरकर मुख फेर अपने पीछे देखने लगा, तो मुँह फेरने के साथ ही वह और उसका घोड़ा पत्थर बन जाता है। जब वह सिद्ध इस हाल को विस्तारपूर्वक वर्णनकर चुका; तो परीज़ाद ने कहा, "मुझे खूब मालूम हुआ कि वह आवाज़ें केवल डराने और धमकाने के वास्ते हैं। इसके अलावा और कोई भय नहीं। कोई मनुष्य सामने होकर उस पर्व्वत पर चढ़ने से नहीं रोकेगा। हे सिद्ध, यद्यपि मैं स्त्री हूँ; पर मैं ऐसी दिलेर और निडर हूँ कि सब बातों को सह लूँगी। न तो आवाज़ों को सुनकर क्रोध करूँगी और न मुझको कोई भय ही होगा। इसके सिवाय मैं ऐसा उपाय करूँगी कि वे आवाज़ें मुझे कुछ भी सुनाई न देंगी। मैं अपने कानों में रुई भर लूँगी।" सिद्ध ने कहा कि बीबी मुझे मालूम होता है, वे चीज़ें तेरे ही भाग्य में हैं; क्योंकि आजतक किसी को यह उपाय न सूझा। पर ध्यान रख, उन भयानक आवाज़ों से डरना मत। परीज़ाद ने कहा, "ऐसा ही होगा। मेरा मन साक्षी देता है कि मेरा मनोरथ अवश्य सिद्ध होगा। तुम दया करके उस मार्ग को बताओ।" सिद्ध ने फिर उसे समझाया कि अपने घर लौट जावो; पर परीज़ाद ने कुछ न माना। जब सिद्ध समझा कि शाहज़ादी अपने उद्योग पर दृढ़ है, तब अपनी झोली से एक गेंद निकालकर उसे दिया और कहा, "इसको अपने आगे लुढ़का देना और उसके पीछे चली जाना। जब वह गेंद पहाड़ के नीचे पहुँचकर ठहर जाय, तब तुम घोड़े से उतर पड़ना और पहाड़ पर

चढ़ना।" शाहज़ादी गेंद लेकर घोड़े पर सवार हुई और जिस तरह सिद्ध ने कहा था, अपने आगे गेंद को फेंककर उसके पीछे घोड़े को तेज़ किया। वह गेंद पर्वत के नीचे पहुँचकर ठहर गया। शाहज़ादी क्षणमात्र वहीं ठहर अपने कानों को रुई से खूब बंद-कर पहाड़ पर चढ़ने लगी। जब कई क़दम ऊपर गई, तो चारों तरफ़ से आवाज़ें आने लगीं। पर रुई के सबब से उसे आवाज़ें सुनाई न दीं। फिर भयानक शब्द हुये, इसकी भी उसे ख़बर न हुई। फिर वो गाली, जो स्त्रियों के लिये हैं, उसको सुनाई देने लगीं। शाहज़ादी ने उन्हें थोड़ा सा सुनकर हँस दिया और कुछ बुरा न माना और मन में कहा, इन दुर्वादों और बुरी बातों से क्या। मैं अपने मतलब से न हटूँगी। इस बकने से क्या होता है? शाहज़ादी ऐसे भयानक स्थानसे जहाँ रुस्तम आदि योद्धाओं का ज़हर पानी होता था, बड़े साहस से लाँघकर शिखर पर चालाकी से पहुँची। वहाँ उसने एक पिंजड़ा रक्खा हुआ देखा। उसमें एक चिड़िया थी, जो अति मनोहर वाणी से बोल रही थी। शाहज़ादी को देखकर वह छोटे डील की होने पर भी बादल के समान गरजने लगी, और कहने लगी, "पीछे को फिर जा, मेरे पास मत आ।" शाहज़ादी उसकी यह बात सुन हिम्मत बाँध वहाँ से दौड़ शिखर पर चढ़ गई। वहाँ पृथ्वी बराबर पाई और जल्दी जाकर उस पिंजड़े पर अपना हाथ रख दिया और कहा, "अब मैं तुझको पागई, तू अब कभी मेरे हाथ से न छूटेगी।"

फिर शाहज़ादी ने अपने कानों से रुई निकाल ली। चिड़िया ने कहा, "हे अति साहसवाली बीबी, धैर्य रख। अब मुझ-से तुझे कुछ कष्ट न होगा, जैसा कि और लोगों को पहुँचा।

यद्यपि मैं इस पिंजड़े में बंद हूँ, पर मुझे बहुत से छिपे हुये अह-वाल मालूम हैं। अब से मैं तुम्हारी लौंड़ी हुई और तुम मेरी स्वामिनी हो। मुझे तुम्हारा हाल खूब मालूम है। तुम नहीं जानतीं कि एक दिन मैं तुम्हारे काम आऊँगी। अब जो कुछ आज्ञा दो, तो मैं उसे करूँ।" इन बातों को सुनकर शाहज़ादी अति प्रसन्न हुई; पर साथही अपने भाइयों को याद करके बहुत रंज किया और उस चिड़िया से कहा, "मैं बहुतसी बातों की इच्छा रखती हूँ। सबसे पहिले मेरा यह प्रश्न है कि यहाँ सोने के रंग का पानी कहाँ है, जिसमें अति विचित्र गुण हैं। यदि तुझे मालूम हो, तो मुझे बता, वह कहाँ है ?"

उस चिड़िया ने वह जगह, जहाँ पानी था, बताया। वह वहाँ जाकर चाँदी की एक ठिलिया, जो अपने साथ ले गई थी, जल से भर लाई। फिर उस चिड़िया से कहा, "मैं उसी गानेवाले वृक्ष को भी ढूँढ़ती हूँ, मुझे बता, वह कहाँ है ?" चिड़िया ने कहा, "तुम्हारी पीठ के पीछे एक जंगल है, जिसमें तुम उस वृक्ष को पावोगी। वह जंगल बहुत दूर नहीं है।" परीज़ाद उस जंगल में गई, वहाँ जाकर उस दरख़्त का गाना सुना। वह दरख़्त बहुत ऊँचा था। फिर उसने उस चिड़िया से कहा, "मैंने उस दरख़्त को तो पाया; पर उसको उखाड़के ला नहीं सकी।" चिड़िया ने कहा, "तुम उसकी एक छोटीसी टहनी तोड़कर लेआवो और अपने बाग़में लगादो। वह शाख़ लगाते ही तुरंत जड़ पकड़ लेगी और ऐसा ही सुंदर वृक्ष तैयार हो जायगा।" शाहज़ादी एक टहनी तोड़ लाई। इन तीनों वस्तुओं के प्राप्त होने से वह अति प्रसन्न हुई। फिर उसने चिड़िया से कहा, "यह मतलब तो पूरा होगया; पर मेरे दो भाई जो यहाँ

इन्हीं के लिये आये थे, काले पत्थर होके यहीं पड़े हैं। मैं चाहती हूँ, वे भी जी जायँ, तो उन्हें भी अपने साथ घर लेजाऊँ। कोई ऐसा उपाय बता, जिससे मेरी यह भी इच्छा सिद्ध हो।" चिड़िया ने कहा, "तू ठिलिया से थोड़ासा सोनेका पानी लेकर उन सब काले पत्थरों पर, जो इधर-उधर पर्वत पर पड़े हैं, छिड़क दे। इस जल के प्रभाव से वे सब जी उठेंगे। उन सबके साथ तुम्हारे दोनों भाई भी जी उठेंगे।" शाहज़ादी इस बात को सुन बड़ी प्रसन्न हुई और वहाँ से उन तीनों चीज़ों को लेकर पत्थरों के पास आई और उसने उस चाँदी की ठिलिया से थोड़ासा पानी लेकर ज़रा-ज़रा सब पत्थरों पर छिड़का। छिड़कतेही वे सब पत्थर, जिनमें उसके दोनों भाई भी थे, घोड़ों समेत जीकर उठ खड़े हुये। शाहज़ादी अपने भाइयों को पहिचानकर उनके गले लगी। उनसे पूछा, "तुम यहाँ क्या करते थे?" उन्होंने कहा, "हम यहाँ सोते थे।" परीज़ाद ने कहा, "तुमको मेरे बिना सोना कैसे अच्छा मालूम हुआ? तुम्हें याद नहीं कि तुम बोलती चिड़िया और गानेवाला वृक्ष और सुनहले पानी के लाने को यहाँ आये थे। तुमने इस जगह पर काले पत्थर देखे थे, अब देखो; कोई उनमें से यहाँ बाक़ी तो नहीं है। ये आदमी जो तुम्हारे चहूँ ओर खड़े हैं, घोड़ों समेत पत्थर बन गये थे। अब वे जी के तुम्हारी राह देखते हैं। जो तुम जानना चाहो कि हम किस करामात से जी गये, तो सुनो। मैंने इस ठिलिया से पानी लेकर सब पर छिड़का था। उसके प्रभाव से सब जी गये। बोलती चिड़िया, गानेवाला वृक्ष जिसकी टहनी मेरे हाथ में है और सुनहले रंग के पानी को प्राप्त करके मैंने यह चाहा कि तुम्हारा भी पता लगाऊँ और तीनों चीज़ें

लेकर जाऊँ। इसलिये मैंने इस चिड़िया से पूछा कि मेरे भाई कैसे जीवेंगे, मैं उनको घर ले जाऊँगी। उसने कहा कि इस पानी के छिड़कने से जी जाएँगे। मैंने थोड़ा-थोड़ा पानी सब पर छिड़का, जिससे सब जी गये।"

यह सुनकर बहमन और परवेज़ अपनी बहिन की बड़ी प्रशंसा और गुण वर्णन करने लगे। इसी भाँति सबलोग शाहज़ादी को आशीर्वाद देने लगे। हर एक कहता, "बीबी हम तुम्हारे दास हैं, जन्मभर तुम्हारे अहसानमंद रहेंगे। अब जो आज्ञा हो, वह करें।" परीज़ाद ने कहा, "मुझको अपने भाई को जिलाना था, इससे तुमको भी लाभ हुआ। मैं तुम्हारी कृतज्ञतासे अति प्रसन्न हुई। अब तुम अपने घोड़ों पर सवार हो और जिधर से आये थे उधर को चले जाओ।" परीज़ाद ने उन सबको बिदा करके अपने घोड़े पर सवार होने का इरादा किया। बहमन ने उसके पहिलेही सवार होके कहा, "जो आज्ञा हो, तो मैं इस पिंजड़े को लेकर तुम्हारे आगे-आगे चलूँ।" परीज़ादने कहा, "यह चिड़िया मेरी लौंड़ी है। मैं इसको आपही ले चलूँगी। जो तुम्हारी खुशी हो, तो तुम गानेवाले वृक्ष की शाख ले चलो और जब तक मैं घोड़े की पीठ पर सवार हूँ, तुम इस पिंजड़े को पकड़ो।" फिर वह सवार हुई और पिंजड़े को अपने आगे ज़ीन पर रख लिया परवेज़ से कहा कि तुम उस ठिलिया को, जिसमें सोने के रंग का पानी है, सावधानी से ले चलो। परवेज़ ने उसको उठा लिया। फिर जब और लोग भी, जो परीज़ाद के पानी छिड़कने से ज़िन्दा होगये थे, घोड़ों पर सवार होके तय्यार हुये, तब परीज़ाद ने कहा कि भाइयो, जो मनुष्य तुममें से श्रेष्ठ हो, वह आगे

चले। सबों ने कहा, "हे सुंदरी, हममें कोई इस योग्य नहीं, जो तुम्हारे आगे चले।" जब परीज़ाद ने देखा कि कोई मनुष्य उनमें से आगे चलने का इरादा नहीं रखता और चाहते हैं कि मैं ही सबके आगे चलूँ, तब उसने इनकार करके कहा, "भाइयो, मेरी किसी तरह से आगे चलने की पदवी नहीं; पर जो तुम सब आज्ञा देते हो, इससे लाचार हूँ।" यह कहके वह आगे चली। उसके पीछे दोनों शाहज़ादे और उनके पीछे सब मनुष्य चले।

अब सब लोगों ने उस सिद्ध को देखने और उसके राह बताने का गुण मानने की इच्छा की, पर उस सिद्ध को उस जगह पर जीता न पाया। न मालूम वह अधिक आयु के होने से मर गया या शाहज़ादी ने उन चीज़ों को पा लिया इसलिये मर गया।

वह समूह वहाँ से आगे बढ़ा और रास्ते में जिस मनुष्य का देश था, देश का मार्ग आता, वह परीज़ाद और शाहज़ादों से बिदा होकर उधर चला जाता। यहाँ तक कि वे तीनों भाई बहिन अकेले रह गये। वे भी मंज़िलें लाँघकर अपने घर पहुँचे। परीज़ाद ने वहाँ जाकर उस चिड़िया का पिंजड़ा बाग़ में बारहदरी की तरफ़ लटका दिया। उस चिड़िया के बोलते ही बहुत सी बुलबुल, हज़ारदास्ताँ, अगन, पिद्दा, तोता आदि मनोहर वाणी बोलनेवाली चिड़ियाँ उसकी आवाज़ सुनने को दूर-दूरसे आकर इकट्ठी हुईं।

इसके बाद उसने गानेवाले वृक्ष की डाली उसी बाग़ में बारहदरी के पास एक जगह पर लगा दी। वह डाली तुरंत ही

जड़ पकड़के हरी होगई और जल्दी से बढ़के एक बहुत ऊँचा दरख़्त होगई। उसके पत्तों से गाने की आवाज़ आने लगी। फिर शाहज़ादी ने संगमर्मर का एक अति उत्तम हौज़ बनवाकर चमन् में रक्खा। उसमें सोने के रंग का पानी भरा, वह तुरंत बढ़ने लगा। यहाँ तक कि वह बरतन भर गया और एक फ़व्वारा उछलकर बीस फुट ऊँचा छूटने लगा। और वह पानी ऊपर से उसी बर्तन में गिरता और किसी तरफ़ को न बहता।

उन बिचित्र वस्तुओं का वृत्तांत तीन ही दिन में मशहूर हो गया। शहर के रहनेवाले उस बाग़ में उन्हें देखने आते, जिसका दरवाज़ा सदा खुला रहता था। वहाँ पर सब लोग तमाशे को देखकर अति आश्चर्य में होते थे। कुछ दिनों के बाद जब उन तीनों भाई बहिनों की सफ़र की थकावट दूर हुई, तो बहमन और परवेज़ पूर्व्ववत् शिकार खेलने को जाने लगे।

एक दिन दोनों शाहज़ादे शिकार खेलने को कुछ दूर निकल गये। इतने में फ़ारस का बादशाह भी संयोग से उसी जगह पर शिकार खेलने को आया। शाहज़ादों ने सवारों की भीड़ देखकर चाहा कि अपने को बादशाह की दृष्टि से बचा घर को लौट जायँ। इस इरादे से उन्होंने शिकार को छोड़कर घर की राह ली। संयोग से वे उस मार्ग से चले जिधर से बादशाह की सवारी आती थी। उन्होंने बहुतेरा चाहा कि इस राह से फ़िरके और तरफ़ को जावें, पर राह तंग होने से वे न फिर सके। और बादशाह के सामने होगये। लाचार हो उन्होंने घोड़ों से उतर बादशाह को दंडवत् की और देरतक पृथ्वी पर झुके रहे। बादशाह उनके घोड़े और अच्छे वस्त्र देख समझा कि शायद मेरे नौकर

होंगे, पर उसे उनकी सूरत देखने की इच्छा हुई, जिससे वह वहाँ ठहर गया और उनको उठने की आज्ञा दी। वे दोनों शाहज़ादे उठकर बादशाह के आगे दृष्टि नीचे करके खड़े हो गये। बादशाह भी उनके सुंदर रूप को देख आश्चर्य में हुआ और देर तक उनको देखता रहा। फिर उनका नाम पूछा और कहा, तुम कहाँ रहते हो? बहमन शाहज़ादे ने उत्तर दिया कि हुजूर हम दोनों आपके बागों का रक्षक जो स्वर्गवासी हुआ है, उसके पुत्र हैं। उसने जीतेजी शहर के बाहर एक नया मकान तय्यार किया था कि हम उसी में रहें। अब बड़े होकर हुजूर की सेवा के योग्य हुए हैं। बादशाह ने कहा कि तुम शिकार खेलने क्यों आया करते हो? शिकार खेलना तो बादशाहों का धर्म है, प्रजा और नौकरों का नहीं। बहमन ने कहा कि हे बादशाह! हम कम उमर के होने से राजनीति नहीं जानते। बादशाह इस उत्तर से अति प्रसन्न हुआ और कहा कि मैं तुम्हारा शिकार खेलना देखा चाहता हूँ। तुम जिस तरह चाहो शिकार खेलो। फिर वे दोनों शाहज़ादे अपने अपने घोड़ों पर सवार होके बादशाह के साथ हुये। जब जंगल में गये, तो बहमन ने शेर को और परवेज़ ने रीछ को अति बीरता और चालाकी के साथ बरछी से मारा और बादशाह के सम्मुख ला रक्खा। थोड़ी देर बाद फिर बनमें जाकर बहमन ने रीछ और परवेज़ ने शेर का अहेर किया और उनको भी बादशाह के सामने लाये। फिर उन्होंने शिकार का इरादा किया, पर बादशाह ने उनको मना किया और बुलवा के कहा कि क्या तुम अब मेरे सब शिकारी जानवरों को मार डालोगे? केवल तुम्हारी दिलावरी की परीक्षा लेनी थी। बादशाह

उनकी वीरता और साहस से अति प्रसन्न हुआ और कहा कि तुम दोनों मेरे साथ चलके भोजन करो। बहमन ने कहा कि हुज़ूर ने हमारा अति सत्कार किया, आज हम नहीं चल सक्के। दूसरे दिन जो आज्ञा होगी, प्रतिपालन की जावेगी। बादशाह ने इन्कार करने से अति आश्चर्य्य में होकर पूछा, इसका क्या कारण है? बहमन ने विनय की कि हमारी एक छोटी बहिन है। हम तीनों बहिन भाइयों में अति प्रीति है। इससे हम बिना सलाह के कहीं नहीं जाते। वह भी हम से बिना पूछे कोई काम नहीं करती। बादशाह ने कहा, "हम तुम्हारी प्रीति को सुनकर अति प्रसन्न हुये। अच्छा आज तुम अपने घर जाओ और अपनी बहिन से सलाह करके कल इसी जगह पर शिकार खेलने को आवो।"

वे दोनों शाहज़ादे बादशाहसे बिदा होकर अपने घर आये; पर बहिन से पूछना और बादशाह से भेंट होने का हाल कहना भूल गये। दूसरे दिन जब शिकार में गये तो शिकार से लौटने के वक़् बादशाह ने पूछा, "क्यों, तुमने अपनी बहिन से मेरे साथ जाने की बात पूछी थी, उसने अपनी राय दी या नहीं?" वे दोनों शाहज़ादे डर गये और उनके मुख का रंग बदल गया। एक दूसरे के मुख की ओर देखने लगे। अंत को बहमन ने कहा कि स्वामी हम दोनों इस बात को भूल गये। किसी ने हम से इस बात को न कहा। बादशाह ने कहा, "आज पूछना और कल मुझ से आकर कहना।" संयोग से उस दिन भी दोनों भाई अपनी बहिन से पूछना भूल गये। तीसरे दिन भी बादशाह उनके भूलजाने पर कुछ अप्रसन्न न हुआ और सोने के

तीन गेंद अपनी जेब से निकाल एक कपड़े में बाँध बहमन को दिये और कहा कि तुम इनको अपनी कमर में रखना। इनसे अब तुम मेरी बात न भूलोगे। कदाचित् जो तुम्हें याद भी न रहेगी तो जब तुम अपनी कमर खोलोगे तो ये तीनों गेंद तुम्हारी कमर से पृथ्वी पर गिर पड़ेंगे। उनकी आवाज़ से तुमको यह बात याद पड़ जावेगी। इस ताक़ीद पर उस दिन भी वे दोनों शाहज़ादे अपने घर जाकर उस बात को भूल गये थे।

शाहज़ादा बहमन जब कपड़े उतारके आराम के लिये जाने लगा, तब वे तीनों गेंद उसकी कमर से धरती पर गिर पड़े, उनकी आवाज़ से उसको बादशाह की बात याद आगई। दोनों शाहज़ादे परीज़ाद के मकान में गये। अभी उसने आराम न किया था, उससे उसकी सम्मति पूँछा। परीज़ादने भाइयोंकी भूल पर कि तीन दिन तक बादशाह की बात भूलगये थे, अति पश्चात्ताप किया और कहा, "यह तुम्हारा बड़ा भाग्य था कि तुम्हारी बादशाह से भेट हो गई। इससे तुमको बड़ा लाभ होगा। पर मुझे बड़ा खेद है कि तुमने बादशाह की आज्ञा को न माना। तुमको मुझसे अधिक रंज होगा कि तुमने बड़ी ढिठाई की कि बादशाह की आज्ञा न मानकर उसके घर तक न गये। अब मैं इसबात को बोलती चिड़िया से पूँछती हूँ। देखूं, वह क्या कहती है। वह जो कुछ कहे, उसको करना।

परीज़ाद बोलती चिड़िया से पूँछने लगी, "हे चिड़िया, तुझको गुप्त भेद मालूम है और तेरी बुद्धि अति तीव्र है। मैं तुझसे एक बात पूँछती हूँ कि संयोग से मेरे दोनों भाइयों की बादशाह

से भेंट हो गई। बादशाह की उनपर अति दया है, किंतु उसकी इच्छा है कि वह इनको अपना मेहमान बनाये। शाहज़ादी ने सब बीता हुआ हाल वर्णन किया और पूछा, अब तेरी क्या सलाह है?" चिड़ियाने कहा, "हे स्वामिनी, शाहज़ादों को बादशाह की आज्ञा अवश्य माननी चाहिये, क्योंकि वह इस समय अधिपति है, उनके मेहमान बनने में कुछ हानि नहीं। प्रसन्नतापूर्वक बादशाह के महल में पधारें; किंतु शाहज़ादों को उचित है कि बादशाह के निमंत्रण के लिये बड़ी धूमधाम के साथ सामान तय्यार करें और उन्हें अपने घर बुलावें, जिससे कि परस्पर प्रीति बढ़े।" परीज़ाद ने कहा, "हे चिड़िया, मैं नहीं चाहती कि शाहज़ादे एक घड़ी भर भी मेरी दृष्टि की ओट हों।" चिड़ियाने कहा, "यह बात सच है, पर उनको वहाँ जाने में कुछ डर नहीं।" परीज़ादने कहा, "बहुत अच्छा। पर जब बादशाह इस घर में आवेगा, तो मुझे अवश्य उसके सामने निकलना पड़ेगा। कदाचित मैं सामने न आऊँ, तो नाहक को बादशाह अप्रसन्न होगा; क्योंकि बादशाह अपनी प्रजा को संतान के समान समझता है और प्रजा भी उसको अपने पिता के समान जानती है।

सबेरे दोनों शाहज़ादे शिकार में पहुँचे। इतने में बादशाह भी वहाँ आपहुँचे और बहमन से पूछा, "तुम्हारी बहिन ने हमारे प्रश्न का क्या उत्तर दिया? क्या आज भी कल की तरह पूछना भूलगये?" बहमन ने आगे बढ़कर विनय की, "हे शाहन्शाह! हम आपके आज्ञापालक हैं। हमारी छोटी बहिन ने भी हमको आज्ञा दे दी है; और वह बहुत बिगड़ती थी कि क्यों तुमने बादशाह की आज्ञा अभी तक न मानी। "बादशाह ने यह

बचन सुनकर कहा, "मैं तुमसे किसी तरह अप्रसन्न नहीं; किंतु मनसे अति प्रसन्न हूँ।" दोनों शाहज़ादे अपने ऊपर बादशाह की ऐसी प्रसन्नता देखकर बड़े लज्जित होगये। इधर बादशाह शिकार खेलने लगा। जब थोड़ी देर के बाद बादशाह ने उन शाहज़ादों को अपने साथ अहेर खेलते न देखा तो उन्हें अपने पास बुलवाकर बहुतसा धैर्य्य दिया और तुरंत ही वह अपने महल को सिधारा। वे दोनों शाहज़ादे भी बादशाह के साथ थे। बादशाह उनको प्रीतिपूर्वक अपने साथ महल में ले चला और उनकी बड़ी प्रतिष्ठा की। बादशाह के सब नौकर यह दशा देख डाह की अग्नि से भस्म हो गये और नगर के रहनेवाले भी उनकी इतनी प्रतिष्ठा देखकर आश्चर्य में थे और आपस में कहते थे कि ये दोनों मनुष्य कौन हैं कि बादशाह इतनी प्रतिष्ठा करता है। हम लोग तो इनको नहीं जानते। किंतु इनकी प्यारी २ सूरत देखकर कहते हैं कि ऐसे सुंदर शाहज़ादे उसी मलका के उदर से, जो बादशाह की क़ैद में है, उत्पन्न होते, तो इतने ही बड़े होते।

जब बादशाह शाहज़ादों सहित अपने महल में आया, तो भोजन का समय हो गया था। दासों ने दिव्य थालियाँ पात्र आदि बिछाय अनेक प्रकार के भोजन परसे। जब बादशाह भोजन पर बैठा, तो उन शाहज़ादों को भी बैठने का इशारा किया। वे भी प्रणाम करके भोजन पर बैठ गये और बादशाह के साथ भोजन करने लगे। बादशाह की इच्छा हुई कि इनकी बुद्धि और वाचालता की परीक्षा लें, सो बादशाह ने हर एक बातों को उनसे छेड़कर पूछा। वे दोनों शाहज़ादे संपूर्ण विद्या और हुनरों

को खूब सीखे हुये थे। उन्होंने सबके यथार्थ उत्तर दिये, जिससे बादशाह अति प्रसन्न हुआ और अपने मन में सोचने लगा कि कदाचित् ऐसे दो पुत्र ईश्वर मुझको देता, तो बहुत अच्छा होता। उनकी आपस में अति प्रीति होगई। वह देरतक भोजन पर बैठकर उनकी बातें सुनता रहा। जब सुचित्त हुआ, तो बादशाह दोनों भाइयों को अपने साथ लिये हुये अपने केलिगृह में गया। उसका जी उनके मीठे बचनों से न भरा, देरतक वह बोलता रहा। अंत को अति प्रशंसा करने लगा। फिर बादशाह ने गानेबजाने की आज्ञा दी। गाने बजानेवाले अपना अपना साज और सामान लेकर आये, नाच रंग होने लगा। अति सुंदर चंद्रमुखी स्त्रियों ने ताल और स्वर के साथ खूब गाया। नक्क़ालों में नकलें कीं, जिससे दोनों शाहज़ादे अति प्रसन्न हुये। निदान सारा दिन बड़े आनंदमंगल में बीता, इतने में संध्या होगई। दोनों शाहज़ादे बादशाह से बिदा होकर अपने घर गए, पर बादशाहने उनसे बिदा होते वक़्त कहा कि कल तुम नियमित समय पर शिकार को आना, मैं तुमको फिर अपने महल में लाऊँगा। मेरी इच्छा है कि तुम बहुधा हमारे सम्मुख रहा करो। शाहज़ादों ने कहा, "हमारी यह इच्छा है कि जब हुज़ूर शिकार के लिये मैदान में सुशोभित हों और जब शिकार खेलकर सुचित्त होजावें, तब हमारी कुटी में पधारें। बादशाह ने, जो उनसे प्रसन्न था, उत्तर दिया कि मुझे तुम्हारी इच्छा हर हालत में स्वीकार है। हम अवश्य तुम्हारे घर चलेंगे और तुम्हारी बहिन के, जिसकी बाचालता और बुद्धि तुम्हारे बोलने से प्रकट है, मेहमान बनेंगे। हम तुम्हें सबेरे वहीं मिलेंगे जहाँ आज मिले थे। जब दोनों शाहज़ादे

घर पहुँचे, तो सारा हाल शाही महल का अपनी बहिन से वर्णन करके कहा, "हे परीज़ाद बादशाहने कल शिकारसे लौटकर हमारे घर आने की प्रतिज्ञा की है और आज हमारी बड़ी प्रतिष्ठा की थी। इसलिये हमारी इच्छाहै कि हम भी बादशाहकी प्रतिष्ठा के अनुसार सामान तय्यार करें।" परीज़ाद ने कहा, "भाइयो, वास्तव में तुम बड़े हौसलेवर हो, ज़रा ठहर जावो। मैं इस विषय में बोलती चिड़िया से राय ले लूँ। उसकी सलाह के अनुसार मैं काम करूँगी। परीज़ाद ने उस चिड़िया का पिंजड़ा उठाकर अपने सामने रक्खा और पिछला सारा हाल वर्णन किया कि बादशाह हमारे घर में सुशोभित होंगे। इसमें तुम्हारी क्या सलाह है? कौन-कौन खाने बनवाये जावें? वह चिड़िया थी छोटी सी, पर बुद्धि उसकी अपूर्व थी। वह कहने लगी, "हे स्वामिनी, बड़े भाग्य की बात है कि बादशाह तुम्हारे घर आवेंगे। हर तरह से भोजन आदि की तय्यारियाँ अच्छी रीति से हों। कुछ चिंता की बात नहीं। पर सब भोजन के पहिले एक थाली खीरे के आश की, जिस पर आबदार मोती चुने हों, बादशाह के सामने रक्खी जावे।" यह बात सुनकर परीज़ाद आश्चर्य्य में होकर कहने लगी, "अय चिड़िया, मैंने आजतक खीरे की आश मोतियों के साथ नहीं सुनी। निश्चय है कि बादशाह भी ऐसा भोजन देखकर आश्चर्य्य में होकर हमारी बेवकूफी पर हँसेंगे। आबदार मोती हमारे पास कहाँ हैं?" चिड़िया बोली, "मोतियों का इकट्ठा करना कुछ कठिन नहीं। हे स्वामिनी, जो कुछ मैं कहती हूँ, उसे ज़रूर करो। मोतियों के मिलने का उपाय मैं बताती हूँ। कल सवेरे तुम अपने रमने में जाकर दाहिनी ओर अमुक वृक्ष

के नीचे ज़मीन खुदवाना, वहाँ बहुत से मोती मिलेंगे।" जब यह बात बोलती चिड़िया कह चुकी, तो वह चुप हो रही।

दूसरे दिन परीज़ाद रमने में गई और उस वृक्षके नीचे पहुँची। फिर एक बाग़वान को बुलाकर कहा कि इस जगह को खोदो। बाग़वान वहाँ की धरती खोदने लगा। अकस्मात् मिट्टी में एक बहुत सख़्त चीज़ मालूम हुई। तब माली ने मिट्टी को हटाया तो एक सुनहरा संदूक़चा देखा, जो अति सुंदर साफ़ और चौकोण था। माली ने यह सब हाल परीज़ाद से कहा, उसने प्रसन्न हो कर उत्तर दिया कि मैं तुझे इसी काम के वास्ते लाई थी। उसे बड़ी सावधानी से निकालकर मेरे पास ला। माली ने उसको निकालकर शाहज़ादी के हवाले किया। परीज़ाद ने उसको खोलकर देखा कि वह मुँह तक आबदार मोतियों से भरा है। शाहज़ादी उनको देखकर अति प्रसन्न हुई और उसको लेकर अपने मुख्य मकान को चली गई।

बहमन और परवेज़ सुबह के वक़्त माली के साथ परीज़ाद को बाग़ की तरफ़ जाते देख अति आश्चर्य्य में थे कि आज नियम के प्रतिकूल यह क्या व्यवहार है। वे बड़ी जल्दी कपड़े पहिन बाग़ की ओर चले तो दूरसे क्या देखा कि परीज़ाद अपने हाथों में कोई वस्तु लिये चली आती है। जब पास पहुँचे तो देखा कि एक सोने का बक्स उसके बग़ल में दबा है। पूछा, बहिन जब तुम माली को लेकर बाग़ की ओर जाती थीं तो उस वक़्त तुम्हारे हाथ ख़ाली थे। अब सोने का संदूक़चा तुम्हारे पास देखते हैं। बताओ, यह कहाँ से हाथ आया। परीज़ाद ने कहा कि मैं चिड़िया के बताने से सुबह बाग़वान को लेकर अपने रमने

में अमुक दरख़्त के नीचे गई थी । ईश्वर की पूर्ण कृपा से और भाग्य से यह संदूक़चा मुझको मिला। इस बात को सुनकर वह अति प्रसन्न हुआ। फिर परीज़ाद ने बहमन से कहा कि मेरे साथ आवो, तुमसे कुछ कहूँगी। परवेज़ ने कहा, "बहिन ऐसा कौन गुप्त भेद है, जो मेरे सुनने के लायक़ नहीं। आजतक तुमने कोई बात मुझसे नहीं छिपाई।" परीज़ाद ने कहा, "अपनी दोनों प्यारी आँखों की सौगंद खाकर कहती हूँ कि कोई बात ऐसी नहीं, जिसका तुमसे पर्दा हो।" फिर परीज़ाद ने दोनों भाइयों को अलग ले जाकर चिड़िया की कही हुई सब बातें बताईं। इस बात को सुनकर वे तीनों देर तक सोचते रहे कि इस बोलती चिड़िया ने खीरे की आश को मोतियों के साथ भोजन के समय रखने की बात क्यों सोची है। जब कुछ न समझ सके, तो परस्पर कहने लगे कि बोलती चिड़िया अति चतुर है, कोई लाभ की बातही उसने विचारी होगी। फिर परीज़ाद ने अपने कमरे में जाकर रसोइये को बुलाकर आज्ञा दी कि कल दश बजे तक सब प्रकार के भोजन बादशाह के भोजन के योग्य तय्यार हों; पर यह भोजन अति उत्तम रीति से बनाइयो। रसोइये ने पूछा, वह कौनसी वस्तु है ? परीज़ाद ने कहा कि खीरे की आश का थाल तय्यार करना और उस पर बहुत आबदार मोती चुने हों। ऐसा सजा हो कि उस पर मोती ही मोती दीखें। रसोइये ने खीरे की आश मोतियों के साथ सुनकर अति आश्चर्य किया और मनमें कहने लगा कि आजतक ऐसा खाना किसी ने पृथ्वी भर में न खाया होगा। हंसों को सुना है कि वह मोती चुगते हैं। परीज़ाद ने वह संदूक़चा रसोइये को दे दिया और आज्ञा

दी कि जितने मोती उस थाल में लगें उतने खर्च करना, बाक़ी बक्स में रहने देना, नष्ट न होवें। रसोइया परीज़ाद के वचन सुनकर चित्रवत् चुप हो रहा मोतियों का बक्स लेकर बिदा हुआ और रसोई में जाकर वह तय्यारी करने लगा।

परीज़ाद ने अपना महल और बाग़ झड़वाकर साफ़ कराया। अति उत्तम बिछौने, झाड़ व फानूस आदि से उसे अलंकृत किया। फिर दोनों शाहज़ादे उत्तम वस्त्र पहिनकर घोड़े पर सवार हुये। मैदान में पहुँचने पर बादशाह से भेंट हुई। बहुत देरतक शिकार खेलते रहे। उस दिन बहुत धूप और गरमी थी। इससे बादशाह ने अहेर खेलना छोड़ दिया और उन शाहज़ादों के साथ चला। जब उनके महल के निकट पहुँचा तो शाहज़ादे बहमन ने आगे बढ़कर अपनी बहिन परीज़ाद से बादशाह के आने का हाल कहा कि बादशाह की सवारी घर तक आ पहुँची है। वह यह सुनतेही उठ खड़ी हुई और अगवानी के लिये आगे बढ़ी, दरवाज़े की देहली में जाकर खड़ी हुई। बादशाह उस दिन घोड़े पर सवार थे। जब घोड़े से उतरकर भीतर आये तो परीज़ाद ने दौड़कर अपना शिर बादशाह के चरणों पर रख दिया। बहमन और परवेज़ दोनों बादशाह के साथ थे, उन्होंने परीज़ाद का परिचय दिया। बादशाह ने अति प्रीति से अपने हाथों से परीज़ाद का शिर उठाया और उसके सुंदर रूप को साफ़ दृष्टि से देख अति प्रसन्न हुआ। मन में सोचने लगा कि ईश्वर की कृपा से ये तीनों बहिन भाई एक सूरत के हैं।

परीज़ाद बादशाह को अपने साथ लिये महलमें पहुँची और अच्छे स्थान पर उन्हें बैठाया। बादशाह उस विचित्र महल को

देख अतिप्रसन्न होकर परीज़ाद से कहने लगा, "हे सुंदरी! तुम्हारा महल अति उत्तम है। अब मैं बाग़ को देखा चाहता हूँ। परीज़ाद ने प्रसन्न हो कमरे का एक दरवाज़ा, जिससे सारा बाग़ दिखाई देता था, खोल दिया। पहिले बादशाह की दृष्टि फ़व्वारे पर पड़ी; जो बहुत साफ़ था। फिर सोने का पानी देखा। बादशाह यह रंग देखकर अति आश्चर्य्य में हुआ। परीज़ाद से पूछा कि यह कैसा अच्छा फ़व्वारा है। मैंने कभी ऐसा फ़व्वारा नहीं देखा। सुनहरा जल कहाँ रहता है? किसके ज़ोर से इतना ऊँचा होकर छूटता है? मैं इसे पाससे देखूंगा।" परीज़ादने कहा, "बहुत अच्छा, आप पास चलकर देखिए।" यह कहकर वह बादशाहको अपने साथ फ़व्वारे के पास ले गई। बादशाह अति उत्सुकता और ध्यान से फ़व्वारे को देख रहा था कि इतने में गाने की अति ललित वाणी कान में सुनाई दी और तानों से वह गाना बहुत ठीक था। बादशाह का मन अति मोहित होगया और चारों तरफ़ मुख फेर के नज़र दौड़ाई और बहुतेरा इधर उधर दूरतक देखा, पर कोई गवैया नज़र न आया। इससे वह अति विस्मित हुआ कि हे ईश्वर! यह क्या भेद है? परीज़ाद से पूछा कि यह गाने की आवाज़ कहाँ से आती है? क्या यह तानसेन हैं, जो धरती पर फिर अवतार धारणकर अलाप रहे हैं? परीज़ाद ने मुसकरा के कहा कि कोई अच्छा गानेवाला नहीं है। यह आवाज़ अमुक वृक्ष से आती है। आप दो चार क़दम आगे बढ़कर उस वृक्ष को देखें। बादशाहको तो उस वृक्ष की लालसा ही थी, आगे बढ़कर गानेवाले दरख़्त के पास जा पहुँचा। उस वृक्ष से विचित्र तान और राग सुनकर वह मूर्च्छा खागया। जब कुछ चैतन्य हुआ तो अति आश्चर्य्य से

कभी तो फ़व्वारे को देखता और कभी कान लगाकर गानेवाले वृक्ष का राग सुनता। निदान वह चुप न रह सका। लाचार हो कर परीज़ाद से पूछा, हमने ऐसा दरख़्त आजतक कहीं नहीं देखा। तुम्हारे हाथ यह कहाँ से लगा। यह वृक्ष तो बड़ी बहार का है। जीने की बहार यही है कि मनुष्य की आयु चैन और आराम से बीते। परीज़ाद ने कहा, इसका नाम गानेवाला वृक्ष है। इस देश में इसका नाम निशान नहीं। इसको मैं बहुत दूर से लाई हूँ। जिस फ़व्वारे के पानी का सोने का सा रंग है, उसका वर्णन मैं अवकाश पाकर करूँगी। अब आप बोलती चिड़िया को देखें। बादशाह ने प्रसन्न होकर कहा, उसको मुझे दिखावो वह कहाँ है और किस रंग की है। वह भी अपूर्व होगी। परीज़ाद बादशाह को अपने साथ लिये वहाँ से फिरी कि बोलती चिड़िया का तमाशा दिखावें। फिरते वक़्त बादशाह फिर फ़व्वारे के पास आया और उस फ़व्वारे को खूब ध्यान से देखके कहने लगा कि यह फ़व्वारा जो सोने का पानी लुटा रहा है सो इसका खज़ाना कहीं नहीं दिखाई देता कि कहाँ से पानी फ़व्वारे तक पहुँचता है, न कोई ऐसा बड़ा बरतन ही दिखाई देता है। परीज़ाद ने कहा, हुज़ूर इस फ़व्वारे का खज़ाना नहीं है, ईश्वर ने इस जल में यह सामर्थ्य दी है कि आपही आप हौज़ में आ गिरता है। वहाँ न आग है और न कुछ जलता है। यह दिनरात एक ही तरह पर जारी रहता है। संगमरमर के हौज़ से बाहर पानी नहीं जाता और न कभी घटता ही है। बादशाह यह सारा हाल सुनकर और भी आश्चर्य्य में हुआ। परीज़ाद ऐसी ऐसी विचित्र बातें सुनाती हुई बादशाह को बारहदरी तक लाई। यहाँ और भी

तमाशा दिखाया कि हज़ारों सुंदर वाणीवाले पक्षी फलदार वृक्षों पर बैठे हुये प्रिय शब्द से चहचहा रहे हैं। बादशाह अति आश्चर्य्य में होकर कहने लगा, "हे परीज़ाद! यह कौनसा जादू का जाल बिछा है कि रंग बिरंगे पक्षी इतने वृक्षों पर बैठे हैं। मानो संसार के सब पक्षी यहीं हैं।" परीज़ाद ने कहा, हुज़ूर यह सब पक्षी इसी बोलती चिड़िया के सबब से हैं, जिसका पिंजड़ा बारहदरी की छत में लटक रहा है। अब आगे बढ़कर और अच्छे २ राग सुनाई देंगे। जब बादशाह बारहदरी के भीतर गया, तो क्या देखा कि बोलती चिड़िया एक सुनहरे रत्नजटित पिंजड़े में प्रिय वाणी से चहचहा रही है। जब बादशाह उसके सामने पहुँचा तो परीज़ाद ने कहा, "हे मेरी बोलती चिड़िया! तू क्या देखती नहीं है कि हुज़ूर बारहदरी में पधारे हुये हैं।" यह सुन-कर वह चिड़िया चुप हो रही। उसके साथ ही सब चिड़ियाँ चुप होगईं। पहिले चिड़िया ने बादशाह की कुशल पूछी। बादशाह ने भी यथोचित उत्तर दिया। फिर चिड़िया ने बादशाह को आशीर्व्वाद दिया। उस बारहदरी में अति उत्तम और स्वादिष्ठ दिव्य भोजन सोने चाँदी के पात्रों में परसे हुये थे, जब बाद-शाह भोजन पर बैठा तो संयोग से उसकी दृष्टि उसी थाल पर पड़ी। बादशाह ने हाथ बढ़ाकर उस थाल को अपने सामने खींचकर चाहा कि उसमें से उठाकर भोजन करें; पर क्या देखता है कि हज़ारों मोती खीरे की आश पर चुने हुये हैं। इस बात को देखकर वह अति आश्चर्य्य में हुआ और मन में सोचा कि क्या यह भोजन नये प्रकार का बना है? उससे हाथ हटाकर उसने परीज़ाद और दोनों भाइयों से पूछा कि यह वस्तु भोजन के योग्य

नहीं है। क्या कारण है कि हमारे भोजन के लिये परसी गई है? परीज़ाद और उसके भाई तो इसका कारण न जानते थे, वे चुप होगये। पर बोलती चिड़िया कहने लगी कि ईश्वर की क्या माया है कि हुज़ूर खीरे की आशे पर आबदार मोतीचुने हुये देखकर इतने आश्चर्य्य में हुये। बड़े आश्चर्य्य की बात है कि जब मलका लड़के के बदले कुत्ता बिल्ली अपने पेटसे जनी तब अचंभा न आया। क्या मनुष्य के पेटसे जीव जन्तु भी पैदा होते हैं? अभीं तो बादशाह चिड़िया के मुख्य आशय को न समझता था। वह कहने लगा कि हे चिड़िया! तेरा कहना सत्य है। मैं भी जानता हूँ कि यह बातें बुद्धि से दूर हैं; पर उन दोनों स्त्रियों ने, जो मलका के प्रसूति के समय उपस्थित थीं, मुझसे आकर कहा। मैंने उनकी बात निश्चय की और यह नहीं समझा कि यह उनका छल है। वे दोनों औरतें ग़ैर न थीं, बरन् मलका की सगी बहिनें थीं। फिर मैं क्योंकर उनकी बात झूठ मानता। चिड़िया ने कहा, "हाँ, मैं भी जानती हूँ कि वे दोनों दुष्ट औरतें मलका की बहिनें हैं, पर वे इस बात से कि आपकी मलका पर अति कृपादृष्टि थी, इससे मारे ईर्षा के जल गईं और मलका के हानि का उपाय विचारने लगीं। निदान उन्होंने यह छल किया कि हुज़ूर का मन उससे फिर गया, पर अब उनका छल खुल गया। शाहज़ादा बहमन, परवेज़ और परीज़ाद ये तीनों बहिन भाई बैठे चिड़िया की बातें सुन रहे थे कि उस बोलती चिड़िया ने बादशाह से इशारा किया कि ये दोनों सुंदर जवान तुम्हारे पुत्र हैं और यह सुंदरी मृगनयनी चंपकवर्णी आपकी पुत्री है। तुम्हारी मलका यही कुत्ता बिल्ली और छछूँदर जनी थी। उन दोनों

स्त्रियों ने ईर्षा के मारे, जन्म के समय इनको कंबल के टुकड़े में लपेटकर और उनको पिटारी में धर नहर में फेंक दिया था कि यह कुँवर दरिया में डूब जावें, पर इनकी आयु शेष थी। वह पिटारी बहते बहते बादशाही बागों के दारोग़ा के हाथ लगी, जिसके संतान न होती थी। उसने इनको अपना संतान समझकर पालन पोषण किया। जब यह कुछ बड़े हुये तो इनको खूब पढ़ाया। हे बादशाह! आप ध्यानसे सुनिये, ये दोनों शाहज़ादे और शाहज़ादी आपकी संतान हैं। जब बादशाह को उन स्त्रियों की दुष्टता सूचित हुई और उनका फ़रेब खुल गया तो उस चिड़िया से कहा कि अब मुझको इनका हाल मालूम हुआ। पहिले जब मैंने शाहज़ादों को शिकार में देखा था, तो लहू ने ऐसा जोश किया कि मेरे मनको उनकी तरफ़ खींचता था। मुझको निश्चय हुआ कि ये तीनों मेरी संतान हैं। यह कहकर आँखों में आँसू भर लाया और प्रीति से उन तीनों को अपने कंठ से लगाया और कहा, "अब तुम मुझको अपना बाप समझो।" वे तीनों यह बात सुनकर दौड़कर बादशाह के कंठ लगे और परस्पर बैठकर रुचिपूर्वक भोजन करने लगे। जब खाचुके और पात्र उठ गये, तो बादशाह ने कहा कि अब मैं बिदा होता हूँ, कल मैं फिर तुम्हारे घर आऊँगा। अब तुम प्रसन्न हो कि मैं तुम्हारी माता को अपने साथ यहाँ लाऊँगा, उनके चरण छूना।

यह कहकर बादशाह बिदा हुआ और अपने वायुगामी घोड़े पर सवार होकर शीघ्र ही अपने महल में पहुँचा और तुरंत ही वज़ीर को बुलाकर आज्ञा दी कि वे दोनों औरतें अर्थात् मलका की बहिनें जो प्रसूति के समय भीतर थीं, वे अति दुष्टा

और मेरे कुटुंब की वैरिन निकलीं। उनको जितना दंड दिया जावे, वह थोड़ा है। बधिक को आज्ञा दो कि उनको वध कर डाले, धरती उनके रुधिर की पियासी है। वज़ीर ने तुरंत ही बादशाह की आज्ञा प्रतिपालन की। जैसा किया था वैसा पाया। फिर बादशाह उस जामा मसजिद में जहाँ मलका क़ैद थी, गया। कई वर्ष उसको उस कष्ट के भुगतने में बीत गये थे। उसमें से उसको निकाला और प्रीतिपूर्वक गले से लगाया और उसकी दुर्दशा पर बहुत कुढ़ा। उस कोमलांगी के फटे पुराने वस्त्र देखकर बहुत रोया और कहा कि यह अपराध अनजाने मुझसे हुआ, ईश्वर के वास्ते क्षमा कर। मुझे तेरी दोनों बहिनों ने जाल और फ़रेब का बिछौना बिछाकर तुझ पर कोप कराया। अब उन्होंने अपने किये का दंड पाया अर्थात् वध कर डाली गईं। बादशाह ने हज़ार तरह से उस मलका को समझाया तथा उस बोलती चिड़िया की कहानी कह सुनाई और कहा कि अब तुम मेरे साथ वहाँ चलो। मलका ने जब यह हाल सुना तो वह प्रसन्न होगई और पहिले स्नान किया और अति उत्तम वस्त्र पहिन सुन्दर आभूषणआदि से अलंकृत हुई और वहाँ पहुँचकर अपनी संतान से मिली।

ईश्वर ने दिन फेरे। भाग्य उदय हुआ कि एकबारगी ऐश्वर्य, धन-धान्य और संतान-सुख प्राप्त हुआ। यह खबर सारे राज्य में फैल गई। तीनों बहिनभाई राज्य के वारिस हुए। उनको निश्चय हुआ कि हम शाहज़ादे हैं। फिर बादशाह मलका और उन तीनों ने बैठकर भोजन किया। जब सुचित्त हुए, तब बाद-शाह मलका को उस बाग़ की सैर कराने के वास्ते लेगया। गाने-

वाले वृक्ष का गाना सुनाये और फव्वारा दिखाया। फिर बारह-दरी में आकर उस बोलती चिड़िया का तमाशा दिखाया। इसके बाद बादशाह घोड़े पर सवार हुआ और दोनों शाहज़ादे अपने अपने घोड़ों पर एक दाहिनी और दूसरा बाईं ओर साथ थे। मलका पालकी पर सवार हुई। उस दिन बाज़ार बहुत अच्छा सजा था। शहर के सब छोटे बड़े इस सवारी के देखने को इकट्ठे थे। उस दिन बादशाह ने इतना कञ्चन बरसाया कि धरती सोने की बन गई। याचक, मंगन और ग़रीब धनवान् बन गये। इस तरह से वे बादशाही महल में पहुँचे। सम्पूर्ण सभासद और छोटे बड़ों ने बड़े २ पारितोषिक पाये। बादशाह ने बहमन को जो बड़ा पुत्र था, युवराज नियत किया और देश के प्रबंध आदि को उसी पर छोड़ा। परवेज़ को जनरेली पद पर नियत किया और पृथ्वी जल की सेना का देखभाल उसके अधीन किया। परीज़ाद को बड़े शाहज़ादे से ब्याह दिया।

इति